E-Journal
January to March 2016

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 1.9411 (2015)

Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)

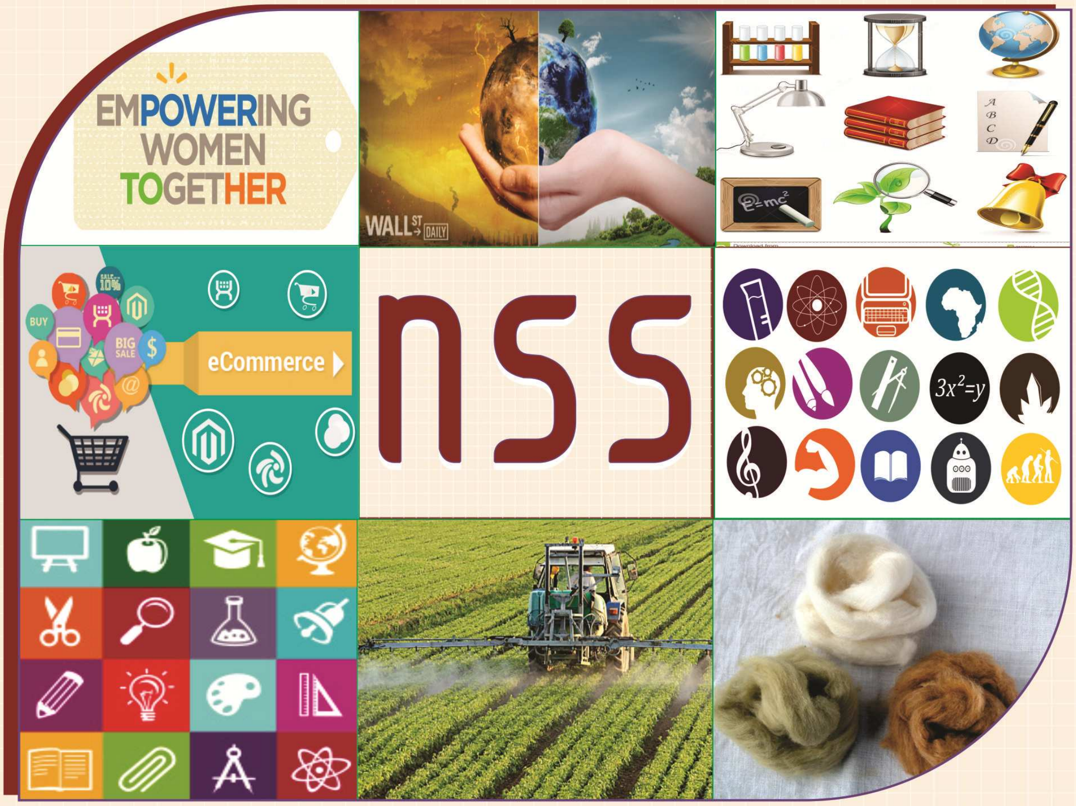

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

अनुक्रमणिका/Index

01. अनुक्रमणिका /Index 02
02. क्षेत्रीय सम्पादक मण्डल 05
03. सम्पादकीय सलाहकार मण्डल 06
04. निर्णायक मण्डल 07
05. Pulses Intake Among Adolescent Girls And Boys Of HIG And MIG 09
(Dr. Nandini Rekhade, Tahera Khan)
06. A Roadmap For Budding Professionals In Global Economy- Management Education 12
(Dr. Kanti Pachori)
07. Impact Of Climatic Change And Economic Development Of India 15
(Dr. Pavan Kumar Shrivastava)
08. Expectations From Undergraduate Students And Teachers Relevant To 17
Make In India In Higher Education(Manish Khargonkar, Dr. Rajeev Kumar Jhalani)
09. Improvement In Quality Of Higher Education Through NAAC (Dr. Kanti Pachori) 20
10. Language Problems In India (Dr. Usha Dash) 24
11. Effect of Histamine H_4 receptor (agonist and antagonist) on Melenophores of a Teleost 28
Fish *Rasbora elanga* (Ham.) (Meena Swamy)
12. ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों की गरीबी निवारण में भूमिका (डॉ. रायकू जमरा) 34
13. भारत की अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियाँ (डॉ. राजेश दुबे) 37
14. ई-कॉमर्स के क्षेत्र में बढ़ती संभावनाएँ (सचिन दुबे) 39
15. स्वप्नों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (ज्योत्स्ना झारिया) 41
16. उद्यमियों के आर्थिक विकास में मुद्रा बैंक की भूमिका (डॉ. रायकू जमरा) 43
17. महिला सशक्तीकरण एवं संरक्षण (ज्योत्स्ना झारिया) 45
18. भीष्म साहनी - व्यक्ति और कृतित्व (डॉ. सरोज जैन) 47
19. साम्प्रदायिक सद्भाव की आवश्यकता एवं संविधान में इसके प्रावधान (डॉ. संध्या खरे) 49
20. अज्ञेय के काव्य में भाषिक सौन्दर्य (डॉ. वर्षा शर्मा) 51
21. पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक चेतना (डॉ. नन्दा मोरे) 54
22. अज्ञेय के काव्य में यथार्थवादी रचना दृष्टि (डॉ. वर्षा शर्मा) 55
23. ऋगवैदिक संस्कृति एवं सारस्वत- सिन्धु सभयता (डॉ. नितिन सहारिया) 58
24. राष्ट्र का मेरूदंड गौशाला (डॉ. नितिन सहारिया) 61
25. वर्तमान में देश पर मँडरता बेरोजगारी का संकट (डॉ. नितिन सहारिया) 64
26. भारत छोड़ो आन्दोलन में बैतूल जिले की जनजातियों का योगदान (डॉ. राजेशनाथ चंदेल) 66
27. ब्रिटिश कालीन भू-राजस्व व्यवस्था का प्रभाव : एक अध्ययन (बैतूल जिले के विशेष संदर्भ में) (डॉ. राकेश कुमार चौरे) 68
28. महात्मा गाँधी की हरिजन यात्रा और उसका प्रभाव (मंडला जिले के विशेष संदर्भ में)(डॉ. संतोष उसरेठे) 71
29. Success Ratio of Readymade Garment Trade fair in Indore (Dr. Sonal Bhati) 74
30. जनसंख्या वृद्धि और जल संसाधन (डॉ. सुरभि सिंघल) 77
31. वैदिक काल में नारी शिक्षा की स्थिति (डॉ. बी. के. गुप्ता) 79

32. प्रबंधकीय निर्णयन में कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग की उपयोगिता (लघु एवं मध्यम व्यवसाय के सन्दर्भ में) 81
(डॉ. आलोक कुमार यादव)

33. मानस के राम (डॉ. कल्पना वर्मा) 84

34. भारत में अफसरशाही का पतन और सरदार पटेल (डॉ. अजय कुमार त्रिपाठी) 86

35. चूरु जिले में कृषिगत समस्याएं पर्यावरण नियोजन एवं प्रबन्धन (जयदेव प्रसाद शर्मा, डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान) 87

36. कृषि आधुनिकीकरण के प्रभावों का अध्ययन (जयदेव प्रसाद शर्मा, डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान) 92

37. A Dilemma of an Outsider in Rama Mehta's *Inside the Haveli* (Dr. Jatinder Kohli) 95

38. अनुसूचित जनजाति विकास कार्यक्रम का अध्ययन (डॉ. पुनीता चोर्डिया) 97

39. तत्कालीन सामाजिक समस्याएँ एवं राजस्थानी संतों द्वारा निदान (डॉ. विनीता कौशिक) 102

40. वर्तमान समय में महात्मा गॉधी के विचारो की प्रासंगिकता (डॉ. गोपाल सिंह) 104

41. New Trends in Commercial Banking in India - An Study (Dr. Balmukund Baghel) 106

42. A Study of Marketing Strategies of Big Malls to Attract Consumers with Special Reference 109
to Nagpur City (Nalini Udaram Lambat)

43. भारतीय समाज विविधता में एकता का परिचायक है (डॉ. हरिचरण मीना) 113

44. जन लोकपाल के लिए लड़ाई: भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों का आंदोलन 116
(ज्योति परमार, सुशील कुमार)

45. Protection of Computer Software under Intellectual Property Regime (Rohit Nayak) 118

46. डॉ. राम किशोर मिश्र प्रणीत संस्कृत रूपकों में नारी-एक अध्ययन (डॉ. रुचि गुप्ता) 122

47. राजस्थान की हिन्दी-कहानी : विकास यात्रा भाग - 3 (डॉ. राजकुमार चौधरी) 125

48. आदिम समझौता (डॉ. हजारी लाल मौर्य) 128

49. मानसिक विषाद (डिप्रेशन) संगीत द्वारा उपचार (डॉ. अन्नु माथुर) 130

50. गुजरी महल में संरक्षित स्मारक स्तम्भ (डॉ. अमित मेहता) 132

51. Relationship of World Ranking and Sub Variables of Mental Toughness of International 134
Badminton Players (Miss Kavita)

52. Urdu Language: Salient Features (Dr. Arshad Siraj) 137

53. Farmer's Response to Farm Telecast in Ajmer District of Rajasthan State 141
(Dr. Govind Prakash Acharya)

54. Growth & Characteristics of Single Crystal (Ashok Kumar Verma) 147

क्षेत्रीय सम्पादक मण्डल अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय (Regional Editor Board- International & National) मानद्

(01) डॉ. मनीषा ठाकुर .... फुल्टन कॉलेज, एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका
(02) श्री अशोककुमार .... एम्प्लॉयब्लिटी ऑपरेशन्स मैनेजर, एक्शन ट्रेनिंग सेन्टर लि. लन्दन, यूनाईटेड किंगडम
(03) प्रो. डॉ. सिलव्यू बिस्यू .... वाईस डीन (वाणिज्य एवं प्रबन्ध) कृषि एवं ग्रामीण विकास महाविद्यालय, बूचारेस्ट, रोमानिया
(04) श्री खगेन्द्रप्रसाद सुबेदी .... सीनियर सॉयकोलॉजिस्ट, पब्लिक सर्विस कमीशन, सेन्ट्रल ऑफिस, अनामनगर, काठमाँडू, नेपाल
(05) प्रो. डॉ. ज्ञानचंद खिमेसरा .... प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.) भारत
(06) प्रो. डॉ. प्रमोद कुमार राघव .... शोध निदेशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय, जयपुर (राज.) भारत
(07) प्रो. डॉ. एन.एस.राव. .... संचालक, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
(08) प्रो. डॉ. अनूप व्यास. .... (पूर्व) संकायाध्यक्ष, वाणिज्य, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
(09) प्रो. डॉ. पी.पी. पाण्डे .... संकायाध्यक्ष, वाणिज्य (डीन), अवधेश प्रतापसिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत
(10) प्रो. डॉ. संजय भयानी. .... अध्यक्ष, व्यवसाय प्रबंध विभाग, सौराष्ट्र विश्व विद्यालय, राजकोट (गुजरात) भारत
(11) प्रो. डॉ. प्रताप राव कदम .... अध्यक्ष, वाणिज्य, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खण्डवा (म.प्र.) भारत
(12) प्रो. डॉ. बी.एस. झरे . ... प्राध्यापक वाणिज्य विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, आकोला (महाराष्ट्र) भारत
(13) प्रो. डॉ. राकेश शर्मा .... अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुड़गांव (हरियाणा) भारत
(14) प्रो. डॉ. संजय खरे .... प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, शास. स्वशासी कन्या स्नात. उत्कृष्टता महा., सागर (म.प्र.) भारत
(15) प्रो. डॉ. आर.पी. उपाध्याय .... परीक्षा नियंत्रक, शासकीय कमलाराजे कन्या स्वशासी स्नातकोत्तर महा., ग्वालियर (म.प्र.) भारत
(16) प्रो. डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा .... प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महा., भोपाल (म.प्र.) भारत
(17) प्रो. अखिलेश जाधव .... प्राध्यापक, भौतिकी, शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) भारत
(18) प्रो. डॉ. कमल जैन .... प्राध्यापक, वाणिज्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.) भारत
(19) प्रो. डॉ.डी.एन. खड़से .... प्राध्यापक, वाणिज्य, धनवते नेशनल कॉलेज, नागपुर (महाराष्ट्र) भारत
(20) प्रो.डॉ. वन्दना जैन .... प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय कालिदास कन्या महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
(21) प्रो. डॉ. हरदयाल अहिरवार .... प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शहडोल (म.प्र.) भारत
(22) प्रो. डॉ. शारदा त्रिवेदी .... सेवानिवृत्त प्राध्यापक, गृहविज्ञान, इंदौर (म.प्र.) भारत
(23) प्रो. डॉ. उषा श्रीवास्तव .... अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेच्यूट स्टडी. सोलदेवानली, बैंगलुरू (कर्ना.) भारत
(24) प्रो. डॉ. गणेशप्रसाद दावरे .... प्राध्यापक, वाणिज्य, शासकीय महाविद्यालय, बड़वाह (म.प्र.) भारत
(25) प्रो. डॉ. एच.के. चौरसिया .... प्राध्यापक, वनस्पति, टी.एन.वी. महाविद्यालय, भागलपुर (बिहार) भारत
(26) प्रो. डॉ. विवेक पटेल .... प्राध्यापक, वाणिज्य, शासकीय महाविद्यालय, कोतमा, जिला अनूपपुर (म.प्र.) भारत
(27) प्रो. डॉ. दिनेशकुमार चौधरी .... प्राध्यापक, वाणिज्य, राजमाता सिन्धिया शासकीय कन्या महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत
(28) प्रो. डॉ. आर.के. गौतम............ प्राध्यापक ,वाणिज्य, शासकीय मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत
(29) प्रो. डॉ. जितेन्द्र के. शर्मा........... प्राध्यापक, वाणिज्य एवं प्रबंध, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय केन्द्र, पालवाल (हरियाणा) भारत
(30) प्रो. डॉ. आर.पी. सहारिया......... प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय तख्तपुर जिला,बिलासपुर (छ.ग.) भारत
(31) प्रो. डॉ. गायत्री वाजपेयी........... प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय महाराजा स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.) भारत
(32) प्रो. डॉ. अविनाश शेन्द्रे............ विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र, प्रगति कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, डोम्बीवली, मुम्बई (महाराष्ट्र) भारत
(33) प्रो. डॉ. जी.सी. मेहता .... अध्यक्ष, अध्ययन मण्डल वाणिज्य, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
(34) प्रो.डॉ. बी.एस. मक्कड़ .... अध्यक्ष, अध्ययन मण्डल वाणिज्य, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
(35) प्रो.डॉ. पी.पी. मिश्रा .... विभागाध्यक्ष, गणित, छत्रसाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पन्ना, (म.प्र.) भारत
(36) प्रो.डॉ. सुनील कुमार सिकरवार.... प्राध्यापक, रसायन, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झाबुआ (म.प्र.) भारत
(37) प्रो.डॉ. के.एल. साहू................ प्राध्यापक, इतिहास, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत
(38) प्रो.डॉ. मालिनी जॉनसन .... प्राध्यापक, वनस्पति, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत
(39) प्रो.डॉ. विशाल पुरोहित .... एम.एल.बी. शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला मैदान, इन्दौर (म.प्र.) भारत

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल (Editorial Advisory Board, INDIA) मानद्

(01) प्रो. डॉ. नरेन्द्र श्रीवास्तव..........प्रसिद्ध वैज्ञानिक 'इसरो' बैंगलुरू (कर्नाटक) भारत

(02) प्रो. डॉ. आदित्य लूनावत ....निदेशक, स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन, भोपाल (म.प्र.) भारत

(03) प्रो. डॉ. संजय जैन ....सहायक नियंत्रक, म.प्र. व्यावसायिक परीक्षा मंडल, भोपाल (म.प्र.) भारत

(04) प्रो. डॉ.एस.के. जोशी ....प्राचार्य, शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.) भारत

(05) प्रो. डॉ. जे.पी.एन. पाण्डेय........प्राचार्य, शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत

(06) प्रो. डॉ. सुमित्रा वास्केल ....प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.) भारत

(07) प्रो. डॉ. पी.आर. चन्देलकर ......प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

(08) प्रो. डॉ. मंगल मिश्र ....प्राचार्य, श्री क्लॉथ मार्केट, कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

(09) प्रो. डॉ.आर.के. भट्ट ....प्राचार्य, शासकीय महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत

(10) प्रो. डॉ. अशोक वर्मा ....संकायाध्यक्ष, वाणिज्य (डीन) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

(11) प्रो. डॉ. टी.एम. खान ....प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, धामनोद, जिला-धार (म.प्र.) भारत

(12) प्रो. डॉ. राकेश ढण्ड ....संकायाध्यक्ष, विद्यार्थी कल्याण विभाग विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

(13) प्रो. डॉ. अनिल शिवानी..........अध्यक्ष, वाणिज्य एवं प्रबंध विभाग श्री अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

(14) प्रो. डॉ. पद्मसिंह पटेल ....अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग शासकीय महाविद्यालय, महिदपुर (म.प्र.) भारत

(15) प्रो. डॉ. मंजु दुबे....................संकायाध्यक्ष (डीन), गृह विज्ञान संकाय, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

(16) प्रो. डॉ.ए.के. चौधरी ....प्राध्यापक, मनोविज्ञान, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

(17) प्रो. डॉ. प्रदीप सिंह राव ....प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, राजनीति विभाग शासकीय महाविद्यालय, सैलाना, जिला-रतलाम (म.प्र.) भारत

(18) प्रो. डॉ. पी.के. मिश्रा ....प्राध्यापक ,प्राणी शास्त्र, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल (म.प्र.) भारत

(19) प्रो. डॉ. के. के. श्रीवास्तव ....प्राध्यापक ,अर्थशास्त्र, विजया राजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

****

निर्णायक मण्डल (Referee Board) मानद्

*** विज्ञान संकाय ***

गणित:- .... (1) **प्रो. डॉ.वी.के. गुप्ता,** संचालक वैदिक गणित एवं शोध संस्थान, उज्जैन (म.प्र.)

भौतिकी:- .... (1) **प्रो. डॉ. आर.सी. दीक्षित**, शासकीय होल्कर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
(2) **प्रो.डॉ. नीरज दुबे,** शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

कम्प्यूटर विज्ञान:- .... (1) **प्रो. डॉ. उमेश कुमार सिंह** अध्यक्ष कम्प्यूटर अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

रसायन:- .... (1) **प्रो. डॉ. मनमीत कौर मक्कड़,** शासकीय कालिदास कन्या महाविद्यालय, उज्ज्ैन (म.प्र.)

वनस्पति:- .... (1) **प्रो. डॉ. सुचिता जैन,** राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटा (राज.)
(2) **प्रो.डॉ. अखिलेश आयाची,** शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

प्राणिकी:- .... (1) **प्रो.डॉ. मंजुलता शर्मा,** एम.एस.जे., राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)
(2) **प्रो. डॉ. अमृता खत्री,** माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोती तबेला, इन्दौर (म.प्र.)

सांख्यिकी:- .... (1) **प्रो. डॉ. रमेश पण्ड्या,** शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)

सैन्य विज्ञान:- .... (1) **प्रो. डॉ. कैलाश त्यागी,** शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

जीव रसायन:- .... (1) **डॉ. कंचन डींगरा,** शासकीय एम.एच. गृह विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भूगर्भ शास्त्र:- .... (1) **प्रो. डॉ. आर.एस. रघुवंशी,** शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. सुयश कुमार,** शासकीय आदर्श महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

चिकित्सा विज्ञान:- .... (1) **डॉ. एच.जी. वरूधकर,** आर.डी. गारड़ी मेडिकल महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

सूक्ष्म जीव विज्ञान:- .... (1) **अनुराग झँवेरी,** बायो केयर रिसर्च (आई) प्रा.लि., अहमदाबाद (गुजरात)

*** वाणिज्य संकाय ***

वाणिज्य :- .... (1) **प्रो. डॉ. पी.के. जैन,** शासकीय हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. शैलेन्द्र भारल ,** शासकीय कालिदास कन्या महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
(3) **प्रो. डॉ. लक्ष्मण परवाल,** शासकीय वाणिज्य महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)

*** प्रबंध एवं व्यवसाय प्रशासन संकाय ***

प्रबंध :- .... (1) **प्रो. डॉ. रामेश्वर सोनी**, अध्यक्ष अध्ययन शाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. आनन्द तिवारी ,** शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर कन्या उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

मानव संसाधन:- .... (1) **प्रो. डॉ. हरविन्दर सोनी**, पैसेफिक बिजनेस स्कूल, उदयपुर (राज.)

व्यवसाय प्रशासन:- .... (1) **प्रो. डॉ. कपिलदेव शर्मा ,** राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटा (राज.)

*** विधि संकाय ***

विधि:- .... (1) **प्रो. डॉ. एस.एन. शर्मा,** प्राचार्य, शासकीय माधव विधि महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन,** प्राचार्य श्री जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर विधि महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.)

*** कला संकाय ***

अर्थशास्त्र:- .... (1) **प्रो. डॉ. पी.सी. रांका,** श्री सीताराम जाजू शासकीय कन्या महाविद्यालय, नीमच (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. जे.पी. मिश्रा,** शासकीय महाराजा स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)
(3) **प्रो. डॉ. अंजना जैन,** एम.एल.बी. शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला मैदान, इन्दौर (म.प्र.)

राजनीति:- .... (1) **प्रो. डॉ. रवींद्र सोहोनी,** शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. अनिल जैन,** शासकीय कन्या महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)
(3) **प्रो. डॉ. सुलेखा मिश्रा,** मानकुंवर बाई शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

दर्शनशास्त्र:- .... (1) **प्रो. डॉ. हेमन्त नामदेव,** शासकीय माधव कला-वाणिज्य-विधि महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

समाजशास्त्र:- .... (1) **प्रो. डॉ. एच.एल. फुलवरे,** शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. इन्दिरा बर्मन ,** शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)
(3) **प्रो. डॉ. उमा लवानिया ,** शासकीय कन्या महाविद्यालय, बीना, जिला-सागर (म.प्र.)

हिन्दी:- .... (1) **प्रो. डॉ. चन्दा तलेरा जैन,** अध्यक्ष अध्ययन मण्डल, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र)
(2) **प्रो. डॉ. जया प्रियदर्शनी शुक्ला,** वनस्थली विद्यापीठ (राज.)
(3) **प्रो. डॉ. कला जोशी,** श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

अंग्रेजी:-........................ (1) **प्रो. डॉ. अजय भार्गव,** शासकीय महाविद्यालय, बड़नगर (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. मंजरी अग्निहोत्री,** शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीहोर (म.प्र.)

संस्कृत:- .... (1) **प्रो. डॉ. भावना श्रीवास्तव,** शासकीय स्वशासी महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. बालकृष्ण प्रजापति,** शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंजबासौदा जिला विदिशा (म.प्र.)

इतिहास:-....................... (1) **प्रो. डॉ. नवीन गिडियन,** शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भूगोल:- .... (1) **प्रो. डॉ. राजेन्द्र श्रीवास्तव** शासकीय महाविद्यालय, पिपलियामण्डी, जिला मंदसौर (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. अर्चना भार्गव,** शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

मनोविज्ञान:- .... (1) **प्रो. डॉ. कामना वर्मा,** प्राचार्य, शासकीय राजमाता सिंधिया कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. सरोज कोठारी,** शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

चित्रकला:- .... (1) **प्रो. डॉ. अल्पना उपाध्याय,** शासकीय माधव कला-वाणिज्य-विधि महाविद्यालय उज्जैन (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. रेखा श्रीवास्तव,** महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

संगीत:- .... (1) **प्रो. डॉ. भावना ग्रोवर (कथक),** सुभारती विश्व विद्यालय मेरठ (उ.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. श्रीपाद अरोणकर,** राजमाता सिन्धिया शासकीय कन्या महाविद्यालय, छिन्दवाडा (म.प्र.)

***** गृह विज्ञान संकाय *****

आहार एवं पोषण विज्ञान:- .... (1) **प्रो.डॉ. प्रगति देसाई,** शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. मधु गोयल,** स्वामी केशवानन्द गृह विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
(3) **प्रो. डॉ. संध्या वर्मा,** शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मानव विकास:-................ (1) **प्रो. डॉ. मीनाक्षी माथुर,** अध्यक्ष, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
(2) **प्रो. डॉ. आभा तिवारी,** अध्यक्ष अध्ययन मण्डल रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

पारिवारिक संसाधन प्रबंध:- ... (1) **प्रो. डॉ. मंजु शर्मा,** माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोती तबेला, इंदौर (म.प्र.)
(2) **प्रो. डॉ. नम्रता अरोरा,** वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

***** शिक्षा संकाय *****

शिक्षा .... (1) **प्रो. डॉ. मनोरमा माथुर,** प्राचार्य, अरावली शिक्षा महाविद्यालय, फरीदाबाद (हरियाणा)
(2) **प्रो. डॉ. एन.एम.जी. माथुर,** प्राचार्य एवं डीन पेसेफिक शिक्षा महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)
(3) **प्रो. डॉ. नीना अनेजा,** प्राचार्य, ए.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन,खन्ना (पंजाब)
(4) **प्रो. डॉ. सतीश गिल,** शिव कॉलेज ऑफ एजुकेशन, तिगाँव, फरीदाबाद (हरियाणा)

***** आर्किटेक्चर संकाय *****

शारीरिक शिक्षा .... (1) **प्रो. किरण पी. शिंदे ,** प्राचार्य, स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, आई.पी.एस. एकडेमी, इंदौर (म.प्र.)

***** शारीरिक शिक्षा संकाय *****

शारीरिक शिक्षा .... (1) **प्रो. डॉ. अक्षयकुमार शुक्ला,** अध्यक्ष शारीरिक शिक्षा पेसेफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

***** ग्रन्थालय विज्ञान संकाय *****

ग्रन्थालय विज्ञान .... (1) **डॉ. अनिल सिरौठिया,** शासकीय महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

Pulses Intake Among Adolescent Girls And Boys Of HIG And MIG

Dr. Nandini Rekhade * Tahera Khan **

Abstract - To investigate the pulses intake of adolescent girls and boys; food intake was examined using a 7-day food frequency questionnaire of HIG and MIG in Indore city. A total of 500 girls and boys, aged from 18-21 years, residing in Indore city were selected by systematic random sampling method. Nutrient intake was assessed using the 24-h recall method and the usual pattern of food intake was examined using a 7-day food frequency questionnaire. The result reveals highly significant difference (P > 0.05), for intake of pulses of adolescent girls and boys in MIG and HIG groups.

Introduction - To overcome daily wear and tear of body muscles it is must to consume protein regularly in our routine as per the RDA. Also, adolescent is a phase of life when reserves are needed to compensate daily loses and future requirement of protein for growth and protect body from weakened tissues. Also, it is observed that adequate protein intake avoid many health issues. Protein is a critical food group for everyone. Most adults need about 10 to 11 ounces of a protein food each day. The best way to eat this is to have two portions daily of 4 to 5 ounces each of a protein food.

For most vegetarians, dal is one of the main protein sources. Dal (pulses) is the backbone of the Indian meal and definitely has a good deal of protein. Dal has several benefits including the fact that it is nutritious, tasty, and adds a perfect accompaniment to most meals. No Indian meal is complete without a steaming hot bowl of dal! But whether it is the ideal source of proteins for everybody or not remains a debatable issue.

Bilsborough S, Mann N. et al (2012) conducted a study to describe dietary protein intake in humans. Considerable debate has taken place over the safety and validity of increased protein intakes for both weight control and muscle synthesis. The advice to consume diets high in protein by some health professionals, media and popular diet books is given despite a lack of scientific data on the safety of increasing protein consumption. The key issues are the rate at which the gastrointestinal tract can absorb amino acids from dietary proteins (1.3 to 10 g/h) and the liver's capacity to deaminate proteins and produce urea for excretion of excess nitrogen. The accepted level of protein requirement of 0.8g x kg(-1) x d(-1) is based on structural requirements and ignores the use of protein for energy metabolism. High protein diets on the other hand advocate excessive levels of protein intake on the order of 200 to 400 g/d, which can equate to levels of approximately 5 g x kg(-1) x d(-1), which may exceed the liver's capacity to convert excess nitrogen to urea. Dangers of excessive protein, defined as when protein constitutes > 35% of total energy intake, include hyperaminoacidemia, hyperammonemia, hyperinsulinemia nausea, diarrhea, and even death (the "rabbit starvation syndrome"). The three different measures of defining protein intake, which should be viewed together are: absolute intake (g/d), intake related to body weight (g x kg(-1) x d(-1)) and intake as a fraction of total energy (percent energy). A suggested maximum protein intake based on bodily needs, weight control evidence, and avoiding protein toxicity would be approximately of 25% of energy requirements at approximately 2 to 2.5 g x kg(-1) x d(-1), corresponding to 176 g protein per day for an 80 kg individual on a 12,000kJ/d diet. This is well below the theoretical maximum safe intake range for an 80 kg person (285 to 365 g/d).

To understand protein intake of adolescents of Indore city the following research was done with below objective.

Objectives - To investigate the pulses intake of adolescent girls and boys of HIG and MIG in Indore city

Materials and Methods - This entire study was conducted in Indore City. In this research study 500 adolescent girls and boys of age 18-21 years were selected by purposive random sampling technique. Nutrient intake was determined by 24 hour recall method. In this study, a structured questionnaire was used regarding dietary intake and the usual pattern of food intake was examined using a 7-day food frequency questionnaire. Statistical analysis was done by using statistical tools like Z-test, mean, standard deviation, percentage, chi square test etc.

Results

Table 1 (See in last page)

* Professor (Home Science) Govt. Maharani Laxmi Bai Girls P.G. College, Fort, Indore (M.P.) INDIA
** Research Scholor (Home Science) Govt. Maharani Laxmi Bai Girls P.G. College, Fort, Indore (M.P.) INDIA

Table 1 reveals that 7.6 %, 0.0 %, 14.0 %, 25.2 %, 21.2 % and 32.0 of adolescent girls and boys were taking moong dal daily, twice a day, twice a week, weekly, monthly and occasionally in MIG group as compared to 0.0 %, 0.0 %, 46.0 %, 48.8 %, 4.0 % and 1.2 % in HIG group respectively, whereas, 21.2 %, 0.0 %, 21.2 %, 24.4 %, 9.6 % and 23.6 % of adolescent girls and boys were taking tuar dal daily, twice a day, twice a week, weekly, monthly and occasionally in MIG group as compared to 0.0 %, 0.0 %, 66.8 %, 33.2 %, 0.0 % and 0.0 % in HIG group respectively. It was observed that 0.0 %, 0.4 %, 0.0 %, 9.2 %, 21.6 % and 68.8 of adolescent girls and boys were taking mosoor dal daily, twice a day, twice a week, weekly, monthly and occasionally in MIG group as compared to 0.0 %, 0.0 %, 5.2 %, 26.8 %, 32.4 % and 35.4 % in HIG group respectively, whereas, 0.0 %, 0.0 %, 0.0 %, 13.2 %, 47.2 % and 39.6 of adolescent girls and boys were taking chole daily, twice a day, twice a week, weekly, monthly and occasionally in MIG group as compared to 0.0 %, 0.0 %, 0.4 %, 24.8 %, 44.0 % and 30.8 % in HIG group respectively. It was found that 1.6 %, 0.0 %, 0.0 %, 11.6 %, 33.2 % and 53.6 % of adolescent girls and boys were taking rajmah daily, twice a day, twice a week, weekly, monthly and occasionally in MIG group as compared to 0.0 %, 0.0 %, 0.0 %, 19.6 %, 42.4 % and 38.0 % in HIG group respectively.

Conclusion - The findings indicate that highly significant difference for intake of moong dal, taur dal and massor dal; and non significant difference ($P > 0.05$), was observed for intake of chole and Rajmah in pulses intake of adolescent girls and boys in MIG and HIG groups. Highly significant difference ($P < 0.05$), was observed between the two groups in their percentages with a Chi- values of 72.5, 79.4 and 27.1 for moong dal, tur dal and massor dal, respectively, which implies that frequency of consumption of pulses in both the groups is different.

References :-

1. Gopalan C, Rama Shastri BV, Balasubramanium SC. Nutritive value of Indian Foods. Hyederabad, India: National Institute of Nutrition, Indian Council of Medical research. 1993.
2. Kaplan, M., N.E., & James, L. - Journal of Nutrition Education and Behavior.
3. Ahmed F, Khandker MAI. Dietary pattern and nutritional status of Bangladeshi manual workers (rickshaw pullers). Int J Food Sci Nutr 1997; 48: 285-91.
4. www.detourbar.com.
5. Drlwilson.com>articles>protein.
6. m.indiatimes.com>health>healthyliving.
7. Bilsborough S, Mann N. Food Nutr Res. 2013; 57: 10.3402/fnr.v57i0.21245.

Table 1 (See in next page)

Table 1
Distribution of adolescent girls and boys of MIG and HIG as per their pulses intake

Pulses	Indices	MIG		HIG		'Chi' Value (λ^2)
		No	%	No	%	
Moong Dal	Daily	19	7.6	-	-	72.5**
	Twice a day	-	-	-	-	
	Twice a Week	35	14.0	115	46.0	
	Weekly	63	25.2	122	48.8	
	Monthly	53	21.2	10	4.0	
	Occasionally	80	32.0	3	1.2	
Tuar Dal	Daily	53	21.2	-	-	79.4**
	Twice a day	-	-	-	-	
	Twice a Week	53	21.2	167	66.8	
	Weekly	61	24.4	83	33.2	
	Monthly	24	9.6	-	-	
	Occasionally	59	23.6	-	-	
Masoor Dal	Daily	-	-	-	-	27.1**
	Twice a day	1	0.4	-	-	
	Twice a Week	-	-	13	5.2	
	Weekly	23	9.2	67	26.8	
	Monthly	54	21.6	81	32.4	
	Occasionally	172	68.8	89	35.4	
Chole	Daily	-	-	-	-	5.15 NS
	Twice a day	-	-	-	-	
	Twice a Week	-	-	1	0.4	
	Weekly	33	13.2	62	24.8	
	Monthly	118	47.2	110	44.0	
	Occasionally	99	39.6	77	30.8	
Rajmah	Daily	4	1.6	-	-	7.43 NS
	Twice a day	-	-	-	-	
	Twice a Week	-	-	-	-	
	Weekly	29	11.6	49	19.6	
	Monthly	83	33.2	106	42.4	
	Occasionally	134	53.6	95	38.0	

df =5

****

A Roadmap For Budding Professionals In Global Economy- Management Education

Dr. Kanti Pachori *

Abstract - Globalization means living in a world of opportunities and challenges. The current topical challenges regarding quality, transparency, decisional autonomy, sustainable development and pro-activity in identifying and managing resources to different extent and with various results, in promoting knowledge based societal evolution is the priority of the 21st century. The new education framework specific to the knowledge-based society has to conceive new means to offer to learner's new competences, abilities and skills, a new pattern of behaviour and a new organizational culture. It is not an optional but rather a mandatory condition for survival and competitiveness in the global markets. This paper originates in the context of growing recognition that the success of the global economy will ultimately depend on the professionalism of its workforce at industry which can be only be enriched with management education among the students (entrepreneurs or the managers of the future).

Introduction - Management education is considered as elitist as it attracts young men and women which are usually motivated by the positive consequences associated with management education. In India higher education especially management education is witnessing an exponential growth in terms of number of institutes imparting management education which are usually termed as Business School. In developing on-going customer relationships required in a global business world, twenty-first-century businesses are demanding greater numbers of well-trained, entry-level managers & executives while at the same time expecting higher levels of professionalism and skill from these individuals.

Management educations have to focus on the topics to be taught (what has to be taught) and method of delivery (how it has to be taught). Management education has to give emphasis on making management education relevant to the Indian Context, the themes to be covered, and the way the topics have to be dealt with. Detailed coverage has to be developed for each subject. Since management is a practice oriented domain, management education has to incorporate an element of on-the-job training. This will need a mix of concepts, cases, and exercises as well as simulations for themes such as business strategy, market planning, business negotiations, leadership, business ethics and team work.

There is a huge difference between being an expert, being qualified and being professional. Professionalism goes beyond having extraordinary mastery over knowledge and skills of a subject matter. It has to do with character, attitude, striving for excellence, competency, and behavior as well as ethics. Working in a specific profession (medicine, engineering, law, teaching, accountancy, public service, etc) does not really make one a professional. There are many well qualified experts in fields such as these but who are disdained as professionals, their high positions, knowledge, skills and high pay not withstanding. This takes professionalism in the public service as the ability and practice of performing a function in a systematic manner with commitment, selflessness, and concern for the general interest, adhering to agreed fundamental principles and values, laws, rules and regulations, to provide the best possible efficient, effective and innovative public services to the community all the time.

The Decagon of paradigm of Professionalism

1. Striving for Quality & excellence
2. Sustained Maximization of knowledge and sharing it
3. Persistent innovativeness
4. Constant improvement in performance
5. Seeking responsibility
6. Learning from losses/ failures
7. Valuing communication and clients
8. Concern for Positive personal image and attitude
9. Respect for ethics, laws, rules and regulations
10. Respect for diversity
11. Humble confidence

Review of Literature - Over the last decade, management education has been challenged by the increasingly competitive environment brought about by globalization and internationalization. Corporations have come to view management education as having become too theoretical and not practical enough, and graduates as being ill-equipped

* Associate Professor (Chemistry) Govt. Nirbhay Singh Patel Science College, Indore (M.P.) INDIA

for the kind of corporate leadership sorely needed (Bennis et al. 2005). In short, there is a widening gap between the level of skills and competency which corporation expect and the skills developed by business schools. Hence, the need for modern business schools to transform them and operate as centres for knowledge and skill creation, adaptation and dissemination.

Sahu K.C (1991) emphasized that values are of utmost importance and are inseparable irrespective to any form of education Management education should produce persons with such value orientation, who, through example of dedicated hard work in a spirit of service, can change the attitude of the people they manage towards work, and towards each other to ensure quality of life and of work life. A. Gill (2003) emphasized due to globalization and advancement in information technology the role played by management education in enhancing country knowledge base has been placed under a sharper focus thus it has become imperative to look at management education from the market oriented perspective and take a strategic view to better align business education with the requirement of the global market. Basu Sharma et al (1996) pointed out that internationalization of management has been promoted along several dimensions such as curricula challenge, research activities with both contents and outlet being relevant and executive development programs. It seems that educational institutions and supplementary providers of management education have no choice but to rise to the challenge of global competition.

Objective - To study different aspects of the management education required for building the management professionals.Through the suggestions & recommendations from various Management Professionals and the academia who interact with Management Students, the following changes in different aspects of the course could act as a roadmap to Management Education.

Involving Students in Research - Although projects and presentations are an integral part of the course, most projects are a victim of the 'copy paste syndrome'. Hence the project component per se, merely becomes a formality rather than helping students provide an analysis or a perspective towards different aspects of Management. The importance of research as a tool is undermined and the insights and inputs provided to the students, on ways and means of conducting research should go way beyond the theory of Research Methodology.

Students' involvement in research could be ensured by involving them in research that the faculty members are conducting. This may be for writing research papers, to be published or read in conferences/seminars.

Utilising the energies of students, to gather inputs and come up with viable solutions to issues, would orient them towards research. Faculty members could guide students whenever they encounter difficulties. So too, the brainstorming that takes place during such initiatives could also put students on the path of being a 'thinking MBA'. Opportunities for collaborated research are now being provided by many journals and conferences, whereby students' contribution to the research conducted is acknowledged.

Fostering Learning through Live Projects - Assigning live projects to students proves to be a step, towards placing them in the line of action, so that by way of familiarising themselves with the realities and trends of the corporate world, students are oriented towards analysing and problem solving. Regular interaction with the industry would also help to inculcate in students, the norms and etiquette of interacting with colleagues.

Industrial Visits in Small Groups - Almost all students and Institutes look at industrial visits as having purely recreational value. Hence there is little or no learning that takes place during these visits. Industrial units too look at visits as a disruption in their routine as they have visits scheduled on a daily basis, due to the ever increasing Management Institutes. Hence they too drive home an itinerary that gives a rather superficial view of the industry. Industrial visits should be conducted in groups of not more than ten, so that the group can actually focus on various processes and should be asked to compile a report, about their learning and observations of each industry, at the end of the visit.

Learning through Games - Right from children who join playgroup to professionals of all ages who undergo training, it has been observed that great learning can be fostered through games. Building simulation games and encouraging students' participation in Management fests that put students through application of domain related knowledge could go a long way, in making students more dynamic and participative. Using role play and theatre to create a virtual office scenario has also been seen benefitting students, to develop a perspective towards various issues which they might have to encounter in their work life.

Getting the Best out of Case Discussions - Case discussions, although hailed as a pedagogical tool by Management Institutes, the quality of cases used and their relevance could often pose problems, in understanding concepts and their application. Some faculty members also complain about the fact that although no efforts are spared by them, in terms of identifying a case for discussion, students do not take the trouble of reading the case before coming to class, let alone writing a sketchy or detailed analysis of it.

Nonetheless, case studies as a tool for discussion can succeed only if cases are relevant and in some cases also contemporary. At many Institutes, the same cases are used for a number of years and the questions and answers are discussed, as if by rote. To overcome this barrier, faculty members at many Management Institutes are encouraged to write cases, so that the gaps related to cultural relevance are bridged and students find it convenient, to relate to a business scenario that they are familiar with.

Doing a Reality Check - Recruiters have often expressed their concerns to B Schools those students pursuing an

MBA feel that the demands of the company, end at the threshold of their plush AC cabins. More often than not, the reality is exactly the opposite. To bridge this chasm, students could be asked to spend a day with Sales Representatives or with personnel on the shop floor, to familiarise them, with the practical difficulties that could come their way. This could make students more realistic in their approach, as often companies observe that students have a very Utopian picture about the market. This also helps students to be grounded and shapes their attitude towards life at large.

Delivering inputs on Soft Skills - In the wake of delivering knowledge related to technical skills, soft skills remain untouched. Companies are seen pumping a lot of time, energy and money into grooming their employees and training them in soft skills and etiquette. Soft Skills and Language training could be delivered through specific programmes designed for the purpose, where the communication skills of students could be polished by experts from the field. Many B-Schools now have Language Laboratories on campus, which could be used to supplement the knowledge of students. Students could also be encouraged to enhance their vocabulary and expression through language games (online/board games), as most of the students are observed falling short of words, to express what they feel about issues or during presentations.

Efforts on the Part of Students and Faculty -The feedback that students don't read is not unheard of. Similarly the feedback that readymade notes, model answers are given by the faculty and a limited question bank on which the exam is conducted, is also what happens often in a number of Institutes. The onus lies equally on the faculty member to be oriented towards research so that s/he can constantly challenge his/her students, to subject their minds to the limit of its capacity.

Adapting their pedagogy and delivery, to the needs of students and introducing quizzes, games, debates and discussions, to keep abreast of the developments in the field of Management could give students an opportunity, to read and hone their research skills.

Reading and observation in Management though has a larger purpose. The mark of a Management Professional, however, will be only when s/he is able to apply what is learnt in the classroom and be able to cultivate a holistic view about things, such that s/he is able to visualise the bigger picture and add a human angle to decisions/actions taken.

Conclusion - Quality management education contributes to society in other ways beyond education. The outcome of all this is that management education appears to be more relevant than ever in the "global era". The ultimate challenge of management education approaches is to become more practical oriented and industry focus reason being theory-based developments and teachings are worthless, due to the fact that they will be of little use in concrete situations when a management issue arises. Management education needs to be holistic, targeted and customized with aim to remove the gap that exist between industry requirements and academic curriculum focusing on attitude, corporate awareness, grooming and developing managerial skills.

In fact, many schools include outreach as part of their mission, and devote significant resources to address a particular need within their local business environment. Thus, high quality business schools provide nations with a competitive advantage, not only in the form of a skilled workforce, but also through intellectual contributions to general business knowledge. These contributions lead to rising income levels and economic growth.

References :-

1. Chaudhury Shekhar, (2011)., Management is not an Esoteric Discipline, Indian Management, Volume 50, Business Standard, pages 44, 45 and 48.
2. Gill,A.& Lashine,S.,(2003)."Business education: A Strategic market-oriented focus". The International Journal of Educational Management, Vol.17, No.5, pp.188-194.
3. Minouti Naik, (2012). "Turning over a New Leaf: Making Management Education Adapt to the Changing Times", Ninth AIMS International Conference on Management January 1-4, 2012
4. Nayar Karthika, 2011, Implementing Theater in Management Education: A Roadmap for the Soft Sills Trainer, The IUP Journal of Soft Skills, IUP Publications, page nos. 39-51.
5. Sahu,K. C.,(1991)"Reorienting Management Education", Economic and Political Weekly,Vol.26,No.48,pp.M133-M136.
6. Sharma, B.and Roy, J.A., (1996)."Aspects of the internationalization of management education", Journal of Management Development, Vol.15, No.1, pp. 5-13..
7. Shenoy Veena, 2009, Management Education: Innovation Needed, B Schools: Trends and Experiences, ICFAI Books, page nos. 59-62.
8. Shirodkar Preeti, Whither Management Education: Developing Competencies or Disseminating Information?, Manthan "Not Just Effective but Efficient: A New Blueprint for Management in the 21st Century, pages 398-402.
9. http://www.essaytown.com, visited on 12th November, 2011.
10. http://hdessays.com, visited on 12th November, 2011.
11. Warren G Bennis and James O' Toole (2005). "How business schools lost their way". Harvard Business Review, 83(5): 96-111

****

Impact Of Climatic Change And Economic Development Of India

Dr. Pavan Kumar Shrivastava *

Abstract - The most contentious global debate today is the obligations of the developed and the developing countries to take steps to reduce their carbon footprint. Though climate change is a danger for all countries-developed and developing alike, the quantum of responsibility for mitigating climate change is a debatable issue. There is a perceived divide between the obligations of the two worlds in which our planet is divided. The source of virtually all past emissions i.e. the developed world has a greater responsibility to take steps to reduce their carbon emissions substantially and help in stabilizing the environment which they disturbed to a large extent. This is the reason why they are subjected to binding targets of reducing their emissions by a set amount in all international agreements.

Introduction - As per UNDP's Human Development Report(HDR), 2007/2008, "Climate Change is the defining human development issue of our generation". This problem is not one which a single nation or community is facing in isolation. Rather, the issue is global in nature which is a consequence of the fact that the atmosphere is common to the entire mankind. Moreover, the problem needs to be viewed in the context of growth and development in the developing countries and how the presently poor in different parts of the world will be able to break the shackles of deprivation and have adequate access to health, nutrition, education and other basic services needed for their well-being.

India is recognized as one of the most vulnerable regions to climate change on the planet. With approximately 60 per cent of world's population residing in Asia, this phenomenon presents serious concerns for policymakers in the region. The present study analyses the impacts of climate change on economic growth of india. The results reveal that economic growth is negatively affected by changes in temperature, precipitation and population growth whereas urbanization and human development stimulates economic growth. The results also indicate that agriculture is the most vulnerable sector to climate change and manufacturing is the least affected sector.Climate change is no more an environmental concern. It has emerged as the biggest developmental challenge for the planet. Its economic impacts, particularly on the poor, make it a major governance issue as well. The debates and discussions building up for the next conference of parties (COP) in Copenhagen and beyond are an indicator of this.

While achieving "Development", remains as a major challenge of the Developing Countries; most of them are not in a position to ensure basic human need such as food, shelter, clothing and minimum "standard of living" to all of their citizens. Getting rid from Poverty, Employment, Literacy, lack of basic access to primary Health Care and Education, Free from Malnutrition, Stabilizing Population, Reduction in Infant Mortality Rate, ensuring Safe Drinking Water and Sanitation: still remains far-off for the more than the Ninety per cent population of the world today.

On the other hand, due to higher Green House Gas emissions, earth is experiencing a higher rise in temperature (40 Centigrade in 100 years), which drastically influencing the changes in the weather patterns, resulting in melting the Ice-caps, causing flash floods, droughts, cyclones, hurricanes, abnormal increase or decrease in rainfall, arising water scarcity, desertification, change in crop-yield, sea level rise or coastal flooding, causing victor-born diseases, and many unexpected natural disasters including the changes in major river systems and even adversely affecting Bio-diversity.

Climate Change And Its Impact - Climate change refers to the heating up of the earth's atmosphere due to an increase in the level of greenhouse gases. The greenhouse gases form a blanket on the earth's surface to make it habitable by not letting the heat of the sun escape the earth which would make the temperature drop to inhabitable levels. This would, in turn affect the existence of the living organisms. Due to anthropogenic or human induced factors there has been a sharp increase in the level of greenhouse gases which leads to an increase in the temperature of the earth's surface causing various ecological imbalances in the world. These emissions are also called carbon emissions since the main components of greenhouse gases are carbon dioxide and methane; both carbon rich gases. These emissions are a by-product of many human activities consisting of mainly

*Asst. Professor (Economics) Govt. S.M.S. P.G. College, Shivpuri (M.P.) INDIA

industrial activities. All human activities relating to the modern lifestyle of today's man are large contributors to the issue of climate change. The problem of climate change had its major emergence in the industrial revolution. All the activities in the industrialization process necessitate an increase in carbon emissions. Thus, the development processes of a country as well as its carbon emissions go hand-in-hand.

Higher Costs Of Development - The energy sector is already in poor financial health and in dire need of financial support. This necessitates the entry of the private sector to fulfill both the objectives of decreasing energy deficit and attaining energy security. However, the costs incurred for projects in much higher due to the environmental policies that are in place. For example, Hydro projects require the incurring of resettlement and rehabilitation costs, costs of replenishing the amount of forest cleared costs of obtaining environmental clearances etc. All these increase the overall costs of projects and deter the private sector from investing in the development of the power sector. These high costs are a step backward from the path of promotion of private investment in the sector. With a sector providing heavy subsidies to the agricultural consumer and cross subsidizing the industrial consumers, the need of the hour is to provide cheap and affordable electricity to one a

However, the developing world is gearing towards development at a very fast pace and all development and industrialization pre-supposes the need of higher emissions. Due to this, the emission levels of this part of the world are bound to increase even more rapidly.

- How much will climate change cost local, national, and regional economies?
- What are the sizes of the economic impacts in different sectors and economy-wide?
- How do the costs of action compare to the benefits of alternative responses—is it worth it to take action?
- To what extent and when should these actions start?
- What actions are most cost-effective and have to be taken
- What are the levels of investment and financing needed?
- What policies will incentivize the adoption of clean and resilient options and raise their potential for
- coping with climate change?
- What policies will help ensure synergy in adaptation and mitigation?

Recent steps - A Council has also been set up under the Chairmanship of the Prime Minister of India on 6 June 2007 constituting eminent persons to evolve a coordinated response to issues relating to climate change at the National level and provide oversight for formulation of action plans in the area of assessment. Prime Minister on June 30th, 2008 released India's National Action Plan on Climate Change. The National Action Plan (see GOI, 2008) has been prepared under the guidance and direction of Prime Minister's Council on Climate Change. The National Action Plan reflects the importance the Government attaches to mobilizing our national energies to meet the challenge of climate change. The National Action Plan focuses attention on 8 priority National Missions. These are -

1. Solar Energy 2.
2. Enhanced Energy Efficiency
3. 3. Sustainable Habitat
4. 4. Conserving Water
5. 5. Sustaining the Himalayan Ecosystem
6. 6. A "Green India"
7. 7. Sustainable agriculture
8. 8. Strategic Knowledge Platform for Climate Change

References :-

1. Adger, W. Neil (2006). Vulnerability. Global Environmental Change.
2. Agrawala, S., and others (2003). Development and climate change in Bagladesh: focus on coastal flooding and the sundarbans.
3. Bhattacharya, S., and others (2006). Climate change and malaria in India.
4. Baltagi, B.H. (2005). Barro, R., and X. Sala-i-Martin (2003). Economic Growth, 2nd edition.
5. Jyoti K. Parikh and Kirit Parikh, Climate Change and the purpose of Growth in The Economic Times dated August 25, 2008
6. Agarwala B.Climate change: India's perceptions, positions, Policies and possibilities.
7. www.oecd.org/env/climatechange/21055658.pdf
8. www.climatechangecorp.com
9. http://www.worldwatch.org/files/pdf/SOW09_ CC_ India.pdf
10. http://www.ozonecell.com/ for ozone cell

****

Expectations From Undergraduate Students And Teachers Relevant To Make In India In Higher Education

Manish Khargonkar * Dr. Rajeev Kumar Jhalani **

Abstract - The very big challenge is in front of the young Indian students as they have to face a worldwide competition. The issue of brain drain makes us aware about the Indians who are ruling the corporate sector, research field in all over the world, but the matter of fact is that most of the Indian students have no capabilities to face the above challenge. If we observe the behavior of the undergraduate students it can be felt that they are far behind from the expectations.In 2008 the semester system was made applicable in Madhya Pradesh. Continuous Comprehensive evaluation pattern is introduced to make the higher education more practical and effective. The ultimate goal is to attain the overall development of a student. The need of the hour is to analyse the same and see whether the students are really able to face the global challenge by studying into the above system. The Make in India leads towards making the Indian higher education more and more competent.

Introduction - On 25 th September 2014 the Make in India campaign was launched by our Prime Minister Narendra Modi. Which promotes the multinational companies as well as domestic companies to produce the products in India. The major objective will be job creation and skill enhancement to get a high quality. The higher education policy in our country is consistent about making the students more and more practical, say bringing them closer to the industry. In fact this means teaching how the theory can be used in practice. But the students are not as serious as they are supposed to be. So there is a question mark on the competence of higher education in Make in India.

In 2008 the semester system was made applicable in Madhya Pradesh. The initial pattern included 9 subjects , continuous comprehensive evaluation and a project in each semester. But the present pattern is of 5 subjects continuous comprehensive evaluation and project in final year. The state government is thinking about to restart the annual pattern. What happened that in just seven years the semester system is proved worthless. It seems important to analyse the effects of this system over the students and teachers. Is that means that the system is not able to make the students more competent.

“Education is the manifestation of perfection already in Man” this definition of education was given by Swami Vivekananda. He observes that every man is potentially divine and blessed with the transcendence. Every man is a store house of sentient existence, which can be manifested through action , devotion and divine knowledge. We have such a noble ideology about education in our country. In India since ancient times the Guru Shishya Parampara (tradition) is in existence. Lord Shrikrishna , Shriram were also sent to the Ashrams to take education. They were devoted disciples and grasped the knowledge which ultimately helped them in becoming extraordinary and doing heroic deeds. Rishi Sandipani and Rishi Vishwamitra, and Vashishtha, Chanakya played their roles of the king makers. There are infinite names of teachers in the Indian history who built the lives of their pupils. It becomes naecessary to think and study that what are the loop holes of the present study system those are making it less effective. What is the reason that the state government plans to remove the semester system. What are the causes of changes in the attitude of students as well as teachers. What are the other factors that has affected the working of universities and educational institutions. Why the knowledge level of students is getting low despite of scoring good marks in the examination. What are the problems those occur in the implementation of the continuous comprehensive evaluation. Why the project internship has become a formality only to score the marks.What is the reason that it became monotonous in our state. Why is it not able to build the personality of students , and why there is a lack of interest in the research area by the teachers. What is expected from an ideal student is that he should attend the classess in the college regularly. He should be fully attentive in the classroom and prepare notes during the lecture and try to revise it at home which will help him to be conceptually strong. He should try to apply the theoretical knowledge to the practical situations. The subject study is expected from books and the topics are to be studied from more than one books to know the views of different authors. He is supposed to concentrate on the exams with full energy. In todays modern world the business environment is changing very fast. The situations have become very

*Asst. Professor, R.P.L. Maheshwari College, Indore (M.P.) INDIA
** Principal, R.P.L. Maheshwari College, Indore (M.P.) INDIA

complex and the jobs are having challenges on domestic as well as international level. To meet these new challenges the old system of education is not useful. After introducing the new system of education the semester system in traditional courses and the negative impacts are coming from it, it is the need of hour to evaluate the present education system. Teaching in the new system is one of the most challenging jobs as the teacher must be conceptually perfect himself and he must be able to relate the theory concepts with the practical use in the corporate sector. This is a bit easy for the teachers who possess the experience of corporate field. But it becomes difficult for the teachers who are not having the corporate working experience. This indicates that the teacher must concentrate on self development before he gets ready for teaching.

Review of Literature - Tambwekar (2010) stated that listening makes your mind pure, intelligent , firm. It makes you understand the thought process improves the knowledge and understanding, the divine self, made clear to the accomplisher.

Mohasin and Akhtar (2012) studied the quality of higher education in Bangladesh. The main purpose of their study was twofold- first to get some lessons by examining the current strategies, reforms and second to put forward the policy recommendations. They mention that there is a need to enhance the quality of higher education in Bangladesh.

Sethi, Ghuman and Upkere(2012) found that in order to improve the quality in education sector the role of public sector should be enhanced and higher education in India should continue to be subsidized by the Govt. in an adequate manner.

Teichler Ulrich (2013) described in his study that future conscious higher education research should try to identify the thematic areas not frequently discussed at present likely to the major issues of future.

Trivedi, Soni, Kunal (2014) described that introduction of semester system in higher education is not only an examination system but it has a motto of continuous, comprehensive and in depth and research systems by designing new policies.

Bal (2014) stated that the Make in India campaign is a significant initiatives to align India's manufacturing sector into the global value chain. Higher education will play the role of force multiplier to improve the skill quotient.

Gopal and Suderrajan (2015) described that curriculum of courses needs to be restructured to meet the requirement of women empowerment. Education is a human right and an essential tool for achieving the goal of equality, development and peace. Sharma (2015) described in her research that the synergistic relationship among the students and teachers, management, parents, public government and the production system is essential to achieve an enduring multiplier effect on quality enhancement.

Deakin University from Australia announced over $A 10 million in research initiatives in crucial areas along with academic, corporate and research partners in India.

Objectives -

1. To study the expectations from students and teachers which are relevant to "Make In India" .

Methodology -

The Study - This study is descriptive in nature and explain about the expectations from the students and teachers.

Tools for Data collection - This research paper is based on secondary data. The references from various research papers and books are studied.

Expectations from students - The attitude of maximum students seems very casual about the course.

A large percentage of students of are doing professional courses like Chartered Accountancy, Company Secretary, Cost and Management Accountancy , and so they are not interested in attending the classes in the college regularly. It is expected from them to be regular in the classes.

The students are mostly found away from classrooms, so they miss the lectures of experienced faculties which is not good . Such students are not able to get the perfect subject knowledge and they cannot become conceptually strong.

Generally students are found interested in attending the classes of practical subjects, they try to avoid the theory subject classes due to this they remain weak in theoretical subjects. A perfect student is expected to be good in theory and practical both.

The study is done through guides and series like 20 questions by maximum students and at the time of semester examinations only. It is expected and very important to study from the text and reference books to increase the knowledge level and to attain the command over the subjects.

Mostly students are covering the course through coaching classes where the quality of education is not as per the standard.

The students of are generally not interested in increasing their efficiency in spoken English, Personality development. They do not take part in classroom presentations, and group discussions, departmental seminars. They are expected to do all this to build a shining career.

Due to lower income of the family the students are found engaged in jobs and other earning activities which are time and energy consuming , so they do not get time for regular studies. Mostly students are found spending their valuable time on social media like Whats App, Facebook, Twitter, Chatting etc. rather than being in the company of their teachers. It is expected from students to focus purely on studies at least in their undergraduate tenure.

Expectations from Teachers - When the students are not coming to classrooms the teachers take it positively which is not good from them. The teachers are expected to teach regularly in the class. Which is important for their own development.

What is expected is that the interest of teachers should be more in research which is generally found very low. They avoid it and found engaged in other activities like coaching. And so they are not able to share the research with the students. This leads towards a less effective teaching.

The effort of a good teacher is to make the student conceptually strong and sound. He must increase the extra reading related with subject.

The teachers should go into the classroom with a well preparation, and try to share the joy of knowledge with the students.

The classroom teaching should be interactive. So that the students should feel enthusiastic about the studies.

It is expected that the importance of project work and continuous comprehensive evaluation is not understood by the teachers, they treat it as a formality.

Conclusion - The target of the semester system is to build the overall personality of a student. The teachers have a responsibility to shape the career of the students. The need of the hour is to think on the expectations from the students and teachers if we want to be prepared for “Make In India.” It is important to change the attitude of students as well as the teachers. We are committed to produce the world class leaders in the various fields, for this honest efforts are required

References:-

1. Bal Monalisa Make In India & Higher Education Policy : The Way Forward Indian Journal Of Applied Research (2014) vol 4 issue 11
2. Gopal and Sunder rajan Higher Education and Women empowerment University News vol.53 July 2015
3. Mohsin, Akhtar, Managing Quality Higher Education in Bangladesh- Lessons from The reforms. International journal of Business Management. (59-70) 2012.
   Make In India Boosts Higher Learning, Mail online India 07/02/16
4. Sethi, Ghuman & Upkere A Critical Appraisal of Higher Education and Economic development in India. African Journal of Business Management vol. 6 (23) 2012
5. Sharma Saroj Leadership Dynamics and TQM in Indian Higher Education Sector, Setting Parameters. University News vol 53 no.38 September 21-27 ,2015
6. Teichler Ulrich Tertiary Education and Management Journal 9.31 2013
7. Triwedi, Soni & Kunal, Study of Semester System Pattern in school - an Empirical study, Prestige International Journal of Management and Research July 2013-14.
8. Tambwekar W.G. “Sprinklings of Management From Dasbodh” Yashraj Printers Mumbai.

****

Improvement In Quality Of Higher Education Through NAAC

Dr. Kanti Pachori *

Abstract - NAAC is an autonomous institution established by the UGC with the prime agenda of assessing and accrediting institutions of higher learning with all objective of helping them to work continuously to improve the quality of education. The purpose of this research paper is to focus upon the role of NAAC in ensuring the quality in defining the element of Higher Education in India through a combination of self and external quality evaluation, promotion and sustenance initiatives. This paper makes a systematic study of the measures taken by NAAC to stimulate the Academic environment for promotion of quality of teaching-learning and research in H.E. Institutions. And also to understand the level of awareness and improvements in many aspects of such H.E. Institutions post NAAC accreditation It is important to encourage self evaluation, accountability, autonomy and innovations in the Higher Education and undertake quality related research studies, consultancy and training programs and also collaborate with other stake holders of Higher Education for quality evaluation, promotion and sustenance.. In this context NAAC insists for the quality and excellence in its vision of every Higher Education institution and advocates the Best practices, benchmarking approach for quality enhancement in Higher Education.
Key words - NAAC Accreditation, Higher Education, efficiency.

Introduction - "Education according to Indian tradition is not merely a means of earning a living; nor is it only a nursery of thought or a school for citizenship. It is initialization into the life of spirit and training of human souls in the pursuit of truth and the practice of virtue" **– Dr. S. Radhakrishnan**

Education constitutes the backbone of a country as it produces the human force which plays the most determining role in the advancement of a nation and also in the progress of civilization. Education is one that provides the thrust in getting ahead and building up a powerful democratic society. Therefore, higher education is considered as an important instrument for bringing about social, economic, political and technological progress. The scope and demand for higher education is increasing day by day and the most important mission of higher education is the creation of intellects by providing world class education for promotion of global standards in the Institutions of Higher Education. The most important factor that should be taken care of is to provide higher education without compromising on the quality of education.

Need and Significance of the study - Educational system in any country cannot flourish without quality and higher education is no exception to it. With the mushroom growth of the Higher Educational Institutions no doubt quality has degraded. Since NAAC's assessment can judge the quality of a college or a university, it is expected that NAAC's assessment will lead to the academic upliftment and qualitative up gradation in the colleges. In order to find out whether NAAC's assessment to these colleges have brought about academic as well as qualitative up gradation, the investigator took an interest to study the impact of NAAC's Assessment and Accreditation on the academic as well as qualitative development of some of the accredited Colleges

Statement of the Problem - Quality of Higher Education plays a vital role in the students' career and employability. The present state of affairs with respect to quality in Higher Education is Pathetic and deteriorating. Thus this study is undertaken, to ascertain the Role of NAAC in Ensuring quality in Higher Education

Objectives of the study

1. To know the quality of Higher Education Institutions before NAAC Accreditation.
2. To know the quality of Higher Education Institutions Post NAAC Accreditation.
3. Ta measure the Impact of NAAC Accreditation on the quality of Higher Education.
4. To suggest remedial actions.

Methodology of research

1. Type of research - The study is analytical and descriptive in nature

2. Sources of data collection - Both primary and secondary data have been used. Primary data were collected through questionnaires and secondary data were relied upon journals, magazines, and websites.

3. Sampling technique - Convenient sampling technique has been used to collect the data

* **Associate Professor (Chemistry) Govt. Nirbhay Singh Patel Science College, Indore (M.P.) INDIA**

4. Sample size - The opinion of 50 faculties from various Higher Education Institutions that are NAAC Accredited has been considered

Scope of the study - The scope of the study is restricted to Bangalore city and also to the NAAC accredited Colleges in Bangalore city

Limitations - Time and resource constraint

Tools of analysis - Percentage analysis has been used to analyze the data

Analysis and interpretation of data

Table 1 & 2 (See in Next page)

(See in Next page)

Findings

Findings based on the demographic profile :

1. Majority (52%) of respondents are Male.
2. Majority (44%) of respondents are Doctorates.
3. Majority (44%) of respondents are Assistant Professors
4. Majority (68%) of respondents are Commerce and Management faculty.
5. Majority (36%) of respondents falls under the age group of 46-55.

Findings based on profile of Institutions :

1. All the institutions surveyed are NAAC Accredited.
2. Majority (60%) of the institutions have NAAC Accreditation at A grade .
3. Majority (55%) of the institutions have completed minimum TWO cycles of Accreditation.

Findings based on Role of NAAC in ensuring quality in Higher Education :

1. Majority (80%)of the respondents say that teaching efficiency at their Institution has improved post NAAC Accreditation.
2. 76% of the respondents feel that NAAC Accreditation has improved the Efficiency of examination activities in their Institution.
3. 84% of the respondents Agree that Best Practices in their institution have improved post NAAC Accreditation.
4. According to 80% of the respondents, Research activities has gained much importance post NAAC Accreditation.
5. 44% of the respondents are Undecided about the improvement in results in their institutions after NAAC Accreditation.
6. 72% of the respondents agree that students progression has increased after NAAC Accreditation.
7. 56% of the respondents feel that NAAC Accreditation has been effective in all aspects for their institution.
8. Majority 76% of the respondents feel that Students of their institution have no due awareness about NAAC Accreditation.
9. All respondents are of the opinion that the Management of their Institution has due awareness about NAAC Accreditation and its importance.
10. 60% of the respondents are undecided about Faculty members of their institution having due awareness about NAAC Accreditation and its importance.
11. 50% of the respondents feel Non-teaching staff of their institution are acquainted wit due knowledge about NAAC Accreditation
12. 72% of the respondents feel that Parents are unaware about NAAC Accreditation its

Importance and also its impact on their ward's quality education.

13. 68% of the respondents feel that the Infrastructural facilities at their institution have seen a paradigm shift post NAAC Accreditation .
14. Majority 64% of the respondents agree that NAAC Accredited Colleges are successful in Admissions.
15. 60% of the respondents are undecided about their institution paying much importance towards Placements of their students post NAAC Accreditation.

Suggestions :

The following suggestions might help in improving further the role of NAAC in ensuring quality in Higher Education :

1. Students must be encouraged to climb the ladder of Higher Education from U.G to P.G, P.G to M.Phil, M.Phil to Ph. D.
2. Some of the institutions take up NAAC Accreditation only for the sake of grade, and accordingly records are developed. This issue has to be addressed.
3. Parents and students are to be sensitized about the awareness of NAAC Accreditation and quality Higher Education.
4. Most of the libraries still lack the updated books and the latest journals and magazines, this has to be addressed seriously to ensure quality in Higher Education.
5. The institutions should design the curriculum in collaboration with industry experts to enhance employability.
6. To wrap-up the subjects the industry expert has to be appointed.

Conclusion - To conclude I would say that NAAC accreditation is playing a major role in Ensuring Quality in Higher Educational Institutions and colleges with NAAC Accreditation should not Aim at just getting Higher Grades, but should Aim at Quality Education in Real sense .which would in turn help in building a strong, qualified and highly motivated young TEAM INDIA that can assist in Nation Building.

References :-

Websites :

1. www.wikipedia.org/wiki/NAAC
2. http://www.yourarticlelibrary.com/education/role-of-national-assessment-and-accreditation-council

Journals :

1. The Clarion Parbin R Akhtar and Sushmita Chowdhury
2. Volume 2 Number 2 (2013) pg. no.103-111
3. Primary data was collected through Questionnaires from the Faculty members of Various NAAC Accredited Institutions.

Table1: Demographic profile of respondents

Particulars	Independent Variables	Frequency	percentage
Gender	Male	26	52%
	Female	24	48%
Qualification	P.G	16	32%
	M.Phil	08	16%
	Ph.D	22	44%
	NET/SLET	04	08%
Designation	Lecturer	06	12%
	Assistant professor	22	44%
	Associate professor	14	28%
	Professor	04	08%
	H.O.D/ Director	04	08%
Stream	Commerce/management	34	68%
	Science/technology	08	16%
	Humanities/ languages	08	16%
Age	25-35	12	24%
	36-45	16	32%
	46-55	18	36%
	Above 55	04	08%

Table 2: variables measuring Role of NAAC in Ensuring Quality in Higher Education

S.	Variables	Strongly Agree	Agree	Undecided	Disagree	Strongly Disagree
1	NAAC Accreditation has improved Teaching efficiency in your Institution	08 (16%)	32 (64%)	06 (12%)	04 (08%)	00 (0%)
2	NAAC Accreditation has improved Quality of Examination activities in your Institution	20 (40%)	18 (36%)	06 (12%)	06 (12%)	00 (0%)
3	Best Practices in your institution has seen an improvement due to NAAC Accreditation	18 (36%)	24 (48%)	04 (08%)	00 (0%)	04 (08%)
4	Research Activities has gained much Importance post NAAC Accreditation	22 (44%)	18 (36%)	10 (20%)	00 (0%)	00 (0%)
5	There has been tremendous improvement in results in your institution post NAAC Accreditation	14 (28%)	14 (28%)	16 (32%)	06 (12%)	00 (0%)
6	Students progression has been improved due to NAAC Accreditation	12 (24%)	24 (48%)	06 (12%)	06 (12%)	02 (04%)
7	NAAC Accreditation has been effective in all aspects for your institution	12 (24%)	16 (32%)	14 (28%)	08 (16%)	00 (0%)
8	Students in your institution are aware of NAAC Accreditation and its Importance	06 (12%)	06 (12%)	33 (66%)	05 (10%)	00 (0%)
9	Management of your institution are aware of NAAC Accreditation and its Importance	38 (76%)	12 (24%)	00 (0%)	00 (0%)	00 (0%)
10	There is due Awareness among Faculty members about NAAC Accreditation	15 (30%)	05 (10%)	20 (40%)	10 (20%)	00 (0%)
11	Non-teaching staff are aware of NAAC Accreditation	15 (30%)	10 (20%)	25 (50%)	00 (0%)	00 (0%)
12	Parents are aware of NAAC Accreditation and its Importance	06 (12%)	08 (16%)	24 (48%)	12 (24%)	00 (0%)
13	There has been a paradigm shift in infrastructural facilities in your institution post NAAC Accreditation	22 (44%)	12 (24%)	12 (24%)	04 (08%)	00 (0%)
14	NAAC Accredited Colleges are more successful in Admissions	18 (36%)	14 (28%)	14 (28%)	04 (08%)	00 (0%)
15	Your institution pays much importance to students' Placement post NAAC Accreditation	12 (24%)	8 (16%)	26 (52%)	04 (08%)	02 (04%)

****

Language Problems In India

Dr. Usha Dash *

Introduction - Society is the web relationship of human beings. Though society changes from STONE AGE to SPACE AGE by the natural phenomenon, evolution of man is still in dream. But the process of evolution. Cycling process man become man from an animal. At first the human beings face difficulty in expressing their thought. So firstly they express they express his thoughts through languages, which is vital process of communicating each other.

India is country of vast geographical dimensions and diversities. Its territory ranging from the snow-capped Himalayan peak in the north to the Indian ocean in south, from Maharashtra and Gujarat in the west to the Eastern extremes of Assam and other north-Western frontier states holds people of various categories not only in physical appearance but also in language, religions and traditions. Differences or problems are natural to exist among them But sometimes this variation or problem results in such STRIFES and STRUGGLE, BITTERENCE and BLOOD SHED, MISUNDERSTANDING and MISERY, DEATH and DESTRUCTION that these is complete imbalance in the natural life and abstracts for national development. Among there problems language problem is very important because language is a vehicle of human expression. Language is a gift that man has placed at the best living being of the world. Without language a man can at least be imagined as a superior animal who has limited expression, As there is no unique language, generally language problem arises.

Historical, Background Of The Language Problem - In the earliest times Sanskrit used to the language of general education and that of the court and culture. Then prakriti language became for a time the medium of instruction during the Buddhist period from the 5th Century B.C. to about 3rd century A.D. But in the middle ages too the medium of higher education was either Sanskrit and Arabia or Persian. But it was during this period that the regional language of India, namely Bengali, Hindi and Urdu etc. developed and flourished. The regional languages were also used as media of instruction at the primary level of education that is in the pathashalas and maktabs etc.

In nineteenth century, the year of 1835 Lord Macaulay and William Bentinck stood for English as the medium of instruction. In 1844 Lord Harding declared the knowledge of English essential for entry to Government service. Thus English administration got more encouragement but this increased the anger of the Indian public against the British Rule. This continued till 1937 when the movernment for independence a wakened a sense of consciousness for Indian.

The British left India in 1947 in a linguistic chaos. Non of the major Indian languages, each rich its own way and spoken by millions of people was in position to make undisputed claim to being the lingua-franca, and only after prolongea and most heated controversies was Hindi elected to be the federal language of the majority. An article 343 and 344 of our constitution provides that Hindi in written in Devanagari script will be the official language of India. It was also laid down that switch-over from English to Hindi should be made after 15 years that is by the year 1965.)

Recommendations Of Differnent Commissions Regarding Language - Mudaliar commission's Report (1952-53)

The secondary Education Commission (19952-53) under the chairmanship of Dr. Laxman Swami mudliar made the following recommendations -

1. The mother tongue or the regional language should genraly be the medium of institution throughout the secondary school stage.

2. Drring the middle school stage every child should be tought at least two language, English and Hindi.

3. At the high and higher secondary stage (classes IX - X/XI) only two compulsory languages should be studied, one of which being the mother tongue or the regional language.

The languages to be studied in the secondary stage should be:

(i) Mother tongue or regional language or a composite courses o the mother and a classical language.

(ii) One other language to be chosen from among the following:

(a) Hindi (for those whose mother tongue is not Hindi).

(b) Elementary English (for those who have not studied English at the earlier stage)

(c) Advanced English (for those who have not studied English at the earlier stage)

(d) A modern Indian language (other than Hindi)

(e) A classical Language.

National policy on Education (1968) observed – at the secondary stage, the stage, the state Government should

* **Faculty (Education) jiwaji University, Gwalior (M.P.) INDIA**

adopt, and vigously implement, the three language formula which includes -

1. The study of modern Indian language, preferably one of the southern languages apart from Hindi & English in the Hindi speaking states.
2. Hindi along with the regional language.
3. English in the non-Hindi speaking states.

In the words of NPE, 1986 "the Education policy of 1968 had examined the question of the development of lulnguag3ews in great detail; its essential provisions can hardly be improved upon and are as relevant today as before."

Problems Of Language - According to Dr. triguna sen "the language problem had become a 'hump' in India's progress in the field of education. The only was to get over his (hump) is to put this controversy behind us and take clear and unequivocal decisions and implement them in a sustained manner".

The cultural history of India shows that the culture of ore than 80% of the people of India is based on Sanskrit the grand mother of all languages. Therefore, it was considered highly desirable specially by the people from the south, that Sanskrit be chosen as the national language .

"to make Hindi the national Language" said on ancient south Indian at last as far as south Indian is concerned amounts to change of foreign masters. Instead of English, Hindi will rule Regarding the language issue, pandit Nehru in convocation address at the osmania university in December 1948 and in some of his other subsequent speeches in Ahmedabad and Delhi highlighted two important points.

1. A language must be a living growing thing, must be flexible and receptive and must retain all the cultural features it has imbibed through the ages.
2. No language can be forced down the throats of unwilling people by a resolution of Act of Parliament.

However his passing remarks on the language issue greatly eased the situation and after great deliberation the constitution Assembly choose Hindi on the devanagari script as the National Language as it is spoken by a large number of Indians and has link with all the regional language of the company.

With the advent at independence, the problem of the national language and official language came up for discussion. The constitution lays down that "the official language at the union shall be Hindi and that for a period of 15 years from the commencement of the which if was being used immediately before such commencement." The new constitution also lays down that a state may be lawa adopt any language in use in the state or Hindi as the language for all or any official pruposes of that state.

Another problem which has to be tackle, arises from th3 privileged position assigned one linguistic group. For example - A citizen of U.P. will have to study only one language Hindi, his mother tongue, which is both the regional language and the National Language, While a citizen of madras will have to study an additional language. The position of linguistic minorities will be still more difficult. A muslim in Hyderabad or a Sindi in Bombay will have to study three languages, his mother tongue, the regional language and the National Language. Such differences are likely to cause difficulties for the pupils and bitterness among the linguistic group.

THE Complexity Of The Language Proble- "Bilingualism" or "multilingualism" has created a number of problems concerning the status of language in our curriculum.

The term Bilingualism refers to double language. For example – there are families where the language of father and mother is different. In such families children often learn and speak two languages. In some other Cases parents like to teach a foreign language along with the mother tongue from the early childhood. Thus the Bilingualism comes into action in the child.

The diversity of language in India has generated a number of problems concerned the status of languages in our curriculum. The problems are made still more complex by the political pressures on the educational planners. The problems are -

(a) Which language should be the medium of instruction of the various levels?
(b) Which language should be the official language of the union ?
(c) Which language should be the link language ?
(d) Which language should be the place of English?
(e) Which language should be the place of Hindi?
(f) Which language should be the place of classical language?
(g) At what stage should we begin one or two or three of four language and how many languages should be taught at each stage?

Medium of instruction - In India the medium of instruction has remained a much controversial issue since the beginning of the 19th century. In 1835, Lord Macaulay and Bentick put forth arguments in favour of English and suggested English as the medium of instruction.

In the present country, country, after the world war IST, there was a national consciousness and the nationalist leaders all over the country felt the need of a national patterns of educational system for the country. After the independence of country, the question of medium of instruction assumed a formidable shape and constructive steps where taken in this direction.

Official language - The constitution laid it sown that Hindi shall be the official lanulgage of the union and that English would continue for fifteen years from the inception of the Indian until 1965.

Naturally a language adopted as the official language of the union must be known in all parts of the country so that people everywhere have equality of opportunity for all types of central services. The opposition of Hindi stems from the fact that although this language is spoken and understood by a large who live in the south. Hence the southern will be placed at the disadvantage if this language becomes the official language.

Some Advocate adoption of Hindi as the official, others would like it to be English while still others would compromise and have both. Undoubtedly such a policy will result in dividing the country into two, the part where Hindi is the official language and the part where English is the official language. Though Bilingualism is only a temporary solution. For example – the instance of Canada where bilingualism has been in existence over many years. English and French being the official languages and the agitation of the French population for a separate French speaking state in Canada should be an eye-opener in this direction. Article 346 provides for the use of official language for official communication between a state and the union or between one state and another,

Link language - A link language for academic purpose is necessary – to facilitate the interchange of teachers between one part of the country and another. It is to serve as medium of instruction and research in all- India centres of learning and in cosmopolitan cities like Bombay.

As some centres will contain students and teachers belonging to all he linguistic areas, it is very much doubtful if Hindi can serve students and teachers belonging to all the linguistic areas, it is very much doubtful of Hindi can serve the purpose of a link language.

Sanskrit can serve the purpose of a link language, but it is not a spoken language. The claim of English to countinue as the link language for the academic purposes in indisputable. It has been the link language for more than a century.

English - English is very useful and highly developed language. The primary stage does not come in the field of controversy regarding the place of 'English' in the scheme of studies. The controversy Is mainly with regard to the higher studies at secondary and university stages. Secondary continues to be the stepping – stone to college. The universities continue to dominate the theory and practice of secondary education. Hence the place of English of the secondary level is mainly to be decided by the role of English of the university stage.

English is indispensable for the present. So it should be a compulsory subject from the high school. English is taught at the secondary school stage in France, Japan, Germany, U.S.S.R. and in many other countries of he world. In India the study of English at the secondary school stage is really desirable but it should not be given an undue importance.

The Three Language Formulla - In the year 1956 the central advisory Board of education originated the three language formula. This formula was approved in 1961 in chief minister's conference. According to this formula- the students learn his mother tongue as the regional language, Hindi as the national language and English as the international language.

The education commission (1964-66) (Kothari commission) modified broadly to the three- language formula devised by the CBSE – the modifled formula includes-

1. Mother tongue or the regional language.
2. The official language of the union or the associate official language (this means either Hindi or English).
3. Any modern Indian of foreign language other than that used as the medium or instruction.

Suggestions For Solving The Language Problem - On the basis of recommendations of different commissions, suggestions of Advisory committees and needs of the country. The following suggestions may be useful for some main language problems -

1. Equal languages for all – there should be no imposition of any other language in any person.
2. Teaching of foreign language Amongst the foreign languages, the place of English is most important from the point of view of international communication. In the development of Indian education the utility of English is recognized only at the higher education stage. Hence its teaching should begin from class VI so that the students may gain necessary knowledge of English by the time they reach the university stage. At the higher education stage, English will be available as and optional subject for those students who want to offer it.
3. Teaching of Indian languages – Hindi has been selected as the national language due to some of its qualities and peculiarities, spoken by a vast majority of the people in India for their inter-personal communication, contacts and in order to inculcate socialbility and community feeling, an Indian language is very necessary.
4. Teaching of other Indian languages- Regarding the teaching of other Indian languages, the recommendations of Emotional integration committee of 1961, orgainsed the under the chairmanship of Dr. sampurna Nanda has criticised to two language formula while accepting the three language formula. The following suggestions will be useful regarding this problem -

I. Provincial languages (state) should be made the medium of instruction. Efforts should be made to develop those languages, which are fit to be the medium of instruction.
II. People of Hindi speaking areas should learn some south Indian language as a second language.
III. Students of non-Hindi areas should taught Hindi and English after the primary stage.
IV. Some regional languages can also be made medium of instruction at the higher education level.

5. Multi-lingual states – Now U.P. Punjab & Assam are more than any languages spoken by people. For solving their language problem the following suggestions may important -

(a) The language spoken by majority of people should be the stage language and medium of instruction. In such stage education should be given in state-language from the primary classes.
(b) State should make arrangements for the teaching of minority language also. So in place where there is a good number of students learning a particular language,

necessary arrangements for the teaching of that language should be made.

(c) The union Govt. or state Govt. should established education institutions, providing education through the National language.

(6) Mother tongue should be the medium of instruction up to the secondary level.

(7) Teaching of national language to every child of the country.

(8) Provide facilities for the study of important library languages- the study of modern important library languages other than English should be made possible in selected schools in each state, with the option studying of English or Hindi.

(9) Teachers proficiency in two or three languages needed. It is necessary if students with one regional language are to be taught a language different from it.

Conclusion - Language is related to the inner impulses of man. Every class, group community or people or a region have a particular affirmity with their language while thinking about it, it is a very natural for the people to become attached to their language sensitiveness, emotional feelings and cultural values. To conclude. We can say that all must agree to three language formula. Mother tongue is a must and it should be the medium of instruction. Hindi is our National pride and link language. English is our inter-national language.

References :-

1. J.S. Walia – Modern Indian education and its problems.
2. J.S. Agrawal – Development and planning of Modern Education.
3. S.K. Kochhar – Pivotal issues in Indian Education.
4. S.P. Chaube and A. Chaube – Modern Trends in Education.
5. KK. Das – Current problems in Indian Education.
6. R.N. Safaya – Trends and Issues in Education.

****

Effect of Histamine H_4 receptor (agonist and antagonist) on Melenophores of a Teleost Fish *Rasbora elanga* (Ham.)

Meena Swamy *

Abstract - In the present study it is observed that the histamine *perse* caused dose dependent significant aggregating effects in the dorsal skin melanophores of *Rasbora elenga*. Higher concentrations of histamine caused more sever aggregating effects of the scale melanophores. The isolated scale melanophores of fish *R.elanga* maintained an intermediate state in physiological solution of 0.7 % NaCl. After this, melanophores are pretreated with a specific H_4 Receptor antagonist JNJ-7777120 in the concentration of $2×10^{-6}$ g/ml and later incubated in increasing concentrations of histamine in a logarithmic scale of $1×10^{-6}$ g/ml to $6.4×10^{-5}$ g /ml. In the lowest concentration of $1×10^{-6}$ g/ml of histamine, it was observed that JNJ-7777120 blocked the melanophore aggregation effect of histamine *per se.* Increase in the concentration of histamine with the blocker JNJ-7777120 to $6.4×10^{-5}$ g /ml the teleost melanophores were not able to aggregate in the presence of the antagonist.

It was observed that H_4 agonist VUF 84/30 induced physiologically significant melanophore aggregation in all concentration. The initial concentration of VUF 84/30 *perse* of $1×10^{-6}$ g/ml showing aggregation. Increase in the dose concentration of H4 receptors VUF 84/30 caused severe aggregation of all the melanophores.

After that the scale melanophores of *R. elenga* were pre-treated with a constant dose of EDTA ($2×10^{-6}$ g/ml). The highest concentration of H4 agonist, VUF 8430 in presence of H4 antagonist JNJ 7777 120 and EDTA, it was observed that the powerful melanin aggregating response was completely blocked.

Key words - *Histamine, JNJ-7777120, VUF 84/30,* EDTA, *Melanophores, Aggregation.*

Introduction - The natural colours of plants and animals have attracted the attention of scientists. In animals, various classes of pigment cells responsible for the different colours. These pigment cells are chromatophores and the most important is the melanophore.

Chromatophores are integumentary colored cells responsible for changing the colors. It contains pigment that can disperse or concentrate thereby changing the colour of the bearers. These cells are located in the skin, scales or even in certain deeper tissues of the body. The melanophores are specialized cells which posses pigment granules. In animals pigment cells are called as melanocytes whereas in cold blooded vertebrates these cells are called as melanophores.

Chromatophores, on the basis of the colour pigment present in them have been classified as : **Melanophores**, **Iridophores, Xanthophores, Erythrophores.**

Melanophores are large black or brown specialized cells which posses thousands of pigment granules, the melanosomes, which contain melanin, a black or dark brown pigment. These are ovoid, aster shaped cells with long dendrites protruding out from a central core and respond to external stimuli also like light, temperature and humidity etc.

Melanophores derived from the neural crest, and are present in the epidermal and dermal layers of cold blooded vertebrates. These are enclosed with two membranes, outer limiting membrane and inner cytoplasmic membrane. The translocation of pigments is displayed either by aggregation or dispersion across the cytoplasm, which is controlled either by the hormones or nerves or as by a combined action of both (Goodman LS and A. Gilman 2006).

Aggregation And Dispersion Of Melanophores : The movement of pigment within the melanophores results in remarkable changes in the colour of the skin (Haimo, 1998; Kasukawa *et al.,* 1985; Kasukawa *et al.,* 1987; Ali, 1983; Ali *et al.,* 1995 and 1998). Aggregation is the concentration of the pigment when it moves toward the centre of the cell and dispersion is, when the pigment moves outwards.

The effect of drugs and their site of action in melanophores have been investigated in a number of lower vertebrate species (Fujii and Novales, 1969; Bagnara and Hadley, 1973; Fujii and Oshima, 1994; Fujii, 2000 and Salim and Ali, 2011, 2012). The present paper deals with the mechanism of dispersion and aggregation induced by histamine and acetylcholine on melanophores of freshwater fish *Rasbora elanga* (Ham.)

Subtypes of Histaminergic Receptors:

- Histamine receptors are - H1, H2, H3, H4, distinguished by the actions of agonist and antagonist drugs on each receptor type.

* H.O.D (Zoology) Government Autonomous Post Graduate College, Chhindwara (M.P.) INDIA

Histamine Agonists

- "An Agonist is a term used to describe a type of ligand or drug that binds and alters the activity of a receptor.".

Histamine receptor Agonists are as follows-

1. H1- RECEPTOR AGONIST- Pyridyl ethyl amine.
2. H2 RECEPTOR AGONIST- Amthamine
3. H3- RECEPTOR AGONIST – Immethridine
4. H4 HISTAMINE RECEPTOR AGONIST – VUF 84/30.

Histamine Antagonists

- Antagonist is a type of receptor drug which also binds to a receptor but which does not alter the activity of the receptor.
- **Histamine Ligand Antagonists**

1. H1- RECEPTOR ANTAGONIST – Di phenir amine
2. H2 RECEPTOR ANTAGONIST – Ranitidine
3. H3 RECEPTOR ANTAGONIST – Thioperamide
4. H4 RECEPTOR ANTAGONIST – JNJ 7777 120

Potentiator of Histamine : Compound 48/80 or EDTA.

Drugs used for experiment - In the present study, the effect of H4 agonists and H4 antagonists of histamine along with their potentiators have been studied using the scale melanophores of *Rasbora elanga.*

1. Histamine Perse
2. H_4 Agonist - VUF 84/30
3. H_4 Antgonist - JNJ 7777 120
4. **Potentiator of Histamine:** Compound 48/80 or EDTA.

Material And Methods - The teleostean fish *Rasbora elanga* has been selected for studying the effects of recent new class of histaminergic drugs and cholinergic drugs on its isolated dorsal scale melanophores, in order to find the nature and role of receptors of histaminergic and cholinergic type in controlling skin pigmentation processes, i.e. skin darkening and lightening. The fish was selected for the present study because of its easy availability, sturdy nature as it can be kept live in laboratory conditions for long periods and the fact that its melanophores are excellent model for *in vitro* studies.

The live fishes were caught with the help of fishermen from various water bodies, kept in large aquaria in the laboratory at room temperature between 25^0 C to 30^0 C. Average length is between 8 to 10cm. and weight is 20-25gm.

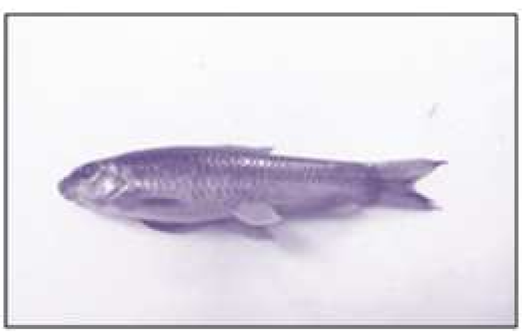

Fig. 1 showing photograph of *Rasbora elanga*

Procedures for experiments with isolated scale melanophores of *Rasbora elanga* - Fish scales were carefully removed (according to standard method of Spaeth 1913) With the help of sterilized fine tipped forceps from the dorso lateral and dorso ventral region of the live fish *Rasbora elanga.* Scales were immediately transferred in 0.7% fish saline in transparent glass Petri dishes of 8 cm size. 0.7 % Fish Saline was used becaues fishes remain in an intermediate state in this saline for about 30-45 minutes.

Each fish scale had 50-100 melanophores of equal size and these were uniformly distributed. The freshly prepared solutions of all drugs and their different agonists, antagonists and potentiators were prepared freshly in distilled water before use and the concentration of all drugs are expressed in gm/ml. After 5 to 7 min of equilibration in the saline, the scales were transferred to Petri dishes and incubated in known concentrations of extracts of plants or drug solutions (agonists/antagonists) for 10 min with regular aeration. The skin pieces were first preincubated for 5-8 min in the specific antagonist and then treated with varying concentrations (1×10^{-6} to 6.4×10^{-5}g/ml,)of the agonists in a dose –dependent manner for 5-8 min.

Measurement methods - Melanophore responses were then measured using a previously calibrated Leitz ocular micrometer according to the methods of Ali (1983) and Ali *et al., (1998)* based on the methods of *Bhattacharya et al., (1976)* and Hogben and Slome (1931).

In this method, the actual diameter of ten randomly selected melanophores from the drug treated fish scales is exactly measured and staged as mean melanophore size index (MMSI). This method is a modified version of the melanophore size index method of Bhattacharya *et al., (1976)* Ali *et al., (1998).* All drugs were freshly dissolved in 0.7% fish saline and buffered to pH 7.4 for control experiments.the scales were immersed in fish saline only for 5-8 min and the MMSI was recorded accordingly.

Statistical Analysis

Actual Mean Melanophore Size Index Measurement Methods - Leitz occular micrometer of Erma Company Japan was used for recording the size of melanophores. Exact diameter of melanophores was measured using a previously calibrated stage micrometer with 10x10 magnification of the microscope, as per method of Bhattacharya *et al., (1976).* The measurement involved the actual diameter of 10 randomly selected melanophores (Length x Breadth). The value was then multiplied by the unit of the micrometer which was 15. Thereafter the mean was calculated and this value was then divided by 100 to obtain the values in a digit with three decimal points .This was Mean Melanophore Size index, (MMSI).

$$(MMSI) = \frac{VD \times HD}{100} \times 15$$

Where,

VD = Vertical diameter

HD = Horizontal diameter

Scales after being removed were placed in 0.7% fish saline. Two of the scales were transferred in a Petri dish containing the same saline and the MMSI of the group of ten melanophores was recorded from these control scales. Ten such pairs of scales were used in different dishes, with each dish having a concentration of drug. After a constant incubation period which ranged between 7 -10 minutes the MMSI of ten such treated melanophores from each concentration was recorded. So that a set of experiment comprised the measurement of responses of about hundred and fifty melanophores. The standard error (+SE) of the mean values of MMSI was calculated using the standard methods of statistical analysis.

Results And Discussion - The isolated scale melanophores of fish *R. elanga* maintained an intermediate state in physiological solution of 0.7% NaCl. After this, melanophores are treated with series of various concentrations of histamine (perse) i.e., 0.2×10^{-6} µg/ml, 0.8×10^{-6} µg/ml, 3.2×10^{-6} µg/ml, and 6.4×10^{-6} µg/ml for 10 to 20 minutes. It was found that histamine *per se* aggregated the dorsal skin melanophores of *R. elenga* in varying doses ranging from 1×10^{-6} g/ml to 6.4×10 10^{-5} g /ml. The MMSI decreased from the control value of 4.532 $\pm$ 0.1282 to 0.9257 $\pm$ 0.05455 by the highest dose of histamine. The different concentration of histamine used in the present study ranging from 1×10^{-6} g/ml to 6.4×10 10^{-5} g /ml, could gradually and markedly aggregate the scale melanophores, since the MMSI decreased only slightly in lower dose from the control value of 4.532 $\pm$ 0.128 to 4.157 $\pm$ 0.223 as seen by the first concentration of 1×10^{-6} g/ml of histamine per se. Higher concentrations of histamine caused more sever aggregating effects of the scale melanophores. From these result it becomes clear that histamine *per se* caused dose dependent significant melanin aggregating effects in the melanophores of the fish, *Rasbora elenga* in all concentration used.

The isolated scale melanophores of fish *R.elanga* again maintained an intermediate state in physiological solution of 0.7 % NaCl. After this, melanophores are pretreated with a specific H_4 Receptor antagonist JNJ 7777 120 in the concentration of 2×10^{-6} g/ml. They were later incubated in increasing concentrations of histamine in a logarithmic scale of 1×10^{-6} g/ml to 6.4×10^{-5} g /ml. It was observed that JNJ7777120 blocked the melanophore aggregation effect in the lowest concentration of 1×10^{-6} g/ml of histamine *per se.* The MMSI remained 4.537 ± 0.0513 by the initial dose of the antagonist, which is near the MMSI of the control melanophores of 4.783 ± 0.07546. The blockade of the histamine melanophore aggregating effect by JNJ7777120 continued at the highest concentration of histamine i.e. 6.4×10^{-5} g/ml, no aggregation was observed and the MMSI recorded was 4.380 ± 0.09258 (Table-5). In the absence of antagonist JNJ7777120, the effect of histamine was highly aggregating in nature, as the MMSI at this concentration was 0.9257 ± 0.05455.

After that the melanophores of R.elenga were previously bathed in 0.7% Saline in order to bring the melanophores in the neutral state, where melanophores remained in a state of neither aggregation nor dispersion. When such scale melanophores were incubated with H_4 Agonist VUF 84/30 in the concentrations ranging from 1×10^{-6} g/ml to 6.4×10^{-5} g / ml, it was observed that This specific H4 agonist of histamine caused significant melanophore aggregating effects in all concentrations ranging from 1x10-5 g/ml to 6.4×10-5 g/ml. The melanophores showed gradual aggregation dose dependently, the last highest concentration of the specific agonist of histamine H4 receptors caused severe aggregation of all the melanophores where the MMSI had become 0.9971 ± 0.2136 from a control value of 4.577 ± 0.1427.

Effect of EDTA (Histamine releaser) on the scale melanophores of *R. Elenga* - The scale melanophores of *R. elenga* were pre-treated with a constant dose of EDTA (2×10^{-6} g/ml). These were further treated with increasing concentrations of histamine and VUF 84/30 ranging from 1×10^{-8} to 6.4×10^{-7} g/ml each, along with their specific histaminergic receptor antagonists ie. JNJ 7777120 respectively.

It was found that the *per se* melanin aggregation effects of histamine got highly potentiated by 2×10^{-6} g/ml of EDTA. The isolated scale melanophores aggregated rapidly from a value of 4.170 ± 0.04175 (0.1332) to 3.426 ± 0.1420 **(**0.0689) by the initial concentration of 1×10^{-6} g/ml of histamine in conjunction with EDTA. Increase in concentration of histamine to 6.4×10^{-6} g/ml in presence of EDTA further aggregated the melanophores and a very low MMSI was recorded as 0.8571 ± 0.1953. At the similar concentration the MMSI of histamine *per se* without EDTA was of higher value. It was noticed that approximately 50% augmentation took place by EDTA in this particular dose of histamine.

Effects of histaminergic potentiator, EDTA and histamine on the responses of *R. elenga* melanophores treated with H4 receptor antagonist JNJ7777120

The H4 histamine antagonist, JNJ7777120 completely blocked the melanin aggregating effects of histamine and EDTA. EDTA (2×10^{-6} g/ml) treated melanophores did not aggregate at all in any of the histamine concentrations used, ie from 1×10^{-6} to 6.4×10^{-5} g/ml in presence of 2×10^{-6} g/ml of JNJ7777120.

In all concentrations of histamine used ie from lowest to highest, even in presence of EDTA, there was no aggregation of any melanophores. The MMSI ranged 4.316 ± 0.04775 through out the dose related concentrations. These data clearly demonstrate that the specific histamine H4 receptor antagonist JNJ 7777120 effectively blocked the melanin aggregating effects of both histamine as well as EDTA, suggesting the presence of H4 histaminergic receptors also on the melanophores of this species, corroborating the earlier *per se* data .

Effect of potentiator, EDTA and VUF 8430 (H4 agonist) on the responses of isolated scale melanophores of *R.elenga* treated with H4 antagonist, JNJ 7777 120 -

The responses of melanophores to VUF 8430 in presence of EDTA, incubation of melanophores was done in 2×10^{-6} g/

ml of H4 antagonist JNJ 7777 120 for 7-12 minutes. Later on these antagonist pretreated melanophores were challenged with JNJ 7777 120 in the concentrations ranging from 1×10^{-6} to 6.4×10^{-5} g/ml. The highest concentration of H4 agonist, VUF 8430 in presence of H4 antagonist JNJ 7777 120 and even EDTA, could not induce melanin aggregation effect of melanophores, as the MMSI the MMSI remained between of 3.31 ± 0.07922 to 3.75 ± 0.0085. Thus it was observed that the powerful melanin aggregating response was completely blocked by JNJ 7777 120 at all the increasing concentrations of VUF 8430.

Table no. 1,2,3,4,5,6 & 7 (See in next page)

Graph no. 1 & 2 () see in last page

References :-

1. Ali AS, Peter J and Ali SA (1995). Role of cholinergic receptors in melanophore responses of amphibians. Acta Biol. Hung. 46; 61-73.Goodman and Gillman (2006).
2. Ali SA (1983). Physiology and pharmacology of the melanophores of a teleostean fish *Channa punctatus. Ph.D. thesis. Bhopal university Bhopal.* India., 1-281.
3. Ali SA, Ali AS, Ovais M (1993). Effect of histaminergic drug on tail melanophores of tadpole. Indian J Exp Biol. 31:440-2.
4. Ali SA, Peter J and Ali AS (1998). Histamine receptors in the skin melanophores of Indian Bull frog, *Rana tigerina. Comp. Biochem.* (Elsevier) A 121; 229-234.
5. Bagnara JT and Hadley ME (1973). Chromatophores and colour changes. Prentice Hall, Englewood, Cliffs, New Jersey.
6. Bhattacharya SK, Parikh AK and Das PK (1976). Effect of catecholamines on the melanophores of frog *Rana tigrina*. Ind. J. Expt. Biol 14; 486-488.
7. Fujii R (1969). Chromatophore and pigments. In: Fish Physiology, 3; 307- 353. (Eds. W.H. Hoar and Randall, D.J.). Academic Press New York.
8. Fujii R and Oshima N (1986). Control of chromatophore movements in teleost fishes Zool Sci. 3; 13-47.
9. Haimo L (1998). Reactivation of vesicle transport in lysed teleost melanophores. Meth. Enzymol. 298; 389-399.
10. Hogben LT and Slome D (1931). The pigmentary effector system VI. The dual character of endocrine co-ordination in amphibian colour change.Proc. R. Soc. London. 108;10-53.
11. Kasukawa H, Oshima N, Fujii R (1987). Mechanism of light reflection in blue damselfish motile iridophores zool sci. 4; 243-257.
12. Kasukawa H, Sugirnoto M, Oshima N and Fujii R (1985). Control of chromatophores movements in dermal chromatic unit of blue damselfish - 1, the melanophoe. Comp Biochem Physiol 81c; 253-257.
13. Saima Salim and Sharique A. Ali (2012). Melanophores: Smooth Muscle Cells in Disguise. In : Current basic and Pathological Approaches to the function of Muscle Cells and Tissues-From Molecules to Humans. Pp 133-158 Intech Publication Europe, USA.
14. Spaeth RA (1913). The physiology of the chromatophores of fishes. J. Exptl.Zool. 15; 527-585.
15. Swamy Meena,(2014). Effects of histamine and its new H1 and H2 receptor agonists on the isolated scale melanophores of teleost fish, Rasbora elenga. Biosci. Biotech. Res. Comm. Vol.7(1): Page no. 84-88 (2014).

Table 1- Showing the effect of Histamine perse, on the response of *R. elanga* isolated dorsal scale melanophores MMSI.

No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI ± SE	P-value
07	Control	**0.7% saline**	4.532 ± 0.128	
07	Histamine Perse	**1×10^{-6}**	4.532± 0.128	0.0016
07		**2×10^{-6}**	3.284+ 0.098	0.5446
07		**4×10^{-6}**	2.380 ± 0.072	0.1871
07		**8×10^{-6}**	1.695 ± 0.056	0.0669
07		**1.6×10^{-5}**	1.307 ± 0.033	0.0044
07		**3.2×10^{-5}**	1.106 ± 0.027	0.0016
07		**6.4×10^{-5}**	0.925 ± 0.054	0.0565
07		**Reimmersion in 0.7% saline water**	4.441 ±0.113	0.7793

Table no.2 Showing the effect of H4 antagonist - JNJ 7777 120 on the response of *R. elanga* melanophore MMSI

S.no	No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI ± SE	P-value
1.	07	Control	**0.7% saline**	4.783 ± 0.075	
	07	H4 antagonist - JNJ 7777 Perse	**1×10^{-6}**	4.537 ± 0.051	0.3701
	07		**2×10^{-6}**	5.773 ± 0.022	0.012
	07		**4×10^{-6}**	4.380 ± 0.048	0.3041
	07		**8×10^{-6}**	5.490 ± 0.028	0.282
	07		**1.6×10^{-5}**	4.240 ± 0.014	0.0007
	07		**3.2×10^{-5}**	5.670 +0.028	0.0282
	07		**6.4×10^{-5}**	4.380 ± 0.092	0.6319
			Reimmersion in 0.7% saline water	4.941 ± 0.128	0.2239

Note :- (concentration of antagonist **2×10^{-6}** , value of MMSI–5.951± 0.1662, P -value 0.0761

Table no. 3 Showing the effect of H4 agonist - VUF 84/30 on the response of *R. elanga* isolated melanophore. MMSI

S.no	No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI + SE	P-value
1.	07	Control	**0.7% saline**	4.577+ 0.143	
	07	H4 agonist - VUF 84/30 Perse	**1×10^{-6}**	4.175 + 0.042	**0.009**
	07		**2×10^{-6}**	3.284 + 0.099	0.3945
	07		**4×10^{-6}**	2.38 + 0.072	0.121
	07		**8×10^{-6}**	1.695 + 0.057	0.046
	07		**1.6×10^{-5}**	1.294 + 0.033	0.0023
	07		**3.2×10^{-5}**	1.131 + 0.035	0.0032
	07		**6.4×10^{-5}**	0.997 + 0.213	0.3493
			Reimmersion in 0.7% saline water	4.441 + 0.113	0.5963

Table no.4 Showing the effect of EDTA on the response of *R. elanga* isolated melanophore.

S.no	No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI + SE	P-value
1.	07	Control	**0.7% saline**	4.34 + 0.080	
	07	EDTA	**1×10^{-6}**	4.170 + 0.041	**0.1332**
	07		**2×10^{-6}**	3.679 + 0.101	0.5874
	07		**4×10^{-6}**	3.277 + 0.098	0.6370
	07		**8×10^{-6}**	2.627 + 0.063	0.5633
	07		**1.6×10^{-5}**	2.603+ 0.099	0.6322
	07		**3.2×10^{-5}**	1.504 + 0.096	0.6691
	07		**6.4×10^{-5}**	1.350 + 0.106	0.5151
			Reimmersion in 0.7% saline water	4.233 + 0.057	0.4224

Table no. 5 Showing the effect of EDTA on the response of *R. elanga* isolated melanophore (MMSI) treated to Histamine.

S.no	No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI + SE	P-value
1.	07	Control	**0.7% saline**	4.243 + 0.063	
	07	EDTA and Histamine	**1×10^{-6}**	3.426 + 0.142	0.0689
	07		**2×10^{-6}**	2.856 + 0.204	0.0116
	07		**4×10^{-6}**	2.421+ 0.250	0.0039
	07		**8×10^{-6}**	1.941 + 0.276	0.0023
	07		**1.6×10^{-5}**	1.350 + 0.283	0.0020
	07		**3.2×10^{-5}**	0.891 + 0.189	0.0169
	07		**6.4×10^{-5}**	0.857 + 0.195	0.0146
			Reimmersion in 0.7% s aline water	4.320 + 0.064	0.9567

Note :- (concentration of EDTA **2×10^{-6}** value of MMSI – 3.850 + 0.0433, P -value 0.3818.

Table no. 6 Showing the effect of EDTA and histamine on the response of *R. elanga* isolated melanophore (MMSI) treated to H4 antagonist - JNJ 7777 120

S.no	No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI + SE	P-value
1.	07	Control	**0.7% saline**	4.320+ 0.075	
	07	EDTA and Histamine to H4 antagonist - JNJ 7777 Perse	**1×10^{-6}**	4.326+ 0.044	0.2254
	07		**2×10^{-6}**	4.323+ 0.022	0.0082
	07		**4×10^{-6}**	4.311+ 0.021	0.0082
	07		**8×10^{-6}**	4.320 + 0.024	0.0130
	07		**1.6×10^{-5}**	4.311 + 0.024	0.0142
	07		**3.2×10^{-5}**	4.346 + 0.019	0.0047
	07		**6.4×10^{-5}**	4.329 + 0.017	0.0022
			Reimmersion in 0.7% saline water	4.336 + 0.019	0.0047

Note :- (concentration of antagonist **2×10^{-6}** value of MMSI– 4.316 + 0.0477, P -value 0.2829, EDTA **2×10^{-6}** value of MMSI – 4.334 + 0.07154, P -value 0.8873.

Table no.7 Showing the effect of EDTA and H4 agonist - VUF 84/30 on the response of *R. elanga* isolated melanophore (MMSI) treated to H4 antagonist - JNJ 7777 120

S.no	No. of exp.	Experimental drugs	Dose in µg/ml	MMSI $\pm$ SE	P-value
1.	07	Control	**0.7% saline**	4.264 $\pm$ 0.055	
	07	EDTA and H4 agonist - VUF 84/30 to H4 antagonist - JNJ 7777 Perse	**1×10^{-6}**	3.709 + 0.067	0.6461
	07		**2×10^{-6}**	3.446 $\pm$ 0.146	0.0318
	07		**4×10^{-6}**	3.421+ 0.106	0.1378
	07		**8×10^{-6}**	3.631 $\pm$ 0.076	0.4499
	07		**1.6×10^{-5}**	3.493 $\pm$ 0.030	0.1753
	07		**3.2×10^{-5}**	3.206 + 0.009	0.0005
	07		**6.4×10^{-5}**	3.201 $\pm$ 0.008	0.0002
			Reimmersion in 0.7% saline water	4.318 $\pm$ 0.048	0.7649

Note :- (concentration of antagonist **2×10^{-6}** value of MMSI– 3.486 $\pm$ 0.079, P -value 0.4037, EDTA **2×10^{-6}** value of MMSI – 3.857 $\pm$ 0.04286, P -value 0.5504.

Graph 1- Showing the effect of Histamine perse, specific H_4 receptor Antagonist- JNJ 7777 120 , H4 agonist - VUF 84/30 on the response of MMSI of *R. elanga* scale skin melanophores. (From table no. 1,2,3)

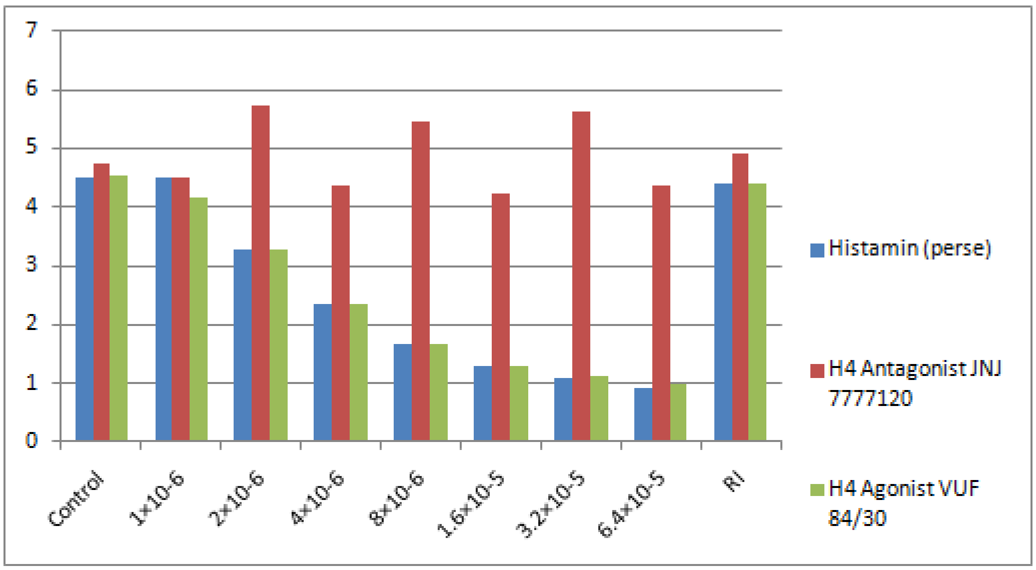

Graph 2 - Showing the effect of EDTA and Histamine, on the response of *R. elanga* isolated melanophore (MMSI) treated to H4 antagonist - JNJ 7777 120 and H4 agonist - VUF 84/30. (From table no. 4,5,6,7)

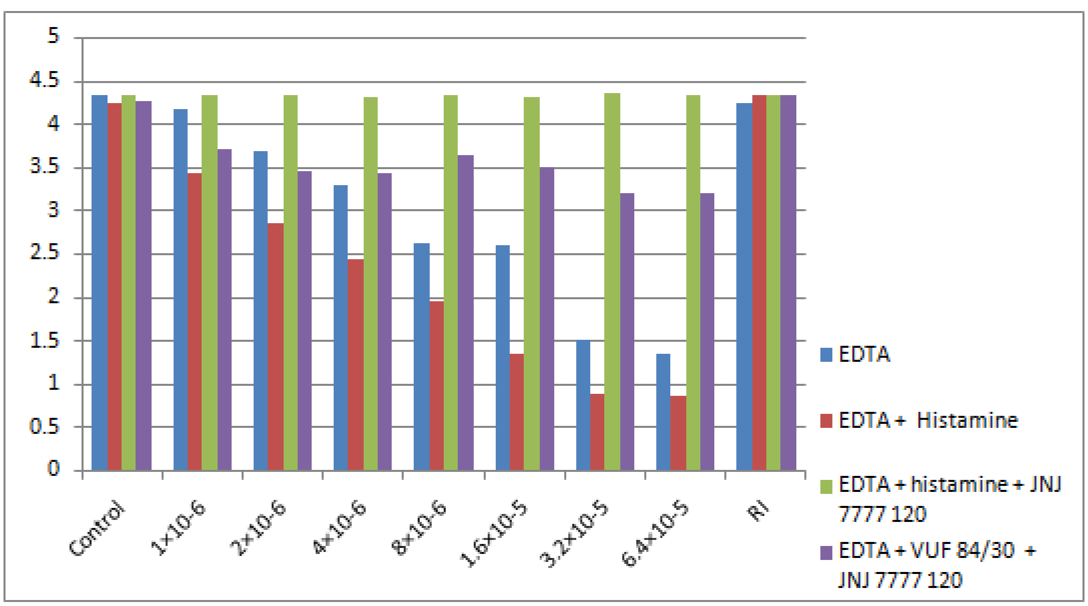

ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों की गरीबी निवारण में भूमिका

डॉ. रायकू जमरा *

प्रस्तावना – ग्रामीण विकास से ही देश का विकास प्रारंभ होता है। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का कथन है कि **'देश का विकास कृषि एवं ग्रामीण विकास पर निर्भर है।'** पं. जवाहर लाल नेहरू ने भी कहा था कि **'भारत का विकास प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण विकास पर निर्भर करता है।'** अत: भारत एक कृषि प्रधान तथा ग्रामीण जन समूह वाला देश है, यहॉ कि 72 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में बसती है तथा उसकी 80 प्रतिशत का मुख्य व्यवसाय कृषि है। ऐसे देश में ग्रामीण विकास एवं कृषि विकास के बिना देश को विकसित श्रेणी में आंकना असंभव है। ग्रामीण जनों का जीवन स्तर जब तक ऊपर नहीं उठता है तब तक राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता है। अथशास्त्र के आधारभूत सिद्धांत के अनुसार –'जब ग्रामीण लोगों का विकास होगा तो उनकी आय बढ़ेगी, आय बढ़ने से क्रय शक्ति बढ़ेगी तथा उनका जीवन स्तर सुधरेगा। इस प्रकार से ग्रामीण विकास का चक्र आरंभ होकर गांव तथा शहर विकसित होगें। साथ ही राज्य एवं राष्ट्र भी विकसित होगें। भारत में वर्तमान परिदृष्य बदला है। ग्रामीणों के जीवन में सुधार आया है। गांव हाईटेक होते जा रहे है। संचार के क्षेत्र में प्रभावी परिवर्तन आया है। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के अनुसार – **'भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था हो गयी है।'**

विकास के संदर्भ में भारत में हर क्षेत्रों में उन्नति हुई है। औद्योगिक उत्पादन एवं आर्थिक विकास की दर औसतन बढ़ी है। विश्व में मंदी छाये जाने पर भी भारत की स्थिति मजबूत रही है। भारत में लगभग 250 अरब डालर का विदेशी मुद्रा भण्डार हो चुका है। किन्तु यह सभी क्रियाऐं केवल कोरी कल्पना मात्र लग रही है। भारत में ग्रामीण विकास के हजारों कार्यक्रम लागू कर क्रियान्वित किये जा रहे है परन्तु ग्रामीण लोगों की स्थिति में सुधार अपेक्षानुरूप नहीं हुआ है। ग्रामीण विकास योजनाओं पर प्रतिवर्ष करोड़ों रूपये व्यय किये जाते है तथा सत्तर के दशक के बाद से वर्तमान तक किये गये व्ययों से भारत का हर ग्रामीण आत्मनिर्भर तथा आर्थिक रूप से मजबूत होना चाहिए था, किन्तु ग्रामीण लोगों की स्थिति पूर्व जैसी ही बनी हुई है। आज भी भारत में 40 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने के लिए मजबूर है। 47 प्रतिशत बच्चे कुपोषित है। ग्रामीण लोग रोजगार के अभाव में भारी संख्या में गांव छोड़कर पलायन करते जा रहे है। अत: इतनी योजनाओं के बावजूद हमारे ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार हेतु कहीं न कहीं खाई रह गई है। उसका निवारण कर जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का ग्रामीण लोगों पर प्रभाव तथा गरीबी उन्मूलन में योगदान का अध्ययन किया गया है।

भारत में गरीबी की संकल्पना – गरीबी की परिभाषा विभिन्न देशों में अलग–अलग प्रकार से दी है। फिर भी इन सभी का मूल आधार न्यूनतम जीवन स्तर की कल्पना रही है। भारत में भी विभिन्न विद्वानों, अर्थशस्त्रियों एवं संस्थाओं ने गरीबी मापने के अपने–अपने प्रमाण बनाये है, इन सभी अध्ययनों का आधार 2250 कैलोरी के बराबर है। भारत में वर्तमान में प्रचलित गरीबी आंकलन का फार्मूला योजना आयोग द्वारा गठित समिति के अनुसार –'ग्रामीण क्षेत्रों में एक व्यक्ति के प्रतिदिन के भोजन में 2400 कैलोरी तथा शहरी क्षेत्रों में 2100 कैलोरी होना चाहिए। उक्त कैलोरी प्रतिदिन प्राप्त नहीं होने पर गरीबी रेखा के नीचे माना गया है।

'गरीबी से आशय है कि समाज का वह परिवार अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाता है गरीब कहा गया है।'

भारत में गरीबी का आंकलन सन् 1967–68 में बी.एस. मिन्हास के अनुसार 37.1 प्रतिशत, पी.के. वर्धन के अनुसार 54 प्रतिशत, एम.एस. आहलूवालिया के अनुसारर 56.5 प्रतिशत तथा पी.एसम. दाण्डेकर एवं रथ के अनुसार 40 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर हरे थे। उक्त आंकलन में भी सही आकड़े प्रमाणित नहीं हो सके किन्तु लगभग 45 प्रतिशत गरीबी विद्यमान रहीं है। योजना आयोग ने 1994 में 36 प्रतिशत गरीबी तथा 2011–12 में 21.8 प्रतिशत भारत में गरीबी का प्रतिशत है।

इस प्रकार आंकड़ों के लिहाज से भारत में गरीबी का प्रतिशत निरन्तर घटता जा रहा है। जिसका मुख्य असरदार कारक ग्रामीण विकास योजनाओं को लागू करना रहा है।

तालिका –1(देखे अन्तिम पृष्ठ पर)

भारत में गरीबी के कारण –

भारत में गरीबी के प्रमुख कारणा निम्न हो सकते है –

1. भारतीय कृषि का मानसून पर निर्भर रहना, सिंचाई साधनों का अभाव।
2. कृषि उद्योग धंधों का अभाव।
3. लघु एवं कुटीर उद्योग का अभाव।
4. कृषि पदार्थो के विपणन की उचित व्यवस्था न होना।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी एवं अस्थायी रोजगार का अभाव।
6. उत्पादन की पुरानी तकनीक होना।
7. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली होना।
8. कृषकों की योजना के प्रचार–प्रसार न होना।
9. भ्रष्टाचार पनपना।
10. ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में कमी।
11. वित्त समस्या।
12. कृषकों का साहूकारी चुंगल में फंसे रहना।
13. ग्रामीण रूढ़ीवादी, रीति–रिवाजों की प्रधानता, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन न होना, अज्ञानता, भण्डारण का भाव आदि।

रोजगार कार्यक्रमों का क्रियान्वयन –भारत में गरीबी निवारण हेतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही अनेकों प्रयास किये जा रहे है। प्रतिवर्ष

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार (म.प्र.) भारत

प्रतिवर्ष योजनाओं हेतु व्यय राशि बढ़ा दी जाती है। गरीबी की समस्या राष्ट्रीय समस्या मानकर इसके निवारण की प्राथमिकता रही है। शासन द्वारा ग्रामीण विकास की कई योजनाएँ क्रियान्वित कर गरीबी को जड़ से खत्म करने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान समय में कई ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को लागू किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रमुख ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का निम्नवत है-

1. **इंदिरा आवास योजना -** यह योजना 1985-86 से प्रांरभ की गयी है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण गरीबों को आवास उपलब्ध कराने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इसके लिए मैदानी क्षेत्रों में 45000/- रूपये तथा पहाड़ी क्षेत्रों में 48500/- रूपये सहायता राशि प्रदान की जाती है। इसमें दूसरी प्रकार की सहायता में 1,20,000/- रूपये जो 30 प्रतिशत सबसिड़ी तथा शेष किश्तों में हितग्राहियों को पुनर्भुगतान की व्यवस्था भी है।

योजना में 2005-2010 तक 21,800 करोड़ रू. की लागत से 73.10 लाख मकानों का निर्माण किया जा चुका है। वर्ष 2010-11 में 32.15 लाख मकानों, 2012-13 में 93 लाख मकानों तथा 2013-14 में 70 लाख मकानों का निर्माण किया जा चुका है। इस योजना में बजट भी बढ़ा दिया गया है।

अभी हाल ही समय में म.प्र. के मुख्यमंत्री ने घोषणा की है कि अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के आवासों के निर्माण हेतु 3.00 लाख रूपये पूर्व सब्सिडी पर बल दिया जायेगा।

2. **प्रधानमंत्री सड़क योजना -** यह योजना 25 दिसम्बर 2000 से प्रांरभ की गई है। ग्रामीण इलाकों में 500 तथा पहाड़ी इलाकों में 250 तक की आबादी वाले क्षेत्रों में बारहमासी सड़कों को बनाना है। योजना में 2010 में 20 हजार करोड़ रूपये, 2011 मे 24000 करोड़ तथा 2012-13 में 24 हजार करोड़ रूपये व्यय किये गये। 2014 तक लगभग 80 प्रतिशत क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण किया जा चुका है।

3. **भवन निर्माण योजना -** योजना 2005 से लागू की गई है। इसमें मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाएँ जैसे - सिंचाई, सड़के, आवास, विद्युत, जल आपूर्ति, दूरसंचार आदि सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाता है। इसमें सिंचाई के अन्तर्गत 2012 तक कुल 30,17,990.2 करोड़ रूपये व्यय किये गये है। सड़कों में 63,17,83 ग्रामीण सम्पर्कता सड़क निर्माण कार्य किया जा चुका है। दूरसंचार क्षेत्र के अन्तर्गत लगभग हर गांव में मोबाईल व टेलीफोन की व्यवस्था की जा चुकी है।

4. **स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना -** 1 अप्रैल 1999 से प्रांरभ की गयी है। योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में भारी संख्या में सूक्ष्म उद्योग की स्थापना कर रोजगार एवं स्वरोजगार की मात्रा में वृद्धि करना है। योजना में ग्रामीणों को संगठित कर स्वसहायता समूह का निर्माण किया जाता है। 2013-14 तक 95 लाख सहायता समूह का गठन किया जाकर 320 लाख स्वरोजगारियों को 1,80,185 करोड़ रूपये की सहायता प्रदान की जा चुकी हैं।

5. **मनरेगा -** यह योजना 2 फरवरी 2005 से प्रांरभ की गयी है। योजना में प्रत्येक गरीब परिवार को 100 दिन का गांरटी शुदा वेतन रोजगार मुहैया कराया जाता है। इसमें वर्ष 2006-07 4,18,432.42 लाख रूपये , 2007-08 में 12,118.28 लाख, 2008-09 9,67,664.77 लाख, 2009-10 में 3,91,00 करोड़, 2010-11 में 42,100 करोड़, 2012-13 में 4200 करोड़ रूपये व्यय किये गये है तथा 40.78 करोड़ परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

रोजगार कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समस्या -

ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में कुछ समस्याएँ निम्नवत है-

1. ग्रामीणों में जागरूकता का अभाव।
2. अशिक्षा एवं अज्ञानता।
3. मजदूरी का समय पर भुगतान न होना।
4. मानिटरिंग एवं मूल्यांकन का अभाव।
5. भ्रष्टाचार ।
6. हितग्राहियों का सही चयन न होना।
7. ग्राम सभाऐं नहीं होना।
8. योजनाओं का प्रचार-प्रसार न होना।
9. आवंटित राशि का पूर्ण उपयोग न होना।
10. अनावश्यक कागजी कार्यवाही।

गरीबी निवारण हेतु सुझाव - भारत में ग्रामीण गरीबी निवारण हेतु निम्न सुझाव प्रभावी हो सकते है -

1. आवंटित राशि का पूर्ण उपयोग करना।
2. सही हितग्राहियों का चयन करना।
3. मजदूरों को सही समय पर मजदूरी भुगतान करना।
4. विकास योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार होना।
5. साहूकारी व्यवस्था हटाना।
6. भ्रष्टाचार को जड़ से हटाना।
7. ग्रामीणों को जागरूक करना चाहिए।
8. मिश्रित एवं संघन कृषि को बढ़ावा देना चाहिए।
9. योजनाओं की नियमित मांनिटरिंग हो।
10. जनभागीदारी बढ़ाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष - निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारत में गरीबी निवारण हेतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही शासन अथक प्रयास कर रही है। प्रतिवर्ष नये-नये रोजगार कार्यक्रम लागू किये जा रहे है। ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने हेतु अनेकों योजना लागू की जा रही है। स्वतंत्रता पूर्व भारत में गरीबी, भुखमरी एवं बेरोजगारी व्यापक थी किन्तु आजादी के पश्चात् धीरे-धीरे गरीबी का प्रतिशत कम हो रहा है। भारत की खुशहाली एवं समृद्धि का रास्ता गांव की गलियों से ही होकर गुजरता है। अत: गांवों का विकास अनिवार्य हे। ग्रामीण विकास से राष्ट्र का विकास होगा।

भारत में कई योजनाओं के क्रियान्वयन से ग्रामीण जीवन में खुशहाली आयी है। वर्तमान में गांवों में क्रय शक्ति बढ़ी है। लोगों के रहन-सहन का स्तर सुधरा है, यह ग्रामीण विकास का ही परिणाम है। परन्तु औसत रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि गरीबी का प्रतिशत निरंतर तेजी से घट रहा है। कई ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में व्यापक भ्रष्टाचार है, क्रियान्वयन में कमियाँ, सतत मानिटरिंग का न होना, मजदूरी का समय पर भुगतान न करना आदि समस्या का समय रहते सुधार किया जाये तो निश्चित ही ग्रामीण विकास कार्यक्रम सफल होगें, गरीबी का प्रतिशत घटेगा, लोगों के जीवन में खुशहाली एवं समृद्धि आयेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. दत्त एवं सुन्दरम् (2009) भारतीय अर्थव्यवस्था एस. चांद, कम्पनी लिमिटेड, दिल्ली।
2. माथूर बी.एल. (2009), ग्रामीण अर्थव्यवस्था अर्जुन पब्लिशियन हाउस दिल्ली।

3. के.एल. चार्लिस, (1990), Total Devlopment National Book Center, Delhi.
4. ललीता एन, (2005) सूक्ष्म वित्त एवं ग्रामीण विकास, कनिष्ठ प्रकाशन, दिल्ली।
5. योजना मासिक (2013) पत्रिका प्रकाश्न विभाग, दिल्ली।
6. कुरूक्षेत्र (2014) प्रकाशन विभाग, दिल्ली।
7. प्रतियोगिता दर्पण (2013) विशेषांक , उपकार प्रकाशन, दिल्ली।

तालिका -1
भारत में गरीबी का प्रतिशत एवं अनुपात

वर्ष	निर्धन जनसंख्या (करोड़ों)			निर्धनता अनुपात		
	अखिल भारतीय	ग्रामीण	शहरी	अखिल भारतीय	ग्रामीण	शहरी
1999-2000	26.2	19.32	6.70	26.1	27.1	23.6
2011-2012	23.85	17.03	6.82	21.8	21.8	21.7

स्त्रोत- प्रतियोगिता दर्पण (2013) भारतीय अर्थव्यवस्था विशेषांक

****

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियाँ

डॉ. राजेश दुबे *

प्रस्तावना - अनादि काल से परिवार को समाज की आधारभूत इकाई माना जाता है। मानव समाज के लिए परिवार न केवल आवश्यक है, अपितु एक सुरक्षित एवं आदर्श संस्था भी है। विगत कुछ वर्षो में इस संस्था की जड़े कुछ हिलने लगी है। यह खतरा बढ़ता हुआ देख सन् 1984 को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने परिवार का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया था।

1. यह तो एक फैशन ही बन गया है जिस बीज के लिए कोई खतरा महसूस होने लगता है तो उसका दिवस या वर्ष। भारतवर्ष में हिन्दी दिवस बनाने की आवश्यकता इसीलिए पड़ती है कहीं भारतीय यह भूल न जाएँ कि हिन्दी ही उनकी राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता रखती है। आज के इस भौतिकवादी युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी स्वार्थो में इतना उलझा है कि उसे दूसरों के बारे में सोचने की फुरसत नहीं और अगर वह दूसरों के बारे में सोचता है तो बड़े अहसान के साथ। सच तो यह है कि आज न तो संबंधों का कोई अर्थ है न बंधे हुए परिवारों का। अधिकांशत: भारतीय छिटक-छिटक कर अपने परिवारों से बहुत दूर होते जा रहे हैं।

2. अधिकांश आधुनिक परिवारों में रहने वाले लोग संयुक्त परिवार की ओर देखते तो हैं, जिसमें व्यक्ति का सुख-दु:ख न केवल उनके माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन सभी मिलकर बाँटते थे और आज भी संयुक्त परिवारों में ऐसा ही होता है। संयुक्त परिवारों की अपनी ही विशेषताएं हैं। संयुक्त परिवार में किसी भी व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, क्षमताओं की अभिवृद्धि का पूरा अवसर होता है, किन्तु औद्योगिक समाज के उदय व इससे संबंधित आर्थिक गतिशील संरचना ने संयुक्त परिवार के आकार को अत्यन्त सीमित कर दिया है।

3. संयुक्त परिवारों के टूटने का बहुत बड़ा कारण है कि परिवारों में कुछ लोगों की कम आय है, इसलिए महिलाओं को घर से बाहर जाकर नौकरी करना पड़ता है। यह विषमताएं परिवारों को तोड़ने के लिए काफी हैं। आज का मनुष्य अत्यन्त स्वार्थी एवं अपने में सिमटकर रह गया है। आज परिवार का अर्थ है पति-पत्नी और बच्चे। यदि माता-पिता भी उनके घर आते हैं तो वह अतिथि समझे जाते है लेकिन अभी यह धागे पूरी तरह टूटे नहीं है क्योंकि काफी परिवारों में आंख की थोड़ी बहुत शर्म शेष हैं।

4. पिछले वर्षो में मानव समाज में तकनीकी एवं आर्थिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन मूल्य प्रभावित हुए है। एक ओर समाज में पहले से ही स्थापित मान्यता और दूसरी ओर आर्थिक प्रगति के चंद आधुनिक स्वरूप का जाल जिसने रीति-रिवाजों और लोगों की अभिरूचि में कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं किया गया है। यहां एक विरोधाभासी परिस्थिति है, जिसके कारण परिवार की इकाई का निरंतर विखण्डन हो रहा है। अब संबंधों में वह मधुरता नहीं है। भाई को न तो भाई की याद, न ही बहन की याद आती है। माता-पिता के सामने विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। परिवर्तन समय की स्वाभाविक वृत्ति है। ऐसा कभी नहीं था कि परिवर्तन रूका, किन्तु पिछले कुछ वर्षो में इस परिवर्तन ने जैसे सब कुछ छिन्न-भिन्न ही करके रख दिया है।

5. डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने एक लेख में भारतीय संस्कृति के संदर्भ में उदाहरण दिया है। वे कहते हैं कि यदि हम शान्त और सुखी जीवन व्यतीत करना चाहते है तो हमें अपने वेदों के इस वाक्य को पुन: अपनाना हैं-'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' अर्थात त्याग के साथ भोग। अब पारिवारिक स्थिति में इस युग का किस प्रकार उपयोग हो सकता है। वह एक उदाहरण से सिद्ध किया जाए। वे कहते है कि 'मान लीजिए एक सम्मिलित परिवार है जिसका प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक सुख पहुंचा सके और इसलिए वह पूरी शक्ति लगाकर उतना उपार्जन कर लेते हैं, जिससे अधिक उपार्जन करने की शक्ति परिवार में नहीं है। उसी परिवार का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से काम करता है कि उसको अपने सुख के लिए अधिक से अधिक उपार्जन करना चाहिए तो भी सब व्यक्तियों का सामूहिक उपार्जन उतना ही होगा, जितना कि प्रथमोक्ति स्थिति में इस तरह सामूहिक संपत्ति दोनों स्थितियों में बराबर होगी और उसका बराबर बंटवारा कर दिया जाए तो प्रत्येक को बराबर ही सुख होगा। पर दोनों स्थितियों में बहुत अंतर यह पड़ जाएगा कि पहली स्थिति में संघर्ष का कोई भय नहीं, क्योंकि कोई केवल अपने लिए कुछ नहीं कर रहा है और दूसरों में संघर्ष अनिवार्य है। हम समझते है कि हमारी संस्कृति का तकाज़ा है कि पहली स्थिति में हम अपने आप को लाएँ। यदि संसार का संघर्ष, चाहे वह व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का हो चाहे देश के बीच का, वर्तमान रहेगा ही।

6. आयोडीन नमक की बढ़ती हुई शक्ति एवं उपभोक्तावादी संस्कृति में या यूँ कहिए कि विज्ञान ने मनुष्य के हाथ में आश्चर्यजनक शक्ति थमा दी है, जिससे व्यक्तिवाद को आश्रय मिल रहा है। मध्यवर्गीय परिवारों में आज यहीं देखने को मिल रहा है कि बच्चे पढ़-लिखकर विदेशों की ओर भाग रहे हैं। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से जाते हैं तो कोई बात नहीं, वैश्वीकरण के इस युग में हमें दिमाग के दरवाजे खुलें रखने पड़ेगें। यदि निष्पक्ष होकर सोचा जाए तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन अफसोस की बात यह है कि बच्चें विदेशों में बसने के लिए ही जाते है और साफ-साफ यह कहते है कि हम भारत में नहीं रहेंगे। शुरू-शुरू में उनके माता-पिता को बहुत अच्छा लगता है। गर्व से कहते है कि उनके बच्चे विदेश में काम कर रहे है या वहीं मकान बना लिया है, लेकिन कालांतर में यही खुशी गम में बदल जाती है। बच्चे तो अपने संसार में मस्त हो जाते है और बूढ़े माता-पिता उनका इंतजार करते रहते है। महानगरों में बड़े-बूढ़ों की समस्या बहुत अधिक बढ़ गई है। धनी बूढ़े माता-पिता कोठियों में

* विभागाध्यक्ष (वाणिज्य) पं. शम्भूनाथ शुक्ल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शहडोल (म.प्र.) भारत

अकेले रहते हैं। उनके पास घर का कामकाज करने के लिये नौकर होते हैं और एक दिन वहीं नौकर उनकी हत्या करके घर लूटकर ले जाते हैं। आजकल बच्चों की मानसिकता बदल गई है। वे अपने माता-पिता या घर के बड़ों की बात आंख मूंदकर सुनना पसंद नहीं करते। जब तक छोटे होते हैं, अशक्त होते है डर कर माता-पिता की बात मान लेतें हैं, लेकिन जैसे ही वे आत्मनिर्भर बन जाते हैं बड़ों की बात मानना उनकी शान के खिलाफ हो जाता है। उनका अहं इतना बढ़ जाता है कि यदि बड़े कोई बात कहेंगे तो हर्गिज नहीं मानते। इस प्रकार परिवारों में सहज मानवीय मूल कहीं खो गये हैं। दादी माँ की प्यारी कहानियों के नैतिक मूल्य के कचरे के डिब्बे में दिखाई पड़ते हैं। अब यदि बड़े-बूढ़े घर में रहते हैं तो छोटे बच्चों की देखभाल मात्र को रह गए है।

7. नौकरी करने वाली स्त्रियां जिनके छोटे-छोटे बच्चें होते हैं, वे अपने सहयोगियों से खुले आम यह कहती हैं जब तक छोटे बच्चे हैं, सास-ससुर को साथ में रखना ही पड़ेगा। बच्चों के बड़े होते ही हम अलग हो जायेगें। नैतिक मूल्यों का इतना भयंकर पतन भला परिवार की व्यवस्था को कैसे अर्थपूर्ण बना सकता है। आधुनिक युग स्वच्छन्दता जिज्ञासा का युग है। नितान्त वैयक्तिकता ही मात्र रह गया है। पहले परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर बाते करते सुख-दु:ख बॉटते थे। अपने परिवार के उन लोगों के विषय में परस्पर बातचीत करते थे जो दूर थे, जिनका परिणाम होता था कि घर के बच्चे भी दूर रहने वाले अपने परिवारजन से अप्रत्यक्ष रूप में ही परिचित हो जाते थे, वैसा अब कुछ नहीं रहा। ऐसा नहीं कि इस सबके लिए किसी के पास समय नहीं। कितनी ही व्यस्तता हो, जो समय निकालना चाहता है वह निकाल ही लेता है। सच तो यह है कि आज इस सबकी आवश्यकता ही नहीं समझी जाती। पिछली पीढ़ी के लोग इस परिवर्तन को अत्यन्त व्यथा से एवं खामोशी से देखते हैं, लेकिन उस अभिव्यक्ति का अधिकार नहीं है। शायद इसीलिए आज वृद्धों के लिए पश्चिमी देशों की भॉति भारत में स्थान-स्थान पर वृद्धाश्रम खोले जाते हैं। इन बिखरते, टूटते परिवारों का सबसे अधिक दुष्प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है और खामियाजा बूढ़ों को भुगतना पड़ता है।

8. वैज्ञानिक प्रगति के इस युग में भावना का कोई स्थान नहीं है और मजे की बात यह है कि सभी अपने को बेहद भावुक और संवेदनशील भी कहते हैं, लेकिन यह सारी भावनात्मकता व संवेदनशीलता अपने तक सीमित होकर रह गई है। इस बदलते परिवेश में सभ्यता संस्कृति का पतन खामोशी से देखने के सिवाय और चारा भी क्या है। अधिक से अधिक समस्याओं के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता है, कुछ समाज सेवी संस्थाएं गोष्ठियाँ करती हैं, लेकिन इस समस्या का निराकरण व्यावहारिक रूप में संभव होता दिखाई नहीं देता। छोटे स्वयं को बड़ों के सामने अत्यधिक बुद्धिमान प्रमाणित करने का ही प्रयास करते रहते हैं और बड़े खामोशी से मन ही मन मुस्कुराते हुए उनके इस अहं को स्वीकार कर लेते हैं। संयुक्त परिवारों में बच्चों का सामाजिक विकास बहुत अच्छा होता है। एकल परिवार बच्चों के स्वास्थ्य व्यक्तित्व के विकास के लिए किसी तरह भी पूर्ण नहीं माने जा सकते, किन्तु समय की गति को रोकना मनुष्य के हाथ में शायद नहीं है। यह समस्या यहीं पर समाप्त नहीं होती, आश्चर्य तो यह है कि केवल पति-पत्नी भी एक-दूसरे के साथ खुश नहीं रह पाते।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. लेखक- वृन्दा कारात-पुस्तक-भारतीय मानव : संघर्ष और मुक्ति- P-125
2. लेखक- जोन रॉबिन्सन-पुस्तक-स्वाधीनता और आवश्यकता- P-205
3. लेखक- सुधा सिंह-पुस्तक-ज्ञान का आज्ञाकारी पाठ- P-105
4. लेखक- पीटर गोल्डिंग-पुस्तक-जनमाध्यम- P-133
5. लेखक- नौम चॉम्स्की-पुस्तक-जनमाध्यमों का मायालोक- P-128
6. लेखक- रेमंड विलियम्स-पुस्तक-औद्योगिकी और सांस्कृतिक रूप- P-126
7. लेखक- सिल्विया एश्टन वॉरनर-पुस्तक-अध्यापक- P-75
8. लेखक- रमेश दुबे-पुस्तक-मैं इस तरह नहीं पढूंगी- P-25
9. लेखक- मरिया मांटेसरी-पुस्तक-ग्रहणशील मन-P-20

****

ई-कॉमर्स के क्षेत्र में बढ़ती संभावनाएं

सचिन दुबे *

शोध सारांश – ई-कॉमर्स से तात्पर्य इलेक्ट्रॉनिक ई-कॉमर्स से है। ई-कॉमर्स या ई-व्यवसाय इंटरनेट के माध्यम से व्यापार का संचालन है, न केवल खरीदना और बेचना, बल्कि ग्राहकों के लिये सेवाएं और व्यापार के भागीदारों के साथ सहयोग भी इसमें शामिल है। बुनियादी ढ़ाचें, उपभोक्ता और मूल्य वर्धित प्रकार के व्यापारों के लिए इंटरनेट कई अवसर प्रस्तुत करता है। वर्तमान में कम्प्यूटर, दूरसंचार और केबल टेलीविजन व्यवसायों में बड़े पैमाने पर विश्वव्यापी पविर्तन हो रहे हैं। मूलत: इसका मुख्य कारण दुनिया भर के दूरसंचार नेटवर्कों पर जो नियंत्रण थे उनका हटाया जाना है। सन् 1990 से वाणिज्यिक उद्यमों ने विज्ञापन, बिक्री और दुनिया भर में अपने उत्पादों का समर्थन के लिये इंटरनेट को एक संभावित व्यवहार्य साधन के रुप में देखा है। ऑन-लाइन शॉपिंग नेटवर्क वाणिज्यिक गतिविधियों का दायरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इक्कीसवीं सदीं ने ऑनलाइन व्यापारों के लिए असीम अवसर एवं प्रतिस्पर्धा का वातावरण प्रदान किया है।[1]

प्रस्तावना – देश में ई-कॉमर्स की पहली लहर को डॉटकॉम के नाम से जाना जाता है और वह 90 के दशक के अंत में बेहद जोरशोर से हमारे यहां आई। हालांकि वर्ष 2001 आते-आते उसका समापन भी हो गया। डॉटकॉम के खात्में की वजहें एकदम स्पष्ट थी क्योंकि इसके पास कोई स्पष्ट राजस्व मॉडल नहीं था। ई-कॉमर्स के दूसरे दौर में वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री के जरिये राजस्व जुटाने पर काफी जोर दिया गया। दूसरे दौर की इन ई-कारोबारी गतिविधियों में कारोबारी मॉडल अधिक स्पष्ट था। इन तमाम उद्योगों के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। मुनाफा कमाना हालांकि उनमें से अनेक राजस्व कमाने और अपने ग्राहकों में निरंतरता लाने में कामयाब रहें। मुनाफा कमाने की राह में सबसे बड़ी चुनौती थी, नए गाहकों को अपने साथ जोड़ने की लागत और और अत्यधिक छूट देना। इन बातों ने ई-कॉमर्स कम्पनियों के लागत संबंधी लाभ को सीमित कर दिया।[2]

ई-कॉमर्स वास्तव में वस्तुओं या सेवाओं को इंटरनेट पर बेचना, खरीदना अथवा विज्ञापन द्वारा उत्पादकों की सूचनाऐं उपभोक्ताओं तक पहुँचाना है। ई-कॉमर्स की प्रमुख संस्थाओं में फ्लिपकार्ट, स्नैपडील.कॉम, स्टाईलिश. कॉम, लेट्सबाई.कॉम, बेबीज वर्ल्ड.कॉम, फ्रेडपरी, टॉमी टिल फिगर, बेली शेडेस स्नेला, गोडिया, एटम साईकिल, क्वीकर, एमेजॉन, मीनट्रा, ताओबाओ, 360 बाई आदि जैसी अनेकों कम्पनियाँ ई-कॉमर्स के क्षेत्र में सफलतापूर्वक कारोबार कर रही हैं। देश में इंटरनेट की पहुँच बढ़ने के साथ ही ई-कॉमर्स साइटों से खरीददारी बढ़ी है और कम्परियों के बीच एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी लगातार बढ़ रही हैं। ई-कॉमर्स के क्षेत्र में बढ़ती हुई यह प्रतिस्पर्धा कम्पनियों की गले की फांस बन गई है। अधिक से अधिक उपभोक्ताओं को अपनी ओर खीचने के प्रयास में ई-कॉमर्स कम्पनियाँ कम से कम मार्जिन पर काम कर रही हैं।[3]

शोध के उद्देश्य –

- ई-कॉमर्स का अध्ययन करना।
- ई-कॉमर्स से भारतीय की अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।
- ई-कॉमर्स की प्रमुख समस्याएँ, पूँजी प्रवाह जानना।
- ई-कॉमर्स के लाभ तथा चुनौतियों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना – प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने परिकल्पना की है कि ई-कॉमर्स इंटरनेट के बढ़ते उपयोग तथा उपभोक्ताओं की माँग के अनुरुप उत्तम सेवा से ई-कॉमर्स के कारोबार में बढ़ोत्तरी हो रही हैं।

शोध प्रविधि एवं क्षेत्र – प्रस्तुत शोध-पत्र द्वितीयक सूचनात्मक तथ्यों पर आधारित है।

शोध व्याख्या – फ्लिपकार्ट की शुरुआत वर्ष 2007 में हुई (इसके तत्काल बाद ही कई अन्य कम्पनियां भी सामने आई)। यह वह दौर था जब दुनिया भर में ई-कॉमर्स कारोबारी किसी तरह मुनाफा कमाने की जद्दोजहद में लगे हुए थे। ऐसे में, हालांकि भारतीय अनुकरणकर्ता यह देख सकते थे कि एमेजॉन, ईबे ताओबाओ, 360बाई और सैंकड़ों अन्य कम्पनियां अमेरिका, चीन, ब्रिटेन और अन्य जगहों पर किस तरह राजस्व अर्जित कर रही हैं लेकिन भारत में उनको मुनाफा कमाने का तरीका पूरी तरह अपने स्तर पर तलाश करना था। ऐसा इसलिए था क्योंकि भारत के समक्ष अपनी अलग तरह की चुनौतियां थी मसलन इंटरनेट की कम पहुंच, क्रेडिट अथवा डेबिट कार्डो की कम पहुंच, नकद आधारित अर्थव्यवस्था और अल्पविकसित आपूर्ति श्रृंखला तथा लॉजिस्टिक का बुनियादी ढांचा। इसके अलावा ये तमाम नए उद्यम युवा और उत्साही कारोबारियों द्वारा चलाए जा रहे थे जिनके पास पर्याप्त कारोबारी अनुभव अथवा पूंजी नहीं थी।

देश में ई-कॉमर्स तीसरा दौर वर्ष 2013-14 में आरंभ हुआ। इस वर्ष अनेक परिस्थितियों के मेलजोल में तेज गति से इजाफा देखने को मिला। देश भर में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी, बेहतर गुणवत्ता वाली चौथी पीढ़ी की डाटा प्लेटफार्म सेवा का आरंभ, वित्तीय पूंजी तक बेहतर पहुंच, अनुभवी प्रबंधक वर्ग और ई-कॉमर्स की विभिन्न श्रेणियों में राजस्व और मुनाफे के कारकों की बेहतर समझ। इन सबसे बढ़कर जो बात होगी वह है, खुदरा कारोबार के रुप में ई-शॉपिंग की बढ़ती स्वीकार्यता खासतौर पर देश के मध्य और उच्च मध्य वर्ग में।

भारत में इंटरनेट की शुरुआत हुई तब इसमें रोजगार की संभावनाऐं कम थी लेकिन अब इंटरनेट के बढ़ते व्यावसायिक उपयोग के कारण रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी हुई है। वर्तमान में दुनियाभर में लगभग 2.50 अरब

*शोधार्थी (वाणिज्य) स्कूल ऑफ कॉमर्स, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

इंटरनेट उपभोक्ता है। यह सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, मनोरंजन, और प्रचार-प्रचार का प्रमुख माध्यम बन गया है।[4]

भारत में ई-कॉमर्स का बाजार 10 अरब डॉलर का है और फ्लिपकार्ट इसकी सबसे बड़ी कम्पनी है। रिसर्च फर्म गार्टनर के अनुसार सम्पूर्ण एशिया पैसेफिक में भारत में ई-कॉमर्स सबसे तेजी से बढ़ रहा है। भारत में ट्रेवलिंग के क्षेत्र में 71 प्रतिशत की दर से प्रति वर्ष बड़ रहा है।

भारत में डिजिटल कॉमर्स की प्रगति[5]

क्र.	वर्ष	डिजिटल-कॉमर्स (करोड़ में)	प्रतिशत वृद्धि
01	2009	19249	अप्राप्त
02	2010	26263	73
03	2011	35142	74
04	2012	47350	74
05	2013	62000	76

उपर्युक्त तालिका से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

- देश में डिजिटल कॉमर्स उद्योग बढ़ता जा रहा है।
- सर्वाधिक वृद्धि 2012 से 2013 के मध्य 76 प्रतिशत हुई हैं।

ई-कॉमर्स से विभिन्न कम्पनियों से वांछित वस्तुओं और सेवाओं के चयन में सुविधा के साथ ही ब्राण्डेड उत्पादों को क्रय करने में लाभ हुआ है। इसके अतिरिक्त समय और धन के बचत व विभिन्न कम्पनियों से उत्पादों की विशेषता, लाभ एवं अन्य जानकारी हासिल करने के बाद उत्पाद क्रय की सुविधा भी प्राप्त की जा सकती हैं। आसान इलेक्ट्रानिक भुगतान की सुविधा के साथ-साथ माल वापसी की भी ग्यारंटी ई-कॉमर्स कम्पनियों से प्राप्त होती हैं।

ई-कॉमर्स की प्रमुख समस्याएँ -

- ई-कॉमर्स कम्पनियों की आपस में तेजी से बढ़ती प्रतिस्पर्धा।
- ई-कॉमर्स कम्पनियों की अत्यधिक प्रारंभिक लागत की आवश्यकता।
- अधिक व्यापारिक माडलों का अभाव।
- ई-कॉमर्स कम्पनियों का बढ़ता घाटा।
- पेमेन्ट मोड के स्वरुप में स्पष्टता का संकट।
- प्रमुख कम्पनियों का ई-कॉमर्स में शामिल नहीं होना।
- मंद ई-ट्रांजेक्शन प्रणाली।
- ई-कॉमर्स कम्पनियों की उपभोक्ताओं से दूरी।
- ग्राहकों में धोखाधड़ी एवं भय की आशंका।
- ई-कॉमर्स कम्पनियों के लिए कानूनी रुकावटें।
- साधारण आम उपभोक्ता की ई-कॉमर्स कम्पनियों तक पहुँच न होना।

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 ई-कॉमर्स की बुनियादी प्रयोज्यता को नियंत्रित करता है। ई-कॉमर्स की इन समस्याओं के बाद भी ई-कॉमर्स बाजार के लिए पूँजी का प्रवाह बना हुआ है। वेंचर केपिटलिस्ट के पास ई-कॉमर्स साइटों के लिए फण्ड की कमी नहीं है। अनुमान है कि अगले कुछ वर्षों में इसके तहत् इस सेक्टर में 50 करोड़ डॉलर मिलने की संभावना है।

निष्कर्ष - देश में आने वाले समय में शापर्स होगें। ई-कॉमर्स बाजार अत्यधिक तेज गति से उभर रहा है। वर्तमान में मोबाईल के बढ़ते चलन और ब्रॉण्डेड उत्पाद सस्ते एवं किफायती दर से मिलने से आम व्यक्ति की पहुँच ई-कॉमर्स बाजार तक होती जा रही हैं। सन् 2020 तक देश के लगभग 950 मिलियन लोगों के पास स्मार्टफोन होंगे।[6]

ई-कॉमर्स बाजार के बढ़ते विज्ञापनों ने उपभोक्ता को अपनी ओर खिचता जा रहा है। ई-कॉमर्स बाजार ने वाणिज्य एवं व्यापार को एक नए व्यावसायिक वातावरण दिया है। जिसका भविष्य बहुत ही उज्जवल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. http://hi.wikipedia.org
2. उद्योग व्यापार पत्रिका, सितंबर, 2013, इण्डिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन, प्रगति भवन, प्रगति मैदान, नई दिल्ली,
3. उद्योग व्यापार पत्रिका, दिसंबर, 2012, इण्डिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन, प्रगति भवन, प्रगति मैदान, नई दिल्ली,
4. कुरुक्षेत्र, अक्टोम्बर 2012, प्रकाशन विभाग, नईदिल्ली
5. अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल : नवीन शोध संसार आईएसएसएन 2320-8767, अक्टोम्बर से दिसम्बर 2014, पृष्ठ संख्या 85
6. योजना, नवम्बर 2007, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

****

स्वप्नों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

ज्योत्स्ना झारिया *

प्रस्तावना - स्वप्न का अर्थ -स्वप्न एक ऐसी मानसिक घटना है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी घटित होती ही है। यदि कोई कहे कि उसने जीवन में कभी भी कोई स्वप्न नहीं देखा तो यह अपवाद या चमत्कार ही होगा। प्राचीन काल से लेकर अब तक स्वप्न के अर्थ को लेकर विशेषज्ञों, दार्शनिकों, शरीर विज्ञानियाँ एवं विशेषज्ञों में मतभेद रहा है। आदिकाल के दार्शनिकों एवं विशेषज्ञों का मत था कि स्वप्न का स्वरूप अलौकिक होता है, अत: स्वप्न के समय आत्मा शरीर से अलग होकर भ्रमण करती है। इस अवस्था में आत्मा जो कुछ भी देखती है या सुनती है वही स्वप्न है। कुछ दार्शनिकों का मत है कि स्वप्न दैविक शक्ति का एक प्रतिफल है उनका विचार है कि दैविक शक्ति स्वप्नों द्वारा भविष्य की घटनाओं का संकेत देती है।

शरीर शास्त्रियों के अनुसार स्वप्न कोई मानसिक प्रकिया नहीं बल्कि शारीरिक उत्तेजनाओं की अभिव्यक्ति है, जो निद्रावस्था में बाहरी उत्तेजनाओं के प्रभाव से उत्पन्न स्नायु प्रवाह के कारण होती है।

मनोवैज्ञानिकों ने स्वप्न को व्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया कहा है। उनके अनुसार मानसिक प्रक्रियाऐं लगातार चलती रहती हैं। स्वप्न इन्हीं लगातार चलती रहने वाली मानसिक प्रक्रिया की एक अवस्था विशेष है। (फिशर)
फ्रायड के अनुसार -'स्वप्न का अर्थ निद्रावस्था की वह अचेतन प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हमारी अचेतन इच्छाओं की अभिव्यक्ति एवं संतुश्टि छदम रूप से होती है।'

स्वप्न की विशेषताएँ -

1. फ्रायड के अनुसार स्वप्न निद्रा का अभिभावक होता है। निद्रावस्था में स्वप्न देखने पर गहरी नींद आती है। स्वप्न की स्थिति में व्यक्ति को किसी तरह की बाधा का अनुभव नहीं होता है और वह अपनी इच्छाओं की संतुष्टि करके आनंद लूटता रहता है। इसलिये बिना किसी बाधा के वह चैन की नींद सोता है। चिंता स्वप्न तथा दहशत स्वप्न की स्थिति में नींद के टूट जाने के सम्बंध में फ्रायड ने कहा कि ऐसे स्वप्नों की स्थिति में व्यक्ति की ऊर्जा का अनावश्यक खर्च होने लगती है। जिसे बचाने के लिए नींद को भंग कर दिया जाता है इस अर्थ में चिंता स्वप्न एवं दहशत स्वप्न भी निद्रारक्षक का काम करते है।
2. आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार - प्रत्येक स्वप्न सार्थक एवं अर्थपूर्ण होते है। मनोवैज्ञानिक ने ऐसे अनेक उदाहरण देकर साबित कर दिया है कि स्वप्न का विशेष अर्थ होता है उदाहरण के लिए एक युवक ने स्वप्न देखा कि वह अपनी मॉ की शवयात्रा में जा रहा है तभी उसके पिता बेहोश होकर गिर गये और उनकी भी मौत हो गई। युवक के इस स्वप्न का मनोविश्लेषकों द्वारा विश्लेषण करने पर पता चला कि उस युवक के माता पिता उसके प्रेम-व्यापार में बाधक थे अत: वह उनसे नफरत करता था और वह अपने मार्ग से हटाना चाहता था। इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि स्वप्न सार्थक होते हैं।
3. मनोवैज्ञानिक के अनुसार स्वप्न इच्छा पूर्ति का एक माध्यम होता है। जब व्यक्ति अनैतिक, अवांछनीय एवं पूरी न हो सकने वाली इच्छाओं की पूर्ति चेतनावस्था में नहीं कर पाता है तो उन इच्छाओं की पूर्ति वह प्रतिबन्धक के कारण छद्म रूप से (अप्रत्यक्ष) करता है। इसी तरह नैतिक एवं वांछनीय इच्छाओं की पूर्ति चेतनावस्था में न हो सकने पर व्यक्ति उनकी संतुष्टि स्वप्नावस्था में प्रत्यक्ष रूप से कर लेता है। फ्रायड के अनुसार सभी स्वप्न इच्छापूर्ति के स्वप्न होते है।
4. स्वप्नों को अचेतन की विषय सामग्री (दमित इच्छाओं) को चेतना में लाने का एक माध्यम माना गया है। फ्रायड के अनुसार अचेतन की दमित इच्छाऐं अपनी संतुष्टि हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहती है। जिससे व्यक्ति में अचेतन संघर्ष एवं द्वंद्व उत्पन्न होते है, परिणामत: निद्रावस्था में वे इच्छाऐं स्वप्न के माध्यम से अभिव्यक्त होकर अपनी संतुष्टि बिना किसी बाधा के पूरी कर लेती है। अत: मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि स्वप्न अचेतन की ओर जाने वाला राजपथ है। युंग के अनुसार सुपर इगो की नैतिक इच्छाएँ भी दमित होकर स्वप्नों के माध्यम से संतुष्ट होती हैं।
5. स्वप्न की एक विशेषता यह है कि स्वप्न आत्मगत और आत्मकेन्द्रित होते हैं। स्वप्न व्यक्ति के वैयक्तिक अनुभवों का प्रतिरूप है। स्वप्नों के विषय एवं घटनाऐं व्यक्ति के अपने विगत जीवन के अनुभवों से सम्बद्ध होती है। जिसका ज्ञान किसी अन्य व्यक्ति को नहीं होता। चूंकि स्वप्नों का सीधा सम्बंध व्यक्ति के साथ रहता है अत: स्वप्न आत्म केंन्द्रित भी होते हैं।
6. व्यक्ति जो भी स्वप्न देखता है वह वास्तव में अचेतन की दमित इच्छाओं का प्रतीक है। अलग-अलग व्यक्तियों के लिये इन प्रतीकों का अर्थ अलग-अलग होता हैं। जब तक इन प्रतीकों का अर्थ समझ में नहीं आता तब तक वे स्वप्न अर्थहीन लगते हैं। अर्थ समझ में आने पर स्वप्न सार्थक हो जाते हैं। फ्राइड के अनुसार भाई बहन या बच्चों के प्रतीक जानवर या बीड़े होते हैं। सभी लम्बे आकर की वस्तुएं पुरूष लिंग एवं सभी खोखली वस्तुएं स्त्री लिंग की प्रतीक होती हैं। राजा-रानी या सम्राट साम्राज्ञी, माता-पिता के प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से स्वप्नों का अर्थ समझना आसान हो जाता है।
7. स्वप्नों में दृश्य प्रतिमानों की प्रधानता रहती है। स्वप्नों के अनुभव अधिकतर दृश्य अर्थात आँखों से देखने वाले प्रतिबिम्बों के रूप में होते हैं। वैसे उनके साथ भावना या विचार भी मिले हो सकते हैं तथा अन्य ज्ञानेन्द्रियॉ भी कार्य करती हुई प्रतीत होता हैं।

स्वप्न के प्रकार -

(अ) सरल स्वप्न - सरल स्वप्नों का अर्थ ऐसे स्वप्नों से है जिसमें व्यक्ति दमित इच्छा की संतुष्टि या अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से करता है। जैसे - भूखा व्यक्ति स्वप्न में भोजन करते तथा प्यासा व्यक्ति पानी पीते हुए अपने आपको पाता है।

* सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान) शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत

(ब) जटिल स्वप्न – जटिल स्वप्न का अर्थ ऐसे स्वप्नों से होता है जिसमें व्यक्ति की दमित इच्छा की संतुष्टि या अभिव्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से होती है। इस तरह के स्वप्नों का अर्थ स्वप्न दृष्टा को पता नहीं होता है। इस तरह के स्वप्नों का विश्लेषण या व्याख्या केवल मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ ही कर पाते हैं। जटिल स्वप्नों के निम्नलिखित प्रकार हैं।

(i) इच्छा पूर्ति स्वप्न – इस तरह के स्वप्न में व्यक्ति की दमित इच्छा की संतुष्टि होती है। यह संतुष्टि प्राय: अप्रत्यक्ष रूप से होती है। इस तरह के स्वप्नों पर फ्रायड ने विशेष बल दिया है।

(ii) चिंता स्वप्न – इस तरह के स्वप्नों में व्यक्ति प्राय: चिंता तथा भय का अनुभव करता है। स्वप्न की स्थिति में स्वप्नदृष्टा में शरीर काँपना, हाथ पैर फड़फड़ाना, रोना, चीखना, चिल्लाना आदि लक्षण परिलक्षित होते हैं। फलत: नींद से जाग जाता है।

(iii) भविष्यवाणी स्वप्न – इस तरह के स्वप्नों में व्यक्ति अपने भविष्य में घटित होने वाली घटना को देखता है और बाद में वास्तव में वह घटना उसके साथ घटित होती जाती है। युंग ने इस तरह के स्वप्नों पर बल दिया है।

(iv) समाधान स्वप्न – इस तरह के स्वप्नों में व्यक्ति अपनी वर्तमान की समस्या का समाधान करता है एवं मानसिक द्वंद्वों को दूर करता है। एडलर ने इस तरह के स्वप्नों पर बल दिया है।

(v) दण्ड स्वप्न – जब व्यक्ति को किसी कार्य का पश्चाताप होता है तब वह दण्ड स्वप्न देखता है। इस तरह के स्वप्न में व्यक्ति अपने आपको दण्डित होता देखता है। जैसे पहाड़ से गिरना, दुर्घटना होना, सर्प या सांड़ का पीछा करते देखना, दुश्मनों के द्वारा मार खाते देखना, आत्महत्या करना इत्यादि।

(vi) दु: स्वप्न – हेडफील्ड (1954) ने अपनी पुस्तक 'ड्रीम्स एण्ड नाइट मेयर' में कहा है कि 'हम दु: स्वप्न के प्रत्यय का प्रयोग उन चिंता स्वप्नों के लिये करते हैं जिनकी तीव्रता इतनी अधिक होती है कि वह व्यक्तित्व पर पूरी आच्छादित कर लेते हैं और शारीरिक संवेदनाओं की अति विस्तारित अनुभूति जैसे तीव्र धड़कन, अति स्वेदन, घुटन आदि को जन्म देते हैं जो कि नैसर्गिक रूप से अति तीव्र भय के सहगामी कारक होते हैं और यह भय व अन्य प्रकार के संवेग जैसे– क्रोध आदि मिलकर मूर्त और व्यक्तिकरण दोनों मिलकर एक जीवित जीवधारी के रूप में हो जाता है जैसे चुड़ैल, राक्षस, डायन, साँप, केंकड़ा इत्यादि। ये इतना भय उत्पन्न कर देते है कि व्यक्ति नींद से जाग जाता है।

जॉन्स (1949) के अनुसार दु:स्वप्नों में अचेतन कामुक इच्छाओं का सर्वाधिक दमन निहित रहता है। इनका कहना है कि दु:स्वप्न का दौरा पड़ने का तात्पर्य किसी 'दमित कामुक इच्छा' से उत्पन्न मानसिक अंतर्द्वंद्व के उत्पन्न होने से है। ऐसे सपनों को किसी सुदूर के उन उत्तेजकों द्वारा उद्दीप्त किया जा सकता है। जो शरीर की दमित इच्छाओं को जगाने में समर्थ होते हैं। दुश्चिन्ता स्वप्नों के प्रत्येक मामले में गुप्त विषयवस्तु प्रत्येक दशा में दमित कामुक इच्छा की प्रतिपूर्ति अव्यक्त का प्रतिनिधित्व करती है जबकि दु:स्वप्न में इसका सम्बंध सदैव कोई कामुक क्रिया से होता है जिसमें विकृत कामुक इच्छाऐं दु:स्वप्नों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति पाती है।

निष्कर्ष – स्वप्न निद्रावस्था की एक विशेष मानसिक प्रक्रिया है जिसमें विभ्रामक अनुभूतियों द्वारा अचेतन की दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति या संतुष्टि होती है। स्वप्न सार्थक, प्रतीकात्मक एवं विभ्रामक प्रवृत्ति के होते हैं। स्वप्न आत्मगत एवं आत्मकेन्द्रित भी होते है। स्वप्न से भविष्य का संकेत मिलता है। चूँकि स्वप्न द्वारा अचेतन में दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है अत: फ्रायड ने इसे अचेतन का राजकीय मार्ग कहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. आनंद विनती एवं रामजी श्रीवास्तव (2010) मनोविकृति विज्ञान, प्रकाशक: मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, पृ.क्र. 312–315.
2. सिंह अरूण कुमार (2004) आधुनिक आसामान्य मनोविज्ञान, प्रकाशक: मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, पृ. क्र. 225 – 245.
3. सिंह राजराजेश्वरी प्रसाद एवं बी.के. मिश्र (1987) असामान्य मनोविज्ञान, प्रकाशक: भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स) पटना, पृ.क्र. 180–184.
4. सुलेमान मुहम्मद एवं मुहम्मद तौबाव (2008) असामान्य मनोविज्ञान, प्रकाशक: मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, पृ.क्र. 166–171.
5. व्यक्तिगत शोध एवं सर्वेक्षण।

****

उद्यमियों के आर्थिक विकास में मुद्रा बैंक की भूमिका

डॉ. रायकू जमरा *

प्रस्तावना – स्वरोजगार में नये उद्यमियों को वित्तीय मदद उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 08 अप्रैल, 2015 को माइक्रो यूनिटस, डेवलपमेंट रीफाइनेंस एजेन्सी (मुद्रा बैंक) की विधिवत शुरूआत की। साहूकारों और अन्य निजी स्त्रोतों से भारी ब्याज पर कर्ज लेकर छोटे कारोबार करने वाले इन उद्यमियों को इस योजना के तहत संगठित क्षेत्र से सस्ता कर्ज़ उपलब्ध होगा, जो इन लोगों को अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा से जोडने में मददगार होगा।

मुद्रा बैंक योजना का लक्ष्य – छोटे कुटीर उद्योगों को बैंक से आर्थिक मदद आसानी से नहीं मिलती हैं। वे बैंक के नियमों को पूरा नहीं कर पाते इस कारण वे उद्योगों को बढ़ाने में असमर्थ होते हैं, इसलिए मुद्रा बैंक योजना शुरू की जा रही हैं। जिसका मुख्य लक्ष्य युवा पढ़े लिखे नौजवानों के हुनर को मजबूत धरातल देना है साथ ही महिलाओं को सशक्त बनाना है।

वित्त वर्ष 2015-16 के अपने बजट भाषण में केन्द्रीय वित्त मंत्री अरूण जेटली ने 20,000 करोड़ रूपये की राशि तथा 3,000 करोड़ रूपये की ऋण गारंटी राशि के साथ एक सूक्ष्म इकाई विकास पुनर्वित एजेन्सी (मुद्रा) बैंक के सृजन का प्रस्ताव रखा था। फिलहाल इसे सिडबी से जोड़ कर शुरू किया जा रहा है।

सिडबी के पास लघु उद्योग को कर्ज उपलब्ध कराने का अनुभव भी है। लघु उद्योग से भी नीचे उतरकर बेहद छोटे उद्यमियों को कर्ज उपलब्ध कराने में भी इसे कोई दिक्कत नहीं आएगी। बाद में इस एजेंसी को कानून के जरिये स्वतंत्र रूप से स्थापित किया जाएगा।

छोटे उद्यमियों की मदद – मुद्रा बैंक नगदी की समस्या से जूझ रहे ऐसे छोटे उद्यमियों के कर्ज की आवश्यकताओं को न केवल पूरा करेगा बल्कि उनकी कर्ज की लागत को भी कम करेगा।

राष्ट्रीय सैंपल सर्वे के मुताबिक देश में ऐसे करीब 5.70 करोड़ उद्यमी हैं। इनमें 11 लाख करोड़ रूपए की पूँजी लगी हुई है और इनसे 12 करोड़ लोगों को रोजगार मिल रहा है। लेकिन इस क्षेत्र के उद्यमियों की पूँजी में कर्ज का हिस्सा केवल चार फीसदी है, जबकि बीते 22 वर्षो में बड़े उद्योगों में 50-60 लाख करोड़ रूपये की पूँजी लगी है। जिनसे मात्र 22 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है। सरकार इन छोटे उद्यमियों की मदद कर न केवल इनके जीवन स्तर में बदलाव लाना चाहती है। बल्कि देश में रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि के रूप में देख रही है।

छोटे उद्यमियों को कर्ज देने के लिए मुद्रा बैंक कई सहयोगियों के साथ गठबंधन करेगा। रीफाइनेंस के लिए क्षेत्रीय स्तर पर सहयोगी अभी ढूंढ़े जा रहे है। निचले स्तर पर कर्ज वितरित करने के लिए माइक्रो संस्थाएँ इसका हिस्सा बनेगी। सरकार की योजना ऐसे लोगों को अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में शामिल कर इनके कारोबार को विस्तार में मदद देने की है।

मुद्रा बैंक निर्माण ट्रेडिंग और सेवा गतिविधियों में लगे सूक्ष्म / लघु व्यवसायिक संस्थाओं को ऋण देने के कार्य में लगे सभी सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं के नियमन और पुनर्वित्तीयन के लिए जिम्मेदार होगा। मुद्रा बैंक प्रमुख रूप से निम्न बातों के लिए जिम्मेदार होगा-

- सूक्ष्म/लघु संस्थाओं के वित्तीय व्यवसाय के लिए नीति-निर्देश तैयार करना।
- एमएफआई संस्थाओं का पंजीकरण।
- एमएफआई संस्थाओं का नियमन।
- एमएफआई संस्थाओं को मान्यता/ रेटिंग।
- ऋणग्रस्तता से बचने और ग्राहक के उचित संरक्षण सिद्धांतों और वसूली के तरीके सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार वित्तीय व्यवस्था तैयार करना।
- सभी सूक्ष्म/लघु उद्यमों को अनुबंध के साथ ऋण।
- ऋण के लिए सही प्रौद्योगिकी समाधान को बढ़ावा।
- सूक्ष्म उद्यमों को दिए जाने वाले ऋणों के लिए गारंटी प्रदान करने के उद्देश से ऋण गारंटी योजना की व्यवस्था और संचालन करना।
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के अन्तर्गत सूक्ष्म व्यवसायों तक ऋण पहुँचाने के लिए सरंचना तैयार करना।

प्रावधान – मुद्रा का मुख्य उत्पाद प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तत्वाधान में सूक्ष्म व्यवसायों एवं इकाईयों को ऋण देने के लिए पुनर्वित्तीयकरण होगा। इसके दायरे में आने वाले प्रांरभिक उत्पादों एवं योजनाओं का पहले ही सृजन किया जा चुका है और वृद्धि विकास के चरणों तथा लाभार्थी सूक्ष्म इकाई तथा उद्यम तथा वित्त पोषण के लिए एवं उद्यमी की आकांक्षा के अनुरूप क्रमिक विकास के अगले चरण को सूचित करने के लिए एक संदर्भ बिन्दु मुहैया कराने के रूप में योजनाओं के नाम **'शिशु'**, **'किशोर'** और **'तरूण'** रखे गए है।

इनके तहत लोगों को 10 लाख रूपये तक का लोन आसानी से मिल सकेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुद्रा बैंक लांच करने के अवसर पर इन योजनाओं की घोषणा की।

1. शिशु - 50,000 रूपए तक का ऋण शामिल।
2. किशोर - 50,000 रूपये से ऊपर तथा 5.00 लाख रूपए तक का ऋण शामिल।
3. तरूण - 5.00 लाख रूपए से ऊपर तथा 10 लाख रूपए तक का ऋण शामिल।

उदाहरण – इस दिशा में मोदी ने गुजरात का उदाहरण दिया जिसमें गुजरात में पतंग व्यापार को थोड़ी मदद मिलने से वह व्यापार पाँच सौ करोड़ से पैंतीस सौ करोड़ तक पहुँच गया है।

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार (म.प्र.) भारत

मुद्रा बैंक योजना के लाभ –

1. इस योजना के कारण छोटे व्यापारियों का होंसला बढ़ेगा जिससे देश का आर्थिक विकास होगा।
2. बड़े उद्योग केवल सवा करोड़ लोगों को रोजगार देते है लेकिन कुटीर उद्योग 12 करोड़ लोगों को रोजगार देगा। ऐसे उद्योगों को बढ़ावा देने से देश का पैसा देश में ही रहेगा और आर्थिक विकास होगा।
3. छोटे व्यापारियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा, जिससे प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न होगी, जो कि उनकी उन्नति में सहायक होगा।
4. देश का विकास अमीरों के विकास से नहीं अपितु गरीबों के विकास से होता है। अत: इस दिशा में मुद्रा बैंक योजना का अहम् फैसला है।

निष्कर्ष – प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत आसानी से लोन/ऋण मुहैया कराने को सरकार ने मुख्य क्षेत्रों की पहचान भी की है। जिन पर जोर दिया जाएगा। ये क्षेत्र है – ट्रांसपोर्ट सेवा, सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाएँ, खाद्य उत्पाद और टेक्सटाइल उत्पाद तथा सूक्ष्म ऋण योजनाएँ।

ऐसे सूक्ष्म/ लघु व्यवसाय इकाईयों / उद्यमों को संस्थागत वित्त की सुविधाएँ मुहैया कराने से न केवल इन उद्यमियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी बल्कि ये उन्हें जी.डी.पी. वृद्धि दर तथा रोजगार सृजन के मजबूत माध्यम बनाने में भी सहायक होंगें।

संदर्भ ग्रथ सूची :–

1. करेंट अफेयर्स जनवरी 2015 से दिसम्बर 2015
2. प्रतियोगिता दर्पण ।
3. उद्यमिता विकास पत्रिका ।
4. www.deepawali.co.in

****

महिला सशक्तिकरण एवं संरक्षण

ज्योत्स्ना झारिया *

प्रस्तावना – महिला मानव जाति की जननी और दो पीढ़ियों को जोड़ने वाली एक कड़ी है। समाज के सृजन का श्रेय नारी को है। नारी सृष्टि का संपादन और समाज का सृजन करती है। नारी ने पुरूष को जन्म दिया और नारी उसकी जन्मदात्री व अंकशायनी बनी। जननी का अभाव सृष्टि की शून्यता का द्योतक है अत: नारी सृष्टि का मूलाधार है। वह संतानोत्पादक ही नहीं बल्कि पालिका व संचालिका भी है। स्त्री और पुरूष मनुष्य जाति के दो समांतर पक्ष है और दोनों के कर्त्तव्य व अधिकार समान है किन्तु वर्तमानकाल में इस पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों की स्थिति अनेक प्रयत्नों के बावजूद संतोषजनक नहीं है। हमारे भारतीय समाज में महिलाऐं आज भी अनेक समस्याओं से जूझ रही है। यथा लिंगगत पूर्वाग्रह, परिवार व विवाह से संबंधित समस्या, पर्दाप्रथा, असुरक्षा, शैक्षणिक समस्या, दहेज की समस्या, अधिकारों की समस्या, स्वतंत्रता की समस्या इत्यादि। शासन द्वारा महिलाओं को इन समस्याओं से छुटकारा दिलाने के लिए व उनके उत्थान के लिए कानूनी प्रावधानों की व्यवस्था की गई है जो निम्नानुसार है –

1. **बाल विवाह अवरोध अधिनियम 1929 (संशोधित 1986) –** इस अधिनियम द्वारा बाल विवाह को रोकने के लिए 21 वर्ष कम उम्र के लड़के एवं 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की के विवाह को गैरकानूनी घोषित किया गया है।

2. **चलचित्र अधिनियम 1952 –** इसके आधार पर सेंसर बोर्ड बनाया गया ताकि ऐसी फिल्मों पर रोक लगाई जा सके जिनसे महिलाओं की मर्यादा भंग होती है।

3. **हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1957 –** इसके द्वारा विधवाओं को अपना जीवन खुशी एवं पवित्रता के साथ जीने के लिए पुनर्विवाह का अधिकार पुरूषों की तरह ही है।

4. **हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 :–** इस अधिनियम द्वारा महिलाओं को पिता की संपत्ति में बराबर का उत्तराधिकार दिया गया है।

5. **अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम 1956 –** इस अधिनियम द्वारा महिलाओं और बच्चों के क्रय–विक्रय को खत्म करने तथा महिलाओं के शोषण को रोकने के लिए सख्त सजा का प्रावधान किया गया है।

6. **सती प्रथा निवारण अधिनियम 1957** के द्वारा सती प्रथा पर रोक लगाने हेतु कठोर दण्ड की व्यवस्था की गयी है।

7. **भारतीय दण्ड संहिता 1960 –** भारतीय दण्ड संहिता 1960 में महिलाओं के विरूद्ध कारित अपराधों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्थाऐं की गई है। धारा 354 में स्त्री की लज्जा भंग, धारा 366 में अपहरण धारा 376 में बलात्कार, धारा 498– क में निर्दयतापूर्ण व्यवहार तथा धारा 292 से 294 तक के तहत विशिष्टता और सदाचार को प्रभावित करने वाले मामलों पर रोक लगा दी गई है। धारा 493 से लेकर 498 में विवाह संबंधी अपराधों के बारे में सजा के प्रावधानों की व्यवस्था है।

8. **दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 (संशोधित 1986)–** दहेज की मांग की विभीषिका से महिलाओं की रक्षा के लिए यह अधिनियम पारित किया गया। 1986 में इसे संशोधित कर दहेज लेने अथवा देने वाले को 5 वर्ष की सजा तथा जुर्माने का कठोर प्रावधान किया गया है।

9. **प्रसूता प्रसुविधा अधिनियम 1961–** इस अधिनियम में कामकाजी महिलाओं को दो बच्चों तक 135 दिन का मातृत्व अवकाश मिलने का प्रावधान है।

10. **पुलिस एक्ट 1965 –** किसी भी महिला की गिरफतारी की सूरत में पुलिस को यह बताना होगा कि उसे क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है। थाने ले जाने के लिए औरत को हथकड़ी नहीं लगाई जा सकती। उसे किसी वकील को बुलाकर उसकी सलाह लेने का अधिकार दिया गया है। गिरफ्तार महिला की तलाशी सिर्फ एक महिला अफसर ही ले सकती है।

11. **दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973** की धारा 125 में उपेक्षित महिलाओं के लिए भरण–पोषण का प्रावधान किया गया है।

12. **समान वेतन कानून 1976 –** इस कानून के अंतर्गत महिला व पुरूष के लिए समान मजदूरी की दरे तय की गई है।

13. **स्त्री अशिष्ट रूपण (प्रतिबंध) अधिनियम 1982 –** इस अधिनियम द्वारा किसी भी माध्यम द्वारा स्त्री शरीर के अश्लील चित्रण पर पूर्णतया प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसी प्रकार छेड़खानी निरोधक कानून– 1978 सिनमेटोग्राफी अधिनियम 1952, इंडिसेन्ट रिप्रेजेन्टेशन ऑफ वूमेन (प्रोहीबिशन) एक्ट– 1986 द्वारा इस प्रकार के अपराध के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान किया गया है।

14. **1989 –** इस अधिनियम द्वारा समाज की पिछड़ी जातियों एवं वर्ग के लोगों, खासतौर पर महिलाओं पर होने वाले सवर्णो के अत्याचारों को रोकने के लिए कठोर दण्ड के प्रावधान किये गये है।

15. **राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम 1990 –** भारत सरकार द्वारा महिलाओं के हितों के संरक्षण हेतु 30 अगस्त 1990 को राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन किया गया।

16. **73 वां एवं 74 वां संविधान संशोधन अधिनियम 1993 –** इस अधिनियम द्वारा महिलाओं को त्रिस्तरीय पंचायतों में एक तिहाई आरक्षण प्रदान करने का प्रावधान है।

17. **प्रसव पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम 1994 –** इसके द्वारा गर्भावस्था में बालिका भ्रूण की पहचान कराने पर रोक लगायी गई है।

18. **आपराधिक कानून (संशोधन) विधेयक 2013 –** दुष्कर्म रोधी विधेयक में दुष्कर्म के लिए अपराधी को आजीवन कारावास की सजा दी जा सकती है। इस कानून में यह प्रावधान भी दिया गया है कि ऐसे अपराधों को

* सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान) स्वामी विवेकानन्द शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत

रोकने के लिए पहले भी दोषी ठहराए गए अपराधियों को मौत की सजा दी जा सकती है।

निष्कर्ष – सरकार ने महिलाओं को पुरूषों के अत्याचार, हिंसा और अन्याय से बचाने के लिए इतने सारे कानूनी प्रावधानों की व्यवस्था की एवं महिला आयोग का गठन भी किया किन्तु पढ़ी-लिखी और आत्मनिर्भर महिलाओं को छोड़कर, कानूनी प्रावधानों की जानकारी से अनभिज्ञ कम पढ़ी-लिखी गांवों की अनपढ़, दबी-कुचली, हीन भावनाओं से ग्रसित, भीरू,डरपोक महिलाऐं न तो इन कानूनी प्रावधानों से लाभ उठा पा रही है और न ही महिला आयोग की मदद ले पा रही है और जो महिलाऐं मदद लेना भी चाहती है तो आयोग प्रतिक्रिया तो देता है किन्तु त्वरित कार्यवाही नहीं करता। अत: त्वरित कार्यवाही हतु विशेष अदालतों का गठन किया जाए महिला संरक्षण कानून बनाया जाये एवं स्वयं महिलाऐं भी यदि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो तो महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय, अत्याचार एवं अपराधों में कमी आयेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सोनी अंशु (2014) महिला विकास के विविध आयाम, प्रकाशक- बुन्देली लोक साहित्य संस्थान सागर, पृ.क्र. 19-21
2. अरूण रूबी (2012)www.thouthindia.com
3. व्यक्तिगत शोध एवं सर्वे।

****

भीष्म साहनी - व्यक्ति और कृतित्व

डॉ. सरोज जैन *

प्रस्तावना – भीष्म साहनी को निर्विवाद रूप से हिन्दी में प्रगतिशील लेखन परम्परा का 'भीष्म पितामह' कहा जा सकता है। प्रगतिशीलता के प्रति उनकी इस अटूट और अडिग निष्ठा के संबंध में अनेक प्रामाणिक जानकारियां उनकी आत्मकथा 'आज के अतीत' में मिलती है। आर्य समाजी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बावजूद भीष्मजी को प्रारंभ से ही धर्म, धर्मग्रंथों और सिद्धांतों से अधिक मनुष्य उसके जीवन और आसपास घटित होते क्रिया कलापों से ही सोचने और लिखने की प्रेरणा मिलती रही, वे जीवन को खुली आँखों से देखते और मनुष्य के रूबरू खड़े होकर उसे महसूस करने में विश्वास करते थे।[1]

प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यास कार भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 को रावल पिंडी (अब पाकिस्तान) में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा रावलपिंडी में हुई और लाहौर के शासकीय महाविद्यालय से 1937 में उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया। बाद में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आजादी के बाद वे भारत आए और अंतिम समय तक सक्रिय रहकर साहित्य सेवा करते रहे। मुंबई में अपने बड़े भाई बलराज साहनी के पास रहते हुए इप्टा से जुड़ गए। इप्ता के समय भीष्म जी कांग्रेस के सक्रिय सदस्य थे पर इप्टा में आने के बाद वे कम्प्युनिष्ट पार्टी से सबंद्ध हो गए। उन्होंने सन् 1950 में दिल्ली के जाकिर हुसैन कालिजस में अंग्रेजी के प्रवक्ता 1957 से 1963 तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुवाद के रूप कार्य किया। इस समय लगभग दो दर्जन रूसी कृतियों का हिन्दी अनुवाद तथा भारतीय लेखकों की कृतियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। मास्को से वापस आकर फिर कॉलेज में पढ़ाना शुरू किया और 1980 के रिटायर हो गये। उन्होंने 'मोहन जोशी हाजिर होय जैसी फिल्मों और 'तमस' जैसे टीवी धारावाहिकों में अभिनय किया। वे अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव भी रहे। 1942 में उन्होंने 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी भागीदारी दी।

भीष्म साहनी का रचना संसार व्यापक है। वे एक अनुवादक, नाटककार और उपन्यासकार ही नहीं कहानी लेखक भी है। उनकी पहली 'नीली आंख' हंस पत्रिका में प्रकाशित हुई। 1953 में उनका प्रथम कहानी संग्रह 'भाग्यरेखा' प्रकाशित हुआ। 'पहला पाठ' भटकनी राख, पटरियाँ, वांग्चू, शोभायात्रा, निशाचर, पाली और डायन सहित नौ कहानी संग्रह है। गुलेल का खेल, उनका बाल कथा संग्रह है। वांग्चू, ओ हराम जादे, साग मीट और अमृतसर आ गया जैसी कहारियाँ काफी चर्चित रहीं। बहु चर्चित उपन्यास तमस के साथ झरोखे, कड़ियाँ, बसंती, मथादस की गाड़ी, कुंवी, नीलू नीलिमा नीलोफर भी लिखे। 'नाटककार के रूप में भी भीष्म साहनी का अविस्मरणीय' योग्यदान रहा। हानूश और कबीरा खड़ा बाजार में जैसे चर्चित नाटक के अतिरिक्त माघवी, मुआवजे, रंग दे बसंती चोला और आलमगीर भी लिखे। अपने बड़े भाई सुपरिचित अभिनेता बलराज साहनी की जीवनी बराज भाई ब्रदर भी लिखी।[2]भीष्म साहनी उस परंपरा के लेखक नहीं है जो मनुष्य को उसके बाहर से अधिक उसके भीतर तलाश करती है। लेकिन मनुष्य के इस बाहर को भीष्म ने उसकी संपूर्णता में खोजा और गढ़ा। वे प्रगतिशील इस अर्थ में भी थे कि वे विकास में विश्वास रखते थे। अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है – मेरा विश्वास है कि प्रगतिशील लेखक संघ देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है और आगे भी निभा सकता है।[3] रचना का विचारधारा से घनिष्ठ संबंध है। इस संबंध में भीष्म साहनी जी का मानना था- 'जिस विचारधारा में मेरा यकीन है वह मेरी जीवन दृष्टि को प्रभावित करेगी और मेरी रचनाएं भी मेरी जीवन दृष्टि के अनुरूप होंगी पर कोई लेखक मात्र विचारधारा के बल पर लिखता हो ऐसा नहीं है। विचार धारा से प्रेरित होते हुए भी वह विचार धारा हो ऐसा नहीं होता' विजय मोहन सिंह के अनुसार-'भीष्म जी के प्रथम कहानी संग्रह 'भाग्य रेखा' से लेकर अंतिम उपन्यास 'नीलू नीलिया नीलोफर' तक को देखें तो भीष्म जी की सभी रचनाओं में जीवन को खुली आखों से देखना ही प्रधान रहा है। और उसमें विचार धारा चुपके से 'हृदय की राह' 'प्रवेश करके उनकी जीवनी दृष्टि' का निर्माण करती है। मस्तिष्क की नहीं इस हृदय और व्यक्तित्व निर्धारण करती रही है।[4]

अपनी आत्मकथा में वे लिखते है किसी उपन्यास की रचना लेखक की कलम नहीं करती, उसका 'भाव विहल हृद' करता है। उनका यह कथन उनके महत्वपूर्ण उपन्यास 'तमस' के साथ ही उनकी अन्य समस्त रचनाओं को पढ़ने, समझने और विश्लेषित करने की महत्वपूर्ण कुंजी है। 'तमस' लिखने की प्रेरणा भीष्म साहनी को भिवंडी में हुए नरसंहार 1973 से मिली थी। सन् सेंतालीस की यातना का दर्द इस में व्यक्त हुआ है। भीष्मजी ने विभाजन की विभीषिध, उसकी यंत्रणा औश्र यातना को परिवार सहित भोगा था। लेकिन वह उपन्यास के रूप में सामने आया सन चौहत्तर में । 25 वर्ष का यह अन्तराल महत्वपूर्ण है। तात्कालिक प्रभाव पर आधारित रचनाओं में और लंबे अरसे तक धीमी आंच में पकती मानसिक प्रक्रिया के रसायन में बड़ा फर्क होता है। कालजमी कृतियाँ प्राय: अंतराल के इसी रसायन से निर्मित होती है। 'तमस' विभाजन पर लिखा गया हिंदी का सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास है। विश्व का महानतम माने जाने वाला उपन्यास 'वार एंड पीस' 1860 में लिखा गया था और उसके कथानक की घटनाये नेपोलियन के आक्रमण के समय पर आधारित है।

रचना-प्रक्रिया और भाषा-शिल्प की दृष्टि से उनकी समस्त कृतियों में अनवरतता है। भीष्म साहनी वैचारिक, उहापोह, गहरे द्वन्द्व, तनावों और

* प्रध्यापक (हिन्दी) शासकीय कन्या महाविद्यालय, बीना, जिला-सागर (म.प्र) भारत

उत्तेजनाओं के रचनाकार नहीं है। उनकी समस्त रचनाओं में मंथरता, समरसता और मद्धिभ उत्ताप वाली मानवीयता मिलती है जो पाठक को बहुत विचलित, उत्तेजित और व्यग्र नहीं करती। यद्यपि उनकी कहानियों का फलक बहुत व्यापक और उनकी सहानुभूति सर्वहारा वर्ग के साथ रही है। उनकी वर्णन शैली पाठकों को न तो उल्लास से आप्लावित करती है और न अवसाद ग्रस्त बनाती है। इसी अर्थ में वे साधारण मनुष्य और सामान्य पाठक के लेखक है। बड़वोलापन और वाग्विलास से दूर उनकी रचनायें विडम्बनाओं को विश्लेषित करती चली है। उनकी सर्वाधिक चर्चित कहानी 'चीफ की दावत' इसी विडंवना पर आधारित है। विजय मोहन सिंह के अनुसार–हिंदी में यदि सचमुच कोई नयी कहानी थी तो उसकी शुरूआत भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' से मानी जाना चाहिए। चीफ की दावत कहानी में पहली यह विडम्बना उजागर होती है कि नौकर शाही किस तरह मानवीय संबंधों का अवमूल्यन करती है। वहाँ मनुष्यों और वस्तुओं में कोई फर्क नहीं रह जाता। भीष्म साहनी मानवीय संवेदनाओं के लेखक थे। देशों के बीच की दीवार मनुष्यों के बीच कैसे दरार पैदा करती है यह प्रश्न उन्हें हमेशा व्याकुल करता था। अपनी दूसरी कहानी 'वांग्चू' में वे मार्क्सवादी देश चीन की आलोचना करने से नहीं चूकते। इस कहानी में वांग्चू जैसा निरी व्यक्ति किस प्रकार दो देशों के द्वन्द का षिकार होता है। इसका बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। 'अमृतसर आ गया है' में भीष्म जी सांप्रदायिक आतंक का वर्णन किया है।

भीष्म साहनी एक सफल नाटककार भी रहे है। विषय वस्तु, चरित्र और परिवेश आदि की दृष्टि से हानूश, कबिरा खड़ा बाजार में पृष्ठभूमि पर आधारित है तो 'माधवी' का कथानक महाभारत की स्त्री पात्र माधवी पर केन्द्रित है।

कथाकार, नाटककार और उपन्यासकार के रूप में ख्याति प्राप्त भीष्म साहनी को हिंदी अकादमी के श्लाका सम्मान, तमस पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान के प्रेमचंद पुरस्कार, तोखियत लैंड, नेहरू पुरस्कार और पद्‌भूषण अलंकरण सहित अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए। साहित्य अकादमी ने उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित किया था।[5]

दि. 11 जुलाई 2003 को भीष्म साहनी का निधन हुआ। प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से भीष्ण साहनी की स्मृति आयोजित सभा में अनेक शिक्षाविद् साहित्य करों ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र यादव के अनुसार–भीष्म साहनी अंदर से शरारती लगते थे। उनका शुरू से मार्क्सवाद में विश्वास था और अंत तक रहा। उनके भीतर टाल्सराय जैसा एक प्रतिबद्ध लेखक था। वे एक आस्थावान लेखक के रूप में याद किए जाएंगे। उपन्यासकार कृष्ण सोवती के अनुसार– 'उनका लेखकीय व्यक्तित्व व्यापक और विशाल था वे विचारधारा पर अडिग थे लेकिन विचारधारा वाली कट्टरता उनमें नहीं थी।[6] कथाकार कमलेश्वर ने कहा – 'भीष्म ने कभी अपनी उम्र को बड़ा नहीं माना और किसी को छोटा नहीं किया। वे कप्यूनिस्ट मार्क्सवादी थे संगठनकर्ता थे, लेकिन ये सारी बातें उनकी रचनाओं में नही आई। बूझने के बाद जो लेखक रोशनी देता है वही रह जाता है। भीष्म बुझे है लेकिन रोशनी अभी भी दे रहें है।[7] कवि आलोचक अशोक वाजपेयी के अनुसार भलमनसाहव से अच्छा साहित्य पैदा हो सकता है। इसका ज्वलंत उदाहरण भीष्म साहनी है। उन्हें चुहल करने में मजा आता था। उनमें ऐसा आदमी था जो पारदर्शी था, निर्मल था, जिसमें गांठे नही थी।[8] विजय मोहन सिंह ने भीष्मजी की आत्मकथा को महात्मागांधी की आत्मकथा के तुल्य बताते हुए कहा कि बच्चों की तरह निश्छलता और उसका इजहार उनकी आत्मकथा में दिखता है।

निश्चय ही हिंदी सहित्य के इतिहास में भीष्म साहनी अविस्मरपीय रहेंगे। जैसी पारदर्शिता उनके लेखन में थी वैसी है। उनके व्यक्तित्व में भी थी। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार–20वीं सदी में जो बड़ा साहित्य लिखा गया वह वेवतनों ने लिखा है। भीष्म जी ने अपना तमाम अच्छा कृतित्व 40 की उम्र के बाद शुरू किया। लघुता को बड़ा रूप देना उनके साहित्य और तमाम जीवन में रहा है। निश्चय ही एक श्रेष्ठ कथाकार, उपन्यासकार और नाटककार के रूप में वे हमेशा अविस्मरणीय रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. विजय मोहन सिंह सहारा समय दैनिक समाचार पत्र दिनांक 26.07.03 पृ. 25
2. प्रभाष जोशी, जनसत्ता दि. 12.07.03
3. विजय मोहन सिंह, सहारासमय, 26.07.03
4. अशोक वाजपेयी।
5. राजेन्द्र यादव।
6. कृष्णा सोवती।
7. अशोक वाजपेयी।

****

साम्प्रदायिक सद्भाव की आवश्यकता एवं संविधान में इसके प्रावधान

डॉ. संध्या खरे *

प्रस्तावना – भारत के संविधान का प्रारम्भ ही साम्प्रदायिक सद्भाव की भावना से होता है। भारत के संविधान की उददेशिका में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्धारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। [1]

इस उद्धेशिका में आये समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्र, समस्त नागरिक को सब प्रकार के न्याय, धर्म की स्वतंत्रता, समता के अवसर, व्यक्ति व राष्ट्र की एकता, अखण्डता को सुनिश्चित करते हुये बंधुता को बढ़ाने की बात करने वाले शब्द स्वत: संविधान की साम्प्रदायिक सद्भाव बढाने वाली नीतियों के मुख पत्र हैं।

भारत के संविधान में वर्णित अनेक नीतियों साम्प्रदायिक सद्भाव की पोषक है। संविधान के भाग दो में वर्णित नागरिकता का अधिकार एक ऐसी ही नीति है। जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है ऐसा व्यक्ति जो स्वयं या उसके माता-पिता भारत के राज्यक्षेत्र में जन्में हो, भारत के नागरिक हैं। [2]

भारत के संविधान के भाग 3 में नागरिकों के अनेक मूल अधिकारों का वर्णन है जिनमें समस्त नागरिकों को समान अधिकार की बात कही गयी है। इनमें सबसे पहला अधिकार है समता का अधिकार। इसके अन्तर्गत क्रमांक 14 में भारत के प्रत्येक नागरिक को भारत के राज्य क्षेत्र में सामान विधि संरक्षण प्राप्त है।

क्रमांक 15 के अंतर्गत राज्य किसी भी नागरिक के विरूद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति के जन्म स्थान के आधार पर कोई विभेद नहीं रखेगा। उन्हें सब प्रकार की समानता प्राप्त होगी। समस्त नागरिक सार्वजनिक स्थानों-दुकानों, होटलों, मनोरंजन स्थलों तथा राज्य द्धारा नागरिकों हेतु निर्मित समस्त स्थानों- कुंआ-तालाब, सड़क, सभागार का समान रूप से उपयोग कर सकेगा। [3]

क्रमांक 16 के अंतर्गत राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति के लिए सभी नागरिकों को सामान अवसर होंगे। इनमें भी धर्म, मूलवंश, जाति के जन्म स्थान के आधार पर न कोई नागरिक अपात्र होगा न उससे कोई विभेद किया जायेगा। इतना ही नहीं पदों पर नियुक्ति हेतु उन्हें समान अवसर प्राप्त होंगे सिवाय उनके, जिन्हें संविधान द्धारा ही विशेष छूट प्रदान की गयी है। [4]

धार्मिक सद्भाव को बढाने के लिये संविधान में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि 'अस्पृश्यता' का अंत किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है। 'अस्पृश्यता' से उपजी किसी निर्योग्यता को लागू करना अपराध होगा जो विधि अनुसार दंडनीय होगा। [5]

ठीक इसी प्रकार संविधान में वर्णित स्वातंत्रय-अधिकार के अंतर्गत क्रमांक 19 में सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संगम-संघ बनाने, भारत में अबाध संचरण, निवास करने तथा कोई भी वृत्ति, आजीविका, व्यापार करने का अधिकार दिया गया है। [6]

किन्तु अपेक्षा इस बात की भी है कि हमारी स्वतंत्रता से किसी अन्य नागरिक की स्वतंत्रता में बाधा डालने का कार्य न हो। भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को स्वयं को निरापराध सिद्ध करने की भी स्वतंत्रता है। संविधान के भाग 3 के क्रमांक 20 में भारतीय संविधान में किसी व्यक्ति को तब अपराधी संबोधित नहीं किया जा सकता जब तक की उसका अपराध सिद्ध न हो जाये। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को दोषमुक्त साबित करने के लिये न्याय मांगने का अधिकार भी प्रदान किया गया है। यदि व्यक्ति दोषी साबित हो गया है तब भी किसी भी अन्य प्रकार के विभेद के आधार पर उसे एक ही अपराध के लिये एक से अधिक बार अभियोजित व दंडित नहीं किया जा सकता है। [7]

भारतीय संविधान के क्रमांक 21 के अंतर्गत भारत के प्रत्येक नागरिक को उसके प्राणों एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है। उसे इस स्थिति से केवल विधि की स्थापित प्रक्रिया द्धारा ही वंचित किया जा सकता है अन्यथा नहीं। क्रमांक 21 (क) के अनुसार प्रत्येक राज्य में बिना किसी प्रकार का विभेद किये छह से चौदह वर्ष की आयु के बालकों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जायेगी। [8]

भारत के संविधान के भाग 3 के क्रमांक 23 में प्रत्येक नागरिक को शोषण के विरूद्ध अधिकार प्राप्त है। कोई भी व्यक्ति किसी नागरिक से दुर्व्यापार, बेगार तथा बलातश्रम नहीं करा सकता है। यदि कराता है तो वह विधि के अनुसार दंडनीय होगा। [9]

संविधान के क्रमांक 25 के अंतर्गत सभी नागरिकों को धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है। प्रत्येक नागरिक लोक-व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य

* प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाराजा महाविद्यलय, छतरपुर (म.प्र.) भारत

का पालन करते हुये अपने अन्त:करण की स्वतंत्रता का और धर्म को अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का अधिकार रखता है। [10]

क्रमांक 26 के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को लोक-व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य के अधीन रहते हुये विभिन्न प्रयोजनों से धर्मिक संस्थाओं की स्थापना, धर्म विषयक कार्यो का प्रबंध, संस्था हेतु जंगम और स्थावर संपत्ति के अर्जन और स्वामित्व तथा संपत्ति का विधि अनुसार प्रशासन करने का अधिकार प्राप्त है। [11]

संविधान के क्रमांक 27 के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को ऐसे करों का संदाय करने के लिए बाध्य नहीं किया जायेगा, जिन्हें किसी विशिष्ट धर्म या धार्मिक सम्प्रदाय की अभिवृद्धि के लिए विनियोजित किया गया है। क्रमांक 28 के अंतर्गत राज्य निधि से पूर्णता पोषित किसी संस्था में कोई धर्मिक शिक्षा नहीं दी जायेगी। इस प्रकार नागरिकों को धार्मिक शिक्षा या उपासना में उपस्थित होने की स्वतंत्रता प्राप्त है।

क्रमांक 27 के अंतर्गत भारत के नागरिकों को संस्कृति और शिक्षा संबंधी स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है। प्रत्येक नागरिक अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति को बनाये रखने का अधिकारी है। क्रमांक 30 के अंतर्गत धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक-वर्गो को अपनी रूचि की शिक्षा संस्थानों की स्थापना और प्रशासन का अधिकार प्राप्त है। [12]

भारत में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकीकरण को बनाये रखने के लिए जहां नागरिकों को अनेक प्रकार के सामानता के अधिकार प्रदान किये गये है, वहीं देश की अखण्डता और एकता को सुनिश्चित करने के लिए संविधान के भाग 4 (51 क) के अंतर्गत अनेक मूल कर्तव्यों को भी सुनिश्चित किया गया है। जिसके अंतर्गत प्रत्येक नागरिक का संविधान तथा उसके आदर्श, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करना(भारत की सम्प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करना, राष्ट्र-रक्षा, राष्ट्र सेवा करना मूल कर्तव्य है।

प्रत्येक नागरिक का मूल कर्तव्य है कि वह समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, स्त्रियों का सम्मान करे, भारतीय सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा के महत्व का परिरक्षण करे, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद, ज्ञानार्जन और सुधार की भावना का विकास करे।

प्रत्येक नागरिक का मूल कर्तव्य है कि वह भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के उच्च आदर्शो को हृदय में संजोए, बालकों को शिक्षा का अवसर दे, व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों में उत्कर्ष की ओर बढे, प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा एवं सम्वर्धन करे, हिंसा से दूर रहते हुये सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे। [13]

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को आत्मसात करते हुये भारतीय संविधान का इस प्रकार निर्माण किया गया है, जो सब प्रकार से साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकीकरण को स्थापित करता है तथा एक बार पुन: इन पंक्तियों को पुनर्जीवित करता है -

''सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:ख भागभवेत्।।''

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0 -3
2. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0 -7
3., 4. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0 -10
5., 6. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0-13
7. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0-14
8. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0-15
9., 10. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0-17
11., 12. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0-19
13. भारत का संविधान : प्रकाशक- कानून प्रकाशक, गुरूद्वारा के सामने, आनन्द सिनेमा, जोधपुर- 342001, राजस्थान, संस्करण 2011, मूल्य 80/-, पृष्ठ क्र0-31

****

अज्ञेय के काव्य में भाषिक सौन्दर्य

डॉ. वर्षा शर्मा *

शोध सारांश – भाषा प्रयोग की दृष्टि से अज्ञेय समर्थ कवि हैं। अज्ञेय की भाषा के संबंध में अपना मत प्रकट करते हुए – डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी ने कहा है ''भाषा का जो रूप अज्ञेय ने प्रकट किया है उसमें अर्थ की नयी–नयी धाराओं के श्रोत खुले हैं। भाषा का जितना सार्थक प्रयोग इनके द्धारा हुआ उतना कम कृतिकारों ने किया। साहित्य के सम्प्रेषण भाषा के पारखी हैं अज्ञेय। काव्य भाषा पर जो अधिकार निराला का है और शब्द के जिस रूप में अन्वेषी निराला हैं उसमें अर्थ की नई गरिमा देने वाले और शब्दों में अर्थो की गागर रस छलकाने वाले अज्ञेय हैं। उन्होंने भाषा को संस्कृति की समकक्षिणी माना हैं उसकी रक्षा तथा उसके निर्वाह में भी वह किसी संस्कृति चेता से पीछे नहीं हैं। भाषा की पहचान जितनी सही और प्राज्जल रूप में अज्ञेय को हैं उतनी कम कवियों को होगी।'' अज्ञेय ने अपनी भाषा को नवीन प्रयोगों द्धारा सौन्दर्य प्रदान किया है। उनके भाषिक सौन्दर्य को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास इस शोध आलेख में किया गया है।

प्रस्तावना – कविता में दो ही चीजें होती हैं भाषा और भाव। कविता में भाव उसका प्राणदायक तत्व है। भावों के माध्यम से ही काव्य की अभिव्यक्ति होती है। कवि भाषा का प्रयोग कुछ इस प्रकार करता है कि उसमें एक नूतन भंगिमा, आभा और अपूर्व रमणीयता का संचार हो जाता है। इसी को रिचर्ड्स ने भाषा का संवेगात्मक (इमोटिव) प्रयोग कहा है। सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन में कवि की भाषा का अध्ययन सर्वोपरि महत्व रखता है। एक पाश्चात्य विद्धान ने कहा है कि मधुरतम शब्दों का पूर्ण सुव्यवस्थित रूप ही काव्य है।

भाषा का आधार शब्द है। काव्य भाषा के अध्ययन में शब्दों का विशेष महत्त्व है। कवि की अभिव्यंजना में उसका शब्दकोष भी सम्मिलित है। शब्द शक्ति रूप है, अर्थ इसी शब्द शक्ति का धर्म है। मानव जीवन का कोई भी व्यापार शब्दों के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। भर्तृहरि स्फूट रूप शब्द को ब्रह्म रूप कहते हैं और अर्थ को उसी का विवर्त मानते हैं।

शब्द अपनी ध्वन्यात्मक पूर्ति द्धारा अर्थ को व्यक्त करता है। शब्द का अर्थ उसकी आत्मा है, जो उसे चेतना, स्फूर्ति, प्रकाश, गाम्भीर्य और जीवन प्रदान करती है, और शब्द मानो विनिमय ने उसे शरीर, रूप और जगत में पार्थिव सत्ता प्रदान करता हैं शब्द और अर्थ का सम्बंध अविच्छेद्य है। इनके साहचर्य से साहित्य का उदय होता है। सत्य तो यह है कि शब्द और अर्थ के सहित होने के कारण ही इसे साहित्य कहते हैं। शब्द में अर्थ का साक्षात्कार कराने की शक्ति ही साहित्य का सौन्दर्य हैं शब्द के विशिष्ट प्रयोग से ही भाषा अभिव्यंजक बनती हैं शब्द और धर्म के पारस्परिक संबंध पर नए कवियों में से अज्ञेय ने गम्भीर मनन किया है। 'तीसरा सप्तक' में वे लिखते हैं कि 'कोई शब्द दूसरे शब्द का सम्पूर्ण अर्थ नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक शब्द के अपने वाच्यार्थ के अलावा अलग–अलग लक्षणाएँ और व्यंजनाएँ होती हैं – अलग संस्कार और ध्वनियाँ।'[1] अज्ञेय की शब्द सम्बन्धी कविता इस प्रसंग में द्रष्टव्य है :

''किसी को/शब्द है कंकड/...किसी को/ शब्द है सीपियाँ/किसी को शब्द है नैवेद्य/थोड़ा सा प्रसादवत्/मुदित/विभोर वह पाता/उसी में कृतार्थ, धन्य/सभी को लुटाता है/ अपना हृदय/ वह प्रेममय।''[2]

रिचर्ड्स ने शब्द और अर्थ के सम्बंध को गहराई और मौलिकता से विवेचित किया है उन्होंने 'लक्षक और व्यंजक शब्दों को वाचक शब्दों से पृथक् माना है। शब्दों का संकेतात्मक और सन्दर्भात्मक प्रयोग भी किया जा सकता है, और उनका प्रयोग भावोद्धोधन के लिए भी किया जा सकता है।'[3] एक विशिष्ट शब्द से अनेक स्थूल सूक्ष्म अर्थ नि:सृत होते हैं और फिर इन अर्थो में ही सूक्ष्म सूत्र ऐसा रहता है जो उन्हें परस्पर जोड़ता और स्पन्दित करता है तथा एक समग्र अर्थ की सृष्टि करता है।

अज्ञेय ने भाषा के महत्व और कविता में उसकी निहायत अहम् भूमिका को समझा है और उसका प्रयोग अत्यन्त सजगता एवं सुरूचिपूर्वक किया है। :आत्मनेपद में अज्ञेय का दावा है कि मैं उन व्यक्तियों में से हूँ और ऐसे व्यक्तियों की संख्या प्रतिदिन घटती जा रही है जो भाषा का सम्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं। 'एक बूँद सहसा उछली में' भी उन्होंने लिखा है कि 'जिन डूबा तिन पाईयाँ गहरे पानी पैठ– भाषा के सागर के लिए भी उतना ही सच है जितना ज्ञान के : ज्ञान के द्धारा हम सत्य की वास्तविकता को पहचानते हैं तो भाषा के द्धारा उसकी सुन्दरता को।'[4]

भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति या सम्प्रेषण का साधन ही नहीं है, प्रत्युत वह संवेदना को भी नियमित और अनुशासित करती है। इस सन्दर्भ में अज्ञेय का यह कथन समीचीन है : 'काव्य सबसे पहले शब्द है और सबसे अन्त में भी यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। सारे कवि धर्म इसी परिभाषा से नि:सृत होते हैं। शब्द का ज्ञान, शब्द की अर्थवत्ता की सही पकड़ ही कृतिकार को कृति बनाती है।'[5] कविता भाषा के माध्यम से अनुभूति ही अभिव्यक्ति नहीं वरन् अनुभूति का भाषा में रूपान्तरण है। यही कारण है कि भाषा की कमजोरी असमर्थ कवि मानस की ओर संकेत करती है। अज्ञेय ने काव्य भाषा की एकात्मकता को आत्मसात कर भाषा के महत्व को समझा। अज्ञेय ने यह स्पष्ट किया कि भाषा अनुभव की अभिव्यक्ति और अन्वेषण का माध्यम भर नहीं है बल्कि स्वयं अनुभव का ऑर्गेनिक ढंग भी है। उनकी काव्य–भाषा घिसी–पिटी अर्थहीन परिपाटियों से जूझती हुई नयी राहों के अन्वेषण और काव्य भाषा के सजग और सम्यक् प्रयोग के प्रति प्रवृत हुई। कवि के समक्ष

* रेवेन्यु नगर अन्नपूर्णा रोड, इन्दौर (म.प्र.) भारत

आधुनिक युग में बहुत बड़ी समस्या है। वह भाषा की क्रमशः संकुचित होती हुई सार्थकता की केंचुल फाड़कर, उसमें नया, अधिक व्यापक, अधिक सारगर्भित अर्थ भरना चाहता हैं इसका कारण उसका अहंकार नहीं, अपितु इसके अंतस्थल को इसकी माँग सदा आकुल किए रहती है। मूल प्रकृति की इस भिन्नता के कारण अज्ञेय को नये मुहावरें की जरूरत महसूस हुई। समकालीन जिन्दगी की जटिल अनुभूतियों और परिवर्तित सौन्दर्यबोध के लिए उपयुक्त भाषा की आवश्यकता को कवि ने बारम्बार अनुभव किया। उन्होंने मुहावरे के बदलाव के मूल में चौंकाने और चमत्कृत करने की प्रवृति के बजाय जीवन बोध और सौन्दर्य चेतना का परिवर्तन है। अज्ञेय ने मुहावरों का अलग-अलग तरह से प्रयोग कर भाषा को नवीन रूप प्रदान किया है -

''कवि तुम (नभचारी) मिट्टी की ओर मत देखना
गहरे न जाना कहीं
आँचल बचाना सदा
दामन हमेशा पाक रखना
पंकज सा पंक में
कंज पत्र में सलिल सा
धाक रखना
लाज रखना, नाम रखना
नाक रखना।''[6]

कुछ मुहावरें ऐसे हैं जिनको कवि ने थोड़े परिवर्तन के साथ ग्रहण किया है। परम्परा को तोड़ने का मोह अज्ञेय में कभी-कभी उत्कट हो जाता है और वे इस प्रकार के प्रयोग करने में भी नहीं झिझकते हैं -

''लीजिए हमारे संस्कार हम देते हैं
पुरखों के झोपड़ों में आग हम लगाते हैं,
घर-घर का भेद हम लाते हैं।''[7]

यहाँ घर-घर का भेद लाना मुहावरा घर का भेदी लंका ढायेय मुहावरें का परिवर्तित रूप है। इस प्रकार अनेक मुहावरों को नवीन रूप प्रदान कर अज्ञेय ने काव्य को सौन्दर्य प्रदान किया है।

अज्ञेय की कविता में भाषागत अनेक प्रयोग हुए हैं जिससे नये शिल्प विज्ञान में प्रयोग की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। वह शब्द और सत्य को मिलाना चाहता है - उनके अनुसार कवि जो भी करना चाहें, करते रहें लेकिन उसका प्रयोजन इतना ही है शब्द और सत्य एक दूसरे के विपरित न रहें क्योंकि कवि के सृजन में ये दोनों एक दूसरे के अपने होते हैं - अतः शिल्प विधान अनिवार्यतः काव्य के व्यापक सत्य से जुड़ा है - वह आधुनिक संवेदना के अनुरूप है।

अज्ञेय की काव्य भाषा में शब्दों का प्रयोग नई अर्थवत्ता के सन्दर्भ में किया गया हैं आज का कवि इस समस्या से सबसे अधिक जूझता है - शब्दों के साधारण अर्थ से बड़ा अर्थ वह अपनी कविता में भरना चाहता है और जब अनुभव करता है कि भाषा का पुराना व्यापकत्व उसमें नहीं है - तभी उसकी समस्या गम्भीर हो जाती है।

अज्ञेय के काव्य भाषा में एक प्रकार का अभिजात्य संस्कार है - जिसका आकार रूप अंग्रेजी संस्कृत दोनों भाषाओं से कवि ने लिया है। कविता की भाषा में यह अभिजात्य का भाव किसी भी काल में नहीं मिलता। अज्ञेय की आरम्भिक कविताओं में भाषा का रूप सीधा-सपाट रंगहीन है और कवि में तद्भव शब्दों के सर्जनात्मक प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ती गई है। हरी घास पर क्षण भर में कलगी बाजरे की - प्रसिद्ध कविता है जिसमें वह हरी बिछली घास के साथ ही शरद के भोर की नीहार न्हायी कुंई : जैसे शब्दों का प्रयोग करता है - यही वह नये उपमानों की आवश्यकता का प्रतिपादन भी करता है। यहाँ कवि की भाषा में रोमेंटिक प्रवृत्ति से छुटकारा पाने की प्रवृत्ति भी अंकित है।

'पहला डोंगरा', 'कलगी बाजरे की', 'हरी घास पर क्षण भर', 'सबेरे-सबेरे', नयी कविता की सामर्थ्य का प्रतीक है। हरी घास पर क्षण भर में युग की अपरिहार्य चेतना की व्यंजना हुई है। कवि के शब्दों में -

गावे कोई?/ऐसी ओंधी खोपड़ी/ क्यों पावे कोई?/कांय /कांय / कांय क्या करें, कहाँ जाय?/ मुँह से यह हाय/ निकले हैं मेरे /धतेरे नास जाय/ सच, मुँह-अंधेरे/ सबेरे-सबेरे।[8]

कवि अपनी गली रचनाओं में संप्रेषण के निकट बढ़ता गया है - बावरा अहेरी और इन्द्रधुन रौंदे हुए ये की कविताओं में तद्भव और देशज शब्दों का महत्व बढ़ता गया। तत्सम शब्द कम होते गए हैं। इन कविताओं में 'बावरा अहेरी', 'हमने पोथे से कहा', 'मैं वहाँ हूँ', - तद्भव शब्द प्रधान भाषा का प्रयोग हुआ है। 'अरी ओ करूणा प्रभामय' तक आते-आते कवि प्रकृति, ग्रामीण जीवन या शोषण के चित्रों से प्रायः सभी प्रकार की अनुभूतियों को तद्भव शब्दों के सहारे व्यक्त करने का उपक्रम करता है जिसकी पराकाष्ठा आँगन के पार द्वार में हुई है। अरी ओ करूणा प्रभामय की ठेठ शब्दावली इसका प्रमाण है। अज्ञेय ने आज तुम शब्द न दो कविता में कहा है -

मेरा भाव-यंत्र?/एक मचिया है सूखी घास-फूस की/उस में छिपेगा नहीं औघड़ तुम्हारा दान/साध्य नहीं मुझ से, किसी से चाहे सधा हो।[9]

इससे कवि की भाषा और भाव के सन्तुलन की स्थिति स्पष्ट होती है - शब्द का सारा परिवेश नयी अर्थवता की तलाश में और अर्थ भी शब्द के नये संयोजन से सम्प्रेषण के सन्दर्भ को व्यक्त करता है।

कवि की भाषा बिम्बों की भाषा है। अज्ञेय ने अपने बिम्बों को प्रायः तद्भव और ठेठ देशी जीवन के विविध प्रसंगों और क्षेत्रों से चुनकर काव्य को भाषिक सौन्दर्य प्रदान किया है। उनकी एक छोटी सी कविता इस भाव को अच्छी तरह व्यंजित करती है -

मेरे छोटे घर कुटीर का दिया
तुम्हारे मन्दिर के विस्तृत आँगन में
सहसा सा रख दिया गया।[10]

अज्ञेय ने 'घर-कुटीर का दिया' जैसे सामन्य और परिचित बिम्बों का प्रयोग कर कविता को सौन्दर्य प्रदान किया है। 'सूप-सूप भर धूप कनक' को बीनने वाला अकेला एक कुरर, 'एक मचिया सूखी घास-फूस की', 'सागर में तड़पने वाली मछली', 'ग्वाले की कमण्डल की खड़कन' चिहुँकती और रँभाती अफराये डाँगर सी - ये सब बिम्ब है जो हमारे साधारण जीवन से लिए गए हैं।

अज्ञेय ने शब्दों के नवीन प्रयोग, बिम्ब, प्रतीक आदि से तो अपने काव्य को सौन्दर्य प्रदान किया ही है, साथ ही उन्होंने मौन को भी अभिव्यंजना मानते हुए लिखा है कि ''पूर्व की एक परम्परा के उत्तराधिकारी के नाते मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि कविता भाषा में नहीं होती, वह शब्दों में भी नहीं होती, कविता शब्दों के बीच की नीरवताओं में होती है और कवि सहज-बोध से जानता है कि उससे दूसरे तक पहुँचा जा सकता है : उससे संलाप की स्थिति पायी जा सकती है, क्योंकि वह जानता है कि मौन के द्वारा भी संप्रेषण हो सकता है।''[11]

इस वर्ग की कविताओं में से प्रमुख कविता 'इन्द्रधुन रौंदे हुये ये' में संकलित है -

''कहा सागर ने : चुप रहो!/मैं अपनी अबाधता जैसे/सहता हूँ, अपनी मर्यादा तुम सहो।/जिसे बाँध तुम नहीं सकते/ उसमें अखिन्न मत बहो।/ मौन भी अभिव्यंजना है:/ जितना तुम्हारा सच है/ उतना ही कहो।''[12]

अज्ञेय की अनेक कविताओं में अर्थगर्भ मौन एवं शब्दों का संयमित प्रयोग लक्षित होता है। मौन के प्रयोग का एक उदाहरण दृष्टव्य है

भोर! तुम ! आशी ! जीवन है ! आशी:! [13]

यह पूरी कविता है। इसमें भोर से सम्बन्धित समस्त उल्लास को अनभिव्यक्त छोड़ दिया गया है। कवि सन्दर्भ भी नहीं बताता, किन्तु इसमें अभिव्यक्त प्रसादित मन: स्थिति को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि सागर के किनारे खड़ा है। जीवन के समस्त अनुभव आशा-निराशा, आक्रोश कुण्ठा उसके मन में सन्निहित है। जब वह अपने पास जीवन ढूँढना चाहता है, तो उसे सिर्फ अपनी हीनताओं का एक भण्डार मिलता है। ऐसे निराश क्षणों में भी जब कवि भोर को उल्लास आदिगन्त प्रसार एवं स्निग्ध आलोक से सना देखता है तो उसे किंचित आश्चर्य ही होता है और वह कह उठता है 'भोर'! किन्तु 'तुम' कहते-कहते जैसे वह आश्वस्त हो गया और कवि समस्त हर्षातिरेक को छिपाकर सिर्फ 'आशी' में व्यक्त किया गया है। इस कविता में यदि मौन अभिव्यंजना में सहायक न हो तो इसे कविता मानना ही असंभव हो जाएगा। प्राय: छोटी कविताओं में अज्ञेय ने मौन का एवं शब्दों के संयमित प्रयोग की दृष्टि से दूज का चाँद, मैंने देखा, एक बूँद, सोन मछली, द्वार हीन द्वार आदि कविताएँ विशेष महत्व रखती हैं। इन कविताओं से एक भी शब्द को निकाला नहीं जा सकता।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अज्ञेय की भाषा नवीनता लिए हुए है। अज्ञेय ने भाषा को नया संस्कार, नयी राह और नयी दिशा प्रदान की है। वे भाषा की लय और भाषा की गन्ध को पकड़ कर चलने वाले हैं। भाषा का जितना रस वह निचोड़ते हैं उससे अधिक वह भाषा में रस भरते हैं। वे भाषा का यथार्थ पहचान कर भाषा की अनुभूति को समझते हैं। हिन्दी कविता में उनके द्वारा अंग्रेजी, जापानी, यूनानी, चीनी, भाषा के मुहावरे भी प्रयोग किए गए हैं तथा पंजाबी, बंगला तथा तमिल की अदाकारी भी दिखायी पड़ती हैं अज्ञेय ने देश-विदेशों की सैर की है। यही कारण है कि उनकी भाषा में अनेक भाषाओं के शब्दों की छटा दिखाई पड़ती है।

अज्ञेय ने अपनी कविता में तत्सम् तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। तथा लोक भाषा के शब्द भी स्थान-स्थान पर आये हैं। नये शब्दों के अथवा संस्कृत शब्दों की संगति में बोल-चाल के शब्दों का प्रयोग अज्ञेय की भाषा की विशेषता है।

अज्ञेय भाषा को 'कल्पवृक्ष' समझ कर उसकी शरण में जाते हैं किन्तु फिर भी उन्हें वह 'शब्द' नहीं मिलता जिससे वह 'सत्य' को जान सके तब 'मौन' के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं रहता। मौन अर्पण है अर्पण ही सृजन बनता है। मौन संबंधी अज्ञेय की मान्यता है कि मंत्र द्दष्टा ऋषि मौन साधक थे। अज्ञेय की भाषा विभिन्न नवीन प्रयोगों के बाद 'मौन' पर आकर टिक गई। उनकी भाषा पात्र या भाव के अनुरूप नहीं उनके स्वभाव, रूचि एवं विचार के अनुरूप है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. अज्ञेय - तार सप्तक (तीसरा), पृ. 95
2. अज्ञेय - सदानीरा भाग-1, पृ. 282
3. आई.ए.रिचर्ड्स : मिनिंग ऑफ मिनिंग, पृ. 267
4. अज्ञेय - एक बूँद सहसा उछली, पृ. 49
5. अज्ञेय - तार सप्तक, पृ. 95
6. अज्ञेय - इन्द्रधनु रौंदे हुए ये, पृ.88
7. वही, पृ. 32
8. अज्ञेय - सदानीरा भाग-1, पृ. 241
9. वही, पृ.265
10. अज्ञेय - सदानीरा भाग-2, पृ.106
11. अज्ञेय - आलवाल, पृ.12
12. अज्ञेय - सदानीरा भाग-1, पृ.310
13. अज्ञेय - सुनहले शैवाल, पृ.102

****

पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक चेतना

डॉ. नन्दा मोरे *

प्रस्तावना – पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। प्रकृति के विविध जीव-जन्तओं व वनस्पति का अस्तित्व भी पर्यावरण पर निर्भर है। मानव सभ्यता के विकास के साथ प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग से पर्यावरण प्रदूषण निरन्तर विस्तारित होता जा रहा है।

प्रकृति प्रदत्ता स्वच्छ पर्यावरण हमारें लिए वरदान है और हम इसे प्रदूषित कर अभिशाप बना रहे है। मानव के कार्यकलापों के कारण हमारे पर्यावरण का अधिकाधिक ह्रॉस हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के लिए समाज को उत्तारदायी माना जाता है, अत: समाज को जागरुक कर, पहर्हावरण संरक्षण संभव हो सकता है।

पर्यावरण संरक्षण में सामाजिक चेतना जागृत करने के लिए सरकार, स्वयंसेवी संगठन, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट जैसे सभी को मिलकर अभियान चलाना होगा। इस अभियान में सभी की महत्ती भूमिका होगी।

पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण – भारत में पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण का कार्य केन्द्रीय नियंत्रण बोर्ड द्धारा किया जाता है। इसमें मुख्य रुप से वायु और प्रदूषण की रोकथाम के लिए व्यापक स्तर पर कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। देष के प्रत्येक राज्य में पर्यावरण विभाग भी सम्पूर्ण पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार के उत्तारदायी संस्था होती हैं। यह विभाग पर्यावरण के मूल्यांकन, अनुरक्षण, सुरक्षा और राज्य के लोगों में जागरुकता फैलाने के लिए सक्रिय रुप से काम करता है।

भारत में पर्यावरण संरक्षण से सम्बद्ध प्रमुख संस्थाऐं:-

- बाम्बे नेचूरल हिस्ट्री सोसाइटी, मुंबई
- बोटेनिक सर्वे ऑफ इण्डिया, कोलकत्ता
- भारती विद्यापीठ इंस्टीट्यूट ऑफ इनवायरमेंट इजूकेशन एण्ड रिसर्च, पुणे
- केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली
- विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र, नई दिल्ली
- सीपीआर इनवायरनमेंटल सेंटर, चेन्नई
- पर्यावरण शिक्षा बोर्ड केन्द्र, अहमदाबाद
- पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, नई दिल्ली
- मद्रास क्रोकोडाइल ट्रस्ट, चेन्नई
- सलीम अली सेंटर फॉर आर्निथोलॉजी एण्ड नेचुरल हिस्ट्री, कोयम्बटूर
- वर्ल्ड वाइड फन्ड फॉर नेचर इण्डिया, नई दिल्ली
- वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डिया, देहरादून

इन सभी संस्थाआं के माध्यम से देश में पर्यावरण संरक्षण हेतु सामाजिक चेतना जागृत की जा रही हैं।

सामाजिक जनचेतना हेतु सुझाव :

- ई-कचरा प्रबंधन करें।
- पोलिथिन का उपयोग प्रतिबंधित करें।
- औद्योगिक प्रदूषण को नियंत्रित करे।
- घातक एवं रासायनिक पदार्थो का प्रबंधन करें।
- खतरनाक अपशिष्ट का प्रबंधन करें।
- ठोस अपशिष्ठ का प्रबंधन करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत : प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
2. पर्यावरण अध्ययन : इराक भरुचा (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) ओरियंट ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद
3. प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल : पर्यावरणीय अध्ययन, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
4. डॉ. मिलिन्द कोठारी : पर्यावरण अध्ययन, आर. बी. डी. पब्लिकेशन्स, जयपुर

* न्यू निम्बार्क कॉलोनी, सेंधवा, जिला-बड़वानी (म.प्र.) भारत

अज्ञेय के काव्य में यथार्थवादी रचना दृष्टि

डॉ. वर्षा शर्मा *

शोध सारांश – अज्ञेय का काव्य विकास छ: दशकों में फैला है जो भग्नदूत से आरम्भ होकर मरूथल तक चला है। अज्ञेय का जीवन एकाकी इस अर्थ में था कि उसका सृजनात्क मूल्य उनके अपने अस्तित्व और काल बोध के साथ जुड़ा है। सदानीरा का सम्पादन उन्होंने ही किया। अज्ञेय की चुनी हुई कविताएँ शीर्षक से जो संकलन प्रकाशित हुआ, उसका सम्पादन भी उन्होंने ही किया है। अज्ञेय वस्तुत: आधुनिक कविता के ऐसे नये कवि हैं जिनमें संस्कृति और मिथक के साथ अस्तित्वबोध और आधुनिकता के सभी आयाम शामिल हैं। उनकी कतिवओं में सहजता, सौन्दर्य, जटिलता व्यक्त हुई है। मनोविश्लेषणात्मक सन्दर्भो के बीच जीवन का दर्शन व्यक्त हुआ है। उनकी काव्य-यात्रा बहुत लम्बी है जिसमें यथार्थवाद का सामान्य विवेचन शोध आलेख में किया गया है। अज्ञेय को रोमानी कवि माना जाता है जबकि उनके काव्य में जीवन के यथार्थ चित्रण भी देखने को मिलते हैं उनकी यथार्थ दृष्टि को पाठक के सामने लाना ही मेरे शोध आलेख का उद्देश्य है।

प्रस्तावना – 'यथार्थ' शब्द यथा+ अर्थम् से बना है, जिसका अर्थ होता है – 'सत्यतापूर्वक', सही उचित प्रकार से, जैसा चाहिए ठीक वैसा। अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची शब्द है 'रियल'। इसी यथार्थ रियल की आधारभूमि पर जीवन का नूतन चित्र प्रस्तुत करना यथार्थवाद 'रियलिज़्म' है। दोनों अन्योन्याश्रित होते हुए भी अपना पृथक अस्तित्व रखते हैं। जीवन की सच्ची अनुभूति 'यथार्थ' है तो उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति 'यथार्थवाद'। यथार्थवाद का प्रवेश जीवन, साहित्य और दर्शन तीनो की ही चिन्तन पद्धति के रूप में हुआ। इसने कला के क्षेत्र में एक क्रान्ति उपस्थित की है। साहित्य में यह 'वाद' एक दृष्टिकोण है जिसका अर्थ है, 'साहित्य की एक विशिष्ट चिन्तन-पद्धति जिसके अनुसार कलाकार को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन करना चाहिए।'

उन्नीसवीं शताब्दी में साहित्य में यथार्थवाद का आगमन एक महत्वपूर्ण और क्रान्तिकारी घटना है। यह प्रवृत्ति रोमांटिसिज़्म की कल्पनाशीलता के विरूद्ध यथार्थ और वास्तविकता की पुकार थी। यथार्थवादी साहित्यकारों ने साहित्य के क्षेत्र में आदर्शपरक भावुकता प्रधान और पलानवादी प्रवृत्तियों का विरोध किया। उन्होंने यथार्थवादी चित्रण पर जोर देते हुए समाज के उपेक्षित, शोषित और असहाय वर्ग को भी अपना विषय बनाकर मानवता का बहुत बड़ा हित किया। इस यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण साहित्य में नये-नये विषयों का समावेश हुआ। इसने सौन्दर्य का नूतन आदर्श प्रस्तुत किया, रूप के नये विधान प्रध्दान किये, कला के लिए निरूपणी सामग्री की अक्ष्य और अद्‌भुत निधियां खोल दी, रस और रसास्वादन के रूप की वैज्ञानिक गवेषणा की। यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण बदलते सौन्दर्यबोध ने जीवन की वेदना, पीड़ा, मृत्यु और कुरूपता में भी उतना ही सौंदर्य देखा जितना हास और सजावट में। इसी के साथ शैली व शिल्प में भी परिवर्तन किया।

अज्ञेय के साहित्य पर भी यथार्थवाद का प्रभाव पड़ा। किन्तु अज्ञेय के काव्य में यथार्थ की उपस्थित अन्य कवियों से भिन्न है, उनकी मान्यता है कि –

'कला में वही यथार्थ है, जिससे सम्बद्ध संपृक्त हुआ जा सके क्योंकि सम्बद्ध यथार्थ ही कला का यथार्थ इसलिए स्थूल यथार्थ अपने आपमें यथेष्ट नहीं होता। कविता की वास्तविकता स्थूल जीवन की वास्तविकता नहीं है, न उसकी प्रतिस्थानीय हो सकती है।' [1]

'एक स्तर के लोगों के यथार्थ एक जैसे हो सकते हैं किन्तु इससे आगे एक और स्तर है, जहाँ हर एक अपना अद्वितीय यथार्थ होता है। अनुभव की प्रक्रिया में एक ही घटना का रूप और मूल्य भी व्यक्ति के निजी स्मृति – संस्कारों की भिन्नता के कारण बदल जाता है। इस तरह हर किसी का अनुभव अद्वितीय होता है।'[2]

अज्ञेय की अनेक प्रारम्भिक रचनाओं में प्रगतिशील रूझान के दर्शन होते हैं। प्रगतिशील रूझान की उपस्थिति यथार्थ बोध और विशिष्ट प्रकार की सामाजिक यथार्थ दृष्टि की ही सूचना देती है। अज्ञेय की कविताओं में वर्ग – वैषम्य, शोषित जन, किसान, श्रमिक आदि के चित्रण के रूप में यथार्थ विद्यमान है। वे वर्ग वैषम्य को जानते हैं। शोषितजनों का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं –

क्योंकि मैं/उसे जानता हूँ/जिसने पेड़ के पत्ते खाये हैं। और
जो उसकी जड़ की लकड़ी भी खा सकता है। वे उसे भी जानते
हैं जिसने कोड़ा खाया है और वे उसे अपना 'भाई' कहते हैं।[3]

अज्ञेय जानते हैं कि झोपड़ों में ही हमारा देश बसता है। हवाई यात्रा करते हुए उन्हें ज्ञात है कि 'किसान की जोखम' हवाई यात्रा की जोखम से बहुत बड़ी है। जब चेत की हवाएँ बहती हैं और फसल कटती है तो वह उतना प्रसन्न नहीं होता, जितना 'महाजन' क्योंकि कोठरी में दीप की लौ बढ़ा कर वही सेंत की गिन रहा होता है। महाजनी शोषण अभी समाप्त नहीं हुआ है। यह उसी शोषण का परिणाम है कि किसानों के खेत तो हरे-भरे हैं किन्तु उनका खलियान खाली है। सूद खाने वाले 'बनिये के कागज भरे हैं इसलिए महतो के कठिन परिश्रम का फल बनिये के घर चला जाता है और उसके घर दो मुट्ठी धान तक नहीं बचता।'[4]

आधुनिक मानव के औद्योकिरण को बढ़ावा दिया। उसे आशा थी कि इससे जनसाधारण की हालत सुधरेगी किन्तु यह आशा छलपूर्ण सिद्ध हुई। औद्योगिकरण से 'कमकरों की दु:साध्य विषमताएँ ही बढ़ी, उन्हें सुविधाएँ

* रेवेन्यु नगर अन्नपूर्णा रोड, इन्दौर (म.प्र.) भारत

नहीं मिली।'[5] शहर हो अथवा ग्राम, गरीबों की समस्या एक-सी हैं शहरों में सुविधाओं से भरी जो संस्कृति विकसित हो रही है, वह वहाँ के सभ्य धनिकों के लिए है। 'वहाँ के खेल तमाशे, सिनेमाघर और थियेटर तथा रंग बिरंगी बिजली द्धारा प्रचारित वस्तुएँ सुविधाभोगी नागरिकों के लिए है, वंचितों के लिए नहीं।'[6] अज्ञेय को 'लौटे यात्री' के वक्तव्य से यह पता चला है कि - 'सभी जगह उपजाता है अन्न, पालता सबको/ उसकी झुकी कमर है।'[7] जिन्दगी के रेस्तरों में, कौन किसको खाता है, उन्हें सब ज्ञान है।[8] वे जानते हैं कि 'किसके बाप का खून' किसके बाप ने चूसा है।[9]

यथार्थ के प्रति कवि की प्रतिक्रिया वैयक्तिक हो सकती है और समाज सम्पृक्ति से उत्पन्न भी। अज्ञेय के काव्य में हमें यथार्थ के प्रति समाज- संपृक्ति के दर्शन होते हैं। यह 'कली' कविता देखिए -

यह कली/झुटपुट अँधेरे में
पली थी देहात की गली में,
भोली भाली
नगर के राज-पथ दिपते
प्रकाश में गयी छली। [10]

स्पष्ट है कि यह कविता प्रतीकात्मक है और इस 'कली' में ग्रामीण बाला का मुख अनायास दिख जाएगा। यह बात छिपी नहीं है कि ग्रामीण युवतियों को शहरों में शोषण होता है और बहुधा वे शोषकों द्धारा मसल दी जाती हैं। यह चित्र समकालीन यथार्थ का ही एक पहलू प्रस्तुत करता है। जीवन में यथार्थ को अज्ञेय जानते हैं। 'माहीवाल' कविता में कवि ने प्रेम का कितना यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है -

'शान्त को! काल को भी समय थोड़ा चाहिए।
जो घड़े-कच्चे, अपात्र! डुबा गये मँझदार
तेरी सोहनी को चन्द्रभागा की उफनती छालियों में
उन्हीं में से उसी का जल अनन्तर तू पी सकेगा
औ कहेगा, आह, कितनी तृप्ति।''[11]

कवि अज्ञेय ने इइस कविता के माध्यम से यह बताया है कि जब भूख-प्यास लगती है तो प्रेम की बात भी पीछे छूट जाती है। अज्ञेय की कविता में समसामयिक परिवेश के चित्रण पर बल नहीं है तथापि उनकी कविता में जिस मानवीय परिवेश के दर्शन होते हैं, वह मुख्यत: शहरी परिवेश है। अज्ञेय की सहानुभूति हमेशा पिछड़े वर्ग के लोगों के प्रति रही है। उनकी कविता में कचरा ढोने वाले, गारा सानने वाले, खटिया बुनने वाले, मशक से सड़क खींचने वाले, रूई धुनने वाले और इसी स्तर के अनेक कमकर, श्रमकर, मजदूर आये हैं। इस वर्ग के व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए समाज ने कोई विशेष सुविधा नहीं जुटाई है। गाँवों में भी यह वर्ग उपेक्षित है और शहरों में भी। गरीबों के दु:ख-दर्द को व्यापक रूप में देखने वाला यहाँ-वहाँ कोई नहीं है।

यह देश हरा-भरा दिखलाई देता है। किन्तु यह अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता कि गाँव के लोग सुखी हैं। हरियाली सिर्फ ऊपर की है, उसके भीतर का यथार्थ बड़ा कटु है-

''हरे भरे खेत
मगर खलिहान नहीं
बहुत महतो का मान
मगर दो मुट्ठी का धान नहीं।''[12]

कवि यह भी कहता है कि लोगों की आँखें तो भरी हैं, किन्तु पेट खाली है, बनिये के कागज भरे हैं किन्तु टेंट खाली है। समाज का निम्न एवं निम्न मध्य वर्ग इसी प्रकार खाली पेंट, भरी आँखों से जिन्दगी गुजार देता है।

शहर में भी स्थिति लगभग ऐसी ही है। वहाँ अमीरों के लिए एक अलग महानगरीय संस्कृति विकसित हो रही है। गलियों के नुक्कड़-नुक्कड़ पर कचरे के लिए रंगीन सुघड़ कचरा पेटियाँ हैं। किन्तु यहीं कुछ लोग कचरे से भी बदतर स्थिति में जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हैं। उसकी पीड़ा को यहाँ कोई नहीं देखता जो अन्धकार में अपने चेहरे को मुर्दन छिपायी खड़ी है। उसकी उंगलियाँ थकी हुई हैं, आँखे सूजी हुई हैं, उसके बाल रूखे हैं। जब वह कहती है - 'दया कीजिए जैंटलमैन' तब पत्थर की पटरियों पर जूते को घिसटता हुआ चलने वाला व्यक्ति उसके दर्द को झूठा मानता है। कवि समाज के ठेकेदारों से प्रश्न करता है :

बोलो, उसको देने को है
कोई उत्तर?
क्या ? ये खेल-तमाशे, ये सिनेमाघर और थियेटर?[13]

निश्चय ही शहरी सभ्यता के सुविधा प्राप्त व्यक्ति इसका कोई जवाब नहीं दे पायेंगे। असंख्य झोपड़ीवासियों को भी इन खेल-तमाशों का अर्थ समझ में नहीं आएगा।

इस देश के झोपड़ीवासियों की नियति को एक स्थल पर कवि ने इतिहास के सन्दर्भ में उठाया है। इतिहास में कभी इनको न्याय नहीं मिला। इनमें जो प्रतिभा सम्पन्न थे, उन्हें भी नहीं। एकलव्य का अंगूठा कटवा दिया गया, ताजमहल बनाने वाले कारीगरों के हाथ कटवा दिये गए। राजनीतिक द्रोणाचार्य को कभी इस बात की चिन्ता नहीं हुई। समाज में यह वर्ग सदैव उपेक्षित रहा है।

इस देश में अन्य कई सामाजिक समस्याएँ विद्यमान हैं। देश से जातिवाद का अभी तक उन्मूलन नहीं हुआ है। गाँव हो या शहर, अनेक सामाजिक मामलों में जातिप्रथा सिर उठा लेती है। इस देश को धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि के नाम पर ब्राह्मणों, जाटों, सरदारों, अहीरों, कायस्थों, भूमिहारों, मौलवियों आदि का वर्ग खोखला करता आ रहा है। भारत आज भी विभिन्न जातियों का अजयाबघर बना हुआ है। देश की इस स्थिति से खिन्न होकर कवि कहता है -

देस रे देस
तेरे सिर पर कोल्हू।
इस का भार तू कैसे ढोयेगा
तू किस-किस को रोयेगा?
कब बनेगा तू राष्ट्र
कब तू अपनी नियति को पकड़ पाकर
तकिया लगाकर सोयेगा?[14]

कवि देश की स्थिति देखकर दु:खी होते हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता होती है कि देश कब समस्याओं से मुक्त होगा और कब भाग्य मंडित होकर आनंदपूर्वक सोयेगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति से जुड़ी हुई सामान्यजनों की जो आशाएँ थीं वे पूरी नहीं हुई और देश की सुविधा प्राप्त लोग भारत में रहते हुए अभारतीय वस्तुओं और प्रवृत्तियों से प्रेम करने लगे। जनपथ x राजपथ कविता में कवि ने पाश्चात्य सभ्यता रूपी भैंस को राजपथ पर बैठे जुगाली करते हुए पाया है। 'राष्ट्रीय राजमार्ग और प्रादेशिक पशु! किन्तु योजना आयोग वाले भी तो इसमें कुछ नहीं कर सकते क्योंकि वे स्वयं आयात की हुई रासायनिक खाद से करमकल्ले उगाते हैं।'[15] जब स्वयं देश के कर्णधार ऐसा करेंगे तो सभ्य एवं सुविधा प्राप्त नागरिकों में अभारतीयता के प्रति प्रोत्साहन क्यों नहीं मिलेगा।

कवि का ध्यान उपेक्षित पर्वती गाँव पर भी गया है। दूर शहर में बड़ी भारी सरकार है। वहाँ कल की समृद्धि की योजना का फैला हुआ कारोबार है। किन्तु यहाँ, इस पर्वती गाँव में छोटी-से-छोटी चीज की भी जरूरत है। आज की भूख और बेबसी की मार वहाँ के लोगों पर पड़ रही है। जब अधिकारियों के सामने माँग रखी जाती है तो वहाँ सिर्फ वायदे मिलते हैं :-

कल के लिये हमें
आज का वायदा है -
आज ठेकेदारों को
हमारे पेड़ काट ले जाने दो
कल हाकिम
भेड़ों के आयात की
योजना सुनाते आवेंगे
आज बच्चों को
भूखा ही सो जाने दो।[16]

योजना बनाने वाले अधिकारीगण बड़े शहरों में रहते हैं। उन्हें इन लोगों के दु:ख-दर्द से नहीं अपने स्वार्थ से मतलब है। महानगरीय सभ्यता ने इस देश के ग्रामवासियों को एक प्रकार से छल लिया है। शहर को सजाने-संवारने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएँ बनती हैं और उन पर अमल भी होता है किन्तु गाँवों के लिए ऐसी कोई सार्थक योजना नहीं बन पाती, जिससे गाँव के सामान्य जन का हित हो। कहाँ तो शहर वालों से यह अपेक्षा थी कि वे गाँव वालों के लिए कुछ करते, किन्तु वे तो उल्टे उनका शोषण कर रहे हैं। हर तरह के कमकर-श्रमकर गाँव से शहर में आते हैं और ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ बना जाते हैं किन्तु स्वयं वे गन्दी बस्तियों, झोपड़ियों आदि में रहने के लिए मजबूर हैं। शहर के पाशविक वातावरण में भोली-भाली ग्रामीण वाला एक दूसरे प्रकार से शोषण का शिकार हो जाती है। उसे सेक्स के बाजार में बेच दिया जाता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि - अज्ञेय एक ऐसे कवि हैं, जिनमें आत्मान्वेषण, रहस्यान्वेषण एवं भाव-सत्य तलाशने की प्रवृत्ति अनिवार्य रूप से विद्यमान है। किन्तु वे समकालीन यथार्थ की उपेक्षा नहीं कर पाये हैं। उनके काव्य में शोषक और शोषितों को बराबर स्थान मिला है। शोषितों की पीड़ा से उनकी वाणी भी मुखरित हुई है। कवि ने शोषण की प्रति घृणा का गान भी प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में यथार्थ की उपेक्षा नहीं की गई है। उन्होंने यथार्थ के हर पहलू को पैनी दृष्टि से उकेरा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. अज्ञेय - भवन्ती, पृ.31
2. अज्ञेय - जोख लिखी, पृ. 26-27
3. अज्ञेय - सदानीरा भाग-2, पृ. 230-31
4. अज्ञेय - हरी घास पर क्षण भर, पृ.41
5. अज्ञेय - बावरा अहेरी, पृ.33
6. अज्ञेय - इन्द्रधुन रौंदे हुए ये, पृ.59
7. अज्ञेय - अरी ओ करूणा प्रभामय, पृ.28
8. अज्ञेय - कितनी नावों में कितनी बार, पृ. 76
9. अज्ञेय - नदी की बाँक पर छाया, पृ. 28
10. अज्ञेय - अरी ओ करूणा प्रभामय, पृ. 62
11. अज्ञेय - हरी घास पर क्षण भर, पृ. 45
12. अज्ञेय - अरी ओ करूणा प्रभामय, पृ. 41
13. अज्ञेय - सदानीरा भाग-1, पृ. 303-04
14. अज्ञेय - सदानीरा भाग-2, पृ. 218
15. वही, पृ. 227
16. अज्ञेय - पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, पृ. 60

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed Journal) January To March 2016, E-Journal, Vol. III
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 1.9411 (2015)

ऋगवैदिक संस्कृति एवं सारस्वत- सिन्धु सभयता

डॉ. नितिन सहारिया *

प्रस्तावना – वेद भारतीय उप महाद्वीप का प्राचीनतम अभिलिखित इतिहास है। ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य है और यह मानव समाज की प्राचीनतम संस्कृति का दिग्दर्शन कराता है। यह चारों वेदों में प्रथम माना गया है। वस्तुत: वेद ही एक मात्र ज्ञानग्रन्थ है। महाभारत काल में महर्षि वेदव्यास द्धारा वेद के बृहत् कलेवर को देखते हुए मंत्रों के प्रयोग के अनुसार स्तुतिपरक मंत्र, यज्ञादि कर्मकाण्डपरक मंत्र, गायनपरक मंत्र और प्रकीर्ण मंत्र चार भागो में क्रमश: ऋग्वेद,यजर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद संहिताओं के रूप में संकलित किया।

यह ऋग्वैदिक संस्कृति पश्चिम में बलुचिस्तान से लेकर पूर्व में उत्तर प्रदेश के आलमगीरपुर में परशुराम का खेड़ा तक और उत्तर में अफगानिस्तान के शोर्तुघई से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र के सिन्धु –सरस्वती सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है और यह अपने वैज्ञानिक स्थापत्य और समृद्ध संस्कृति के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

काल – पुरातत्वशस्त्रियों ने सिन्धु सभ्यता का काल 3300 से 1300 ईसा पूर्व माना है। इस कालक्रम को प्रारम्भिक हड़प्पन काल 3300 से 2600 ईसा पूर्व, परिपक्व हड़प्पन काल 2600 से 1900 ईसा पूर्व तथा उत्तरकाल 1900 से 1300 ईसा पूर्व वर्गीकृत किया है। वेदज्ञान का चार भागों में वर्गीकरण भी द्धापर युग के अन्त और कलियुग के आरम्भ मे लगभग 3100 ईसा पूर्व महर्षि वेदव्यास द्धारा किया गया। इतिहास पुराणों के अनुसार महाभारत युद्ध के 36 वर्ष पश्चात् कलियुग का आरम्भ हुआ। भारत के पुराण आदि शास्त्रों तथा आर्यभट्ट, वाराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, वटेश्वर आदि प्राचीन वैज्ञानिकों ने अपने विशाल तथा दीर्घकालीन साहित्य में कलियुग संवत् का वर्णन किया है। यह कोचीन के राजा के पत्र में उल्लिखित कलिसंवत् 3418 (316 ईस्वी) से लेकर महाभारत के भीष्मपर्व की हस्तलिखित प्रति के कलिसंवत 4781 (1680ई0) तक के भारत के प्राचीन अभिलेखों में समस्त भारत के राजाओं, विद्धानों द्धारा दीर्घकाल तक प्रयुक्त किया गया है। यही नहीं अनेक शताब्दियों से भारतीय पंचांगकर्ता कलियुगाब्द को अपने पंचांगों में प्रतिवर्ष निरूपित करते हैं तथा वर्तमान सन 2013 ईस्वी में यह वर्ष कलियुग का 5115 युगाब्द वर्तमान है। अत: ऋग्वेद भी 3100 ईसा पूर्व से अपने वर्तमान स्वरूप में है। अत: सिन्धु और सरस्वती की घाटी के उत्खनन में मिली पुरावस्तुओं और वेदों के साहित्यिक अभिलेखों का काल एक ही है।

भूगोल – हड़प्पा सभ्यता का विस्तार उत्तर में अफगानिस्तान के शोर्तुघई से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र के दाहिमाबाद तक तथा पश्चिम में बलुचिस्तान के सुत्कन दोर से लेकर पूर्व में उत्तर प्रदेश के आलमगीरपुर में परशुराम का खेड़ा तक गंगा और सिन्ध के मैदान में विकसित हुई। ऋग्वेदिक संस्कृति भी इसी भौगोलिक परिक्षेत्र में पुष्पित –पल्लवित हुई। सैंधव सभ्यता की प्राचीन बस्तियां शोर्तुघई वैदिक नदी वक्षु के तट पर, हड़प्पा, जलीलपुर रावी नदी, मुअन –जो–दड़ो, कोट दीजी, चन्हुदड़ो, सिन्ध नदी, गणवेरीवाला, कालीबंगा, राखीगढ़ी, भिराणा,कुणाल, बालु, बणावाली, दधेरी, भगवानपुरा, रोपड़ सरस्वती नदी, सुरकोटड़ा, धौलावीरा, देसलपुर, सरस्वती डेल्टा, अलमगीरपुर सिंडन नदी, दाहिमाबाद प्रवरा नदी, भगतराव नर्मदा नदी के तट पर विकसित हुई। इनमें से दो नदियों नर्मदा और प्रवरा को छोड़कर समस्त नदियां ऋग्वेद में अनेकों अध्यायों के बाद वर्णित की गई है। उल्लेखनीय है कि सरस्वती नदी के तट पर सर्वाधिक पुरातात्विक स्थल प्राप्त हुए है। सरस्वती नदी का वर्णन तो साठ बार किया गया और इसे नदीतमा और महान नदी बताया गया है। वैदिक ऋचाओं का उद्बोधन व उद्घाटन ऋशियों को सरस्वती के तट पर ही हुआ। अत: सैंधव सभ्यता और ऋग्वैदिक संस्कृति का भूगोल पर्यावरण और पर्यावास एक ही है।

नगर विन्यास – सिन्धु–सरस्वी सभ्यता के उत्खनन में मुअन–जो–दड़ो, हड़प्पा, धौलीवीरा, कालीबंगन, गणेरीवाला, राखी गढ़ी में विशाल नगर उद्घाटित किए गए है। इस सभ्यता के इन विशाल नगरों में जलप्रबन्धन, जलनिकासी, योजनाबद्ध मार्ग, भाण्डारगृह, स्नानागार आदि आधारभूत नागरिक सुविधाएं प्राप्त थी। इसके साथ ही आक्रमणों से रक्षा के लिए रक्षा–प्राचीरों से इन्हें किलाबद्ध किया जाता था। ऋग्वेद में भी शत्रुओं के अनेकों दुर्गो और पूरों के विध्वंस के वर्णन हैं । इन नगरों का विशाल दुर्गों के रूप में वर्णन किया गया है। ऋग्वेद में इन्द्र को अनेक स्थानों पर 'पुरंद' कहा गया है। जिसमें 'पुर' का अर्थ है दुर्ग और 'दर' का अर्थ है नगरों का विध्वंसक करने वाला। ऋग्वेद के शष्ठ मण्डल में हरियूपिया नगर में इन्द्र द्धारा वरशिखा असुरों के वध का वर्णन किया गया है। पुरातत्ववेत्ता सर मार्टीमर व्हीलर ने इस हरियूपिया का संबंध हड़प्पा से जोड़ा है। जो कि सही है क्योंकि वर्तमान भारतीय उपमहाद्धीप के अधिकांश ग्रामों नगरों और स्थानों के नाम संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश है।

इतिहासकारों के अनुसार ऋग्वैदिक आर्य विशेष प्रकार के दुर्गो में रहते थे। जिन्हें 'पुर' कहा जाता था। ये पाशाण अथवा धातु निर्मित होते थे। इनके चारों ओर लकड़ी की चारदीवारी होती थी। ऋग्वेद में 'पुरचरिश्ण' का उल्लेख है कि ये कदाचित् दुर्गो को गिराने के यंत्र होते थे। योद्धा कवच, शिरभाश, बाहुत्राण अंगुलित्राण धारण करते थे। इस वर्णन में हम देखते है कि आर्य गांवो के अतिरिक्त पुरों अथवा नगरों में भी निवास करते थे।

* शासकीय एम.एम.महाविद्यालय, कोतमा, जिला अनूपपुर (म.प्र.) भारत

अकादेमिक इतिहासकारों ने सिन्धु –सरस्वती को सभ्यता नगरीय सभ्यता कहा है और ऋग्वैदिक समाज को ग्रामीण सभ्यता बताया। इसके साथ ही उन्होनें नगरीय सभ्यता को ग्रामीण सभ्यता से पहले स्थान दिया। उनकी यह अवधारणा हास्यापद और अज्ञानता या दुराग्रह का परिचायक है। क्योंकि कोई भी नगर पहले ग्राम के रूप में बसता है फिर जनसंख्या, रोजगार और संसाधनों के बढ़ने से वह नगर बन जाता है। ऋग्वेद के अनेक मंत्रो में परिखाबद्ध नगरों (पुरों) का वर्णन है। कुछ विद्वानों का यह कहना सही नही है कि ऋग्वैदिक सभ्यता एक ग्रामीण समाज था और उसे नगरों का ज्ञान नहीं था। वस्तुत: ऋग्वेद के वर्णनों में और सिन्धु–सारस्वत सभ्यता के उत्खननों में प्राप्त नगरों का स्वरूप आधुनिक बड़े कस्बों का सा था जिनमें पचास हजार से अस्सी हजार तक जनसंख्या निवास करती थी। किसी भी सभ्यता में शत–प्रतिशत ग्राम या नगर नहीं हो सकते उसमें छोटे गांव भी होते है और बड़े नगर भी होते है। अत: दोनो ही प्रमाणों में हमें ग्रामीण और नागरिक समाज के दर्शन होते है।

धार्मिक प्रतीक – समस्त प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय धार्मिक पंथों द्वारा चित्रित किया जाने वाले स्वस्तिक की पक्की मिट्टी और धातुओं की मोहरें अनेकों स्थानों पर प्राप्त हुई है। वस्तुत: सवस्तिक ऋग्वेद के स्वस्तिवाचन मंत्रों के मौखिक स्वरूप का रेखांकन है जोकि किसी भी शुभकार्य की सिद्धि की कामना का प्रतीक है। मानव ने सर्वप्रथम मस्तिष्क में मंगलकामना का चिन्तन किया फिर उसका एक प्रतीत बनाया ताकि सर्वधारण में बिना स्वस्तिवाचन के ही शुभ अवसर पर मंगलकामना की भावना जागृत की जा सके।

यज्ञ द्वारा परमात्मा की उपासना ऋग्वैदिक समाज की विशिष्टता थी। विश्व में केवल भारतीय लोगों द्वारा ही रूज्ञ करने की परम्परा है। जो कि आज भी हिन्दु पर्वो तथा धार्मिक उत्सवों का अनिवार्य भाग है। राजस्थान के कालीबंगन और लोथल के उत्खनन में एक चबूतरे पर सात यज्ञ वेदियां मिली हैं। हरियाणा के बणावली के उत्खनन में भी एक अर्द्धगोलाकार यज्ञवेदी मिली है। इनका मिलना सरस्वती सभ्यता और वैदिक संस्कृति की एकता का दिग्दर्षन कराता है।

वैदिक साहितय में रूद्र,शिव और पशुपति एक ही देवता के रूप हैं। ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में शिव के रूद्र रूप का वर्णन पाया जाता है। वेदमंत्रों के इसी शिवरूप से बाद में शैव तथा पाशुपत सम्प्रदायों का विकास हुआ। इसी प्रकार सैंधव उत्खननों में शिवलिंग की अनेक मृण्मूर्तियां मिली है। योगमुद्रा में बैठी हुई भगवान शिव की अनेकों मुद्राएं भी प्राप्त हुई है जिसमें हाथी, शेर, बैल, गेंडा, आदि अनेकों पशु चित्रित किए गए हैं। अत: यह योगिराज शिव के पशुपति रूप का चित्रांकन माना गया है। वैदिक उद्‌भव के कारण ही पशुपत सम्प्रदाय में यज्ञ की परम्परा अभी तक प्रचलित है।

ऋग्वेद में योगशास्त्र का भी वर्णन मिलता है। वेदों के उपजीव्य ग्रन्थ उपनिशदों में योगदर्शन का विस्तृत वर्णन मिलता है। सैधव स्थलों के उत्खनन में भी पर्याप्त संख्या में शिवलिंग और योगप्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त हड़प्पा से विभिन्न योग मुद्राओं वाली मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई है। जोकि यह प्रदर्शित करता है कि ऋग्वैदिक संस्कृति और सिंधु–सरस्वती सभ्यता में समान रूप से योगाभ्यास का प्रचलन था।

ऋग्वेद के देवीसूक्त सरस्वती तथा अनेक अन्य सूक्तों मे उषा, अदिति, अप्सरा,अरण्यानी, पृथ्वी, सावित्री, सूर्या, वाक्, निऋति, रात्रि आदि देवियों के रूप में मातृशक्ति की वन्दना की गई है। वैदिक समाज में स्त्रियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान की भावना विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं से अधिक पाई जाती है। सिन्धु सभ्यता में भी मातृशक्ति की मृण्मयी मूर्तियां पर्याप्त मात्रा में मिली हैं। इन दोनों समकालीन प्राचीन सभ्यताओं में धार्मिक चिन्तन की यह समानता इन्हें एक सभ्यता और एक समान संस्कृति का मानने पर बाध्य करती है। यहां तक कि आधुनिक हिन्दू समाज में देवी की उपासना और स्त्रियों की सुरक्षा और सम्मान की भावना सिन्धु–सरस्वती सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति के सम्मिलित दर्शन की निरंतरता को प्रदर्शित करती हैं। पवित्र पीपल के पत्तों तथा वृक्षों के प्रतिरूप भी उत्खनन में पर्याप्त मात्रा में मिलें है। जो ऋग्वैदिक समाज के लिए पवित्र और पूजनीय थे।

मेहन–जो–दड़ो से एक मूर्ति प्राप्त हुई है। जिसमें पुरोहित को राजा कहा जाता है जोकि धार्मिक कार्य और राजकार्य दोनों करता था। यह दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति है जो एक उत्तरीय कंधे पर डाले है और माथे पर मुकुट जैसा चिन्ह बना है। ऋग्वैदिक काल में भी पुरोहित –राजा होते थे। बाद के काल में पुराणों में ऋग्वैदिक प्रजापतियों का वर्णन मिलता है। प्रजापति गण या राज्य के धार्मिक, नैतिक और राजनीतिक मुखिया होते थे। इसके अतिरिक्त चूने से निर्मित एक मानव चेहरा भी उत्खनन में मिला है जिसके लम्बे बाल सिर पर बंधे हुए है और इसका स्वरूप ऋग्वैदिक ऋषियों की तरह है। इससे लगता है कि ऋग्वैदिक प्रजापति और सैंधव का यह पुरोहित –राजा एक समान संस्कृति की विरासत है।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के उत्खनन में कूबड़ वाले सांड की मूर्तियां मिली है। इस सभ्यता में सांड एक पूजनीय पशु माना जाता है। ऋग्वैदिक के दशम मण्डल में इसे 'वृशभ: ककुद्मान' कहा गया है। ऋग्वेद समाज में गोवंश को अवध्य माना जाता था। इसी प्रकार उत्खनन में हाथी,एक श्रृंगी बैल, गेंडा, भेंसा, गधे,ऊंट आदि पशुओं तथा मोर, हंस आदि पक्षियों के प्रमाण मिले हैं। जिनका वर्णन ऋग्वेद में कई स्थानों पर किया गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद के पसिद्ध घोड़े के अस्थि पंजर भी रणघण्डई, बलोचिस्तान तथा मोहन –जो–दड़ो से तथा सुरकोटड़ा,लोथल और धैलीवीरा से भी घोड़े की हड्डियां प्राप्त हुई हैं। बैलगाड़ी, पहियें, हल भी पाए गए, जो कि वैदिक संस्कृति के अनिवार्य भाग थे।

सिन्धु सभ्यता के उत्खनन और ऋग्वेद के अध्ययन से यह पता चलता है कि दोनों संस्कृतियों में जौ, गेंहू, चावल विशेष रूप से खाद्य पदार्थ होते थे। कालीबंगा में जूते हुए खेत के प्रमाण मिले हैं। लोथल से चक्की के पाट मिले है। ऋग्वेद तथा सैंधव सभ्यता दोनों में कृषि कार्य और घरेलू शिल्प कार्य मुख्य व्यवसाय थे। तथा नहरों जलाशयों द्वारा सिंचाई के प्रमाण मिलते हैं। दोनों ही सभ्यताओं में समाज चार वर्गो में विभक्त था। भारत में इस प्राचीन सभ्यता के अनेकों उत्खनित स्थलों के अध्ययनएवं अवलोकन सेअब उन पुरातत्ववेत्ताओं की संख्या बढ़ती जो रही है जो यह मानते हैं कि ऋग्वेद में वर्णित सभ्यता ही सिन्धु –सरस्वती सभ्यता है।

भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण के सेवानिवृत महानिदेशक श्री बृजवासी लाल ने सर मार्टीमर व्हीलर के गोरे आर्यो द्वारा मोहन–जो–दड़ो और हड़प्पा नगरों के विध्वंस के सिद्धान्त को अस्वीकार करते हुए कहा कि ऋग्वैदिक समाज हड़प्पन नगरीय समाज से इतना अधिक ग्रामीण समाज नहीं थ जितना कि प्रचारित किया जा रहा है। अब पुराने सिद्धान्तों पर पुनर्विचार की आवष्यकता है।

गुजरात में धौलीवारा में उत्खनन कार्य के अधीक्षक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सेवानिवृत्त महानिदेशक और संस्कृत विद्वान पुरातत्वेत्ता श्री

रविन्द्र सिंह बिष्ट ने धौलावीरा के विशाल नगर को देखकर इसे ऋग्वेद में विश्व के प्राचीनतम साहित्यिक आलेख के वर्णन को आभासी यथार्थ कहा। हरियाणा में राखी गढ़ी के उत्खननकर्ता पुरातत्वेत्ता श्री अमरेन्द्र नाथ ने वहां पर प्राप्त गोल और त्रिकोण वेदियों के बारे में कहा कि परम्परागत रूप से ये ऋग्वेद से सम्बद्ध है। हरियाणा में कुणाल के उत्खननकर्ता पुरातत्वेत्ता श्री माधव आचार्य के अनुसार सिन्धुघाटी सभ्यता के निर्माणकर्ता वैदिक लोग थे।

सुरकोटड़ा (गुजरात) भगवानपुरा (हरियाणा) तथा ढढेरी (पंजाब) के उत्खननकर्ता एवं पुरातत्ववेत्ता श्री जगत्पति जाशी के अनुसार सरस्वती और सत्पसिन्धु के सन्दर्भो से प्रतीत होता है कि ऋग्वेद के लोग ही हड़प्पन सभ्यता के जनक थे।

सिन्धु-सरस्वती उत्खननों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए इसके गहन अध्ययनकर्ता श्री एस.पी. गुप्ता के अनुसार इसे अब सिन्धुघाटी की सभ्यता की बजाय सिन्धु-सरस्वती सभ्यता कहना अधिक उपयुक्त होगा क्योंकि सिन्धु नदी के किनारे स्थित इस सभ्यता के स्थलों से सरस्वतीतटवर्ती स्थल कहीं अधिक हैं।

सिन्धुघाटी सभ्यता का अध्ययन और इस पर लेखनकार्य करने वाले अनुसंधानकर्ता श्री भगवान सिंह के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में उद्घाटित समस्त पर्यावास और पारिस्थतिकी ऋग्वैदिक वर्णनों में मिलती है।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सिन्धु -सरस्वती सभ्यता और ऋग्वेदिक एक ही थी, एक ही भौगोलिक क्षेत्र में फली-फूली तथा दोनों संस्कृतियों के लोग एक ही प्रकार के व्यवसाय करते थे। एक ही प्रकार की धार्मिक मान्याताएं एवं प्रतीक थे, एक ही प्रकार के पशु-पक्षियों से परिचित थे। हम कह सकते हैं कि सिन्धु-सरस्वती सभ्यता के अवशेषों की आधारशिला ऋग्वैदिक चिंतन और संस्कृति पर आधारित थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पं. भगवत दत्त, भारतवर्ष का बृहत् इतिहास, भाग-1, पृश्ठ-167
2. ऋ. मे.-6, सूक्त-27, पंचम् ष्लोक-5/चतुर्थाश्टक, शश्ठाध्याय, चतुर्विशो वर्गः
3. प्राचीन समाज, एम.ए.-पूर्वार्द्ध, अध्याय-3, पृश्ठ-51, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, म.द.वि. रोहतक वही
4. ऋग्वेद, 1.89-10,3.30.18,5.51.11-16,10.63.15-16,10.152.02
5. ऋ. 1.43.4,1.114,2.33.4.11,6.49.10,7.46,10.92.6
6. ऋ. 5.81.1
7. ऋ.1.106.7,1.94.15, 1.113.19, 6.64.5, 6.61, 7.95.96, 8.18.6,10.125 आदि।
8. प्राचीन समाज, एम.ए.-पूर्वाद्ध, अध्याय-3, पृष्ठ-45, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, म.द.वि. रोहतक .ऋग्वेद 9.112.3

****

राष्ट्र का मेरूदंड गौशाला

डॉ. नितिन सहारिया *

प्रस्तावना – गाय भारतीय संस्कृति के पांच आधारों में से प्रथम हैं। भारतीय संस्कृति गौ प्रधान संस्कृति है। भारतवर्ष के ऋषियों ने लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व गौ विज्ञान का अविष्कार करके मानव जीवन को धन्य बनाया। गौ के उत्पाद दूध, घी, दही, गोबर, मूत्र (पंचगव्य) मानव जीवन में देवत्व जगाने वाले हैं इनमें से किसी एक का भी दिनचर्या में प्रयोग करके अपने असुरत्व को जीवन से दूर करने का विधान ऋषियों ने बनाया था। इसलिए तो भारतीय संस्कृति में गौ को इतना महत्व दिया गया है, अत: भारतीय संस्कृति को गौ संस्कृति कहा जाए तो अतिशंयोक्ति नही होगी।

अपने खेतों में गाय का गोबर डालें। जमीन सुधारने के लिए केंचुओं की सेवा लें, वह भी बगैर कोई मजदूरी चुकाए। थोड़ा सा ग्रह-नक्षत्र की स्थिति पर नजर रखें। पाएंगे कि आपकी हारी-थकी धरती को नया जीवन मिल गया है। आधुनिक खेती की तरह रासायनिक खाद और दवाओं के इस्तेमाल से आहत और बांझ हो रही जमीन को राहत देने के लिए फिर से पलट कर देखना होगा। कुछ विदेशी किसानों ने भारत की सदियों पुरानी पारंपरिक कृषि प्रणाली को अपनाकर चमत्कारी नतीजे प्राप्त किए हैं।

कहा जाता था कि भारत सोने की चिड़िया था। हम गलत अनुमान लगाते हैं कि हमारे देश में पीले रंग की धातु सोने का अंबार था। वास्तव में हमारे खेत और हमारे मवेशी हमारे लिए सोने से अधिक कीमती थे। कौन कहता है कि अब भारत सोने की चिड़िया नहीं रहा। सोना अभी भी यहां के चप्पे-चप्पे में बिखरा हुआ है। दुर्भाग्य है कि उसे चूल्हों में जलाया जा रहा है। दूसरी तरफ अन्नपूर्णा जननी धरा तथाकथित नई खेती के प्रयोगों से कराह रही है।

रासायनिक खाद से उपजे विकार अब तेजी से सामने आने लगे हैं। दक्षिणी राज्यों में सैकड़ों किसानों के खुदकुशी करने के पीछे रासायनिक दवाओं की खलनायकी उजागर हो चुकी है। इस खेती से उपजा अनाज जहर हो रहा है। रासायनिक खाद डालने से एक दो साल तो खूब अच्छी फसल मिलती है। फिर जमीन बंजर होती जाती है।

जमीन हमारी माँ है। बेशकीमती मिट्टी की ऊपरी परत (टाप सोइल) का एक इंच तैयार होने में 500 साल लगते हैं। जबकि खेती की आधुनिक प्रक्रिया के चलते एक इंच टाप सोइल मात्र 16 वर्ष में नष्ट हो रही है। रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल के कारण मिट्टी सूखी और बेजान हो जाती है। यही भूमि के क्षरण का मुख्य कारण है। वहीं गोबर से बनी कंपोस्ट या प्राकृतिक खाद से उपचारित भूमि की नमी की अवशोषण क्षमता पचास फीसदी बढ़ जाती है। फलस्वरूप मिट्टी ताकतवर, गहरी और नम रहती है। इससे मिट्टी का क्षरण भी रूकता है।

यह बात सभी मानते हैं, कि कृत्रिम उर्वरक यानी रासायनिक खादें मिट्टी में मौजूद प्राकृतिक खनिज लवणों का भारी मात्रा में शोषण करते हैं। इसके कारण कुछ समय बाद जमीन में जरूरी खनिज लवणों की कमी आ जाती है। जैसे कि नाइट्रोजन के उपयोग से भूमि में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध पोटेशियम का तेजी से क्षरण होता है। इसकी कमी पूरी करने के लिए जब पोटाश प्रयोग में लाते हैं तो फसल में एस्कोरलिक एसीड (विटामिन-सी) और केरोटिन की काफी कमी आ जाती है। इसी प्रकार सुपर फास्फेट के कारण मिट्टी में तांबा और जस्ता चुक जाता है। जस्ते की कमी के कारण शरीर की वृद्धि और लैंगिक विकास में कमी, घावों के भरने में अड़चन आदि रोग लग जाते हैं। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश उर्वरकों से संचित भूमि में उगाए गेहूं और मक्का में प्रोटीन की मात्रा 20-25 प्रतिशत कम होती है। रासायनिक दवाओं और खाद के कारण भूमिगत जल के दूषित होने की गंभीर समस्या भी खड़ी हो रही है। गौततलब है कि अभी तक ऐसी कोई तकनीक विकसित नहीं हुई है, जिससे भूजल को रासायनिक जहर से मुक्त किया जा सके। ध्यान रहे अब धरती पर जल संकट का एक मात्र निदान भूमिगत जल ही बचा है।

न्यूजीलैंड का एक विकसित देश है। यहां आबादी के बड़े हिस्से का जीवन-यापन पशु-पालन से होता है। यहां के लोग दूध और उससे बनी चीजों का व्यापार करते हैं। इस देश में पीटर प्राक्टर पिछले 30 वर्षो से जैविक खेती के विकास में लगे हैं। पीटर का कहना है कि यदि अब खेतों को रसायनों से मुक्त नहीं किया गया तो मनुष्य का समूचा शरीर ही जहरीला हो जाएगा। वे बताते हैं कि उनके देश में फास्टफाइड के अंधाधुंध इस्तेमाल से खेतों की जमीन बीमार हो गई है। साथ ही इन रसायनों के प्रयोग के बाद शेष बचा कचरा धरती के लिए कई अन्य पर्यावरणीय संकट पैदा कर रहा है। जैसे एक टन यूरिया बनाने के लिए पांच टन कोयला फूंकना पड़ता है।

पीटर के मुताविक जैविक खेती में गाय के सींग की भूमिका बेहद चमत्कारी होती है। वे कहते हैं, कि सितम्बर महीने में गहरे गड्ढे में गाय का गोबर भरें। साथ में टोटके के तौर पर गाय के सींग के एक टुकड़े को दबा दें। फरवरी या मार्च में इस सींग और कंपोस्ट को निकाल लें। खाद तो अपनी जगह काम करेगी ही, यह सींग का टुकड़ा भी जिस खेत में गाड़ देंगे, वहां बेहतरीन व रोग मुक्त फसल होगी। प्राक्टर ने यह प्रयोग नारियल के खोल, प्लास्टिक के सींग आदि के साथ भी किए। परंतु उन्होंने पाया कि गाय के सींग से तैयार मिट्टी सामान्य मिट्टी से 15 गुना और कैंचुए द्वारा उगली हुई मिट्टी से दुगनी अधिक उर्वरा व सक्रिय थी।

* शासकीय एम.एम.महाविद्यालय, कोतमा, जिला अनूपपुर (म.प्र.) भारत

सींग के साथ तैयार कंपोस्ट को कोई 30 लीटर पानी में घोलें। इसे सूर्योदय के पहले सुबह खेतों में छिड़कें। ऐसी जमीन पर पैदावार अधिक पौष्टिक होती है, जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और कीटनाशकों के उपयोग की जरूरत नहीं पड़ती है।

पीटर का सुझाव है कि इस कार्य के लिए बरसाती या कुएं का प्रदूषण रहित पानी हलका-सा गर्म हो तो परिणाम बेहतर होते हैं। यही नहीं जिन लोगों को दूध या उसके उत्पादों से एलर्जी हो, वे यदि जैविक खाद से उत्पन्न उत्पादों का भक्षण करने वाले मवेशियों के दूध का इस्तेमालकरें तो उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। ऐसे खेतों में पैदा आलू व अन्य कंदमूलों का स्वाद कुछ अलग होता है।

न्यूजीलैंड सरीखे धुर आधुनिक देश के इस कृषि वैज्ञानिक ने पाया कि अच्छी फसल के लिए गृह-नक्षत्रों की चाल का भी ख्याल करना चाहिए। वे टमाटर का बीज लगाने के लिए शनि के प्रभाव और चंद्रमा की पूर्ण कला (पूर्णिमा) का इंतजार करते हैं। वे ऐसा मानते हैं कि ऐसे समय लगाए गए टमाटर में कभी रोग नहीं लगते हैं।

कुछ साल पहले हालैंड की एक कंपनी ने भारत को गोबर निर्यात करने की योजना बनाई थी, तो खासा बवाल मचा था, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि इस बेशकीमती कार्बनिक पदार्थ की हमारे देश में कुल उपलब्धता आंकने के आज तक कोई प्रयास नहीं हुए। अनुमान है कि देश में कोई 13 करोड़ गोवंश है, जिससे हर साल 120 करोड़ टन गोबर मिलता है। उसमें से आधा उपलों के रूप में चूल्हों में जल जाता है। यह ग्रामीण उर्जा की कुल जरूरत का 10 फीसदी भी नहीं है। 1976 में राष्ट्रीय कृषि आयोग की रिपोर्ट में कहा गया था कि गोबर को चूल्हे में जलाया जाना एक अपराध है। ऐसी और कई रिपोर्ट सरकारी बस्तों में बंधी होंगी, लेनिक इसके व्यावहारिक इस्तेमाल के तरीके 'गोबर गैस प्लांट' की दुर्गति यथावत है। राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत् निर्धारित लक्ष्य के 10 फीसदी प्लांट भी नहीं लगाए गए हैं और ऐसे प्लांट सरकारी सबसिडी गटकने से ज्यादा काम के नहीं हैं। ऊर्जा विशेषज्ञ मानते हैं कि हमारे देश में गोबर के जरिए 2000 मेगावाट ऊर्जा निर्माण की जा सकती है।

सनद रहे कि गोबर के उपले जलाने से बहुत कम गर्मी मिलती है। इस पर खाना बनाने में बहुत समय लगता है। यानी गोबर को जलाने से बचना चाहिए। यदि इसका इस्तेमाल खेतों में किया जाए तो अधिक अच्छा होगा। इससे एक तो महंगी रासायनिक खादों व दवाओं का खर्चा कम होगा। साथ ही जमीन की ताकत भी बनी रहेगी। पैदा फसल शुद्ध होगी, जिससे बहुत फायदा होगा।

यदि गांव के कई लोग मिलकर गोबर गैस प्लांट लगा लें तो इसका उपयोग रसोई में अच्छी तरह होगा। गैस प्लांट से निकला कचरा बेहतरीन खाद का काम करता है। इस तरह गोबर एक बार फिर हमारे देश को सोने की चिड़िया बना सकता है। जरूरत तो बस इस बात की है कि इसका उपयोग ठीक तरीके से किया जाए।

जैविक खेती ने जगाए भाग्य किसानों ने उर्वरकों से की तौबा – नीमच (म.प्र.) जिला मुख्यालय से लगे ग्राम भोलियावास के अधिकांश किसानों के साथ ही जिले के कई किसान जैविक खेती को अपना रहे हैं, जिसने उनके भाग्य जगा दिए। जैविक खेती को अपनाने के साथ ही किसान रासायनिक उर्वरकों को बाय-बाय कर रहे हैं। जैविक खेती किसानों को समृद्ध कर रही है तथा जल प्रदूषण और वायु प्रदूषण को भी नियंत्रित कर रही है।

रासायनिक खाद के अंधाधुंध उपयोग से खेतों की मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है। इसके साथ ही रासायनिक खाद के दिन-वन-दिन बढ़ते भाव ने भी किसानों का बजट गड़बड़ा दिया। ऐसे में जिला मुख्यालय से लगे ग्राम भोलियावास के किसानों ने करीब 10 वर्ष पूर्व जैविक खेती को अपनाया। इसने कुछ ही सालों में गाँव की तस्वीर ही बदल दी। इस गांव में जैविक खेती करने वाले किसानों की संख्या बढ़ते-बढ़ते करीब 80 प्रतिशत पर पहुंच गई। जैविक खेती के प्रति गांव के किसानों का रूझान और इससे होने वाले फायदों को देखकर जिले के किसान जैविक खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

जावद के घीसालाल धाकड़ ने दो साल पहले तुलसी की फसल को जैविक उपज के रूप में प्रमाणित करवाया। जैविक तरीके से उत्पादित उपज के भाव भी रासायनिक खाद के उपयोग से होने वाली उपज से अधिक मिलने से किसानों के आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है। कृषि विभाग नीमच के सहायक संचालक यतींद्र मेहता ने बताया कि प्रदेश के साथ ही जिले के किसानों का भी जैविक खेती की ओर रूझान बढ़ रहा है, परन्तु जो अभी तक 10 फीसदी भी नहीं है।

किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है, ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिले और खेती के खर्चों में कमी आ सके। जैविक खेती के लिए जैविक खाद, कीटनाशक के रूप में नीम तेल, नीम की खली, गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, नाडेफ कम्पोस्ट का उपयोग किया जाता है। जिले के अन्य किसानों को भी भोलियावास गांव के किसानों से प्रेरणा लेना चाहिए और जैविक खेती की ओर प्रवृत्त होना चाहिए।

प्रमाणित जैविक उपज की विदेशों में भी डिमांड – जैविक खेती के माध्यम से उत्पादित मसाले सौंप, अजवाइन, जीरा, मैथी, काली मिर्च सहित अन्य मसालों और गेहूं, मक्का सहित अन्य खाद्य पदार्थों की देश में अच्छी मांग रहती है। प्रमाणित जैविक उत्पादों के किसानों को अच्छे भाव मिलते हैं। जैविक उत्पादों की विदेशों में अच्छी मांग रहती है।

रासायनिक खाद बन रहा अभिशाप – रासायनिक खाद यूरिया, डीएपी, रासायनिक कीटनाशक, खरपतवार के अंधाधुंध उपयोग से मिट्टी में उपस्थित मित्र कम हो रहे हैं। इससे मृदा की उर्वरा शक्ति कम हो रही है। खेतों में डालेजाने वाले रासायनिक केमिकल्स पानी के साथ नदी-नालों में मिलकर पीने के पानी तक पहुंच रहे हैं और उसे (पानी) दूषित कर रहे हैं, वहीं वायु के साथ मिलकर वायु प्रदूषण भी बढ़ा रहे हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र नीमच के कृषि वैज्ञानिक डॉ. श्याम सिंह सारंगदेवोत ने बताया कि फसल चक्र अपनाकर भी उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

गाय के घी के सेवन से कैंसर जैसे गंभीर बीमारी से बचा जा सकता है। कोरिया यूनिर्वसिटी एक वैज्ञानिक ने अपने प्रयोगों के दौरान यह पाया कि गाय के दूध में बी-25, नामक एक तत्व पाया जाता है जो 24 घंटे के भीतर कैंसर की कोशिका को नष्ट कर देता है। गाय के घृत में वैक्सिंग एसिड, ब्यूट्रिक एसिड, बीटा-कैरोट्रिन जैसे माइक्रोन्यूट्रिस में शरीर में उत्पन्न कैंसरीयस तत्वों से लड़ने की क्षमता होती है। ऐसा हरियाणा, करनाल स्थित नेशनल डेयरी रिसर्च इस्टीट्यूट के अध्ययन में पाया गया है। अत: 'गौसम्वर्धनम् राष्ट्रवर्धनम्' के सूत्र को अपनाकर हम भारतवर्ष को पुन: विश्वगुरू, परमवैभव, सोने की चिड़िया बना सकते है। यही हमारा चिंतन, लक्ष्य होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गोसम्पदा - मासिक पत्रिका, जुलाई 2011, पृष्ठ 10-10, संपादक-जयप्रकाश भारद्वाज, प्रकाशक - संकट मोचन आश्रम, सेकटर 6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली
2. गोसेवा अंक - कल्याण, गीता प्रेस गोरखपुर, उ.प्र.

3. सेवा प्रेरणा– प्रत्रिका, जून 2014, पृष्ठ 15–16, प्रकाशक – विनोद आर्ये, एम. 205, गौतम नगर, गोविन्दपुरा भोपाल, म.प्र.
4. गाव: सर्वसुखप्रदा – युग निर्माण योजना प्रेस, तपोभूमि, मथुरा, उ.प्र.
5. राष्ट्र का मेरूदण्ड गौशाला – डॉ. प्रणव पाण्डया, पृष्ठ 21, प्रकाशक – वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुंज, हरिद्धार (उत्तरांचल) वर्ष 2010
6. डॉ. एस.एल. पाटीदार गौमूत्र चिकित्सा, पृष्ठ 13, प्रकाशक – गायत्री शक्तिपीठ, एम.पी. नगर, भोपाल
7. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य – पशुवली हिन्दू धर्म एवं मानव सम्यता पर एक कलंक, पृष्ठ 9–17, प्रकाशक – युग निर्माण योजना प्रेस, तपोभूमि, मथुरा, उ.प्र. वर्ष 2007

****

वर्तमान में देश पर मँडरता बेरोजगारी का संकट

डॉ. नितिन सहारिया *

प्रस्तावना – बेरोजगारी हमारे देश की एक जटिल समस्या है। हमारे देश की आबादी लगातार बढ़ती जा रही है। हर साल 1.30 करोड़ युवा, श्रमशक्ति में शामिल हो रहे हैं, पर उन्हें कोई मनोवांछित नौकरी या काम-काज नहीं मिल पा रहा है और इसी कारण यह समस्या वर्तमान समय की एक बड़ी त्रासदी बनती जा रही है। युवाओं में ऊर्जा होती हैं, उंमग होती है। किश ोरावस्था को पार करके देश के हरेक नौजवान व्यक्ति कुछ करना चाहता है, अपने परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी उठाना चाहता हैं, अपने परिवार की आकांक्षाओं व अपेक्षाओं को पूरा करना चाहता है, लेकिन यदि उसे उपयुक्त कार्य नहीं मिल पाता तो फिर या तो वह कुठा का शिकार होता है या फिर वह पैसे कमाने के गलत रास्ते अपना लेता है। ये दोनों ही स्थितियाँ उसके लिए व देश के लिए घातक होती हैं और आज देया को और उसके नौजवनों को इन्हीं घतक परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है।

एक समय था जब नौकरियां आसानी से व्यक्ति को उपलब्ध हो जाती थीं, लेकिन अग वह समय चला गया है। अब एक-एक नौकरी के लिए कई गुना आवेदन प्राप्त होते हैं अभी कुछ ही दिनों पहले उत्तरप्रदेश राज्य सचिवालय में 368 पदों के लिए 23 लाख से अधिक आवेदन आए, जिनमें पी.एच.डी., पोस्ट ग्रेजुएट, एम.बी.ए. व इंजीनियरिंग जैसी उच्चशिक्षा प्राप्त कई अन्य लोग भी शामिल थे जबकि इस पद के लिए मात्र स्कूली शिक्षा की योग्यता अपेक्षित थी। इससे पहले भी छत्तीसगढ़ में चपरासी के तीस पदों के लिए जब पचहत्तर हजार आवेदन आए तो वहां के प्रशासन ने परीक्षा कराने के बजाय भर्ती रद्द करना उचित समझा।

देश में बेरोजगारी की इस मजबूरी का फायदा उठाने से निजी कंपनियां नहीं चूक रहीं और इसी कारण लाखों इंजीनियर, एम.बी.ए. और पोस्ट ग्रेजुएट भी मामूली वेतन पर अपने घरों से दूर रोजगार करने के लिए मजबेर हैं। अभी हाल ही में श्रम मंत्रालय की इकाई श्रम ब्यूरो द्वारा एक सर्वेक्षण रिर्पोट से यह उद्घटित हुआ है कि भारत में बेरोजगारी की दर 2013-2014 में बढ़कर 4.9 फीसद पहुंच गई हैय जबकि 2012-2013 में यह दर 4.7 फीसद थी। रिपोर्ट के अनुसार, बेरोजगारी की दर देश में सबसे कम गुजरात में और सबसे अधिक केरल में है। अध्ययन के अनुसार गुजरात में 14 साल से अधिक उम्र के प्रति 1000 लोगों में 12 लोग बेरोजगार थेय जबकि कर्नाटक में यही संख्या 18, महाराष्ट्र में 28, मध्यप्रदेश में 29, तेलंगाना में 33, हरियाण में 48, पंजाब में 58, राजस्थान में 65, हिमांचल प्रदेश में 75, जम्मू कशमीर में 105, गोवा में 106, त्रिपुरा में 116 और केरल में 140 थी।

हमारे देश में बेरोजगारी से निपटने के लिए हर साल तरह-तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इनमें राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, समन्वित विकास कार्यक्रम, जवाहर रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, मनरेगा आदि प्रमुख हैं। लेकिन जिस तेजी के साथ हमारे देश में बेरोजगारी बढ़ रही है, उससे यह स्पष्ट है कि देश में बेरोजगारी से निपटने के लिए अभी उचित व कारगर उपाय उपलब्ध नहीं हैं। सी.आई.आई. की इंडिया स्किल रिपोर्ट- 2015 के अनुसार, भारत देश में हर साल तकरीबन सवा करोड़ शिक्षित युवा तैयार होते है और रोजगार के लिए सरकारी और प्राइवेट सभी क्षेत्रों में अपनी किस्मत आजमाते हैं, लेकिन सिर्फ 37 फीसद ही रोजगार पाते हैं।

ऐसा होने के दो प्रमुख कारण हैं – पहला, सरकारी क्षेत्र में नौकरियां कम हो रही हैं और दूसरा, प्राइवेट क्षेत्र में उन्हीं लोगों को रोजगार मिल रहा हैं, जिन्हें कारोबारी दक्षता हासिल हैं। गौर करने वाली बात यह है कि देश में सालाना सिर्फ 35 लाख लोगों के लिए ही कुशलता प्रशिक्षण (स्किल डेवलपमेंट) की व्यवस्था हैंय जबकि दूसरी ओर सवा करोड़ शिक्षित बेरोजगार रोजगार पाने की कतार में आ खड़े होते हैं। भारत सरकार ने स्किल इंडिया के जरिए 2022 तक 40 करोड़ लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा है, लेकिन नेशनल सैंपल सर्वे के ताजा सर्वेक्षण के मुताबिक इस लक्ष्य को हासिल करना फिलहाल मुश्किल हैंय क्योंकि रिपोर्ट के अनुसार देश में हर दस युवाओं में महज एक को ही किसी तरह का कारोबारी प्रशिक्षण हासिल हैं।

यदि देश में रोजगार सृजन के आंकड़ों की ओर नजर घुमाई जाए तो पिछले एक से डेढ़ दशक के बीच राजगार सृजन की दर सिर्फ 1.4 प्रतिशत ही रही, जबकि इसी मध्य पढ़-लिखकर रोजगार की इच्छा करने वाले युवाओं की संख्या सालाना 2.23 फीसद बढ़ी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारे देश में बेरोजगार युवाओं की संयख आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ रही है और यह भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक बड़ा संकट है।

ऐसी स्थिति में यदि किन्हीं कंपनियों के काम की दर में गिरावट आती है और फैक्टरियों में ताला पड़ता है तो उनमें कार्य करने वाले हजारों-लाखों को अचानक ही अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता हैं और इनकी निर्धारित आय का निश्चित स्त्रोत भी बंद हो जाता है। ऐसे में नौकरी छूटने के बाद ये अन्य विकल्पों की तलाश में जुट जाते हैं। नौकरी के मामले में हमारे देश कि स्थिति पहले से ही अच्छी नहीं हैं। देखा जाए तो यहां अच्छी नौकरियों के एक-एक पद के लिए कई अभ्यर्थी आवेदन भरते हैं और मांगी गई योग्यता

* शासकीय एम.एम.महाविद्यालय, कोतमा, जिला अनूपपुर (म.प्र.) भारत

से कई गुना ज्यादा योग्यता व डिग्री वाले युवा उनके लिए आवेदन देते समय यह उम्मीद लगाते हैं कि काश, यह नौकरी उन्हें ही मिले। लेकिन वहां भी सिफारिश या रिश्वत की बातें कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल जाती है। नौकरी करने की ललक में युवा रिश्वत देने से भी पीछे नहीं हटते और कभी कभर परिणाम यह होता है कि इन सब में उनके पैसे तो जाते ही हैं, नौकरी भी नहीं मिलती। युवाओं की इस लचारी का फायदा उठाने व पैसा कमाने के लिए कई धोखेबाज व्यक्ति व कंपनियां उन्हें अच्छी नौकरी का लालच देते हैं, उनसे पैसा ऐंठते हैं और फिर वहां से रफूचक्कर हो जाते है।

यह देश की एक समस्या है कि आबादी बढ़ने के साथ-साथ हमारे देश में रोजगार की संभावनाऐं कम होने लगी हैं, जिससे शिक्षित युवाओं के सामने बेरोजगारी का संकट गहराने लगा है। यह देश के सामने खड़ा एक ज्वलंत प्रष्न है कि देश की अर्थव्यवस्था स्थिर रहने और भविष्य में उसमें बढ़ोत्तरी होने की संभावना के बावजूद नौकरियों की संख्या बढ़ने के स्थान पर कम क्यों होती जा रही हैं? इसके पीछे दो-तीन कारण प्रमुख हैं, पहला अब ज्यादातर निजी कंपनियां कम पूंजी लगाकर ज्यादा कमाई वाले बिजनेस मॉडल पर ध्यान लगा रही हैं, जैसे ई-कॉमर्स का जो बिजनेस मॉडल है, उसमें गिने-चुने कर्मचारियों के बल पर ही हजारों-करोड़ों रूपये कमाए जा रहे हैं। यही नहीं, जिन कारखानों में पहले जो काम प्रशिक्षित श्रमिक करते थे, वहां भी मशीनों और रोबोटों से काम लिया जा रहा है।

यही वजह है कि विकास दर में बढ़ोत्तरी के बाद भी रोजगार के विभिन्न अवसरों की दरों में कमी आ रही है। दूसरा एक अन्य कारण है कि हमारे युवा ऐसी शिक्षा की तरफ मुड़ गए हैं, जो उन्हें डिग्री तो देती है,पर अपना काम शुरू करने की समझ और संबल नहीं देती। इसके अलावा नौकरी के चयन के मामले में युवाओं का ज्यादा फोकस सरकारी नौकरी पाने की ओर होता है और इस कारण स्थिति एक अनार सौ बीमार वाली हो जाती है। इसके बदले यदि युवाओं की सोच ऐसा काम-काज अपनाने की होती कि वे स्वयं तो आत्मनिर्भर बनते ही, साथ ही अन्य लोगों को भी रोजगार उपलब्ध करवा सकते, तो आज देश की यह स्थिति न होती।

हमारे समाज में आज उपलब्ध नौकरियों की संख्या पहले ही कम हैं, ऊपर से देश की आबादी तेजी से बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में कम संख्या में उपलब्ध नौकरियों के साथ अपने सामाजिक संतुलन को बनाए रखना काफी मुष्किल काम है। इसके अलावा विदेशों में भी अब भारतीय प्रतिभाओं के लिए अवसरों की कमी हो रही है। खाड़ी देशों से लेकर यूरोपीय देशों में भी कड़े कानेन लाकर भारतीयों युवाओं के बदले स्थानीय युवाओं को काम दिलाने की नीति अपनायी जा रही है। इन कानूनों के कारण भारतीय कंपनियों को विदेशों से कोई काम नहीं मिलेगा, तो ये कंपनियां ज्यादा समय तक अपने देश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध नहीं करा पाएगीं। जब कंपनियां या फैक्टरियां खुद संकट में होगी, तो वे न तो रोजगार की गांरटी दे पायेगी और न नए रोजगार पैदा कर पायेगी।

ऐसी स्थिति में युवाओं के लिए यही विकल्प बचता है कि वे अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए आत्मनिर्भर बनने के उपाय खोजें और स्वावलंबन सीखें। स्वावलंबन के विविध उपायों के माध्यम से वे आर्थिक समृद्धि की दिशा में अपने कदम सरलता से बढ़ा सकते हैं और अन्य लोगों को भी रोजगार उपलब्ध करवा सकते हैं। गौ आधारित उत्पाद निर्माण जैसे- दूध, दही, घी, देशी खाद आदि का निर्माण, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, मधुमक्खी पालन, हैंड पेपर मिल, खादी उद्योग आदि कई ऐसे विकल्प हैं, जिनमें काम करके व्यक्ति अच्छी कमाई कर सकता है और बेरोजगारी की समस्या से निजात पर सकता है।

बेरोजगारी की समस्या का सबसे अच्छा सामधान स्वरोजगार ही है। प्रकृति के संसाधन, जीवन की आवष्यकताऐं और सामाजिक व सरकारी सहयोग - इन तीनों के मिलन से देश के हर व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है। स्वरोजगार में इस बात पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए कि वे कौन-सी आवष्यकताऐं हैं, जो जीवन के लिए बहुत जरूरी हैं और उनकी पूर्ति हेतु रोजगार सृजन के अवसर तलाशना चाहिए। इसके साथ ही प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों और उनके बेहतर उपयोग का ध्यान रखना चाहिए। जैसे- विविधतापूर्ण ताजी सब्जियों की मांग हर घर की आवष्यकता है। यदि अच्छा उत्पादन किया जा सकता है और इसे बाजार तक पहुंचाकर जन आवष्यकता को पूरा करके अच्छे रोजगार से जुड़ा जा सकता है।

इसी प्रकार तरह-तरह की जड़ी-बूटियों की मांग देश में ही नही विदेशों में भी बहुत ज्यादा है। इनकी पैदावार जंगलों में भी आसानी ी हो जाती है और खेतों में भी इन्हें उगाया जा सकता है। यदि सामाजिक संस्थाओं व सरकार का सहयोग मिले, तो इनकी उचित पैदावार के साथ इनके निर्यात की व्यवस्था करके अच्छी कमाई की जा सकती है और लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके अलावा बहुत सारे अन्य रोजगार के साधन हैं, जिन्हें तलाषने की जरूरत है और सही ढंग से उन पर काम करने की भी आवष्यकता है।

हमारे देश में रोजगार बढ़ाने के लिए छोटे उद्योगों का विकास करना सबसे जरूरी हैय क्योंकि छोटे उद्योगों, बड़े उद्योगों से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हैं। इस बारे में अर्थशास्त्रियों का यह भी मानना है कि एक निश्चित धनराशि बड़े उद्योगों की तुलना में लघु उद्योगों में लगाने से बड़े उद्योगों की तुलना में पांच गुना अधिक लोगों को लघु उद्योग रोजगार उपलब्ध कराते है। इसलिए देश में लघु उद्योगों के विकास को प्राथमिकता मिलनी चाहिए, इसके साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी क्षेत्र व्यापार आदि में रोजगार के ऐसे कारगर उपाय करने चाहिए, जो कई लोगों की बेरोजगारी देर कर सके और देश की प्रगति में सहयोग कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अखण्ड ज्योति - मासिक पत्रिका, मार्च 2016, पृश्ठ 35-36, संपादक - डॉ. प्रणव पण्डया, प्रकाशक - अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा, उ.प्र.
2. युग निमार्ण योजना - मासिक पत्रिका, मई 2011, पृश्ठ 9, प्रकाशक - युग निमार्ण योजना प्रेस, मथुरा, उ.प्र.
3. अखण्ड ज्योति - मासिक पत्रिका, अगस्त 1987, पृश्ठ 14, संपादक - डॉ. प्रणव पण्डया, प्रकाशक - अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा, उ.प्र.
4. अखण्ड ज्योति - मासिक पत्रिका, फरवरी 1985, पृश्ठ 13, संपादक - डॉ. प्रणव पण्डया, प्रकाशक - अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा, उ.प्र.

****

भारत छोड़ो आन्दोलन में बैतूल जिले की जनजातियों का योगदान

डॉ. राजेशनाथ चंदेल *

प्रस्तावना – भारत छोड़ो आन्दोलन में बैतूल जिले के जन जातियों का योगदान भारत के हृदय में उपस्थित मध्यप्रदेश देश का महत्वपूर्ण भू–भाग है यह क्षेत्र उत्तर दक्षिण एवं पूर्व पश्चिम भारत को सम्बद्ध करने वाली महत्वपूर्ण कही है देश के इतिहास में अतीत से अद्यतन की प्राय: सभी युग की घटनाओं से यह उत्पन्न प्रभावित रहा है । गिरिक्षं खलाये से आवेष्ठित, वनाच्छादित इस प्रदेश में समपानुरूप जनचेतना का विकास हुआ। सांस्कृतिक समन्वय की यह भूमि सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक समप्सता से युक्त रही है, परिणामस्वरूप स्वाधिकार एवं स्वातंत्र्य संघर्ष के प्रति स्वराज्य के लिए गिरिजनों की शौर्य एवं बलिदान की गाथाओं को अंकित कर दिया। वन एवं अंचल की माटी के प्रति समर्पण उनके मन में सदैव रहा, वे अन्याय, उत्पीड़न, शोषण, आप्रवाजनीय दुर्व्यवहारों के विरूद्ध सतत् संघर्षरत रहे है जनजातीय समाजिक संगठनों ने संघर्षकाल में सदैव एक जुटता का परिचय दिया। नर्मदा, बैनगंगा, बेंतवा, चंबल, सोन, महानदी की घाटी की माटी ने सदैव जन चेतना को जागृत किया। रानी दुर्गावती, छात्रसाल, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अवंती बाई एवं जमीदार नारायण सिंह बिझवार का शौर्य एवं बलिदान सदियों से समाज में जागृति परक एवं प्रेरणास्पद रहा है मध्यप्रदेश का आदिवासी अंचल इनके त्याग एवं बलिदान में सदैव प्रेरणा लेता रहा है।

मध्यप्रदेश के राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक संरचनास के विकास में आदिवासी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। झाबुआ शिवपुरी, मंदसौर, भिण्ड, मुरैना, धार, निमाड, होशगांबाद, विदिशा, सिवनी, छिन्दवाड़ा, बैतूल, बालाघाट, मंडला, सीधी, शहडोल आदि भू–भाग इनकी संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र रहे है। इस अंचल में होने वाले जन आंन्दोलनों में इनका विशिष्ट योगदान रहा है

आदिवासी जन अंसतोष आन्दोलनों का एक मूल कारण भी सदैव रहा है। 1857 ई. असफलता में भी यह भावना परिलक्षित होती है। जन आंन्दोलन के मूल में अंग्रेजों की भू–राजस्व एवं वन नीति भी रही है। सदियों से आदिवासी जल, जंगल और जमीन की रक्षा करते आ रहे थे। वे उसे अपने जीवन का आधार समझते थे। किन्तु जब उस पर अंग्रेजों का हस्तक्षेप प्रारंभ किया गया तब उनका अंसतोष उसमें लगा। लगान में बढोत्तरी, अमानवीय यातनाएं, मंहगी न्याय व्यवस्था, पुलिस के व्यवहार के प्रति अंसतोष नागरिकों का शोषण आदि व्यवस्थापरक नीति ने उनके मन को उद्धेलित कर दिया और उनका आक्रोष जन आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ।

9 अगस्त 1942 ई. को घोड़ाडोगरी एवं आसपास के गांव आदिवासी आंदोलन से हुए चके थे। पुलिस अत्याचार ये उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही थी गोड़ सरदार विष्णु सिंह ने वनांचल के आदिवासी जनों को संगठित किया। व अगस्त, 1942 को 5 हजार आदिवासी घोड़ाडोंगरी स्टेशन के पास इकट्ठे हुए। रेल पटरियां उखाड़ दी गई। रानीपुरा थाना जला दिया गया। घोड़ाडोगरी डाकघर भी जला दिया गया बोगदो पर कब्जा होने से दिल्ली रेलमार्ग यातायात अवरूद्ध हो गया।

22 अगस्त 1942 को पांच लाख से अधिक बाँसो के रखे हुए गठठो को आग लगा दी गई हीकेरशन फारेस्ट अधिकारी घटनास्थल पर आग तथा आदिवासी समूह पर गोली चलवाना शुरू कर दिया। 'वीरसा गौडे' शहीद हुआ। जिर्रा गौड की मृत्यु जेल में हुई। सैकड़ो आदिवासी गिरफ्तार हुए जिन्हें बैतुल एवं नागपुर जेल भेजा गया। गौड़ एवं का कोरकू आदिवासियों को त्यागमय संघर्ष आजादी की लड़ाई का महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

बैतूल के आमला के पास नाहिया गाँव है स्कूल के रिकार्ड के आंदोलनकारियों ने जला दिया। पिता केला और पुत्र उदन अंग्रेजो के गोली से शहीद हो गए। 1920 से 1947 इतिहास में गांधी युग के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी के इन्दौर, जबलपुर, रायपुर दौरे से मध्यप्रदेश में एक जागृति उत्पन्न हुई। आदिवासी जन आन्दोलन से जुड़ते गए और राष्ट्रीय आन्दोलन विकास की ओर अग्रसर होता गया। 20 मार्च 1921 को महात्मा गांधी के जबलपूर आने से गोड़वाना के आदिवासी अंचल में जागृति आई

आदिवासी क्रांतिकारियों की परंपरा वीर नारायण सिंह जैसे अनेक लोकनायकों के विस्तार और उंचाई पाकर 19वी. सदी में बस्तर में शुभकाल सन् 1910ई. में और परवान चढ़ी लगभग दो दशक बाद सत्याग्रह में आदिवासियों ने एक बार फिर अपनी राष्ट्रभक्ति का ज्वलंत परिचय दिया। बैतूल में गंजनसिह कोरकू ने जर्बदस्त संगठन और नेतृत्व शक्ति का परिचय दिया। जम्बाड़ा में रामू और मकडू गोंड शहीद हुये। 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन में घोड़ाडोगरी शाहपुर क्षेत्र में विष्णु सिह गोड़ ने अंग्रेजों के खिलाफ शोले भड़का दिये। विष्णु सिंह के नेतृत्व में आदिवासियों ने कई रोज घोड़ाडोंगरी इलाके पर कब्जा जमाये रखा पुलिस गोलाबारी बीरसा गोड़ की बाद में कारावास में मृत्यु हो गयी।

निष्कर्ष – इस प्रकार महात्मा गांधी द्वारा संचालित भारत छोड़ो आंदोलन स्वाधीनता संघर्ष में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस आंदोलन में मध्यप्रांत के

* अतिथि विद्वान, शासकीय स्नातक महाविद्यालय, चंदेरी (म.प्र.) भारत

बैतूल जिले की जनजातियों ने भी उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया तथा उन्होंने महासभा में बलिदान, त्याग एवं साहस का परिचय दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुरू शम्भु दयाल- मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन 1857-1950 मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल।
2. व्यास, डॉ. हंसा - मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम 1857 से 1947 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल।
3. बैतूल जिला गजेटियर गजेटियर संचालनालय संस्कृति विभाग , भोपाल,मध्यप्रदेश।

****

ब्रिटिश कालीन भू-राजस्व व्यवस्था का प्रभाव : एक अध्ययन (बैतूल जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. राकेश कुमार चौरे *

शोध सारांश – ब्रिटिश कालीन भू-राजस्व ने मध्यप्रांत के साथ-साथ बैतूल जिले के ग्राम्य अथवा कृषक समाज को विशेष रूप से प्रभावित किया। अंग्रेजों की दूषित नीतियों का सर्वाधिक प्रभाव जिले की कृषि संरचना पर पड़ा। इस दौरान भू-स्वामियों और कृषक संबंध कभी कटु तो कभी सामान्य परिलक्षित हुये। उनमें सामंजस्य स्थापित करने हेतु शासन ने समय-समय पर अनेक अधिनियम पारित किये, परंतु स्थिति में विशेष परिवर्तन न हो सका। अध्ययन काल में जिला अकालों से भी पीड़ित रहा। दुर्भिक्षों से निपटने हेतु सरकारों ने कई उपाय किये, किन्तु वे समुचित न थे। यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि अकालों के दौरान किसी शासकीय अभिलेख में सरकार द्वारा लगान माफी का कोई उल्लेख नहीं मिलता। अंग्रेजों की भू-राजस्व व्यवस्था से जिले में चल रहा स्वतंत्रता भी संग्राम भी अछूता न रहा। सामान्य जनों के साथ-साथ कृषक वर्ग ने भी इसमें भागीदारी अंकित कर अपना असंतोष प्रदर्शित किया। इस प्रकार ब्रिटिश कालीन प्रशासन एवं भू-राजस्व व्यवस्था से जिले का राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास प्रभावित होता रहा।

शब्द कुंजी – भू-राजस्व, मौरूसी, काश्तकार।

प्रस्तावना – ब्रिटिश कालीन भू-राजस्व व्यवस्था एक नवीन तथा व्यवस्थित पद्धति थी। इसने मध्यप्रांत के साथ-साथ जिले के आर्थिक जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया। बैतूल जिला मुख्यत: कृषि पर आश्रित था। अत: स्वाभाविक था कि अंग्रेजों की भू-राजस्व प्रणाली का सर्वाधिक प्रभाव जिले की कृषि संरचना पर पड़ता। यह भी नितान्त सत्य है कि इसके फलस्वरूप कृषक वर्ग भी अछूता न रहा। अंग्रेजों की दोषपूर्ण भू-राजस्व एवं वन्य नीतियों का जिले में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम पर भी स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हुआ। अत: ब्रिटिश कालीन भू-राजस्व व्यवस्था से जो क्षेत्र प्रभावित हुये वे इस प्रकार हैं-

कृषि पर प्रभाव– भारत एक कृषि प्रधान देश है, इसकी संपूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि पर ही आधारित है। कृषि के विकास एवं ग्रामों की उन्नति पर ही भारत के प्राचीन एवं मध्यकाल में अधिकाधिक ध्यान दिया जाता था, लेकिन अंग्रेजों के भारत आगमन के साथ ही कृषि की स्थिति गिरी और अर्थव्यवस्था शोचनीय हो गई। [1] किसी राष्ट्र की सम्पत्ति के स्त्रोत होते है- कृषि, वाणिज्य एवं उत्पादन तथा उन्नत वित्तीय प्रशासन ब्रिटिश राज ने भारत को शांति तो प्रदान की किन्तु ब्रिटिश प्रशासन ने भारत में राष्ट्रीय सम्पत्ति के इन स्त्रोतों को उन्नत बनाने तथा उनका विस्तार करने का कार्य नहीं किया। [2] कृषि के क्षेत्र में 20 वीं सदी के प्रारंभ में शासन की ओर से सिंचाई का कोई प्रबंध नहीं था, परंतु निजी तालाबों द्वारा सिंचाई काफी मात्रा में होती थी। पुराने मध्यप्रदेश (ब्रिटिशकालीन) के छत्तीसगढ़ में 936 वर्ग किलोमीटर पर तालाब से सिंचाई होती थी। हर तालाब से लगभग 25 हेक्टर जमीन पर सिंचाई की जाती थी। 1903-04 में सरकार ने शासकीय सिंचाई कार्य प्रारंभ किया। सिंचाई कमीशन (1901-03) के सुझावों के अनुसार सरकार ने मध्यप्रदेश और बरार में सन् 1947-48 तक 7,23 करोड़ रूपये सिंचाई कार्य के निर्माण पर व्यय किये। महाकौशल में बैनगंगा, तादुल, महानदी, खारंग और मनिआरी नहर जैसी प्रमुख नहरें बनाई गई। [3]

जिले में कृषि का विकास – 1961 की जनगणना के अनुसार जिले में 100 निवासियों में से 91.6 निवासी ग्रामीण क्षेत्रों में तथा शेष अर्थात् 8.4 निवासी नगर क्षेत्रों में रहते थे। इससे पूर्व की जनगणना के समय यह अनुपात क्रमश: 92.5 तथा 7.5 था। यद्यपि कुछ लोगों द्वारा कृषि कार्य अपना लेना स्पष्ट परिलक्षित होता था, किन्तु फिर भी जिले का मूल ग्रामीण स्वरूप अपरिवर्तित ही रहता था। 1961 की जनगणना से यह प्रकट होता है कि जिले में सभी कामगारों का 81 प्रतिशत कृषि पर निर्भर थे। इस प्रकार निर्भर रहने वालों की सबसे अधिक संख्या संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र भैंसेदही तहसील में है, जबकि बैतूल तहसील में कृषि पर निर्भर रहने वालों की संख्या तुलनात्मक दृष्टि से कम थी। मुलताई की मध्यवर्ती स्थिति कृषि में, कृषकों की संख्या खेतिहर मजदूरों की संख्या से लगभग चौगुनी थी। बैतूल जिले में कुल जनसंख्या का 81 प्रतिशत अपना जीविकोपार्जन कृषि व्यवसायों से करता था।

सिंचाई के साधन – अंग्रेजी शासन की स्थापना के समय जिले में सिंचाई के प्रमुख साधन कुयें, तालाब, नदियों पर बनाये जाने वाले बाँध आदि प्रमुख थे। कुयें आज भी जिले की सिंचाई के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन बने हुये हैं। सिंचाई का प्रचलित तरीका मोठ (चमड़े की बड़ी बाल्टी) वाली विधि, कुओं से सिंचाई में प्रयुक्त की जाती थी। [4] जबकि तालाब भूतकाल के समान अब भी उतने महत्वपूर्ण साधन नहीं हैं। जिले के क्षितिज पर नहरों द्वारा सिंचाई 1960 के दशक के मध्य उदित हुई। जलपूर्ति के लिये निकाली गई नहरें महत्वपूर्ण साधन रही हैं। छोटे तालाबों की योजनाओं द्वारा जलपूर्ति हेतु निकाली गई नहरों को विकसित किया गया। अन्य प्रयोजनाओं को भी विकसित कर छोटे-छोटे बांधों द्वारा जल का स्तर बढ़ाया गया। यद्यपि सुचार रूप से नहीं पर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस क्षेत्र में काफी कार्य किया गया। जल स्तर उठाने वाली योजनायें बहुधा नदियों पर विकसित की गई, क्योंकि वहाँ पानी के काफी कम स्त्रोत थे। उन योजनाओं में सांपाना तालाब, तथा गारंजी नाला रेग्यूलेटर नामक योजना प्रमुख थीं। [5]

अंग्रेजों की भूमि नीति – अंग्रेजों ने परम्परागत भारतीय भूमि नीति की उपेक्षा कर स्वार्थवश कृषकों से अधिक से अधिक धन लेने के लिये काफी ऊँची दरों पर भू-राजस्व का निर्धारण का कोई न्यायोचित आधार नहीं था।

*अतिथि विद्वान (इतिहास) शासकीय महाविद्यालय, परासिया, जिला-छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

विभिन्न प्रांतों में विभिन्न प्रणालियों का प्रचलन कर भू-राजस्व की राशि भूमि के आर्थिक किराये के बराबर निर्धारित की गई, जिसमें भूमि की उर्वरा शक्ति, उसकी उपज की मात्रा तथा कृषि साधनों का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखा गया। बंगाल में स्थायी प्रणाली मद्रास तथा बम्बई में रैयतवाड़ी प्रणाली, उत्तारी भारत में महालवारी प्रणाली सभी में उपरोक्त दोष विद्यमान थे।

भू-राजस्व में स्थायित्व नहीं था उसकी दर तथा मात्रा में निरंतर वृद्धि होती रही, जिसके कारण कृषि की दशा अवनत होती गई। भू-राजस्व के अतिरिक्त उसका 6) प्रतिशत या उससे अधिक राशि सिंचाई परिवहन आदि के विकास के लिये कृषकों से वसूल किया गया जिसका भार कृषकों पर पड़ा। कृषकों की भांति पैतृक भू-स्वामी जमींदारों की उपेक्षा की गई, भूमि को ऊँची बोली पर ठेकेदारों को आवंटित कर जमींदारों को बेदखल किया गया था, उन्हें ऊँची रकम देकर भूमि पर अधिकार बनाये रखकर कृषकों का शोषण करने हेतु विवश किया गया। भारत में आरंभ से ही भू-राजस्व के निर्धारण तथा उसकी वसूली में स्थानीय ग्राम पंचायतों या समुदायों की प्रमुख भूमिका रही है।

अंग्रेजों की भूमि नीति भारतीय कृषि के लिये अभिशाप सिद्ध हुई। भू-राजस्व की अस्थिरता, अनिश्चिता एवं उसकी वसूली की क्रूरता के कारण कृषकों को अपनी भूमि पर परिश्रम करके लाभांवित होने की प्रेरणा नहीं मिली बल्कि वे कृषि कार्य छोड़ने के लिये विवश हो गये। निरंतर निर्धनता एवं ऋण भार से दबे रहने के कारण उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई।[6] अंग्रेजों की भूमि पर अधिकार करने तथा कुछ प्रांतों में उसे निश्चित लगान पर जमींदारों को देने, किसानों में सीधा लगान वसूले करने की प्रणाली लागू हो गई।

भू-राजस्व की दूषित नीति- कृषि की अवनति एवं कृषकों की अशांति का मूल कारण अंग्रेजों की भू-नीति थी। इस संदर्भ में श्री रोमेषदत्ता का कथन है कि -ब्रिटिश राज के प्रारंभिक वर्षों में ईस्ट इंडिया कंपनी भारत को अपनी ऐसी जायजाद या उपनिवेश समझती थी जिसकी समस्त भूमि उत्पादन पर उसका अधिकार है और उसकी मान्यता थी कि भू-राजस्व लेने के बाद कृषकों तथा भू-स्वामियों के पास केवल इतने साधन ही शेष रहे हैं कि वे साधारणत: जीवित रह सकें। कुछ समय पश्चात् अंग्रेजों की नीति में थोड़ा परिवर्तन आया और उन्होंने भू-राजस्व निर्धारण कर उसे कृषि उपज की वृद्धि के साथ निरंतर अधिकाधिक कर वसूल करना प्रारंभ किया, उन्होंने भूमि के उत्पादन का आधा भू-राजस्व निश्चित किया जो काफी ऊँचा था।[7] कृषि उत्पादन के लाभ का 50 प्रतिशत आय कर भू-राजस्व की इतनी ऊँची दर थी जो किसी भी अन्य देश की सभ्य सरकार द्वारा नहीं ली जा सकती थी।[8]

अंग्रेजों की स्वार्थ से प्रेरित भू-राजस्व नीति के कारण कृषि एवं कृषक की दषा निरंतर गिरती गई और किसानों में असंतोष बढ़ता गया। भू-राजस्व के निर्धारण तथा उसकी वसूली में भारत की परम्परागत ग्राम पंचायत व्यवस्था की उपेक्षा कर उसके स्थान पर जमींदारों या सरकारी कर्मचारी जैसे स्वार्थी एवं अत्याचारी मध्यस्थों द्वारा उनकी व्यवस्था की गई। बंगाल की स्थायी प्रणाली, मद्रास और बम्बई की रैयतवाड़ी एवं उत्तरी भारत की महलवारी प्रणाली सभी में दोष थे। भू-राजस्व के अतिरिक्त और धन राशि बलपूर्वक वसूल किये जाने के कारण कृषकों को कृषि उन्नत करने के लिये कोई प्रेरणा नहीं मिली, बल्कि इसके विपरीत कृषि कार्य से वे विरक्त हो गये। भू-राजस्व की वसूली मध्यस्थों के अत्याचार, निर्धनता, अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण किसानों को स्थानीय महाजनों एवं साहूकारों से ऋण लेने को विवश होने से कृषि की अवनति हुई।[9]

भू-स्वामी एवं कृषक संबंधों पर प्रभाव - 1867 के तीस वर्षीय बंदोबस्त के पश्चात् अनेक मालगुजार सामने आये जो अपनी लंबी दखलदारी तथा उत्ताम प्रबंध के कारण पुराने पटेलों के स्थान पर अपने ग्रामों के स्वामी बन बैठे। मराठा शासनकाल में माफीदारों और धार्मिक या पूर्व-प्रयोजनों के लिये दिये गये भूमि अनुदानों को छोड़कर जिले के किसी कास्तकार के अधिकार या कब्जे के भोगाधिकार जैसी किसी बात की कोई जानकारी नहीं मिलती तथापि मूल-मराठा पद्धति में कास्तकारों के दो वर्ग शामिल थे। पहले वर्ग में मौरूसी कास्तकार **'मीरासदार'** कहलाते थे, जिनका निसंदेह भूमि पर स्वामित्वाधिकार था और जिनकी भू-धृति न्यूनाधिक सैनिक सेवा अवधि होती थी। तथापि, सन् 1864 के बंदोबस्त के समय इस प्रकार की कास्तकारी की जानकारी प्राप्त नहीं हुई। अन्य प्रकार के कास्तकार ऊपरी कहलाते थे। जिनका शाब्दिक अर्थ बाहरी व्यक्ति है वे इच्छाधीन कास्तकार होते थे और उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं होता था।[10]

सन् 1867 की बंदोबस्त संहिता के इन उपबंधों से ऐसी रैयतों का वर्ग, जिनका मौरूसी अधिकार अभिलेख पूर्णत: अस्थायी हैं। इन उपबंधों के कार्यान्वयन के लिये वाजिब-उल-उर्ज (ग्राम प्रशासन पत्र) में एक खण्ड के रूप में भू-स्वामियों से एक अभिलेख तैयार करवाया गया जिसके द्वारा वे पूर्ण मौरूसी कास्तकार को उपबंध अधिकार स्वीकार करने के लिये बाध्य थे। ग्राम प्रथाओं के इन अभिलेखों का उपयोग भूमि स्वामियों और ऐसे कास्कारों के बीच, जिनकी पट्टेदारी का विधि में परिवर्तन होने पर उपयोग भूमि स्वामियों और ऐसे कास्तकारों के बीच, जिनकी पट्टेदारी का विधि में परिवर्तन होने पर पुनरीक्षण किया जा सकेगा, विधि में भावी परिवर्तन की संभावना के विरूद्ध विधान के स्थान पर किया गया।[11]

अंग्रेजों की अकाल नीति - 1867 ई. के पूर्व यह जिला अकालों से अछूता रहा। क्योंकि इस संबंध में कोई ऐतिहासिक अभिलेख प्राप्त नहीं हुये। इतिहासकार रसल ने लिखा है- यदि पूर्ण रूप से देखा जाये तो प्रांत के अन्य जिलों की अपेक्षा यह जिला अकाल मुक्त रहा।[12] 1868-69 ई. में बुंदेलखण्ड में अकाल पड़ा, तब बैतूल में ही इसका प्रभाव पड़ा। 1878-79 ई. में अधिक वर्षा एवं बाढ़ के कारण फसलें बर्बाद हो गईं। इस वर्ष 91/2 इंच वर्षा हुई। इसके पश्चात् 1886 ई. में वर्षा न होने के कारण मुख्य फसले बिगड़ गई थीं कुछ क्षेत्रों में फसल घटकर सामान्य से एक चौथाई हिस्से रह गई। जिससे प्रारंभिक रबी की बुआई न हो सकी।[13]

अकाल का प्रभाव नर्मदा संभाग के अन्य जिलों की अपेक्षा बैतूल में अधिक था। फसली क्षेत्र 1896-97 के आंकड़े से घटकर वर्ष 1897-98 में 50,000 एकड़ तक कम हो गया। इसका कारण जोत पशुओं की कमी तथा 1897 में अकाल कालवित पशुओं के स्थान पर दूसरे पशुओं की पूर्ति करने के लिए कृषकों की असमर्थता थी। सन 1899-1900 ई. में वर्षा बिल्कुल ही नहीं हुई, केवल बदनूर में जून में 2 इंच जुलाई में 5 इंच तथा अगस्त में लगभग 2 इंच वर्षा हुई। जबकि इसके बाद कृषि वर्ष की शेषावधि में केवल एक या दो बार बहुत ही हल्की बारिश आई। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में भी कपास, तिल और चना औसत उत्पादन का लगभग आधा हुआ तथा गेंहू 40 प्रतिशत हुआ। किन्तु अन्य फसलें नगण्य या नहीं के बराबर थी।

स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव- ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के पूर्व जिले का भू-भाग नागपुर के भोंसला (मराठा) शासकों के शासनाधीन था। तब यहाँ की व्यवस्था ब्रिटिश रेजीडेन्ट द्वारा नियुक्त अंग्रेज अफसरों के माध्यम से की जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि बैतूल जिले के गोंड, कोरकू नागपुर के मराठा शासकों के प्रति गहन आस्था रखते थे तथा वे राज्य पर ब्रिटिश प्रभुत्व

एवं अंग्रेजों की कुनीतियों के प्रबल विरोधी थे जिले में जमींदार वर्ग द्वारा ब्रिटिश प्रतिरोध की परंपरा तब प्रारंभ हुई।[21] जमींदार ब्रिटिश सरकार की प्रशासनिक एवं भू-राजस्व व्यवस्था से काफी असंतुष्ट रहे होंगे। अंग्रेजों ने प्लासी के युद्ध (1757 ई.) के बाद एक शताब्दी के भीतर (1856 ई. तक) संपूर्ण भारत पर अपनी निष्कंटक सत्ता स्थापित कर ली थी। अंग्रेजों ने भारत विजय अपनी वीरता तथा युद्ध कौशल से नहीं, वरन् धूर्तत: तथा विश्वासघात से हासिल की थी। यह देश का दुर्भाग्य था कि भारतीयों ने आपस लड़कर अपनी मातृभूमि को विदेशियों को सौंप दिया। 1856 ई. तक भारतीयों में ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष व्याप्त था।

बैतूल जिले की तहसीलें राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से काफी पिछड़ी हुई थी। जागीरदारी शासन के अंतर्गत पहाड़ियों से घिरी वनाच्छादित एवं गोंड आदिवासी बाहुल्य इस तहसील के लोगो के लिए वंदे मातरम, सत्याग्रह तथा स्वाधीनता आंदोलन जैसे शब्द अर्थहीन थे। ऐसे समय में दादा साहेब खापर्डे की अध्यक्षता में एक सम्मेलन आयोजन करना था। इस सम्मेलन में जिले के लगभग दस हजार व्यक्तियों ने भाग लिया। एक बार जो राष्ट्रीय भावना जागृत हुई वह निरंतर बढ़ती ही गई। साथ ही इन नेताओं ने ब्रिटिश सरकार की प्रशासनिक एवं भू-राजस्व संबंधी नीतियों के दुष्प्रभावों से जनता को अवगत कराया फलत: यहां के ग्रामीण कृषक समुदाय पर जिले के इन शीर्ष नेताओं के भाषणों का गहरा प्रभाव पड़ा।[14] उपर्युक्त यह घटना दर्शाती है कि अंग्रजों की भू-राजस्व प्रणाली से जिले का नेतृत्व एवं कृषक वर्ग असंतुष्ट था। संभवत: इसी कारण जिले के स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों ने जन जागरण हेतु सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में किसान आंदोलनों एवं कृषकों की उल्लेखनीय भूमिका रही। महाकौशल और बैतूल जिला भी इसमें पीछे न रहा। अत: राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय नेताओं तथा ग्रामीण, आदिवासी कृषक समुदाय के सामूहिक प्रयासों के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंका और भारतवर्ष आजाद हो गया।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि ब्रिटिश कालीन भू-राजस्व ने मध्यप्रांत के साथ-साथ बैतूल जिले के ग्राम्य अथवा कृषक समाज को विशेष रूप से प्रभावित किया। अंग्रेजों की दूषित नीतियों का सर्वाधिक प्रभाव जिले की कृषि संरचना पर पड़ा। इस दौरान भू-स्वामियों और कृषक संबंध कभी कटु तो कभी सामान्य परिलक्षित हुये। उनमें सामंजस्य स्थापित करने हेतु शासन ने समय-समय पर अनेक अधिनियम पारित किये, परंतु स्थिति में विशेष परिवर्तन न हो सका। अध्ययनकाल में जिला अकालों से भी पीड़ित रहा। दुर्भिक्षों से निपटने हेतु सरकारों ने कई उपाय किये, किन्तु वे समुचित न थे। यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि अकालों के दौरान किसी शासकीय अभिलेख में सरकार द्वारा लगान माफी का कोई उल्लेख नहीं मिलता। अंग्रेजों की भू-राजस्व व्यवस्था से जिले में चल रहा, स्वतंत्रता भी संग्राम भी अछूता न रहा। सामान्य जनों के साथ-साथ कृषक वर्ग ने भी इसमें भागीदारी अंकित कर अपना असंतोष प्रदर्शित किया। इस प्रकार ब्रिटिश कालीन प्रशासन एवं भू-राजस्व व्यवस्था से जिले का राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास प्रभावित होता रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंह, प्रताप; आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास जयपुर, पृ. 275
2. दत्त, रोमेश; द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया वाल्यूम 1 प्रीफेश, पृ. 12
3. राव एवं कोण्डावार; मध्यप्रदेश का आर्थिक विकास, 1972 भोपाल, पृ. 14-15
4. रसल, आर.वी.; डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बैतूल 1907, पृ. 154
5. ऑटोबॉयोग्राफी ऑफ दि बैतूल डिस्ट्रिक्ट, जिला सांख्यिकी कार्यालय बैतूल का टंकित रजिस्टर 1975, पृ. 22
6. श्रीवास्तव, पी. एन.; मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बैतूल 1990, पृ. 107
7. —वही— पृ. 278-79
8. —वही— पृ. 280
9. दत्त, रोमेश; द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया वाल्यूम 1 प्रीफेश, पृ. 8
10. सिंह, प्रताप; वही, पृ. 280-81
11. —वही— पृ.249
12. रसल, आर.वी.; डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बैतूल1907, पृ. 159
13. सक्सेना, सुधीर; मध्यप्रदेश में आजादी की लड़ाई और आदिवासी, पृ. 106
14. मिश्र, दुर्गाप्रसाद; स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर ज्योति (अ) हस्तलिखित पुस्तिका, पृ. 2-3

****

महात्मा गाँधी की हरिजन यात्रा और उसका प्रभाव (मंडला जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. संतोष उसरेठे *

शोध सारांश – गाँधीजी ने न केवल राष्ट्रीय आंदोलन को अपूर्व दृढ़ता के साथ संचालित किया अपितु देश के सर्वतोंमुखी सुधार और उद्धार के लिये कितने ही रचनात्मक कार्यक्रम भी चलाये जो देश की सामाजिक स्वतंत्रता के लिये आवश्यक थे। गाँधीजी ने सामाजिक विषमता के शिकार अछूतों को केवल समानता का अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष ही नहीं आरंभ किया बल्कि युग-युग से निराश, दीन, दलित, असहाय और मरणासन्न अछूतों के बीच रहकर और उनके लिये निरंतर कार्य करते हुये देश की चिरदलित, शोषित और तिरस्कृत हरिजनों में नये जीवन का संचार भी किया। उन्होंने हरिजनोउद्धार के लिये झोली फैला कर चंदा इकट्ठा किया, उनके बीच रहे और उनके जैसे काम किये।

शब्द कुंजी – हरिजन यात्रा।

प्रस्तावना – जब सविनय अवज्ञा आंदोलन पूरे जोर पर था। तब अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मैक्डोनाल्ड ने भारत के लिये एक ऐसी निर्वाचन प्रणाली सुझाई जिसमें हरिजनों के लिये पृथक-पृथक मतदान की व्यवस्था की गई थी। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार हिन्दुओं में भी फूट डालना चाहती थी। गाँधीजी को इस साम्प्रदायिक निर्णय से गहरा दु:ख पहुँचा। 'गाँधीजी ने हरिजनों और सवर्ण हिन्दुओं के बीच खाई पैदा करने वाली कोशिश का कठोर विरोध करने का निर्णय लिया गया।' कम्युनल अवार्ड नामक इस योजना के संबंध में गाँधीजी ने जेल में सरकार से पत्र-व्यवहार किया किन्तु सरकार पर इसका कोई प्रभाव नही हुआ। [5] अंत में गाँधीजी ने सरकार को सूचित कर 20 सितम्बर 1932 को पूना की यरवदा जेल में विधानसभा में 'दलित वर्गी' प्रारंभ कर दिया। इस दिन से ही संपूर्ण प्रांत में इस नये आंदोलन का सूत्रपात हुआ। उस दिन संपूर्ण प्रदेश में **'गाँधी दिवस'** मनाया गया। स्कूल और म्यूनिसपल बंद रहे। [6]

गाँधीजी देश का ध्यान इस महत्वपूर्ण समस्या की ओर मोड़ना चाहते थे। आखिर पं. मदन मोहन मालवीय, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. भीमराव अम्बेड़कर, सरदार पटेल, एम.जी.राजा जी आदि नेताओं ने मिलकर पूना में एक सर्वसम्मत हल निकाला जो 'पूना समझौता' के नाम से प्रसिद्ध है। इस योजना को गाँधीजी की स्वीकृति के पश्चात् सरकार की स्वीकृति के लिये भेज दिया गया। चौबीस घण्टों के भीतर ही इसकी स्वीकृति आ गई और गाँधीजी का आमरण- अनशन पाँच दिन बाद समाप्त हो गया। इस प्रकार हिन्दू समाज से हरिजनों को सदा के लिये अलग करने का ब्रिटिश षड़यंत्र असफल हो गया। हरिजनों के अलग मतदान कील योजना समाप्त हो गई और जनरल सीटों में ही उनके लिये संरक्षण की व्यवस्था से हरिजनों का प्रतिनिधित्व प्राय: दुगना अर्थात् 148 हो गया। [7]

8 मई, 1933 को गाँधीजी ने देशवासियों के हृदय को शुद्ध करने के लिये 21 दिनों का आत्मशुद्धि उपवास आरंभ कर दिया। [8] उन्होंने कहा इस व्रत का उद्देश्य मेरी और मेरे सहयोगियों की आत्मशुद्धि है। ताकि हम लोग हरिजन उद्धार के लिये और सजग हो जाये। इस वक्तव्य पर सरकार काफी प्रसन्न हुई और गाँधीजी को बिना शर्त रिहा कर दिया और इस प्रकार हरिजन सेवा के लिये लगे हुये प्रतिबंध अपने आप ही समाप्त हो गये। ताकि वे अपना कार्य कर सकें। जेल से रिहा होते ही गाँधीजी ने वक्तव्य देकर सविनय अवज्ञा आंदोलन को 6 सप्ताह तक स्थगित कर दिया।[9]

जेल से छूटने के बाद गाँधीजी ने अपना पूरा समय हरिजन उद्धार के कार्यों में लगाया। उन्होंने 07 नवम्बर 1933 को वर्धा से ऐतिहासिक हरिजन दौरा आरंभ किया। [10] उन्होंने सारे देश की दस महीने दीर्घ हरिजन यात्रा की, गाँधीजी का दौरा अस्पृष्यता का कलंक धोने में काफी हद तक सफल रहा। गाँधीजी का यह दौरा मध्यप्रदेश के लिये विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसके अंतर्गत वे राज्य के सुदूर छोटे-छोटे गाँवों में गये और राज्य की जनता तक हरिजनोद्धार का संदेश प्रसारित किया। [11] गाँधीजी 28 नवम्बर 1933 को बालाघाट एवं सिवनी, 29 नवंबर को छिन्दवाड़ा, 1 दिसम्बर को करेली (नरसिंहपुर), 3 दिसम्बर को कटनी, सिहोरा, जबलपुर एवं 6 दिसम्बर को मण्ड़ला होते हुये मध्यप्रदेश के अन्य स्थानों पर गये। [12]

मण्डला आगमन – सन् 1930-32 तक का काल मण्डला जिले में राजनीतिक दृष्टि से सर्वत्र उथल-पुथल एवं अंग्रेजों का काल था। सन् 1933, मण्डला जिले के लिये एक पुनीत वर्ष के रूप में हर्षोल्लास एवं प्रसन्नता से जन-मानस गद्-गद हो गया, जब इस वर्ष 6 दिसम्बर को हमारे पूज्य महात्मा गाँधीजी के चरण इस नगरी में पडे और यह नगरी धन्य हो गई। सविनय अवज्ञा के अंतर्गत लार्ड इरविन से गाँधीजी ने जो समझौता कर इस आंदोलन का स्थगन कर दिया था। उससे देश के विभिन्न नेताओं ने गाँधीजी के इस कार्य की कटु आलोचानाएँ की थी। इस पर गाँधीजी ने निराश होकर कांग्रेस कमेटी से त्यागपत्र दे दिया था एवं अछूतोद्धार के कार्य हेतु देश भ्रमण के लिये निकल पडे थे। इस यात्रा के दौरान मण्डला में भी उनका आगमन हुआ। जनमानस खुशी से झूम उठा। गाँधीजी की मण्डला यात्रा की याद मण्डला जिले के पुरानी पीढ़ी के व्यक्तियों के हृदय में उसी श्रद्धा से आज भी बसी हुई है, कि उनसे महात्मा गाँधीजी के आगमन की चर्चा करने पर अनायास ही अत्यंत उत्साह, पवित्र भावना और श्रद्धा से...अ....हा...हा....का शब्द इनकी जुबान पर आ जाता है। उनकी मन:शक्ति और उत्साह को उनके मुख पर पढ़ने से किसी भी व्यक्ति को यह अहसास हो सकता है कि शायद इस नगरी के

*अतिथि विद्वान (इतिहास) शासकीय महाविद्यालय, अमरवाड़ा, जिला- छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

लोगों के लिये स्वतंत्रता से पूर्व यदि कोई पुनीत कार्य हुआ है तो वह है **'महात्मा जी का मण्डला आगमन'** सेनानियों द्वारा इस चर्चा के दौरान ऐसा प्रतीत होता है मानो उस समय का पूर्ण दृष्य वे आज भी देख रहे हों। पूरा दृष्य उनकी आँखों के सामने घूमने लगता है। कैसा रहा होगा - वह मानव रूपी देवता, जिसके दर्शन मात्र के लिये व्यक्ति कई दिनों पूर्व ही आकर अपना स्थान ग्रहण कर लेता था। जिसका देश पर इतना जादू था कि जनता उनके नाम की दीवानी थी। वही पागलपन, जिससे एक अद्भुत आनंद का अनुभव होता है, आया मण्डलावासियों पर 6 दिसम्बर 1933 ई. को जब उमड़ पड़ी जनता गाँधीजी की एक झलक के लिये।

गाँधीजी के आगमन की तारीख 6 दिसम्बर 1933 [13] थी। जबकि श्री रामभरोस अग्रवाल ने उनके आने का वर्ष 1936 बताया है जो कि पूर्णत: असत्य है। [14] महात्मा गाँधीजी के रूप में एक ऐसे प्रेरणा स्त्रोत का आगमन इस नगर में हुआ कि उसके बाद जिले के आंदोलन की गति ही बदल गई और वे व्यक्ति जो अभी की समाज व प्रशासन से भयभीत हो आंदोलन में भाग लेने से कतराते थे, महात्मा जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता के लिये अहिंसात्मक युद्ध करते हुये प्राणों की बाजी लगाने को तैयार हो गये, जिसका प्रमाण सन् 1942 ई. के आंदोलन में सामने आया। गाँधीजी के आगमन की सूचना पूरे मण्डला जिले में शायद हवा के साथ बहती चली गई तथा मण्डला के संपूर्ण ग्रामों तक फैल गई। हवा में बह रही इस खशबु से जनता मुग्ध हो गई एवं 06 दिसम्बर का इंतजार करने लगी। पं.अग्निहोत्री जी के पास गाँधीजी के कार्यक्रम के अनुसार मण्डला आने की सूचना पूर्व से ही थी अत: शहर में पाँच-छ: दिन पूर्व से ही तैयारियाँ प्रारंभ हो गई। पूरे शहर को सजाया जाने लगा। 6 दिसम्बर को गाँधीजी का कार द्वारा जबलपुर से लगभग 8 बजे प्रात: मण्डला पधारे। मण्डलावासियों के इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुई। महात्मा जी पं.अग्निहोत्री जी के निवास स्थान पर ठहरे, तभी से उनका निवास आज भी '**गाँधीजी कुटीर**' कहलाता है। [15] गाँधीजी ने यहीं पर भोजन किया एवं अगले कार्यक्रमों के बारे में समझाने लगे। गाँधीजी के आगमन का ऐलान किया गया था एवं समाचार पत्रों में भी उनके कार्यक्रम का ब्यौरा दिया गया था। अत: मण्डला जिले की लगभग संपूर्ण जनता को उनके मण्डला आने का समाचार मिल गया था। एक दिन पहले से ही जनता मण्डला में गाँधीजी चौक, विभिन्न छतों, धर्मशालाओं, सड़कों, चबूतरों, मकानों, होटलों तथा जहाँ-जहाँ से गाँधीजी के शहर भ्रमण का मार्ग था संपूर्ण मार्ग पर जनता खचा-खच भर चुकी थी। ऐसा विशाल जन-समुदाय मण्डला के इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया था। लगभग 30 से 50 हजार तक व्यक्तियों के एकत्र होने का अनुमान है। सर्वत्र गाँधीजी की जय-जयकार से आकाष गूंज रहा था। इतनी भीड़ को नियंत्रित एवं व्यवस्थित करने के लिये प्रशासन ने पुलिस की व्यवस्था तो कर ही रखी थी। फतह दरवाजा स्कूल, मिश्रित (कम्बांइड) स्कूल, मेन ब्रांच शाला एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के स्काउट छात्रों को व्यवस्था के इस कार्य के लिये विषेष प्रषिक्षण दिया गया था। स्काउट छात्र पूर्ण मुस्तैदी से अपना कार्य कर रहे थे। इसके अलावा जिला कांग्रेस कमेटी के नेता श्री अग्निहोत्री जी, श्री छोटेलाल कस्तवार, श्री नगरिया जी, श्री रामगुलाम मोदी, श्यामलाल जैन, अमीरचंद जैन एवं अन्य कार्यकर्त्ता बहुत बड़ी संख्या में इस व्यवस्था में सम्मिलित थे।

मण्डला में एकत्र जनता में सबसे अधिक संख्या हरिजन एवं आदिवासियों की थी। बिछिया क्षेत्र की आदिवासी महिला श्रीमती सोनी बाई भोयन खादी की धोती, कुर्ता, गाँधीजी टोपी तथा कंधे पर तिरंगा झण्डा लिये क्षेत्रीय आदिवासियों का प्रतिनिधित्व कर रही थी। उधर डिण्डौरी क्षेत्र से ल्यौसा भापसा ग्राम के गंधू भोई अपने हजारों साथियों के साथ मण्डला, गाँधीजी के दर्शनार्थ आये थे। मण्डला जिले के अन्य क्षेत्रों से भी हजारों आदिवासी मण्डला पहुँचे थे।

सन् 1933 ई. तक जब गाँधीजी का आगमन मण्डला में हुआ था। मण्डला जिले में ध्वनि विस्तारक यंत्र की व्यवस्था नही थी अत: यह व्यवस्था जबलपुर से बुलवाकर की गई थी। सभास्थल में जाने से पूर्व गाँधीजी एक मंदिर पहुँचे जहाँ मण्डला और भापसा तथा हृदय नगर ग्राम के मध्य स्थित **'कोरगाँव'** ग्राम के जमींदार रामलाल जमादार की पत्नि श्रीमती मन्नीबाई ने गाँधीजी को 500/-रू. की थैली भेंट की। [16] मंदिर के पश्चात् बड़ी कठिनाई से कार द्वारा गाँधीजी को सभा मंच तक ले जाया जा सका। भीड़ के कारण उन्हें इस कार्य में विलंब हुआ। लगभग 3 बजे दोपहर में गाँधीजी ने जनता को एक घंटे तक संबोधित किया। हरिजनोद्धार और छुआछूत को समाप्त करने का उन्होंने आव्हान किया। उसी दिन मण्डला में लालनाथ नामक एक सनातनी भी विद्यमान थे। जब गाँधीजी ने हरिजन आदिवासियों को मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार देने की घोषणा की तो श्री लालनाथ संत ने गाँधीजी से इस विषय में कड़ा विरोध प्रकट किया। किन्तु जब गाँधीजी की बात उनकी समझ में आ गई तो वे अपनी भूल को स्वीकार करने लगे। लगभग 5 बजे शाम को गाँधीजी नगर भ्रमण के लिये निकले। सर्वत्र जयकार तथा फूलमालाओं से उनका स्वागत हुआ। जनसमूह को नियंत्रित करना कठिन हो रहा था। पूरा शहर दुल्हन सा सजाया गया था। गाँधीजी इस स्थिति से अत्यंत प्रभावित हुये एवं लगभग 7 बजे उनका नगर भ्रमण समाप्त हुआ और वे वापस अग्निहोत्री जी के यहाँ पहुँचे। संपूर्ण रात्रि गाँधीजी से विभिन्न विषयों पर स्थानीय नेताओं ने चर्चा की। कुछ देर महात्मा जी ने विश्राम किया तथा प्रात: लगभग 8 बजे 7 दिसम्बर को गाँधीजी ने मण्डला से प्रस्थान किया। चूंकि गाँधीजी के जाने से जनता में निराशा व्याप्त हो गई किन्तु इस यात्रा के दौरान मण्डला के जनजीवन पर उन्होंने जो नये प्राण फूँके उससे जनता के हृदय में स्वतंत्रता प्राप्ति की अभिलाषा और अधिक बढ़ गई। मण्डला में महात्मा जी के साथ महाकौषल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष 'कप्तान अवधेष प्रताप सिंह एवं सेठ गोंविददास जी' भी आये थे। उन्होंने भी जनता को आंदोलनों में सक्रिय भाग लेने के लिये प्रेरित किया। [17]

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि गाँधीजी ने न केवल राष्ट्रीय आंदोलन को अपूर्व दृढ़ता के साथ संचालित किया अपितु देश के सर्वतोंमुखी सुधार और उद्धार के लिये कितने ही रचनात्मक कार्यक्रम भी चलाये जो देश की सामाजिक स्वतंत्रता के लिये आवष्यक थे।

गाँधीजी ने सामाजिक विषमता के शिकार अछूतों को केवल समानता का अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष ही नहीं आरंभ किया बल्कि युग-युग से निराश, दीन, दलित, असहाय और मरणासन्न अछूतों के बीच रहकर और उनके लिये निरंतर कार्य करते हुये देश की चिरदलित, शोषित और तिरस्कृत हरिजनों में नये जीवन का संचार भी किया। उन्होंने हरिजनोउद्धार के लिये झोली फैला कर चंदा इकट्ठा किया, उनके बीच रहे और उनके जैसे काम किये।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सक्सेना, सुधीर; ऐसे आये गाँधीजी, पृ.क्र. 53
2. मध्यप्रदेश और गाँधीजी, गाँधी शताब्दी समारोह समिति के लिये सूचना प्रसारण संचालनालय द्वारा प्रकाशित 1969, पृ.क्र. 26-28
3. मिश्र, डी.पी.; मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, पृ.क्र. 407

4. फोर्टनाइटली रिपोर्ट इन सी.पी. एण्ड बरार, फाइल क्रमांक 3/23/1933, पृ.क्र. 22
5. मध्यप्रदेश और गाँधीजी, वही, पृ.क्र. 26
6. हितवाद नागपुर, 05 सितम्बर 1932
7. रमैया, पट्टाभिसीता – कांग्रेस का इतिहास, पृ.क्र. 900
8. वही, पृ.क्र. 937
9. सिंह, अयोध्या; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ.क्र. 598
10. मिश्र, डी.पी.; वही, पृ.क्र. 407
11. मध्यप्रदेश और गाँधीजी, वही, पृ.क्र. 27
12. मध्यप्रदेश संदेश, 30 जनवरी 1988, पृ.क्र. 10
13. अर्चना स्मारिका 1982, पृ.क्र. 48 एवं मध्यप्रदेश के प्रमुख स्वाधीनता संग्राम सैनिक जबलपुर संभाग, पृ.क्रं.202 तथा संवाद साप्ताहिक पत्र मण्डला, 15.08.1990 पृ.क्र. 1
14. अग्रवाल, रामभरोस; गढ़ा मण्डला के गौड़ राजा, 2002 पृ.क्र. 193
15. अग्निहोत्री जी के भवन का एक खण्ड आज भी इसी नाम से विख्यात है।
16. अर्चना स्मारिका शालेय पत्रिका मण्डला 1982, पृ.क्र. 42-46
17. स्थानीय सेनानियों व प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों से प्राप्त जानकारी एवं विनीत कुमार दुबे, 'मण्डला क्षेत्र में स्वाधीनता संग्राम का इतिहास' पृ.क्र. 205

****

Success Ratio of Readymade Garment Trade fair in Indore

Dr. Sonal Bhati *

Abstract - In the Garment expo, apparel designers and manufacturers look ahead for the proceedings, meaning a noticeable boost in their brand's recall value, thus escalating the prediction of accomplishment in the market. Readymade Vastra Vyapari Sangh Indore organizes, garment trade fair at very large scale in Indore region, once in two years. In which apparel manufacturers, retailers, distributers, traders, agents, designers, fabricators and some ancillary unit owners, participate and exhibit their products for the buyers and visitors from different part of domestic and international market places. The purpose of the study is to justify the success ratio of this market activity under the category of sample display, business they own, business communication they experience and market benefits from this garment expos. The next process is collection of primary and secondary data, for this, records were collected from five readymade garment expos, that reviewed by their published editorials and some other data were collected with the help of interview questioner. For the findings, percentile method was used. Result and discussions framed are as per calculation results.
Key words - Garment expo, Readymade Vastra Vyapari Sangh, ancillary units, success ratio.

Introduction - Meaning of "trade fair" in the English Dictionary is defined as a huge occurrence at which organizations demonstrate and promote their products and try to expand their business. Garment Fair in Indore is conducted once in two years, which take place in the month of February & March. This fair has been comprehensively documented as one of the successful fairs for the Indian Garment manufacturing Industries. The exhibit product covers head-to-toe fashion. Some high quality fashion wears covers Women's wear, Men's wear, Kid's wear, bags, sportswear and fashion accessories etc.

The Indore Readymade Garment Fair provides one of its kind buyer-seller networking podiums. This business platform helps to the buyer and visitors for expanding their business by cohort and harmony of around each activity. The Indore Readymade Garment Fair is organized by "Indore Readymade Vastr Vyapari sangh, Indore". This market event is aimed to help manufacturers of Madhya Pradesh and some other parts of India. In this fair designers and manufacturers showcase their latest designs and apparels for the upcoming season. Retailers from all across the India are invited to take part for free in this event. A good hospitality provided to the apparel buyers to make their visit easier and meaningful by the Indore Readymade Garment Association. In this event, buyers get a chance to judge apparel quality and designs created and manufactured at one place. They can also source appropriate products for their respective markets. The garment expo has received an over whelming response from the manufacturers and designers related to apparel industry. Nearly 10000 buyers were visited the expo which is showcase over 400 brands. The expo is spread over approximate 2lac.sq.ft. In this area, 200 exhibitors displayed their brands. This event is very useful for the exhibitors, buyers from domestic and international market, garment agents, distributers, and retailers.

The organizational structure of the fair has President, Secretary, Sub-Secretary, Treasurer and fair committee members. The Selection criteria of the participants are, on the basis of product categories, association membership, experience in related field and holding any post in the association. The association publishes their souvenir and collects sponsorship by advertising the brand or product in their magazine. They also reserve some places for hoardings and display boards for the advertisement. Mumbai, Ahmadabad, Ludhiana. Surat, Kolkata and Bhopal manufacturers are also contribute in the fair and advertise their product in this event.

Review of literature - Review the records of "50th NGF National Garment Fair Responds to Emerging Indian Market Needs" this fact is revived that the Current retailing scenario, consumer buying pattern, competition, globalisation and innovations indicate that there is a need for change. Hence, this year the NGF returns in a new format reflecting the mood to change with the changing times. Trends are meant to be a platform for retailers to understand forthcoming product innovations. Trends start from yarn, fabrics and accessories. All these contributors are coming together to realistically present sustainable trends for the domestic apparel market. In a market research 'Impact of International Trade Fairs in Export Promotion– A Case Study on Nepalese Handicraft products', By Ganesh Prasad Koirala, may 2011, has stated that Nepalese participation in international trade fair is encouraging and advantageous. Promotion of the product, increase public relation, order placement, export

* H.O.D. (Fashion Technology) Govt. Women's Polytechnic College, Indore (M.P.) INDIA

and making new customers are some of the advantages gained after participation. In an article published in a news paper, The Economic Times and the topic was "Importance of trade fairs" By Sandeep Rai, 22 May 2009, has reported that market trade fairs provide an excellent opportunity to assess opinions from clients and determine market potential, conduct research and evaluate competition, develop commercial structures by identifying new agents and distributors, and initiating joint ventures and project partnerships. In a research by Rilla Engblom, 2014, "Trade Fairs Role as Part of the Firms' Marketing Communication - an Integrated Trade Fair Participation Process", is assessing the end result that The three most important measurements the marketing executives use to evaluate trade fair success are; 1) the number of sales leads, 2) amount of contacts, and 3) the subjective intuitive feeling of the trade fair participation. The assessment is mainly based on these three things. Other measures were also mentioned such as the sales at the fair, the amount of materials distributed or consumed, the number of participants taking part of the lotteries and the competitions, the total amount of visitors and the number of new newsletter subscribers. In a review literature one research based on, "Trade fairs as source of knowledge – the role of trade fairs organizer", September 2011 by Marek Zieliñski and Grzegorz Leszczynski, has found that visitors and exhibitors take part in trade fairs to meet each other because they treat the other party as a most preferred source of information about trends. The least desirable sources of information about trends for both groups include: professional organizations, and the trade fair organizer. However the trade fair organizer was higher evaluated by the visitors than the exhibitors.

Methodology - This research is an empirical research, where objective of the study is to identify the success ratio of garment fair, organized by readymade Vastr Vyapari Sangh in Indore M. P. for the collection of data; records were reviewed from the past five readymade garment expos. Interview questioner was framed and sample was selected on the basis of maximum regular participants of the readymade garment fair by the previous records. Personal visits were also conducted and data were assembled. For the findings percentile method were used.

Results and discussion

TABLE-1

Readymade garment expo, Participants experience in the field of garment, textiles, accessories, business (n=102)

s.	Less than 10 years	Less than 20 years	More than 20 years
1	23.5%	15.72%	60.78%
Sample display by exhibiter in garment fair per stall			
2	Less than 150 exibits	150 to 200 exibits	More than 200exibits
	50%	38% 12%	
Six month trade for coming seasons for all the participants			
3	Yes	no	None of these
	100%	-	-
Ratio of success of garment expo as per participants business orders			
4	Less than 49%	Less than 69%	More than 70%
	-	48.03%	51.97%

As per above calculations, the participants business experience in the field of readymade garment manufacturing, retailing, distributing, consultancies, packing and packaging material suppliers and the suppliers of accessories is one of selection criteria for the participating in the fair, used by the organizing association. To find out the result of this criteria in this category got 23.5%, participants have the experience in this field less than 10 years, 15.72% have the experience in garment field is less than 20 years, hence 60.78% has the experience of more than 20 years. It shows that the big fishes of garment field were aware as well as interested to participate in trade activities and wants to grebe the opportunity to the business from their competitors.

In the garment fair, each participant has allotted one stall to display their products. In their stall they display their product samples by using visual merchandizing techniques or window display in attractive manner of related themes. These promotional exhibits, decor entire tread fair. A few of them display their product catalogs but most of the participants display their sample pieces for the buyers and visitors. Buying and selling process starts when buyer choose product sample and place the order according to their market choice or requirement. The manufacturer receives the order and note down the delivery date given by the buyer. Once this process end, the same sample gets ready to exhibit to the next buyer. The display of the sample is the center of attraction for the buyers and sellers. The acquired area of the stall has their own limitations and in this area participants can display their limited and selective samples. To ask about number of peaces displayed to the stall got 50%, for less than 150 samples, 38% for 150 to 200 sample display and 12% for more than 200 sample display, so the maximum participants have prefer to display around 150 sample in their stall.

To inquire about the business they got during three days of garment fair for coming six months, all the participants were very satisfied in terms of business deal and all have positive answer to this question. The ratio of success as per participants point of view obtained, for less than 49% success has no one, for the less than 69%sucess, got 48.03% and for more than 70% success got 51.97%, these result shows that, in the participants point of view, the success ratio of readymade garment fair is a successful event that provide business for coming six months to the manufacturer, retailers, suppliers, distributers etc, and is beneficial for the growth of business related activity in the town.

Conclusion and Suggestion - Readymade garment Trade fair is usually beleaguered for the manufacturers and job work units. They can display their product in impressive way to attract their targeted customers. It is a good platform for brand image promotion. Manufacturers have this opportunity

to analysis their product by the feedback of the buyers and visitors. These fairs also provide participants an opportunity to branch out, business-to-business trading and create a buyers database from the visitors. Choosing the wrong garment trade fair to display garment samples can result in displaying to the wrong audience. Poor promotion can mean the costs of attending the trade fair outweigh any revenue they gain.

References :-

1. “50th NGF National Garment Fair, Responds to Emerging Indian Market Needs” 2009-2010.
2. Ganesh Prasad Koirala, may 2011 ‘Impact of International Trade Fairs in Export Promotion– A Case Study on Nepalese Handicraft products’, BE309E 003 International Business and Marketing.
3. Sandeep Rai, 22 May 2009, Importance of trade fairs, The Economic Times.
4. Rilla Engblom, 2014,Trade Fairs Role as Part of the Firms’ Marketing Communication - an Integrated Trade Fair Participation Process, Marketing Master’s thesis, Aalto University, School of Business.
5. Marek Zieliñski and Grzegorz Leszczynski, Conference Paper, September 2011,”Trade fairs as source of knowledge – the role of trade fairs organizer”, ,IMP-conference, The impact of globalization on networks and relationships dynamics, At Glasgow, Scotland, Volume: 27.

****

जनसंख्या वृद्धि और जल संसाधन

डॉ. सुरभि सिंघल *

शोध सारांश – **रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।**
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुश, चून।।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। आज भारत ही नहीं, दुनिया के अनेक देश सूखा और जल संकट की पीड़ा से त्रस्त हैं। आज मनुष्य मंगल ग्रह पर जल की खोज में लगा हुआ है, लेकिन भारत सहित अनेक विकासशील देशों में आज भी पीने योग्य शुद्ध जल उपलब्ध नहीं है। पिछले कुछ दशकों से जल संकट भारत के लिये बहुत बड़ी समस्या है। इन दिनों जल संरक्षण शोधकर्ताओं के लिये मुख्य विषय है। जल संरक्षण की बहुत सी विधियाँ हैं। इस लेख में जल संकट और जल संरक्षण से सम्बन्धित विषयों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना – जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। यदि जल न होता तो सृष्टि का निर्माण सम्भव न होता। आधारभूत पंचतत्वों से एक जल हमारे जीवन का आधार है। दुनिया के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है, परन्तु पीने योग्य मीठा जल मात्र 3 प्रतिशत है, उसका भी दो तिहाई हिस्सा हिमनद और ध्रुवीय क्षेत्रों में हिम चादरों और हिम टोपियों के रूप में जमा है, शेषभाग खारा जल है। मानव शरीर का लगभग 66 प्रतिशत भाग पानी से बना है तथा एक औसत वयस्क के शरीर में पानी की कुल मात्रा 37 लीटर होती है। मानव मस्तिष्क का 75 प्रतिशत हिस्सा जल होता है इसी प्रकार मनुष्य के रक्त में 83 प्रतिशत मात्रा जल की होती है। शरीर में जल की मात्रा शरीर के तापमान को सामान्य बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण की क्षति, जल संसाधनों का दुरूपयोग, तथा जल प्रबंधन की अनुचित व्यवस्था के कारण भारत के कई राज्य जल संकट की त्रासदी भोग रहे हैं। स्वतंन्त्रता के बाद देश ने काफी वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति की है। सूचना प्रौद्योगिकी में यह अग्रणी देश बन गया है लेकिन जनसंख्या वृद्धि के कारण सभी के लिए जल की व्यवस्था करने में काफी पीछे है। आज भी देश में कई बीमारियों का एकमात्र कारण प्रदूषित जल है।

भारत में जल संकट – भारत में जल संकट की समस्या विकराल हो चुकी है। न सिर्फ शहरी क्षेत्रों में बल्कि ग्रामीण अंचलों में भी जल संकट बढ़ा है। वर्तमान में करोड़ों भारतीयों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। भूगर्भीय जल का अत्यधिक दोहन होने के कारण धरती की कोख सूख रही हैं। जहाँ मीठे पानी का प्रतिशत कम हुआ है वहीं जल की लवणीयता बढ़ने से भी समस्या विकट हुई है। उत्तर प्रदेश, गुजराज, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में जहाँ पानी की कमी बढ़ी है, वहीं राज्यों के मध्य पानी से जुड़े विवाद भी गहराए हैं। भूगर्भीय जल का अनियंत्रित दोहन, जलस्त्रोतों व जल तकनीकों की उपेक्षा, जल संरक्षण और प्रबन्ध की उन्नत व उपयोगी तकनीकों का अभाव, तथा सुचिंतित योजनाओं का अभाव आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिसकी वजह से भारत में जल संकट बढ़ा है। भारत में जनसंख्या विस्फोट ने जहाँ अनेक समस्याएँ उत्पन्न की हैं, वहीं पानी की कमी को भी बढ़ाया है। वर्तमान समय में देश की जनसंख्या प्रतिवर्ष 1.5 प्रतिशत बढ़ रही है। ऐसे में वर्ष 2050 तक भारत की जनसंख्या 150 से 180 करोड़ के बीच पहुँचने की सम्भावना है। ऐसे में जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करना कितना मुश्किल होगा, समझा जा सकता है। आंकड़े बताते हैं कि स्वतंत्रता के बाद जनसंख्या की वृद्धि के कारण प्रतिव्यक्ति पानी की उपलब्धता में लगभग 65 प्रतिशत की कमी आयी है। 1951 में, प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 5177 एम 3 थी। जो अब 2011 में घटकर लगभग 1545 एम 3 तक रह गई है। (स्त्रोत–जल संसाधन प्रभाग, टेरी)

विभिन्न वर्षों में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में जल की माँग को निम्न तालिका में दर्शाया गया है:विभिन्न वर्षों एवं विभिन्न क्षेत्रों में भारत में जल की माँग (बिलियन क्यूबिक मीटर)

क्षेत्र	वर्ष		
	2000	2025	2050
घरेलू उपयोग	42	73	102
सिंचाई	541	910	1072
उद्योग	08	22	63
ऊर्जा	02	15	130
अन्य	41	72	80
कुल	634	1092	1447

स्रोत: सेंट्रल वाटर कमीशन बेसिन प्लानिंग डारेक्टोरेट, भारत सरकार

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में जल की माँग निरंतर बढ़ती जा रही है। आने वाले वर्षों में जल संकट बद से बदतर होने वाला है।

जल संसाधन की कमी के कारण – पानी की कमी ज्यादातर जनसंख्या वृद्धि और जल संसाधनों के कुप्रबन्ध के कारण हुई है। भारत में बढ़ते हुए जल संकट के कुछ मुख्य कारण निम्नानुसार हैं:

1. बोरवेल प्रौद्योगिकी से धरती के गर्भ से अंधाधुंध जल खींचा जा रहा है। जितना जल वर्षा से पृथ्वी में समाता है, उससे अधिक हम निकाल रहे हैं।

* असिस्टेंट प्रोफेसर (भौतिक विज्ञान) महामाया राजकीय महाविद्यालय, शेरकोट, बिजनौर (उ.प्र.) भारत

2. शहरों में होने वाले विकास और कंक्रीटीकरण के कारण भूजल संसाधनों को अवरूद्ध कर दिया गया है जिसके कारण यह समस्या और बढ़ गई है।
3. भूमिगत जल एक साझा संसाधन है, जबकि भारत में कानून के तहत भूमि के मालिक को जल का भी मालिकाना हक दिया जाता है।
4. भारत में पानी की कमी का कारण नदियों और तालाबों में रसायनों और अपशिष्ट पदार्थों का बहना है। साफ एवं स्वच्छ जल भी प्रदूषित होता जा रहा है।
5. जल संरक्षण, जल का सही ढंग से इस्तेमाल, जल का पुन: इस्तेमाल और जल भंडाराण क्षमता (भूजल की रिचार्जिंग) पर समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है।
6. शहरी उपभोक्ताओं, कृषि क्षेत्र और उद्योगों के बीच पानी के कुशल जल प्रबंधन और वितरण का अभाव है।
7. राजनैतिक एवं प्रशासनिक इच्छाशक्ति की कमी, गलत प्राथमिकताएँ, जनता की उदासीनता एवं सबसे प्रमुख ऊपर से नीचे तक फैली भ्रष्टाचार की संस्कृति। जल संसाधन वृद्धि योजनाओं पर करोड़ों रूपए खर्च करने के बावजूद समस्याग्रस्त गाँवों की संख्या उतनी की उतनी ही बनी रहती है।

जल संरक्षण – हमारे देश में उपलब्ध पानी करीब 70 फीसदी हिस्सा दूषित है, पानी की गुणवत्ता के लिहाज से हम 122 देशों में 120वें स्थान पर है। जल के स्रोत सीमित हैं। नये स्रोत हैं नहीं, ऐसे में जलस्रोतों को संरक्षित रखकर एवं जल का संचय कर हम जल संकट का मुकाबला कर सकते हैं। इसके लिये हमें जल के उपयोग में मितव्ययी बनना पड़ेगा। जल जीवन का आधार है और यदि हमें जीवन को बचाना है तो वर्षा जल का समुचित संग्रह करना होगा और जल की प्रत्येक बूँद को अनमोल मानकर उसका संरक्षण करना होगा तब कोई कारण नहीं होगा कि वैश्विक जल संकट का समाधान न प्राप्त किया जा सके। जल के संकट से निपटन के लिये कुछ महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार हैं–

1. कृषि में सिचाई में काफी सारा पानी लगजाता है लेकिन जिस से उस क्षेत्र का भूजल स्तर लगातार गिरता जाता है लेकिन अगर प्रत्येक फसल के लिये ईष्टतम जल की आवश्यकता का निर्धारण किया जाये तथा सिंचाई कार्यों के लिये स्प्रिंकतर और ड्रिप सिंचाई जैसी पानी की कम खपत वाली प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जाये तो खेतों में पानी की खपत कम होगी और पीने लायक पानी की बचत होगी।

2. वर्षाजल प्रबंधन और जल संरक्षण की दिशा में जन जागरूकता को बढ़ाने का प्रयास हो। और इससे जुडे शोध कार्यों को प्रोत्साहित किया जाय। जल संरक्षण शिक्षा को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में जगह दी जाय। आवश्यकता है वर्षा की एक–एक बूँद का भूमिगत संग्रहण करके भविष्य के लिए एक सुरक्षा निधि बनाई जाए। एक आँकड़े के अनुसार यदि हम अपने देश के जमीनी क्षेत्रफल में से मात्र 5 प्रतिशत में ही गिरने वाले वर्षा के जल का संग्रहण कर सके तो एक बिलियन लोगों को 100 लीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन मिल सकता है।

3. औद्योगिक विकास और व्यावहारिक गतिविधियों की आड़ मे जल के अंधाधुंध दोहन को रोकने के लिये तथा इस प्रकार से होने वाले जल प्रदूषण को रोकने के लिये कड़े व पारदर्शी कानून बनाये जाएँ।

4. हमें ऐसी विधियाँ और तकनीके विकसित करनी होगी जिनसे लवणीय और खारे पानी को मीठा बनाकर उपयोग में लाया जा सके। इसके लिये हमें विशेष रूप से तैयार किये गये वाटर प्लांटों को स्थापित करना होगा।

5. पर्यावरण असंतुलन भी जल संकट का एक बड़ा कारण है। पर्यावरण सरंक्षण के लिये हमें वन सम्पदा को नष्ट होने से बचाना होगा। जंगलों का कटान होने से दोहरा नुकसान हो रहा है। पहला यह कि वाष्पीकरण न होने से वर्षा नहीं हो पाती और दूसरे भूमिगत जल सूखता जाता हैं। मृदा अपरदन रोकते हुए देश को सूखे और अकाल से बचा सकेंगे। इसलिए वृक्षारोपण लगातार किया जाना जरूरी हैं।

6. जनसंख्या बढ़ने से जल उपभोग भी बढ़ता है ऐसे में प्रतिव्यक्ति जल उपब्धता कम हो जाती है। अतएव इस परिपेक्ष्य में हमें जनसंख्या पर भी ध्यान देना होगा।

7. अगर प्रत्येक घर की छत पर वर्षा जल का भंडार करने के लिए एक या दो टंकी बनाई जाएँ और इन्हें मजबूत जाली या फिल्टर कपड़े से ढ़क दिया जाए तो हर नगर में 'जल संरक्षण' किया जा सकेगा।

8. गंगा और यमुना जैसी बड़ी नदियों की नियमित सफाई बेहद जरूरी है। बड़ी नदियों के जल का शोधन करके पेयजल के रूप में प्रयोग किया जा सके, इसके लिए शासन प्रशासन को लगातार सक्रिया रहना होगा।

9. विश्व बैंक के 2012 के रिपोर्ट के अनुसार भारत में 70 प्रतिशत से अधिक भूजल या ओवरड्रॉफ्ट में हैं यानी जमा होने से ज्यादा जल उपभोग किया जाता है। विश्व बैंक ने स्वच्छ पानी पर टैक्स लगाकर जल की बर्बादी को रोकने का सुझाव दिया है।

निष्कर्ष – निश्चय ही जल पूरे विश्व की मुख्य चिंता जल संरक्षण होनी चाहिए। आज विश्व में तेल के लिए युद्ध हो रहा है। भविष्य में कहीं ऐसा न हो कि विश्व में जल के लिए युद्ध हो जाए। बिना पानी के सब कुछ सूना और उजाड़ होगा। अत: मनुष्य को अभी से सचेत होना होगा। अत: हर व्यक्ति को अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति सचेत रहना है कि वे ऐसी जीवन शैली तथा प्राथमिकताएं अपनाएं जिसमें अमृतरूपी जल का अपव्यय नहीं होता हो। भारतीय संस्कृति में जल का वरूण देव के रूप में पूजा–अर्चना की जाती रही है, अत: जल की प्रत्येक बूँद का संरक्षण एवं सदुपयोग करने का कर्तव्य निभाना आवश्यक है। अन्त में कहूँगी कि

जल संरक्षण कीजिए, जल जीवन का सार।
जल न रहे यदि जगत में, जीवन है, बेकार।।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया
2. http://water.usgs.gov/edu/earhwherewater.html where is Earth's water पृथ्वी पर जल का वितरण (यू0एस0 भूविज्ञान सर्वेक्षण)
3. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, अरिहन्त प्रकाशन, वर्ष 2014।
4. विज्ञान प्रगति–वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, भारत, अक्टूबर 2011।
5. अग्रवाद, अनिल (2014–15) परीक्षा मंथन पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, इलाहाबाद।
6. श्रीवास्त, डी0के0 एवं राव, वी0पी0 (1998) पर्यावरण और परिस्थितिकी।
7. प्रसाद, अनिरूद्ध (2009) पर्यावरण एवं पर्यावरणीय सरंक्षण विधि की रूपरेखा सेण्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद।

वैदिक काल में नारी शिक्षा की स्थिति

डॉ. बी. के. गुप्ता*

प्रस्तावना – शिक्षा एक ऐसा रत्न है जो मनुष्य और जानवर में फर्क निश्चित करता है। शिक्षा के बिना मनुष्य जानवर से भी बद्तर है। शिक्षा मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है। शिक्षा नारी हो या पुरूष दोनों के लिए आवश्यक है। समाज को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा परमावश्यक हैं नारी एवं पुरूष समाज रूपी रथ के पहिए है, जिनकी समुचित उन्नति एवं विकास के बिना समाज की उन्नति नहीं हो सकती है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राचीन भारतीय मनीषियों एवं विचारकों ने प्राचीनकाल में नारी–शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। प्राचीन काल में कई दृष्टियों से नारी का स्थान महत्वपूर्ण दृष्टिगत होता है और शिक्षा का क्षेत्र तो विशेष रूप से दर्शनीय है। इस सम्बन्ध में इतना ही उल्लेख पर्याप्त होगा कि 200 ई0पू0 तक नारियों का वेदाध्ययन एवं यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त था। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों की रचना कवयित्रियों ने की थी। ऋग्वैदिक कालीन प्रमुख विदुषी नारियों में विश्वासारा, सिकता, निवावरी, घोषा, रोमशा, लोपामुद्रा, उपाला तथा उर्वशी के नाम उल्लेखनीय हैं। यज्ञ में सपत्नीक उपस्थिति आवश्यक थी तथा माता के रूप में नारी पूजनीय थी।

वैदिक काल में बालिकाओं का उपनयन संस्कार भी होता था। इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं तथा मनु ने भी लिखा है कि बालिकाओं के लिए उपनयन संस्कार अनिवार्य है। बालिकाओं द्धारा ब्रहमचर्य व्रत के पालन का भी स्पष्ट उल्लेख अथर्ववेद में मिलता हैं। स्पष्ट है कि वैदिक काल में नारियों की स्थिति उन्नत थी।

वैदिक युगीन नारी शिक्षा की जानकारी के प्रमुख साधन वेद है। वेद चार हैं, ऋग्वेद प्राचीन काल से चली आने वाली आर्य नारी की सभ्यता और संस्कृति पर प्रकाश डालता है। यद्यपि वेदों का वर्ण्य–विषय मुख्यत: धार्मिक है, तथापि इनसे तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन की भी जानकारी होती है। वैदिक युग में नारी की स्थिति उच्चतम थी, वह बुद्धि और ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणीं थी। धार्मिक साहित्य में रूचि रखने वाली नारियों को अपनी प्रवृत्ति के पालन में कोई रोक–टोंक नहीं थी। ऋग्वेदिक काल में नारियों का शिक्षा पर पूर्ण अधिकार था। वे पुरूषों के भाँति वेदाध्ययन करती तथा सामाजिक, धार्मिक कार्यों में भाग लेती है। युवावस्था में विवाह होने के कारण उन्हें शिक्षा ग्रहण करने का पयार्प्त समय मिल जाता था। अथर्ववेद में कन्याओं के ब्रहमचर्य व्रत का पालन करने का स्पष्ट उल्लेख हैं। नारियों को यज्ञ सम्पादन करने का पूर्ण अधिकार था। इसी प्रकार यजुर्वेद भी नारियों के ब्रहमचर्य व्रत पर प्रकाश डालता है। ऋग्वैदिक नारियां पति के साथ समान रूप से याज्ञिक कार्यों में भाग लेती थी। वे वेदाध्ययन भी करती। अनेक नारियां मंत्र–दृष्टा भी थी। पूर्व वैदिक युग में अनेकों कवयित्रियों की रचनाएं मिलती हैं। विश्वासारा, सिकता, निवावरी, घोषा, रोमशा, लोपामुद्रा, अपाला तथा उर्वशी आदि वैदिकयुगीन विदुषियां थी। सूर्या नामक ब्रहमवादिनी ऋषिका ने दशम मंडल के 85वें सूक्त की रचनाकी थी। इसी मंडल में एक और ब्रहमवादिनी ऋषिका का उल्लेख है।

अध्यात्मिक शिक्षा के साथ–साथ नारियों को नृत्य–गान, वादन, ललित कला, युद्ध विद्या की शिक्षा, कटाई बुनाई तथा नाटकीय शिक्षा भी दी जाती थी। नृत्य–गान के लिए आर्य 'समनों' तथा 'उत्सवों' का आयोजन करते थे। ऋग्वेद के समय जैसा उल्लास और सामाजिक स्वतंत्रता थी वैसा फिर कभी नहीं देखा गया। नारियां नृत्य संगीत में भाग लेती थी। खुले मैदान में स्त्री–पुरूष बड़े चाव से नाँचा करते थे। गायन प्राय: नारियों का प्रिय विषय रहा है। ऋग्वैदिक युग में अनेक प्रमाण हैं, जिनसे उनकी गान प्रियता प्रदर्शित होती है। सभाओं में एकत्र होकर नारियों ऋक–गान करती थी। उत्सवों में नाना प्रकार के प्रदर्शन हुआ करते थे। संगीत मनोविनोद का प्रमुख साधन था। इसके तीन प्रकार थे, नृत्य, गायन और वादन। नृत्य बहुधा वींणा और करताल की लय पर होते थे। नारियाँ वाद्ययंत्रों के प्रयोग में प्रवींण थी। यम–यमीं संवाद से ज्ञात होता है कि नारियों को नाटकीय शिक्षा भी दी जाती थी। भगवतशरण उपाध्याय ने इस सम्पाद के विषय में लिखा है–मन्त्रों में वर्णित यह वार्ता जिसकी वह (यमीं) प्रधान वक्ता है, नाटकीय साहित्य के विषय में पहला कदम है।

स्त्रियों की सैनिक शिक्षा पर भी ऋग्वेद महत्वपूर्ण प्रकाश डालता था। ऋग्वेद के विभिन्न प्रसंगों से उल्लेख मिलता है कि महिलाएं धनुष–बाण चलाने का उचित ज्ञान रखती थी। विश्वपाला एक भयंकर युद्ध में अपने पति के साथ गई थी। उस युद्ध में उसका एक पैर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। घायलावस्था में अश्विनी कुमारों ने उसकी रक्षा की। उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ऐसा वीरता पूर्ण कार्यो को करने के लिए उन्हें अवश्य ही सैनिक शिक्षा मिलता रही होगी। ऋग्वेद में ही मुद्गलानी नामक नारी का वर्णन है, जो सैनिक–शिक्षा में पारंगत थी। उसने अपने पति के रथ का संचालन किया। युद्ध भूमि में रथारूढ़ स्त्रियों के उड़ते वस्त्रों का भी संदर्भ मिलता है। प्रतीत होता है कि आदिवासी दासों के पास भर्ती की गयी नारियों की सेना थी। पुत्र–पुत्री समान माने जाते थे, उन्हें शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए पूर्ण अवसर प्राप्त थे। उत्तर वैदिक काल में शिक्षा क्षेत्र में स्त्रियों का विशिष्ट स्थान था। इस काल में ग्रन्थों में ब्राहमण साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। ब्राहमण ग्रंथों का समय ई0पू0 1500 से 100 ई0पू0के अन्तवर्ती काल में माना जाता है। आरण्यकों तथा उपनिषिदों में भी नारी शिक्षा का विशद विवरण मिलता है। डॉ0ए0एस0अल्टेकर ने उपनिषिदों का समय ई0पूर्व 1000 से 600 ई0पू0के मध्य माना। उत्तर वैदिक युग की नारी का जीवन समुन्न्त होते हुए भी पतनोन्मुख था। एक ओर जहां हम नारियों के

* शिक्षा विभाग, जे. एन. एम. पी. जी. कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.) भारत

प्रति परम्परागत समान भाव देखते हैं, वहीं दूसरी तरफ उनके प्रति नवीन अस्वस्थ धारणाओं का जन्म होता भी पाते हैं। ऐतरेय तथा कोषीतकि ब्राहमण में अनेक विदुषियों का वर्णन मिलता है। बृहदारण्यकोपनिषद में पण्डिता (योग्य) कन्या की प्राप्ति के लिए विशेष अनुष्ठानों का उदाहरण मिलता है। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रयी उच्चतम ब्रहमज्ञानी थी। उनकी रूचि अलंकारों में न होकर दर्शनशास्त्र में थी। गार्गी भी उस समय की एक सुप्रसिद्ध विदुषी थी। जिन्होंने जनक की राजसभा में याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मज्ञानी को भी अपने प्रश्नों से चौंका दिया था। ब्राहमण ग्रन्थों से नारियों के विशेष प्रकार के उपनयन पर प्रकाश पड़ता है। यज्ञ पूर्व पति–पत्नी का विशेष प्रकार का उपनयन होता था। पूर्व वैदिक युग के समान ही इस युग में भी नारियों का यज्ञादि पर अधिकार था। वे पुरूषों के साथ सम्मिलित रूप से यज्ञ करती थी। दार्शनिक तथा वैदिक शिक्षा के साथ–साथ वे नृत्य संगीत की शिक्षा भी प्राप्त करती थी। पुरूषों के अतिरिक्त नारियों भी साम गान करती थी। उत्तर वैदिक युग में नारियां गान विद्या में प्रवींण होती थी तथा उनमें मन्त्रों के शुद्ध पाठ एवं स्वरों के उचित आरोह–अवरोह की क्षमता होती थी।

उत्तर वैदिक युग से ही नारियों की दशा में परिवर्तन आने लगा था। वे पुरूषों की अपेक्षा हेय समझी जाने लगी थी। ऐतरेय ब्राहमण में उसे 'कृपण' कहा गया है। ऋग्वेद की अपेक्षा अब जीवन का आनन्द कम हो गया था और तपस्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। जब संसार त्याग एक आदर्श बनने गा, तो नारी जो इस त्याग में सबसे बड़ी बाधा है, अनादर की दृष्टि से देखी जाने लगी। इस प्रकार नारियों की पतनोन्मुखी स्थिति के आलोक में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका प्रभाव शिक्षा पर अवश्य ही पड़ा होगा।

आश्वलायन गृहसूत्र में नारियों के समावर्तन का उल्लेख है। इससे प्रकट होता है कि गृह्यसूत्रों के काल तक नारियों को वेदाध्ययन का अधिकार पूर्ववत् प्राप्त था। पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' जिसका समय 700 ई0पू0 माना जाता है, से नारी शिक्षा के विषय में संतोषजनक ज्ञान प्राप्त होता है। अष्टाध्यायी में नारी अध्यापिकाओं का वर्णन है। वे पुरूषों की भांति अध्ययन–अध्यापन में स्वतंत्र थी। वैदिक ज्ञान और यज्ञों के दुरूह हो जाने पर अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में एक नयी शाखा का जन्म हुआ, जिसे मीमांस कहते हैं। यह अत्यन्त क्लिष्ट विषय था लेकिन विदुषियां इसका भी अध्ययन करती थी। काशकृत्सनी नामक नारी ने मीमांसा जैसे क्लिष्ट और गूढ़ विषय पर अत्याधिक बहुचर्चित पुस्तक का प्रणयन किया था, जो बाद में उसी के नाम से विख्यात हुयी। इस वर्ग की नारियों काशकृत्सनी कहलाती थी। शिक्षा क्षेत्र में नारियों का सम्मानित स्थान था। वे चरणसंज्ञक वैदिक शिक्षा में प्रविष्ट होकर अध्यन करती थी। नारियाँ अध्यापन कार्य भी करती थीं और इन अध्यापिकाओं से पुरूष भी शिक्षा ग्रहण करते थे। औदमेध्या आचार्य से पढ़ने वाले छात्र अपनी आचार्य के नाम से 'औदमेध' कहलाते थे। पाणिनीं ने महिला शिक्षण–शालाओं का उल्लेख किया है। नारियाँ अत्याधिक कठिन विषयों का अध्ययन करती थीं। ये व्याकरण के सूत्रों का भी अध्ययन करती थी। पाणिनीं जैसे व्याकरण का अध्ययन करती थी। अपिशलि आचार्य के व्याकरण को पढ़ने वाली नारियों 'अपशिला' कहलाती थी। शिक्षिति नारियों के साथ विवाह कर पुरूष अपने को सौभाग्य शाली समझते थे। नारियां आजीवन ब्रहमचर्य का पालन करती हुई उच्च शिक्षा ग्रहण करती थी। वे अविवाहित रहकर नैष्ठिक भिक्षुणियों का जीवन व्यतीत करती थी। 'कुमार प्रवजिता' शब्द उस सम्प्रदाय की नैष्ठिक ब्रहमाचारिणीं नारियों के लिए प्रयुक्त हुआ ज्ञात होता है। ग्रहयसूत्रों से उनके उपनयन संस्कार के साथ–साथ समावर्तन संस्कार पर भी प्रकाश पड़ता है। समावर्तन संस्कार ब्रहम्चर्य जीवन की समाप्ति पर होता था। नारियों के यज्ञादिक अनुष्ठानों पर कोई प्रतिबन्ध न था। गोभि गृह्यसूत्र में विवाह के समय कन्या को यज्ञोपवीत धारण किये हुए प्रदर्शित किया गया है। आश्वलायन गृहयसूत्र से ज्ञात होता है कि उनके जात कर्म से चूड़ाकर्म तक के सभी संस्कार मंत्रविहीन होते थे। विवाह संस्कार में मंत्रों का प्रयोग होता था। लड़कियों को प्रतीक रूप में उपनयन धारण करना होता था। उनका परावर्तन संस्कार मासिक धर्म के पूर्व हो जाता था। ब्रह्म वादिनी नारियों का उपनयन गर्भाधान के 8वें वर्ष में होता था, वे वेदाध्ययन करती थीं और उनका छात्रा–जीवन रजस्वला होने से पूर्व समाप्त हो जाता था। इन समस्त तथ्यों से प्रतीत होता है कि सूत्र–युग में स्त्रियां पुरूषों की तरह शिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्रहम्चर्य जीवन व्यतीत करती थी। सूत्र साहित्य से व्यक्त होता है कि इस समय अनेक नारियाँ ऋषिकाएं थी। उन्हें पुरूषों ऋषियों के समान आदर प्राप्त था। इस काल में ब्रह्मचारी स्त्रियों के दो प्रकार थे, यथा–सद्योबधू–जो विवाह होने के पहले तक ब्रह्मचर्य व्रत का अनुसरण करती थीं तथा ब्रह्मवादिनी–जो आजीवन ज्ञानार्जन में लगी रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का अनुपालन करती थी।

बाल विवाह का प्रचलन न होने के कारण सामान्य स्त्रियों को भी शिक्षा मिल जाती थी। विवाह युवा होने पर ही होते थे। बौधायन गृहयसूत्र में व्यवस्था दी गयी है कि विवाह के समय यदि कन्या का मासिक–धर्म हो जाय तो नियमानुसार प्रायश्चित करना चाहिए। अनुमानतः विवाह के समय कन्या वयस्क होती थी। आपस्तम्ब तथा पारस्कर ने भी ऐसी ही व्यवस्था दी है। उनका कहना है कि विवाह के तीसरे दिन चतुर्थी कर्म होता था, जिसमें समागम का विधान था। इससे भी कन्या की वयस्कता का ज्ञान होता है। इन तथ्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि वयस्क होने पर कन्या का विवाह होने के कारण उसे शिक्षा ग्रहण करने का पर्याप्त अवसर मिल जाता था, लेकिन फिर भी अनेक कारण यही स्पष्ट करते हैं कि पुरूषों की अपेक्षा स्त्री के लिए शिक्षा प्राप्ति के अवसर कम ही थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. अल्टेकर, ए0एस0(1956) : द पोजीशन आफ वोमेन इन हिन्दु सिविलाइजेशन, मोतीलाल, बनारसीलाल, वाराणसी।
2. मिश्र जयशंकर (2006) : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
3. राजकुमार, डॉ0 (2005): नारी के बदले आयाम, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
4. जोशी, पुष्पा (1998): गाँधी आन वोमेन, सेन्टर फार वोमन्स डेवलपमेंट स्टडीज़, दिल्ली।
5. श्री निवास, एम0एन0 (1978) : द चेन्जिंग पोजिशन आफ इण्डिया वूमन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाम्बे।
6. मनु0 स्मृति
7. अथर्ववेद
8. ऋग्वेद
9. यजुर्वेद
10. www.Google.com

****

प्रबंधकीय निर्णयन में कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग की उपयोगिता (लघु एवं मध्यम व्यवसाय के सन्दर्भ में)

डॉ. आलोक कुमार यादव *

शोध सारांश – आधुनिक युग में प्रत्येक व्यवसायिक संस्था गतिशील वातावरण में कार्य करती है यही कारण है कि वर्तमान समय में व्यवसाय का प्रबंध जटिल होता जा रहा है और नित्य नई प्रबंधकीय समस्याएं जन्म ले रही है। गतिशील एवं परिवर्तनशील सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण के कारण किसी भी व्यवसाय की कुशल प्रबंधन के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन, शोध, विस्तार, उत्पादन-सुधार एवं उत्पाद- विविधता बाजार के विस्तार आदि अनेक तथ्यों पर ध्यान देना तथा उनके संबंध में सुनिश्चित योजना बनाना आवश्यक हो गया है।वित्तीय लेखांकन वास्तव में लेखाशास्त्र की सिर्फ एक शाखा मात्र है इनसे एक निश्चित तिथि को व्यवसाय का सकल लाभ/हानि शुद्ध लाभ/हानि तथा संस्था की संपत्ति एवं दायित्वों के संबंध में सूचना प्राप्त होती है। इन सूचनाओं से संस्था के आंतरिक एवं बाह्य पक्षों को संस्था की आर्थिक स्थिति का सिर्फ एक अनुमान ही मालूम होता है।अन्य बहुत सी जानकारियां लेने के लिए आवश्यक है कि लेखा प्रविष्टियाँ पूर्ण हो तथा उपयुक्त जानकारी निकाली जा सके फिर भी संगत जानकारी नहीं मिल पाती है।वित्तीय लेखे तो एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर ही बनाए जाते हैं परंतु प्रबंधक द्वारा हर पल निर्णय लिए जाते हैं।प्रबन्धन द्वारा प्रभावी नियंत्रण तभी स्थापित किया जा सकता है, जबकि उसको सामग्री, श्रम, उत्पादन, प्रशासन, विक्रय, वितरण आदि के संबंध में आवश्यकतानुसार तुरंत जानकारी मिल सके। प्रबंधकीय निर्णय लेने में एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर अहम भूमिका का निर्वहन करते है।

प्रस्तावना – लघु एवं मध्यम व्यवसाय के प्रबन्ध में निर्णयन सर्वव्यापक है। निर्णय प्रक्रिया की तीन विशेषताएं होती हैं 1- कोई भी निर्णय लक्ष्योन्मुख होता है, 2- निर्णयों की एक क्रमिक श्रृंखला होती है, 3- कोई भी निर्णय किसी खास अवधि में होता है।प्रबंधकीय निर्णय लेने में व्यवसाय के प्रबंधकों को आवश्यक सूचनाएं सहजता से उपलब्ध कराना होता है, ताकि प्रबंध के कार्यो का निष्पादन कुशलता पूर्वक किया जा सके। उसे समस्त सूचनाओं को उपलब्ध कराने के लिए वित्तीय एवं लागत लेखांकन के अतिरिक्त बाह्य स्त्रोतों से भी सूचनाओं का संग्रह एवं संपादन का कार्य करना पड़ता है ताकि व्यवसाय के संचालन एवं नियंत्रण में सहायता मिल सके।प्रत्येक व्यवसाय में बहुत सारी व्यवसायिक एवं वित्तीय प्रक्रियाएं होती है जिसमें से कुछ जटिल और कुछ अत्यंत सरल होती है। जैसे-जैसे व्यवसाय का विकास होता जाता है और नये-नये ग्राहक जुड़ते जाते है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक होने लगता है कि खातों को सुरक्षित एवं कानूनी प्रावधानों के अनुसार अद्यतन रखा जाये। जब सम्पूर्ण व्यवसायिक एवं वित्तीय व्यवहारों का लेखा कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है तब उसे कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग कहते हैं। इस हेतु बाज़ार में विभिन्न एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर उपलब्ध है जो इन कार्यो को सरलता से एवं कम लागत पर करने में सक्षम है।कम्प्यूटर के माध्यम से केवल प्रविष्टि का कार्य करना होता है बाकी का कार्य ये साफ्टवेयर स्वयं कर सकते है और उपभोक्ताओं की आवश्यकता तथा विभिन्न कानूनों के अनुसार निर्धारित प्रारूप में रिपोर्ट्स भी तैयार करके दे देते है। कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग की प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न वित्तीय सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है तथा उन्हे विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से खातों में लिखा जाता है और फिर उनके आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसके अन्तर्गत एकाउंटिंग प्रणाली को तीन भागों में बांटा गया है- यथा रिकार्डिंग, मैन्टैनिंग और रिपोर्टिंग।

अनुसन्धान पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र में गुणात्मक प्राथमिक समंकों के लिए विभिन्न लघु एवं मध्यम स्तरीय व्यवसायों के लेखपालों, सनदी लेखाकारों, प्रबंधको और स्वामियों के अनुभवों को सम्मिलित किया गया है।

द्वितीयक समंको को एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर कम्पनियों द्वारा जारी की सूचनाओं एवं विभिन्न वेबसाइटो, पुस्तकों, एवं पत्र-पत्रिकाओं से एकत्रित किया गया है।

परिकल्पना – वर्तमान में लघु एवं मध्यम स्तरीय व्यवसायिक इकाइयों द्वारा लेखांकन के क्षेत्र में व्यापक रूप से एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग बढ़ता जा रहा है।परम्परागत या मेन्युअल एकाउंटिंग सिस्टम में लेखांकन प्रक्रिया यथा जर्नलाजिंग, लेजरिंग, ट्रायल बेलेंसिंग एवं फायनल एकाउंटिंग अत्यधिक समय लेती है और किसी भी समय इनके द्वारा कोई भी जानकारी तत्काल लेना सम्भव नही होता है।छोटे-मोटे संशोधन होने पर प्रक्रिया और जटिल हो जाती है।नई तकनीक समस्याओं के निराकरण के उपाय सुझाती है।एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर के उपयोग से केवल पोस्टिंग कर विभिन्न पार्टियों के वित्तीय विवरण, स्टॉक रिपोर्ट्स, लेखांकन अनुपात, फण्ड फ्लो, कैश फ्लो और अन्य वित्तीय गणनाएं त्वरित रूप से उपलब्ध हो जाती है।

प्रस्तुत शोधपत्र में विभिन्न एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर का अध्ययन किया जायेगा जिससे लघु और मध्यम व्यवसाय के प्रबंधको और स्वामियों को प्रबंधकीय निर्णय लेने में सुविधा होती है।

अध्ययन का उद्देश्य – व्यावसायिक गतिविधियों में क़ानूनी प्रावधानों, नियमों एवं कागज़ी प्रक्रियाओं के कारण एकाउंटिंग के क्षेत्र में जटिलता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में विभिन्न पक्षकारों जैसे देनदार, लेनदार, आपूर्तिकर्ता, कराधान एवं सम्बन्धित पक्षकारों से सम्बन्धित बड़े एवं छोटे प्रबंधकीय निर्णय लेने में वित्तीय आंकड़े महत्वपूर्ण होते है।यदि वित्तीय सूचनाएं सटीक और त्वरित गति उपलब्ध हो तो निर्णय लाभप्रद होते है।प्रबंधकीय निर्णय लेने में विभिन्न एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर द्वारा प्रदत्त रिपोर्ट्स का

* प्राचार्य, इंदिरा गांधी शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

तुलनात्मक अध्ययन कर प्रबंधकीय समस्याओं को जानकर उनके निराकरण के व्यावहारिक उपाय सुझाये जा सके।

कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग से लाभ – कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग के निम्नलिखित लाभ हैं :

1. **तीव्रता–** कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग के माध्यम से बहुत कम समय में बहुत सी सूचनाओं को दर्ज किया जा सकता है।

2. **शक्तिशाली–** यह साफ्टवेयर डेटा प्रोसेसिंग में बहुत शक्तिशाली होते हैं अर्थात् इनके माध्यम से डेटा बहुत आसानी से सही स्थान पर सेव हो जाते हैं और आसानी से रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है ।

3. **सरलता–**कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग साफ्टवेयर के माध्यम से केवल पंजी प्रविष्टि;जर्नलाईजिंग का कार्य किया जाता है उसके बाद यह इनके आधार पर क्रय, विक्रय, निर्माण तथा अंतिम खातों से संबंधित रिपोर्ट तक उपलब्ध करा देते हैं।

4. **सटिकता–** कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग साफ्टवेयर के माध्यम से जो खाते रखे जाते हैं वह पूरी तरह से त्रुटि रहित अर्थात सटिक होते हैं क्योंकि इनमें डेबिट एवं क्रेडिट संबंधी अशुद्धियाँ तथा गणितीय त्रुटियां नहीं होती है ।

5. **समय की बचत–** शीघ्रता से त्रुटिरहित विभिन्न रिपोर्ट्स एवं सूचनाएं उपलब्ध हो जाने के कारण उपयोगकर्ता का समय बचता है।

6. **धन की बचत–** कुछ आवश्यक हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर के माध्यम से बहुत सारी एन्ट्रियों को एक साथ किया जा सकता है जिससे धन की बचत होती है।

7. **रिकार्ड की सुरक्षा–** कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग साफ्टवेयर के माध्यम से लेखांकन का कार्य करने पर परंपरागत रूप से रखे जाने वाली पुस्तकों की अपेक्षा विभिन्न प्रकार के विश्लेषणात्मक रिपोर्ट आसानी से प्राप्त हो जाती हैं।

कम्प्यूटराईज्ड एकाउंट की कमियां – कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग में निम्न कमियाँ हैं :

1. इसके लिए सामान्यत: अत्यंत लघु या लघु व्यवसाय के दृष्टिगत कुछ अधिक मात्रा में पूंजी निवेश करना होता है जो कि छोटे व्यापारियों के लिए उपयुक्त नहीं होता है।
2. सम्पूर्ण एकाउंटिंग का कार्य कम्प्यूटर पर होने के कारण अलग से कम्प्यूटर ऑपरेटर रखने की आवश्यकता पड़ती है।
3. यदि व्यवसायी को कम्प्यूटर का कामचलाऊ ज्ञान नहीं हुआ तो कार्य प्रभावित होता है।
4. व्यवसायी को एकाउंटिंग का ज्ञान होना अनिवार्य होता है तथा उसे कम्प्यूटर में प्रविष्टि करने की विधि का ज्ञान होना अनिवार्य है।

भारत में प्रचलित कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिग साफ्टवेयर – बाजार में लघु एवं मध्यम आकार के व्यवसाय के लिए निम्नलिखित कम्प्यूटर आधारित एकाउंटिंग साफ्टवेयर उपलब्ध हैं :

1. **टैली :–** यह भारत का सर्वाधिक बिकने वाला एकाउंटिंग साफ्टवेयर है।टैली में प्रबंध सुचना प्रणाली द्वारा प्राप्तियों एवं देयताओं का विवरण, कास्ट सेंटर रिपोर्ट, फण्ड फ्लो, कैश फ्लो विवरण तथा विभिन्न अनुपात विश्लेषण मात्र एक क्लिक पर प्रदर्शित हो जाते है।अपवादात्मक रिपोर्ट में ओवरड्यू प्राप्तियों एवं देयताओं के साथ ऋणात्मक स्टॉक, लेजर, बैच आदि की जानकारी मिलने से व्यवसायी को निर्णय लेने में सहूलियत मिलती है।

2. **बिज़ी :–** लघु एवं मध्यम आकार के व्यावसायिक संगठनों की आवश्यकता के अनुरूप यह अपनी सरलता और रिपोर्टिंग की विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध है।इन्वेंट्री मेनेजमेंट सम्बन्धी रिपोर्ट में यह लीडर है।

एफएमसीजी एवं रिटेल के लिए स्कीम, एमआरपी वाइज स्टॉक, अवधि के अनुसार कीमतों का निर्धारण, और स्टॉक आइटम, स्टॉक ग्रुप, और ग्राहकों की श्रेणी के अनुसार कीमते ऑटोमेटिक निर्धारित करने की क्षमता के कारण व्यवसायी को त्वरित निर्णय लेने में आसानी होती है।बजट, टारगेट, क्रेडिट लिमिट और विभिन्न संयोजन के साथ क्रय विक्रय विश्लेषण व्यवसायिक निर्णयन में सहायक है।

3. **मार्ग :–** भारत में छोटे और मध्यम व्यवसायों यह सरल, कॉन्फ़िगर करने में आसान और अनुकूलन में लचीला होने के कारण लोकप्रिय हो रहा है। खुदरा, वितरण या विनिर्माण व्यवसाय में इसका उपयोग किया जा रहा है। इस सॉफ्टवेयर के साथ पेरोल प्रक्रियाओं और कर आवश्यकताओं पूर्ति की जा सकती है। इसका बिल ऑडिट फीचर बिल जनरेट करने और डिलीवरी को सरल बनता है एवं गलतियों को इंगित करता है।प्रबंधकीय निर्णय हेतु इसमें फण्ड फ्लो, कैश फ्लो, अनुपात विश्लेषण, बजट, टारगेट, क्रय विक्रय एवं बजट विश्लेषण रिपोर्ट उपलब्ध है।

4. **फेक्ट :–** फेक्ट एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर एक से अधिक लोकेशन पर स्थापित व्यवसाय के प्रबन्धन में उपयोगी है।इसके द्वारा आर्डर एंट्री, लोडिंग, गन्तव्य पर रवानगी और इनवाइजिंग की सुविधा है। इसके माध्यम से विभिन्न आउटलेट्स की इन्वेंट्री, सम्पतियों का मूल्यांकन के साथ विक्रय एवं व्यय का विश्लेषण कर लाभदायकता की रिपोर्ट सरलता से उपलब्ध हो जाती है। जो व्यावसायिक निर्णयन में उपयोगी होता है।यह ट्रेडिंग, मेनुफेक्चरिंग, डिस्ट्रीब्यूशन, लोजिस्टिक, खाद्य और पेय पदार्थ, रिटेल और सर्विस माड्यूल में विभिन्न सुविधाओं के साथ में उपलब्ध है।जिससे दिन–प्रतिदिन या दीर्घकाल में लिए जाने वाले निर्णयन हेतु रिपोर्ट उपलब्ध रहती है।

5. **विंग्स–** विभिन्न माड्यूल जैसे ऑटो, एफएमसीजी, इलेक्ट्रॉनिक्स, पेरोल, फिक्स्ड एसेट्स, बुक्स, ट्रेड रिटेल में उपलब्ध विंग्स एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर निर्णयन के लिए आवश्यक डेटा एवं उसे गहराई से विश्लेषण करने में लचीली रेडी टू यूज़ रिपोर्ट का पूरा सेट ही उपलब्ध कराता है।कई स्थानों पर फैले व्यवसाय के प्रबंधन एवं सर्वोत्तम निर्णयन के लिए विंग्स आवश्यक डेटा सरलता से उपलब्ध कराता है।

6. **ACE –** यह एक कम प्रचलित एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर है, प्रबंधकीय निर्णयन हेतु इसमें पार्टी के अनुसार ब्याज की सौदे के अनुसार गणना, आउटस्टैंडिंग रिपोर्ट्स, लोन डिटेल्स, और डाक्युमेंट्स को रीनम्बरिंग की सुविधा है।

इसके अतिरिक्त प्रॉफिट बुक, जोहो बुक, क्विक बुक, वेव एकाउंटिंग जैसे ऑनलाइन या क्लाउड एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर उपलब्ध है।

कम्प्यूटराइज्ड एकाउंटिंग के उपयोग से प्रबंधकीय निर्णयन में लाभ :

1. उचित समय पर लिए गए प्रबंधकीय निर्णय से व्यवसाय पर व्यवसायिक उच्चावचनों का प्रभाव नहीं पड़ता है। क्षमता पूर्ण योजना एवं प्रभावशाली संगठन के कारण व्यवसायिक क्रियाओं में एक प्रकार की क्रमबद्ध नियमितता आ जाती है।
2. योजना के अनुरूप फंड्स वितरण एवं नियंत्रण क्रियाओं में सहायक होने के कारण विनियोजित पूंजी पर अधिक लाभ कमाया जा सकता है।
3. प्रबंध द्वारा ग्राहकों को प्रदत सेवाओं में सुधार करने में सहायता मिलती है।
4. प्रबंधकीय निर्णय की सहायता से अनावश्यक क्षय, अपव्यय एवं कार्य

दोषों को नियंत्रित तथा दूर किया जा सकता है जिसके फलस्वरूप उत्पादकता एवं श्रम क्षमता में वृद्धि की जा सकती है।

5. कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग साफ्टवेयर के माध्यम से कार्य करने पर बहुत कम समय पर प्रबंधकीय सूचनाएं प्राप्त हो जाती है जिसके आधार पर निर्णय लेने में सुविधा हो जाती है।
6. कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग साफ्टवेयर के माध्यम से विभिन्न वैधानिक रिपोर्ट्स कभी भी वास्तविक प्रारूप में प्राप्त की जा सकती हैं जिसके कारण व्यवसायी उनके आधार पर अपने व्यवसाय के प्रदर्शन में तत्काल सुधारात्मक उपाय कर सकते है।
7. कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग साफ्टवेयर के माध्यम से बहुत ही कम समय पर उपभोक्ताओं के अनुरूप तथा व्यवसायिक जरूरतों के हिसाब से विभिन्न रिपोर्ट तैयार किये जा सकते हैं।
8. निवेशकों को विशिष्ट सूचनाएं – जब किसी बड़े प्रोजेक्ट में एक से अधिक लोगों का धन लगा होता है तब उनकी जरूरतों के अनुसार तत्काल रिपोर्ट आसानी से मिल जाती है।

कम्प्यूटराइज्ड एकाउंटिंग के उपयोग से प्रबंधकीय निर्णयन की सीमाएं – यद्यपि वर्तमान व्यवसाय जगत में लेखा संबंधी सूचनाओं का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है और इसके समुचित प्रयोग से लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं किंतु इसकी भी अपनी सीमाएं हैं जो इस प्रकार है :

1. एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर में अधिकांश सूचनाएं प्रलेखों द्वारा दर्ज की जाती है। अत: अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर द्वारा निकाले गए निष्कर्षो की सत्यता एवं शुद्धता पर्याप्त सीमा तक इन मौलिक प्रलेखों की सत्यता एवं शुद्धता पर निर्भर करती है।
2. एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर द्वारा निकाले गए निष्कर्ष अपने आप में महत्वहीन होते हैं जब तक उनका सही ढंग से कार्यान्वयन ना किया जाए इसके लिए प्रबंधक को सभी स्तर पर सतत प्रयत्न की आवश्यकता पड़ती है।
3. एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर से प्राप्त रिपोर्ट प्रबंध एवं प्रशासन का प्रतिस्थापन नहीं है यह तो प्रबंधकों के लिए एक टूल्स मात्र है। इनकी सहायता से आंकड़ों का संकलन विश्लेषण प्रबंधकों को ही करना पड़ता है।
4. एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर प्राप्त सूचनाओं एवं रिपोर्ट के आधार पर निर्णय लेने के लिए प्रबंधकों एवं व्यवसाय के सामने व्यवसाय के स्वामियों के पास अन्य विषयों का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है तभी इसका यथोचित लाभ उठाया जा सकता है।
5. एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर के माध्यम से जो भी सूचनाएं प्राप्त की जाती है उनमें मानव निर्णय का तत्व शामिल होता है।सूचनाओं के संकलन से लेकर निर्वचन तक जिन व्यक्तियों द्वारा निर्णय लिए जाते हैं।उनके व्यक्तिगत चरित्र, भावना एवं विचार का आंशिक प्रभाव इन सूचनाओं पर अवश्य पड़ता है। कभी कभी इन सूचनाओं पर व्यक्तिगत निर्णय के प्रभाव के कारण यह गलत पथ पर ले जा सकती है।

निष्कर्ष – किसी भी एकाउंटिंग सॉफ़्टवेयर के चयन में व्यवसाय संचालन और आवश्यकताओं को ध्यान में रखना वास्तव में महत्वपूर्ण है। बाजार में कई तरह के विकल्प हैं लेकिन एक ऐसा सॉफ्टवेयर चुनना चाहिए जो व्यवसाय के आवश्यक क्षेत्रों में सहायता प्रदान कर सके।

एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर हर लघु या मध्यम व्यवसाय के लिए एक आवश्यकता है क्योंकि इसके द्वारा कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य की एक व्यापक तस्वीर सरलता से प्राप्त हो जाती है। इनका उपयोग चालान तैयार करने, खर्चों को ट्रैक करने और विभिन्न प्रकार की रिपोर्ट को जनरेट करने के लिए किया जाता है। लघु या मध्यम व्यवसाय के लिए एक एकाउंटिंग सॉफ़्टवेयर चुनना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि कई सॉफ़्टवेयर विभिन्न विशेषताओं के साथ बाजार में उपलब्ध हैं।

एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर द्वारा प्रबंधकीय निर्णयन के लिए लेखांकन सूचना को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिससे प्रबंध को नीति निर्धारण एवं दिन प्रतिदिन के कार्य को संपन्न करने में सहायता मिल सके। लेखों का भूतकालिक अनुभवों एवं वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है तथा भावी प्रवृत्ति का सही पूर्वानुमान लगाया जाता है।

प्रबंधकीय निर्णयन हेतु विश्लेषण एवं पूर्वानुमान के लिए जिन विविध विषयों की सहायता ली जाती है वह सब टूल्स सरलता से एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर उपलब्ध करा देते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रबंधकीय लेखांकन डॉ. बी.पी.अग्रवाल, एवं डॉ. बी.के.मेहता, साहित्य भवन, आगरा
2. Managerial Accounting: Creating Value in a Global Business Environment, by Hilton (Author), Platt (Author)
3. Management Accounting Principles And Practice, 2016, by R.K.Sharma & Neeti Gupta Shashi K.Gupta (Author)
4. https://www.techsciresearch.com/news/
5. www.tallysolution.com;
6. www.tally.co.in
7. www.busy.in
8. www.coralindia.com

****

मानस के राम

डॉ. कल्पना वर्मा *

प्रस्तावना - तुलसी के राम अनन्त हैं। वेद-शेषनाग और शिव भी उनको पूरी तरह से नहीं जान सकते। कामदेव की तरह राम सौन्दर्यवान हैं। दुर्गा की तरह शत्रु-विनाशक हैं। ऐश्वर्य में इन्द्र हैं। वायु की तरह उनका बल है। पाताल की तरह गहरे हैं। यम की तरह भयंकर हैं। तीर्थों की तरह पवित्र हैं और सागर की तरह गुणवान हैं। राम के इस ब्रह्म रूप की अवधारणा तुलसी ने उत्तरकाण्ड के काग भुशुण्डि संवाद के अन्तर्गत स्थापित की है। 'ब्रह्म एक सत्यं जगनमिथ्या' के अनुसार शरीर नश्वर है। आत्मा अजर अमर है। इस देह से अनुराग मोह है। चूंकि देह से ही भक्ति है अत: मानस के उत्तरकाण्ड में तुलसीदास ने आत्मा के साथ देह के महत्त्व को स्वीकार किया है। देह से मुक्ति मृत्यु है और आत्मा की मुक्ति मोक्ष है। यह मोक्ष श्री राम की कृपा से होता है।

राम का आचरण धर्म का नियामक है। पन्थ का निर्माता है। राम का मर्यादित आचरण अनुकरण के लिए है। तुलसी के राम धर्म के लिए ही अवतरित हैं। मानस की कथा में राम के शील की व्यंजक नयी परिस्थितियों की योजना की गयी है, जिनसे क्षमा, उदारता, करुणा, वात्सल्य, विजय आदि सात्विक वृत्तियां अधिक मुखर हो उठी हैं। इनका परिष्कृत और परिवर्धित रूप राम में है। इसी कारण उनके व्यक्तित्व में नराकार, सुराकार और निराकार रूप एकाकार हो उठे हैं। शक्ति के प्रयोग में तुलसीदास ने राम की शक्ति को भी कोमल बना दिया है, क्योंकि इस शक्ति की जननी है करुणा। किसी आर्त पुकार पर ही इस शक्ति का प्रकाशन होता है। राम का बाण मोक्षकारी है। अनाचार, अनैतिकता, अधार्मिकता तथा अव्यवस्था के प्रति राम के चरित्र में विद्रोह की भावना भी समाहित है।

तुलसी के आराध्य राम विशिष्टाद्वैत के प्रतीक हैं, जो नाना कारणों से अवतार लेते हैं। वही जड़-चेतन और गुण-दोषमय सृष्टि के रचयिता भी हैं। शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य भारद्वाज, काक-भुशुण्डि, गरुड़ आदि के संवादों में इसकी पुष्टि की गयी है। मानस में राम के चरित्र को उदात्त रखने की चेष्टा की गयी है और जो कार्य उनकी उदात्तता में बाधक सिद्ध होते हैं, उन्हें कवि ने ग्रहण ही नहीं किया है। तुलसीदास की जागृत चेतना अपने भाव जगत पर निरन्तर अंकुश रखती है। राम के प्रति उनका आत्मनिवेदन दुर्बल, इन्द्रिय लिप्सा के स्तर पर भी स्खलित नहीं हुआ है। यहां तक कि पुष्प वाटिका के प्रसंग में भी तुलसी के राम मर्यादावादी ही रहते हैं। लोकपक्ष के प्रति कवि की यह सजगता उनके आराध्य को तेजवान, और अमूल्य बना देती है। राम का स्वरूप विविध, दिव्य एवं कोमल होते हुए भी परुष है, उसमें हमारी सुरक्षा की भावना निरन्तर पुष्ट होती है।

तुलसी की भक्ति का मुख्य आधार राम का नाम है। राम केवल निर्गुण-निराकार नहीं, बल्कि अवतार लेने वाले दशरथ पुत्र मानवीय राम हैं। उन्हें परमात्मा सिद्ध करना तुलसी का साध्य है। मानस में घटनाएं इस प्रकार घटती हैं कि उनके सन्दर्भ में राम परमात्मा नहीं प्रतीत होते। राम को नर मानने के पीछे बौद्धिक तर्क यह था कि यदि राम ही ईश्वर थे तो रावण का वध करने लंका क्यों गये? सीता-हरण प्रसंग उन्हें पहले से ही ज्ञात होना चाहिए था। मानस में इसी प्रकार बौद्धिक शंकाएं चार माध्यमों से व्यक्त की गयी हैं- देव वर्ग में सती पार्वती द्वारा, ऋषि वर्ग में भारद्धाज द्वारा, पशु-पक्षी वर्ग में गरुड़ द्वारा तथा मनुष्य वर्ग में तत्कालीन नागरिकों के द्वारा। राम को अवतारी सिद्ध करने में तुलसी सफल भी हुए हैं। राम ही ईश्वर हैं, वही विष्णु हैं, वही ब्रह्म हैं। राम में ब्रह्मत्व की पूर्ण प्रतिष्ठा कर के तुलसी ने राम को सनातन बना दिया है, जबकि वैचारिक दृष्टि से तुलसी-साहित्य का केन्द्र बिन्दु मानव-मूल्यों की स्थापना है। राम के चरित का दैवी उत्कर्ष मनुष्य के उत्थान के लिए है। तुलसीदास के अनुसार राम और रावण मनुष्य की ही दैवी और दानवी प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं।

राम का अवतार लेना बहु-उद्देशीय है। दुष्कर्मियों को सजा मिले उनका नाश हो और उनसे सत्कार्मियों की रक्षा हो यह राम-जन्म का अन्तिम उद्देश्य नहीं है। राम का अवतार लीला के लिए हुआ है जिससे उनके भक्त उनकी लीलाओं का गान कर के भव-सागर से पार हो जाएं। उनके अवतरित होने का एक उद्देश्य भक्तों की भक्ति, उनके प्रेम और उनकी साधना को सफल करना भी है। मानस के कर्ता का यही राममय दृष्टिकोण भक्तों और भगवान को, सेवक और स्वामी को अन्योन्याश्रित बना देता है। जहां भक्त के बिना भगवान अपूर्ण सा लगता है। 'मानस' की घटनाएं राम-नाम, राम-ध्यान, राम-भक्ति, राम-चरित के ताने-बाने में गुंथीं हुई हैं। मनुष्य की आत्म-स्वतन्त्रता उसकी पूर्णता, आकांक्षा, कहीं भी राम से कट कर नहीं है। यदि मनुष्य में कहीं दया, क्षमा, ममता, क्षमता, करुणा, न्यायशीलता है, तो राम में ये मानवीय गुण अपनी पराकाष्ठा में हैं।

तुलसीदास आदर्शवादी थे, किन्तु उन्होंने यथार्थ की उपेक्षा नहीं की है। मानस के राम में देववाद के साथ पुरुषार्थ प्रधान कर्मवाद भी है। वास्तव में राम का आदर्श व्यावहारिक है। राम में प्रत्येक मनुष्य को आदर्श भाई, आदर्श पिता, आदर्श पति, आदर्श पुत्र-मित्र या आत्मीय की झलक दिखती है। तुलसी ने राम को 'मानस' का प्राण माना, उसी 'मानस' को जनमानस से जोड़कर राम को जन-जन के राम बना दिया है। स्थान-स्थान पर कवि ने इस सत्य की आवृत्ति की है कि राम ब्रह्म हैं, निराकार हैं, अज हैं, सर्वगत हैं। उनका प्रयास था कि हम इस बात को भूल न पायें कि राम परब्रह्म हैं, नरवत आचरण तो केवल भक्तों के लिए कररहे हैं। राम के जीवन वृत्त के प्रत्येक अवसर पर कवि ने याद दिलाया है कि यह जो शिशु रूप में माता कौशल्या की गोद में है, दशरथ के अजिर में विहार करते हैं, विद्याध्ययन कर रहे हैं, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के लिए जा रहे हैं, खरदूषण-रावण जैसे त्रिलोक विजयी वीरों का

* अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज (उ.प्र.) भारत

वध करते हैं, वे कोई और नहीं परब्रह्म रूप राम ही है।

मानस के राम का एक अन्य रूप सगुण अवतार विष्णु का है। शिला को नारी रूप में परिणत कर देना, बाणों से समुद्र में ज्वाला उत्पन्न करना, अग्नि में सीता और हनुमान का न जलना, हरि प्रेरित उनचास पवन का बह उठना, महाकाश का समूचा विषय अखिल ब्रह्माण्ड का दृश्य काक भुशुण्डि को अपने उदराश में और कौशल्या को अपने शरीर में दिखा देना आदि कार्यों में क्षिति-जल-पावक वायु और आकाश तत्त्व पर राम की विजय दिखा कर उनकी विष्णुता ही सूचित की गयी है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को पुरुषों में उत्तम बताकर तुलसी ने बड़ी सावधानी के साथ प्रतिष्ठित कर दिया है। पतनशील समाज उनसे जीवन-निर्माण की शिक्षा लेने को बाध्य हो जाता है। राम का एक ऐसा लोक संग्रही व्यक्तित्व बन गया है, जिसके प्रति आदर, श्रद्धा, भक्ति के भाव स्वत: जाग जाते हैं। यह भी कह सकते हैं कि पुरुष के चरित्र का उच्चतम विकास यदि किसी भारतीय के चरित्र में देखा जा सकता है, तो वह हैं 'मानस' के राम। वही आवागमन चक्र से मुक्ति के कारक हैं।

पत्नी रत्नावली से चोट खाए व्यक्ति का राम भक्त हो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी लेकिन तत्कालीन परिवेश में सगुण राम को स्थापित कर देना बड़ी उपलब्धि है तुलसी की। राम भक्ति ही हर प्रकार की भव-बाधा, शरीर-बाधा के संजीवनी है। मानव शरीर मिला है तो इसका उपयोग राम के प्रति समर्पण भाव की भक्ति के लिए करें तभी जन्म सफल है। जब शरीर है तभी तो राम कथा है हमारे लिए। राम का उदार चरित्र मनुष्य को कलियुग के दुष्प्रभाव से बचाता है अत: वही एक मात्र शरण स्थल हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. तुलसीदास - श्री रामचरित मानस- गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन सटीक संस्करण 2068 (संवत)
2. विश्वनाथ त्रिपाठी - लोक वादी तुलसी दास - राधाकृष्ण प्रकाशन
3. कामिल बुल्के - राम कथा पी0डी0एफ0 बुक

****

भारत में अफसरशाही का पतन और सरदार पटेल

डॉ. अजय कुमार त्रिपाठी*

प्रस्तावना - लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल अफसरशाही को भारत की सरकारी मशीनरी का स्टील फ्रेम कहते थे। लेकिन आजादी के 73 साल बाद हिंदुस्तान की नौकरशाही दीमक लगी लकड़ी का फ्रेम बन गई है। राजनेताओ और अफसरशाहो में वह नैसर्गिक संबंध नही रह गए जिसकी कल्पना सरदार पटेल ने की थी। भारत के लोकतत्र मे विपक्ष तकरीबन नदारद है तो कार्यपलिका के कंधो पर बडी जिम्मेदारी है। लेकिन ये कंधे इतने कमजोर हो चुके है कि भारत मे सिविल सेवा का ताजमहल भरभराता जा रहा अफसरो की कुछ टोलियां सत्ता में काविज राजनेताओ के किचन कैबिनेट का हिस्सा बनकर रह गई न उनका लोक सर्वे बता चुके है कि भारत की अफसरशाही अपनी ढुलमुल नीतियों, लचर कानून व्यवस्था और अपनी नकारात्मकता के लिए व्यापक रुप से कुख्यात है। नई पीढ़ी मे भी ऐसे अफसर आ रहे है, जो सोशल मीडिया पर धुमकेतु की तरह छाते है और बहुत जल्द भ्रष्टाचार के दलदल में फंस जाते है। भारत को सिविल सेवा का ढांचा अंग्रेजो से विरासत में मिला। भारत छोड़ने से पहले ब्रिटिश हुक्मरानों ने भारत के नेताओ से वचन लिया था स्टीले फ्रेम का काम सिर्फ सिस्टम को मजबुती देना ही नहीं है बल्कि यह भी बताना है कि वह बडे संकट और कठिनाइयो में भी देश को आगे ले जा सकता है। आजादी के बाद भी इंडियन सिविल सेवा के सारे विशेषाधिकार कायम रहेंगे और तत्कालीन भारत को संविधान में इसकी गारंटी देनी होगी। 1949 में संविधान सभा इस पर जमकर बहस हुई। तब डिप्टी स्पीकर एम.अनन्तशयनम आयंगर ने कहा था कि जब भारत की सरकार अपने देश की गरीब जनता को रोटी,कपड़ा और मकान की गारंटी नहीं दे सकती, तो इन अफसरों को गारंटी कैसे दी जा सकती है? कई सदस्यों का मानना था कि ज्यादातर आईएएस आज यानी आजादी के बाद भी सोचते हैं कि वे देश के मालिक हैं और जनता पर शासन करते रहेंगे। उन्हें अपना व्यवहार और दृष्टिकोण बदलना चाहिए, जिससे जनता यह महसूस करे कि वे उनका दमन करने और उस पर शासन करने के लिए नहीं है, बल्कि सेवा व रक्षा करने के लिए हैं। ये उस जमाने की बात थी, जब मंत्रियों को 750 से 1,000 रुपये तक वेतन मिलता था, जबकि इंडियन सिविल सर्विस के सेक्रेटरी को 2,000 से 3,000 रुपये तक तनख्वाह मिलती थी। संविधान सभा के असम के सदस्य रोहिणी कुमार चौधरी ने तब दिलचस्प चित्र खीचते हुए कहा था- 'मंत्री अपनी पुरानी कार को चलाने के लिए सड़क पर धक्का लगाते हैं, क्योंकि वे नई कार लेने की हालत में नहीं होते, जबकि उनके सेक्रेटरी अपनी नई सुंदर मोटर कार में उनके पास से गुजर जाते हैं।' यह विरोध देखकर पटेल ने संविधान सभा में अपनें मंत्रियों को सलाह दी- 'अगर आप मंत्री या मुख्यमंत्री हैं, तो आपका यह कर्त्तव्य हो जाता है कि आप अपने सेक्रेटरी अथवा चीफ सेक्रेटरी को निर्भीक होकर निष्पक्ष रूप। से अपनी राय व्यक्त करने की इजाजत दें।' पटेल ने कहा- 'आज मेरा सचिव एक ऐसी टिप्पणी लिख सकता है, जो मेरे विचारों से मेल न खाती हो। मैंने अपने सभी सचिवों को यह स्वतन्त्रता दे रखी है। मैंने उनसे कह रखा है कि अगर आप किसी डर के कारण ईमानदारी से अपनी राय व्यक्त नहीं करते, तो इससे आपके मंत्री को अप्रसन्नता होगी, ऐसी स्थिति में अच्छा यह होगा कि आप चले जाएं। मैं अन्य सचिव को ले जाऊँगा। यह था एक राजनेता का लोकतांत्रिक नजरिया और अपने अधीनस्थ अफसर को लेकर नैतिक बल। आज यह दृष्टि न किसी नेता ने दिखायी है, न किसी अफसर में। दरअसल, आजादी के बाद से ही किसी लोकप्रिय सरकार ने सिविल प्रशासन में सुधार की हिम्मत नहीं दिखायी। हमारे लोकसेवक बदलने को तैयार नहीं और न ही अपने अधिकारों में कोई हस्तक्षेप चाहते हैं। अपने उस ऐतिहासिक भाषण में पटेल ने एक बात और कही थी- 'अगर राजाओं-महाराजाओं को अपना राज्य छोड़ देने के लिए राजी किया जा सकता है, तो सेवाओं के अधिकारों को इस व्यवस्था में बदलाव के लिए तैयार क्यों नहीं किया जा सकता है।' क्या वह वक्त आ गया है? यह सवाल विचारणीय है।

बारडोली सत्याग्रह के बाद वल्लभ भाई पटेल को मिली सरदार की उपाधि 1875 में देश के पहले उप प्रधानमंत्री वल्लभ भाई पटेल का जन्म बांबे प्रेसिडेसी (आज गुजरात) स्थित नडियाड मे हुआ। 22 साल की उम्र मे 10वी पास की और 36 साल उम्र मे वकालत करने के लिए इंग्लैड चले गए। 1913 मे भारत लौटै। 1928 में बारडोली सत्याग्रह का सफल नेतृत्व के कारण वहां की महिलाओ ने सरदार कहना शुरु किया। 562 रियासतो के एकीकरण का दुष्कर कार्य किया। जुनागढ और हैदराबाद को मिलाने में लौहपुरुष की भूमिका रही। 15 दिसंबर 1950 को निधन हो गया। 1991 में उन्हे भारत रत्न से नवाजा गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

* एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान) प्रतापगढ (उ.प्र.) भारत

चूरु जिले में कृषिगत समस्याएं पर्यावरण नियोजन एवं प्रबन्धन

जयदेव प्रसाद शर्मा* डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान**

शोध सारांश – रसायनिक एवं जैविक साधनों का प्रयोग किस रूप में एवं किस स्तर पर किया जा रहा है। रासायनिक एवं जैविक साधनों के प्रयोग से पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन प्राप्त कर लाभों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रभाव ऋणात्मक है अथवा धनात्मक है। कृषि आदानों में होने वाली बढ़ोतरी की दर, श्रम साध्यता के साथ-साथ पारिस्थितिक संयोजन के स्वरूप को समझना है। केवल व्यक्तिगत लाभ की अवधारणा के आधार पर कार्य करते हुए, हम दीर्घकाल के लिए पारिस्थितिक संयोजन के साथ बर्बर (क्रूर) व्यवहार तो नहीं कर रहे हैं। तत्कालीन लाभ के लिए उपयोग में लिए जाने वाले तकनीकी साधन समयोपरान्त कैसा प्रभाव छोड़ेंगे इनका तुलनात्मक ज्ञान आवश्यक है।

प्रस्तावना – शोध अध्ययन क्षेत्र चुरू जिला राजस्थान राज्य के उतर पश्चिमी भाग में स्थित है जो कि अर्द्ध मरूस्थलीय भाग में स्थित है यहॉ पर वार्षिक वर्षा औसत से कहीं कम होती है परिणामत: कृषिगत समस्याओं का आधार है। अध्ययन क्षेत्र में भूमिगत जल बहुतांश में लवणीय पाया जाता है सिचाई के साधन नाम मात्र के है कुछ क्षेत्रो में भूमिगत जल से तथा सादुलपुर एवं तारानगर तहसील के कुछ गॉवो में नहरी सिचाई का जल उपलब्ध है। अध्ययन क्षेत्र में खनन कार्यो, ओद्योगिक संस्थानों के साथ साथ स्थानीय निवासियों की लालची प्रवृति तथा सिमित संसाधनों से जीवन यापन के कारण पर्यावरणीय अवनयन बढ़ता जा रहा है। संतुलित पर्यावरण के लिए उचित नियोजन एवं प्रबंधन कि महति आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषिगत समस्याओं को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :-

सिंचाई सुविधाओं का अभाव : अध्ययन क्षेत्र में औसत सिंचाई क्षेत्र अत्यन्त अल्प है जो राज्य व देश के सिंचाई क्षेत्र से बहुत कम है। चूरु जिले में 2010-11 में कुल सिंचित क्षेत्र 118898 हैक्टेयर हैं जो 2009-10 में केवल 101405 हैक्टेयर ही था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि चूरु जिले की कृषि मानसून पर आधारित है जो अनिश्चित, अनियमित व अविश्वसनीय है।

कृषकों की भाग्यवादिता : इस भाग्यवादिता का मुख्य कारण अशिक्षा व अज्ञानता है। क्षेत्र में किसान कृषि कार्यो को परम्परागत कृषि के आधार पर जीविकोपार्जन के रूप में लेते हैं। फलस्वरूप प्रतिस्पर्धा का अभाव पाया जाता है और वांछनीय उत्पादन प्राप्त नहीं कर सकते हैं। कुशल श्रम व यंत्रों के उपयोग व नवाचारों के अनुसार कृषि करके कृषि उत्पादनों को बढ़ाया जा सकता हे, भाग्यवादिता के सहारे नहीं।

कृषि पद्धति : क्षेत्र में परम्परागत कृषि पद्धति के द्वारा ही कृषि कार्य करते हैं जिनसे फसलोत्पादन कम मात्रा में होता है। क्षेत्र के समग्र कृषिगत विकास के लिए 'गहन कृषि' की जाये। पूंजी विनियोग एवं कुशल तकनीकों का प्रयोग कर आधुनिक विकसित पद्धतियों से कृषि करके अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

कृषि उपयोग के उपकरण : जिले के कृषक कृषि पद्धति की तरह उपकरण भी परम्परागत ही उपयोग करते हैं जिससे श्रम शक्ति अधिक लगती है तथा प्रतिफल कम मिलता है। दीर्घकालिक पूंजी विनियोग के द्वारा आधुनिक कृषि यंत्रों के द्वारा कृषि कुशलता तथा कृषि उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

उत्तम बीजों का उपयोग : क्षेत्र के किसान अशिक्षा व अज्ञानता के चलते अमानक व अविकसित बीजों का इस्तेमाल कर लेते हैं। अथवा अपनी पूर्व फसल में से ही आवश्यक अन्न बीज के रूप में इस्तेमाल कर लेते हैं जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है।भ्रष्टाचार व मिलिभगत से क्षेत्र के निजी बीज भण्डारों से भी किसानों को कम गुणवत्ता का बीज पूरे मूल्य पर मिलता है। सरकार को समय-समय पर बीज भण्डारों की जाँच करवानी चाहिए।

उर्वरकों की समस्या : मृदा की उर्वरा शक्ति का निरंतर उपयोग होने से तथा खाद् और उर्वरकों के अभाव के कारण मृदा की उत्पादन क्षमता क्षीण हो जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर का उपयोग कण्डे थापकर इंधन के रूप में इस्तेमाल कर लिया जाता है। जिससे अधिकांश गोबर को जलाकर राख कर दिया जाता है तथा रासायनिक खादों का प्रचलन व तकनीकी ज्ञान नहीं है तथा सिंचाई के बिना इनका उपयोग सम्भव भी नहीं है।

कृषि भूमि की शक्ति का ह्रास : अनवरत रूप से कृषि कार्य के उपयोग में आने से तथा खाद् व उर्वरकों के अल्प निवेश के कारण कृषि भूमि का ह्रास होने लगा है। पूर्व में कुछ भूमि को पड़ती छोड़कर कृषि कार्य किया करते थे परन्तु अब बढ़ती जनसंख्या के दबाव में भूमि को परती छोड़ना बन्द कर दिया है जिस कारण मृदा क्षरण बढ़ता जा रहा है।

भूमि का उपविभाजन व अपखण्डन : क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ कृषि भूमि का उप विभाजन एवं अपखण्डन की समस्या उत्पन्न हो गयी है जिसके कारण कृषि जोतों का आकार घट गया है। इन छोटे-छोटे खेतों में आधुनिक कृषि यंत्रों द्वारा कृषि कार्य करना असंभव है।

आर्थिक स्थिति : कृषि कार्यो हेतु पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। कृषि विकास के लिए दीर्घकालिक निवेश की आवश्यकता होती है। परन्तु क्षेत्र में किसानों के पास दीर्घकालीन पूंजी निवेश का अभाव है यह कार्य अधिकतर सरकारी सहयोग से ही सम्भव है। आर्थिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र

*शोधार्थी (भूगोल विभाग) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत
** शोध निदेशक (भूगोल विभाग) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

के किसान अन्य क्षेत्रों के किसानों की तुलना में पीछे है।

प्राकृतिक प्रकोप : क्षेत्रीय किसानों का प्राकृति के प्रकोपों का सामना होता ही रहता है। कभी अनावृष्टि, ओले गिरना, तूफान, आंधी, पाला (शीतलहर) मारना आदि जिनसे फसलों को बहुत नुकसान होता है।

भूमि सुधार कार्यक्रमों की असफलता : भारत के अधिकांश राज्यों में भूमि सुधार अधिनियमों का प्रस्ताव पास हो गया है परन्तु उनमें मौजूद खामियों व प्रशासनिक लचर व्यवस्था के कारण भूमिहिनों को आज तक भूमि नहीं मिल सकी व न ही भूमि सुधार की कोई योजना कागजों से बाहर धरातल पर समुचित रूप से अपायी है।

जनसंख्या का बढ़ता दबाव : क्षेत्र में बढ़ती हुई जनसंख्या का दबाव कृषि भूमि पर बढ़ता जा रहा है। भारत में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि का औसत 0.23 हैक्टेयर है जो कि जनसंख्या विस्फोट के कारण हुआ है।

विपणन व्यवस्था : चूरु जिले के किसानों की बड़ी समस्या है कृषिगत उत्पादनों को बेचने के लिए स्थानीय बाजारों में उचित मूल्य नहीं मिलता तथा कृषि मण्डियां केवल नाम की हैं जहां पर किसानों के लिए कोई सुविधा नहीं है। समय पर खरीद नहीं होती, उचित मूल्य समय पर नहीं मिलता परेशान होकर किसान अपनी फसलों को स्थानीय बाजार में कम मूल्य में बेचने पर मजबूर हो जाता है।

परिवहन व्यवस्था : जिले में कृषि मण्डियों की स्थिति दूर-दूर होने के कारण किसानों को उत्पादित फसल के परिवहन की समस्या का सामना करना पड़ता है। उचित परिवहन व्यवस्था के बिना किसानों को श्रम व समय के साथ आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

कर्मचारियों का असहयोग : जिले के किसान कर्मचारियों के असहयोगात्मक रवैये के कारण भी त्रस्त हैं। समय पर गिरदावरी न करना। पटवारियों का क्षेत्र में न मिलना, किराये के ऑफिस में बैठकर ही गिरदावरी कर लेना। ग्रामीण पंचायतों में पटवारियों का सप्ताह में एक या दो बार आना। तथा काम के लिए रिश्वत लेना एक आम बात हो गयी है जिससे किसानों को अतिरिक्त आर्थिक बोझ के साथ-साथ परेशानियों का सामना करना पड़ता है।आये दिन अखबारों में पटवारी व ग्राम सेवकों के रिश्वत-प्रकरण देखने को मिलते हैं परन्तु रिश्वत के मामले रिश्वत द्धारा सुलझा लिये जाते हैं और किसान रोते रहते हैं।

पर्यावरण नियोजन एवं प्रबन्धन :अध्ययन क्षेत्र में पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिए निम्न बिन्दुओ पर शोधार्थी द्धारा ध्यान आकर्षित किया गया है :-

वनों की कटाई : शोध क्षेत्र में वनों का क्षेत्रफल राजस्थान में सबसे कम है। 0.42 प्रतिशत वन क्षेत्र किसी भी तरह से पर्यावरण का पोषण करने में समर्थ नहीं हो सकते। कुछ वर्षो पूर्व तक क्षेत्र के चारागाह भूमि में 'फोग' अधिकांश मात्रा में पाये जाते थे। परन्तु व्यक्तिगत गलत लाभ एवं जलावन के रूप में प्रयोग कर इन फोगों को समूल नष्ट कर दिया गया है।

इमारती लकड़ी : क्षेत्र में शीशम व रोहिड़ा के पेड़ों की लकड़ी को इमारती लकड़ी के रूप में तथा गृह साज सज्जा की वस्तुओं के निर्माण में उपयोग किया जाता है। क्षेत्र में पेड़ों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है तथा इनकी कटाई के कारण कमी बढ़ती जाती है। इसके लिए 'दिन में बंद, रात में खड़कती है आरा मशीनें' शब्दों का प्रयोग सही लगता है। वन विभाग ने अवैध आरा मशीनों पर अभियान चलाकर सीज करने की कार्यवाही शुरु की तो आरा मशीन संचालकों ने विभागीय कार्यवाही से बचने के लिए स्वयं ही आरा मशीनों पर ताले लगा लिए। विभाग की रात्रिकालीन गश्त की व्यवस्था नहीं होने के कारण ये मशीनें रात के समय बदस्तूर चलायी जा रही है।

अति-पशुचारण : क्षेत्र में चारागाह भूमि पशु संसाधनों के अनुपात में कम है। भेड़ व बकरियां घास को जड़ों तक खा जाती है जिससे मृदा संगठन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वनस्पतियों के आवरण से मृदा संगठित रहती है। उसका अपरदन (अपक्षरण) नहीं होता। परन्तु अति पशुचारण के कारण भूमि की उपरि सतह का संगठन कमजोर पड़ जाता है तथा वायु के माध्यम से उसका अपरदन होता है। अपरदन के कारण मृदा के पोषक तत्व उड़कर दूसरे स्थान पर चले जाते हैं व मृदा की उत्पादन क्षमता क्षीण हो जाती है। अत: पशु चारण उचित मात्रा तक ही करवाया जाना सुनिश्चित हो।

पेड़ों की तस्करी : अध्ययन क्षेत्र की उत्तर पूर्वी सीमा पर हरियाणा राज्य की सीमा लगती है। क्षेत्र के कुछ निवासी व्यक्तिगत लाभ के लिए हरे पेड़ों की कटाई कर रातों रात हरियाणा राज्य में तस्करी कर पहुँचाते हैं। वन विभाग की लापरवाही व तस्करों की रसूखदारी के कारण पुलिस की उदासीनता तस्करों के लिए उपयुक्त है। कुछ समय पहले राजगढ़ तहसील के मुंडी बड़ी गाँव की रोही से रातों रात 'ढढाणा जौहड़' (चारागाह भूमि) से दर्जनों पेड़ तस्कर काटकर ले गये। क्षेत्रीय लोगों की तरफ से शिकायत करने पर भी पुलिस तस्करों के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर रही है। इसी प्रकार हमीरवास थाना इलाके के गाँव 'रावतसर कुंजला' एवं 'डाबली ढ़ाणी' की रोही से भी पेड़ गायब हैं।

भूमि उत्पादकता का ह्रास : हजारों वर्षो से निरंतर कृषि कार्य होते रहने से कृषि भूमि की उत्पादकता में कमी हो गयी है। जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप भूमि पर दबाव बढ़ता जा रहा है जिस कारण भूमि का कुछ भाग पड़ति नहीं छोड़ा जा सकता। कुछ समय तक भूमि को पड़ती छोड़ने से मृदा अपनी खोयी हुई क्षमता पुन: प्राप्त कर लेती है परन्तु पड़ती नहीं छोड़ने पर मृदा ह्रास होता है।

प्राकृतिक आपदाएं : अध्ययन क्षेत्र से अकाल का चोली दामन का साथ है। हर तीसरे वर्ष अर्द्ध अकाल तथा आठवें वर्ष अकाल औसतन पड़ता है। अकाल के समय वनस्पतियां नष्ट हो जाती हैं। पेड़-पौधों के नष्ट होने के कारण पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अकाल के अतिरिक्त ओले गिरना, पाला (शीत) पड़ना आदि से भी पेड़ पौधों का नुकसान होता है तथा किसानों की फसल नष्ट हो जाती है। 2014 में गेहूँ, ज्वार आदि की खड़ी फसलों पर औला वृष्टि के कारण चूरू जिले में सरदार शहर व राजगढ़ तहसीलों में बहुत नुकसान हुआ। चूरु तहसील के गाँव ढाढ़रिया बणीरोतान में भी ओला वृष्टि के कारण फसल खराबे का सामना करना पड़ा।

सिंचाई सुविधाओं का अभाव : जिले में औसत वर्षा 20 से 30 सेमी. के बीच रहती है तथा कई बार वर्षा होती ही नहीं है। अनावृष्टि के कारण वनस्पतियों का विनाश तो होता ही है। पशु चारण की समस्या खड़ी हो जाती हैं वर्षा की कमी को किसान मौत के समान मानते हैं -

'छल बल मारग मोकळा, तो हाथां करतार,
मारण मारग मोकळा, मेह बिना मतमारा।।'

अर्थात् भगवान आपके हाथ में छल व बल के बहुत रास्ते हैं, मारने के लिए किसी का भी प्रयोग करो परन्तु मेह (वर्षा) के बिना मत मारो। वर्षा की कमी से खाद्यान के साथ-साथ पशुओं के चारे व पेयजल की समस्या हो जाती है। नहर से सिंचाई ऊँट के मुँह में जीरा है। जिले में 912 गाँव है तथा नहर केवल 30 में है। जिले का 2.40 लाख हैक्टेयर क्षेत्र सिंचित है, परन्तु अभी तक नहरी प्रणाली पर केवल 10 प्रतिशत क्षेत्र निर्भर है। कमाण्ड एरिया विकसित नहीं होने के कारण उक्त क्षेत्रों में आज भी कुए व पम्पिंग सैट के माध्यम से सिंचाई हो रही है। 30787 हैक्टेयर रकबा चौधरी कुम्भाराम लिफ्ट कैनाल से तथा

5607 हैक्टेयर क्षेत्र सिद्धमुख वितरिका से सिंचित हो रहा है। लेकिन नहरों में पानी नहीं आने से यह भूमि अब अनउपजाऊ बनती जा रही है। बजट की कमी इसमें सबसे ज्यादा आड़े आ रही है। इस नहर को लगभग 12 वर्ष से बजट नहीं मिला है। फलस्वरूप नहर निर्माण का कार्य अधूरा पड़ा है।

घरेलू अपशिष्टों का अनुचित निस्तारण : गाँव हो या शहरी क्षेत्र, जिले में सब जगह आबादी क्षेत्रों के आस-पास गंदगी के ढेर लगे हैं। जिला मुख्यालय का 'जौहरी सागर तालाब' किसी समय पेयजल का मुख्य स्रोत था, वर्तमान में गेनाणी बना हुआ है। रतनगढ़ तहसील मुख्यालय का 'परमाणा ताल तालाब' पशुओं व मनुष्यों की पेयजलापूर्ति करता था, गंदगी व गंदे पानी का भण्डार बना हुआ है। निवासियों की अनैतिकता व प्रशासन की उदासीनता के चलते कचरे के ढ़ेरों से हजारों बिमारियाँ फलने के साथ-साथ कचरे का उचित निस्तारण नहीं होने से कृषि भूमि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

रतनगढ़ तहसील मुख्यालय के वार्ड 32 व 34 की सीमा पर सरदार शहर बाईपास रोड़ के दोनों तरफ नगरपालिका कर्मचारी ट्रेक्टरों में भरकर लाये गये कचरे को (गंदगी को) यहां सड़क किनारे डाल देने से वार्डवासी परेशान हैं। समय-समय पर धरना प्रदर्शन के बावजूद प्रशासन पर कोई असर नहीं हो रहा। सालासर मेले के समय हजारों पदयात्री पड़ौसी जिलों से व पंजाब हरियाणा से आने वाले यात्री इसी रास्ते से गुजरते हैं। इसी तरह कस्बे के वार्ड नं. 13 स्थित रेल्वे धूम चक्कर व रेलवे क्लब के मध्य गंदगी राहगीरों व मोहल्ले के निवासियों के लिए पिछले 3 दशक से परेशानी का सबब बन रही है। यहां पर रेल्वे प्रशासन नगरपालिका तथा नगरपालिका रेल्वे प्रशासन की जिम्मेदारी बता समस्या से मुँह मोड़ लेते हैं।

अपशिष्टों के उचित निस्तारण के लिए डम्पिंग स्टेशनों का निर्माण किया जाना आवश्यक है।

औद्योगिक अपशिष्ट : अध्ययन क्षेत्र में 6 औद्योगिक केन्द्र है जिनमें लगे उद्योगों से जो अपशिष्ट पदार्थ निकलते हैं उनका निस्तारण अनुचित तरीके से किया जाता है। यहां पर पत्थर की चौखट, चौके, मार्बल कटिंग आदि की मशीनों से कटिंग करते समय 'स्लरी' (पत्थर का पाउडर) निकलता है जो पानी के साथ बहकर इकाइयों से बाहर आ जाता है। संचालक भी ज्यादा मात्रा में इकट्ठा होने पर इन अपशिष्टों को सड़कों के किनारे पर डलवा देते हैं। हवा के साथ यह पाउडर उड़कर कृषि भूमि पर चला जाता है। वायुमण्डल में घुलकर वायु मण्डल को प्रदूषित करता है। जिप्सम उद्योगों से भी डस्ट की समस्या रहती है। हर समय डस्ट उड़कर वायु मण्डल को प्रदूषित करता है। क्षेत्रीय प्रबन्धक रिको द्वारा 21 यूनिट चूरू में, सुजानगढ़ में 11 यूनिट, सरदार शहर में 14 यूनिट, राजगढ़ में 14 यूनिट व रतनगढ़ में 15 यूनिट को पर्यावरण प्रदूषण बोर्ड की तरफ से प्रदूषण नियंत्रण के लिए नोटिस दिए गए हैं।

उद्योग संचालकों को औद्योगिक अपशिष्टों का निस्तारण उचित तरीके से करवाकर इस समस्या से निजात पायी जा सकती है।

खनन : क्षेत्र में इमारती पत्थर, ग्रेनाइट, चूना पत्थर व क्रेशर स्टोन आदि का खनन कार्य कई स्थानों पर होता है। बिदासर कस्बे के पास इमारती पत्थर, ग्रेनाइट व मार्बल की खाने हैं। इनमें खनन कार्य होने से गर्तो का निर्माण होता है। अपशिष्ट पदार्थों का जमावड़ा खनन कार्यो के आस-पास होता रहता है। खनन कार्य के कारण हुए गर्तो को पुन: समतल करवाकर वृक्षारोपण कर भूमि को पुन: उपजाऊ बनाया जा सकता है।

क्रेशर (पत्थर पिसाई मशीन) मशीनों से पत्थर की पिसाई करते समय बहुत तेज शोर होता है तथा पत्थर का महीन पाउडर उड़कर वायु मण्डल में सम्मिलित होता रहता है। क्रेसर मशीन जहां जहां लगी हुई है उनके पास वाले खेतों में फसलोत्पादन बहुत ही कम होता है, क्योंकि क्रेशर से उड़ता हुआ पत्थर-पाउडर कृषि भूमि की उपरी सतह (मृदा) का अवनयन करता है। उच्च तकनीकी के माध्यम से इस पाउडर के उड़ने को नियंत्रित किया जाना चाहिए जिससे कृषि भूमि का अवनयन न हो तथा वायुमण्डल में मिलकर जैव मण्डल को प्रभावित न करें।

सरकारी योजनाओं की अपूर्णता : पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिए सरकारें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कई योजनाएं चलाती है, परन्तु इन योजनाओं का धरातलीय स्वरूप एवं कागजी स्वरूपों में भिन्नता होती है। उदाहरणार्थ टिब्बा स्थिरीकरण के लिए वृक्षारोपण किया जाना है। पेड़ नर्सरी से लाकर 5-7दिन तक उस स्थान पर रख देंगे, क्योंकि पौधों को रोपने के लिए खड्डों का निर्माण करना होगा। जब तक खड्डों का निर्माण होता है। नर्सरी से लाये पोधों में से 30 से 40 प्रतिशत मुरझा जाते हैं जो खत्म हो जाते हैं। वृक्षा रोपण के बाद देखभाल की कमी के कारण 50 प्रतिशत पौधे खत्म हो जाते हैं। जलवायु की प्रतिकूलता 10 से 15 प्रतिशत पौधों को खत्म कर देती है। 100 में से 15 पोधे अस्तित्व में आ पाते हैं।

रसायनिक खाद व दवाइयों का प्रयोग : हरित क्रांति के वक्त खाद्यान की पैदावार का संकट था, इसलिए रासायनिक खाद और पेस्टिसाइडस को प्रोत्साहन दिया गया। लेकिन उसके दुष्परिणामों पर वक्त रहते गौर नहीं किया गया। कृषि वैज्ञानिकों ने 'मिड टर्म करेक्शन' नहीं किया तथा इन्होंने कहा कि जो संकट आ रहा है, उसका समाधान ज्यादा से ज्यादा रासायनिक खाद ही बतलाया। मतलब जहां पैदावार में दिक्कत आ रही थी, वहां इसका इस्तेमाल बढ़ाने की पैरवी की। उसका परिणाम यह हुआ कि आज मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण का बहुत नुकसान हो रहा है। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान लिया गया है कि 'ग्लोबल वार्मिंग' के लिए जिम्मेदार 'ग्रीन हाउस गैसों' में 4.1 प्रतिशत कृषि उपयोग में लिए जाने वाले रासायनिक खादों व पेस्टिसाइडस का है। मृदा में 'ऑर्गेनिक मैटल' (लोह तत्व) 4 प्रतिशत होना चाहिए लेकिन पंजाब जैसे राज्य में इसका स्तर 0.1 प्रतिशत रह गया है। अर्थात् जमीन की उर्वरता खत्म हो गई है।

प्रदुषण के प्रभाव :जितना भी रासायनिक खाद डाला जाता है, उसका 60 प्रतिशत पानी के साथ नीचे जमीन में चला जाता है। पानी में नाइट्रोजन मिलकर नाइट्रेट बनाता है जो हमारी किडनी, लीवर के लिए हानिकारक है। किसानों का मित्र 'केंचुआ' जमीन में ही पनपता है लेकिन रसायनों के प्रयोग से यह खत्म हो गया है। खेत में जब 120 किलो नाइट्रोजन डाला जायेगा तो मृदा का पीएच स्तर बढ़ जायेगा और केंचुए समेत 'माइक्रोओग्रेनिज्म' नष्ट हो जाते हैं।

युरेनियम खा रहे हैं हम : डीएपी फर्टिलाइजर में तो यूरेनियम भी पाया जाता है। कोयले में जितनी युरेनियम की मात्रा होती है, डीएपी में उससे 10 (दस) गुना अधिक होती है। इस तरह मानव शरीर में युरेनियम, कोबाल्ट, निकल आदि भी प्रवेश कर रहे हैं। रासायनिक खाद ने पैदावार तो बढ़ा दी है पर खाद्यान्नों की पोषक क्षमता (गुणवत्ता) कम कर दी है। यही वजह है कि बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं।

99.99 प्रतिशत पेस्टीसाइड पर्यावरण में : अमेरिकी वैज्ञानिक 'डेविड पाइमेंटल' ने 1970 में एक अध्ययन रिपोर्ट में बताया कि 99.99 प्रतिशत कीटनाशक वातावरण में जाते हैं, फिर भी पैदावार बढ़ाने में अंधे होकर कीटनाशकों का जहर पर्यावरण और मानव शरीर में घुलने दिया जा रहा है।

खेती की लहर, कैंसर का कहर : मरुभूमि में कैंसर अनुसंधान और उपचार

की दिशा में सिरमौर बीकानेर के 'आचार्य तुलसी कैंसर अनुसंधान केन्द्र' के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। इस केन्द्र पर हर साल करीब 8500 कैंसर रोगी हुँच रहे हैं। अकेले श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में 35 प्रतिशत रोगी पहुँच रहे हैं। दोनों जिलों में नहरी क्षेत्र है तथा रासायनिक खादों व कीटनाशकों का भरपूर उपयोग किया जाता है। क्षेत्र के दुकानदार जिस दवा का 20 ग्राम का छिड़काव होना चाहिए वहाँ अपने लालचवश किसानों को 50 से 75 ग्राम का सुझाव देकर बेचते हैं। किसान अपने मजदूर को लालच देकर 100 ग्राम का सुझाव देता है, और मजदूर की बलीहारी की वो 200 ग्राम डाल देता है। जहाँ 20 ग्राम वहां 200 ग्राम तो अवनयन अवश्य होगा ही होगा। कृषक से पूछो तो इतराकर कहते नजर आयेंगे कि 'हम तो फसल बाजार के लिए तैयार करते हैं घर के लिए तो एक टुकड़ा अलग छोड़ रखा है।' इस तरह सभी मुनाफाखोरी में लगे हैं।

नियोजन व प्रबंधन:रासायनिक खाद व पेस्टिसाइड का जाल दिनों दिन कृषि जगत को जकड़ता जा रहा है। इससे मानव स्वास्थ्य तथा पर्यावरण पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इनके नियोजन व प्रबंधन के लिए हमें 'जैविक खेती' की ओर अग्रसर होना होगा।

जैविक खेती से -बनी रहती है भूमि की उर्वरता : भूमि की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए हमें रासायनिक खेती को छोड़कर जैविक खेती को अपनाना होगा। जहां तक फसल की गुणवत्ता का सवाल हे, देखने में जैविक खेती की फसल के दानें पौचे (छोटे और कमजोर) हो सकते हैं। वजन में हल्के हो सकते हैं लेकिन उनकी गुणवत्ता उन रासायनिक खेती के चमकदार और मोटे दानों से अधिक होती है। रासायनिक खेती के अनाज में न तो स्वाद होता है और न ही पोष्टिकता होती है। बल्कि उनमें ऐसे जहरीले तत्व पाये जाते हैं जो हमारे शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं।जैविक खेती से भूमि की उर्वरा क्षमता बनी रहती है।

बढ़ायी जा सकती है उपज : ज्यादातर लोग चमक-दमक पर भरोसा करते हुए रासायनिक खेती की उपज को खरीदने को प्राथमिकता देते हैं। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और गुणवत्ता के पारखी लोग जैविक खेती की उपज खरीदना पसन्द करते हैं। जैविक खेती में मिट्टी को उसकी आवश्यकतानुसार प्राकृतिक संसाधनों से ठीक कर लिया जाये - फ्लोराइड वाले क्षेत्रों में जिप्सम पाउडर का इस्तेमाल करते हैं यह प्राकृतिक है और मिट्टी की गुणवत्ता को सुधार देता है। इसके बाद गोबर और पत्तों की खाद तैयार करके इस्तेमाल की जाये तो फसलोत्पादन निश्चित बढ़ेगा।

गैर रासायनिक पर हो सब्सिडी (अनुदान) : जब भी विदेशों से कोई ऐसा पैकेज आता है तो हमारी सरकारें उन पर अनुदान (सब्सिडी) देती है, और उन्हें बढ़ावा दिया जाता है। हमारी सरकारें रासायनिक खादों व पेस्टिसाइड्स पर सब्सिडी देकर किसानों को लुभाती है। लेकिन सरकारें जैविक खाद पर सब्सिडी नहीं देती। इसके लिए यह महंगा है, कहकर छोड़ दिया गया। बाजार, बैंकिंग और सरकारी नीतियां एक ही दिशा में चलती दिखाई देती है। मसलन, गाँवों में क्रोस ब्रीड गाय पर ही लोन दिया जाता है। देसी गाय पर लोन नहीं मिलता। यही स्थिति जैविक खेती के साथ है। इसे बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया। रासायनिक खेती की अपेक्षा जैविक खेती को नीतिगत सब्सिडी और बाजार का समर्थन मिले, किसानों और लोगों को जागरूक किया जाये कि न केवल स्वास्थ्य बचेगा बल्कि वातावरण भी साफ रहेगा।

जैविक खेती मुश्किल है पर असंभव नहीं है : भूमि उर्वरता में आई जबरदस्त गिरावट का एक ही इलाज है कि हम अपनी परम्परागत जैविक खेती की ओर लौटें। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि 100 प्रतिशत ऑर्गेनिक उपज पाने के लिए समूचे क्षेत्र में जैविक खेती के लिए किसानों को मानना और समझाना होगा। ऐसा इसलिए कि एक-दो किसानों के जैविक खेती अपनाने से पूरे क्षेत्र पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। जहरीले तत्व वायु, वर्षाति जल तथा भूमिगत जल के माध्यम से सर्वत्र फैल जाते हैं। जैविक खेती अपनाने पर एक बार फसलोत्पादन काफी कम हो जाता है। पाँच या छ: साल तक लगातार जैविक खेती होने पर उत्पादन रासायनिक खेती से अधिक हो जायेगा। परन्तु 5-6 वर्ष तक किसानों को धैर्य के साथ इस प्रतिस्पर्धा के युग में रख पाना असम्भव लगता है। एक बार फसल कम होते ही फसलों के भाव आसमान छूने लगते हैं ऐसे में किसानों को मनाना दुष्कर लगता है।

मुश्किलें हैं तो रास्ते भी हैं : रासायनों का उपयोग एकदम बंद न कर कुछ मात्रा में करें व कुछ मात्रा में ऑर्गेनिक खादों का करें। धीरे-धीरे रसायनों का उपयोग कम होते-होते बन्द हो जायेगा। कीटनाशकों के स्थान पर गऊमूत्र, नीम, आक, धतूरा व लहसून आदि का प्रयोग करके फसलों को बीमारियों से व कीटों से बचा सकते हैं।

उचित बीजारोपण : क्षेत्र में ग्वार व गेहूँ की बीजाइ अब भी बीज छिड़क कर की जाती है। जबकि एक समान दूरी पर बुवाई हो तो न केवल रासायनिक खाद कम लगेगी वरन् पोधों की ऊँचाई भी पर्याप्त होगी। एक नया तरीका यह है कि बुवाई के लिए जमीन को उथल-पुथल करने के बजाए गहराई तक खोदकर बुवाई की जाये इससे जमीन के आवश्यक तत्व नष्ट नहीं होंगे। तथा जमीन की उमस का भी पर्याप्त इस्तेमाल हो सकेगा। जमीन का उपजाऊपन बढ़ाने के लिए ढेंचा, या ग्वार को प्रमुख फसल की बुवाई से पहले करें। इसकी शुरूआत खरीफ की फसल के साथ करें तथा धीरे-धीरे जैविक खेती की ओर लोटें तो हम न केवल खाद्यान की बढ़ती आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं बल्कि नष्ट होते पर्यावरण को भी बचा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आपदा प्रबन्धन केन्द्र (2007) ह.च.मा. राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान, जयपुर।
2. अग्रवाल, आर.के. एण्ड लहरी, ए.एन. (1981) : 'इवेल्यूएशन ऑफ सोइल फर्टिलिटी स्टेटस ऑफ स्टेबलाइज्स डयून्स ऑफ दी इन्डियन डेसर्ट, एग्रो केमिका, वोल' 25
3. एबरल आई.पी. और जे. वेंकटेश्वरलू (एड. 1991) : 'प्रास्पेक्टस ऑफ इंदिरा गांधी कैनाल प्रोजेक्ट'; आई.सी.ए.आर. पब., न्यू दिल्ली।
4. भण्डारी आर.एस. (1991) 'एप्लिकेशन ऑफ डवलप्ड टेक्नोलोजिस इन एरिड जोन फोरेस्ट्री एण्ड फ्यूचर प्रायरिटिस' प्रोसिडिंग्स ऑफ द नेशनल सेमीनार ऑन 'अफोरेस्टेशन ऑफ एरिड लैण्डस' जोधपुर।
5. चौहान, डी.एस. : कृषि भूमि की उपयोगिता का अध्ययन, शिव लाल एंड कम्पनी, हास्पिटल रोड़, आगरा।
6. गोयल एम.एम. (2001) पर्यावरण संरक्षण की महत्ता, अनुप्रिया पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
7. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा (2005) आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर।
8. मामोरिया, चतुर्भुज (1984) एग्रीकल्चर प्रोब्लम्स ऑफ इण्डिया, साहित्य भवन, आगरा।
9. नारायण, पी. (2000) विंड इरोसन इन वेस्टर्न राजस्थान, सेन्ट्रल एरिड जोन रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर।
10. पुरोहित एस.के. डॉ. (1968) पर्यावरण प्रदूषण कारण और निवारण,

एस.के. पब्लिशर्स, जोधपुर।

11. राजस्थान सरकार (2008), जल संग्रहण क्षेत्रों में उत्पादन गतिविधियां, जिला परिषद् (भू-संसाधन) प्रकोष्ठ, जयपुर राजस्थान।
12. गुप्ता एन.एल. (1979) 'राजसीन में कृषि विकास', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
13. गुर्जर, आर.के. (1991) : 'इरीगेशन इम्पेक्ट ऑफ डेसर्ट इकोलोजी, साइन्टिफिक पब्लि.', जोधपुर।
14. जोशी, प्रभाकर डॉ. (1998) वनौपधियाँ एवं वनवासी चिकित्सा, सुजस, जनवरी, 98, जनसम्पर्क निदेशालय, जयपुर।
15. कृषि विभाग, राजस्थान, उन्नत कृषि विधियाँ, रबी, सहायक, निदेशक कृषि, जिला परिषद्, जैसलमेर।
16. लहरी, ए.एन. (1980) : प्रोसोपिस सिनरेरिया इन रिलेशन टू सोइल एण्ड आऊटर कन्डीशन्स ऑफ इट्स हेबीटेट; इन एच.एस. मान एण्ड एस.के. एक्सेना (एडस) 'खेजरी (प्रोसोपिस सिनरेरिया) इन दि इंडियन डेसर्ट' सी.ए.जैड.आर.आई., जोधपुर।
17. मरु कृषि चयनिका, अकाल विशेषांक आई.सी.ए.आर., जोधपुर।
18. मान एच.एस. एण्ड प्रकाश, आई. (1983) : 'झाल्टिंग द मार्च ऑफ डेसर्ट', इकोडवलपमेंट इन द थार; डिपार्टमेंट ऑफ एनवायरमेन्ट एण्ड डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ., न्यू दिल्ली।

****

कृषि आधुनिकीकरण के प्रभावों का अध्ययन

जयदेव प्रसाद शर्मा* डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान**

शोध सारांश – कृषि आधुनिकीकरण हमारी परम्परागत कृषि में हुए नवाचारो का ही स्वरूप है। हमारी परम्परागत कृषि जीवन निर्वाह पद्धति पर आधारित थी, परन्तु जनसंख्या वृद्धि एवं बढ़ते व्यवसायीकरण ने कृषि क्षेत्र में नवाचारों के लिए विवश कर दिया। बढ़ती हुई जनसंख्या की उदर पूर्ति हेतु कृषि में आधुनिकीकरण आवश्यक हो गया। कृषि नवाचारों में उन्नत बीज, उन्नत खाद, कृषि के आधुनिक यन्त्र चलित उनकरणों के साथ साथ रासायनिक खाद एवं रासायनिक औषधियों सहित रासायनिक खरपवार नाशकों का प्रयोग किया जाता है। हरितक्रांति के पश्चात् कृषि उत्पादन तो बढ़ा है और हमने खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। परन्तु अत्यधिक रासायनों के उपयोग से हमारे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगे। रसायनों के छिड़काव ने मृदा के सूक्ष्म जीवों का अस्तित्व ही समाप्त करना शुरू कर दिया जिससे हमारी मृदा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और जैव – विविधता पर खतरा मंडराने लगा है। पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाये रखने की महती आवश्यकता है।

प्रस्तावना – कृषि में आधुनिकीकरण के लिए परम्परागत कृषि में नई तकनीक मशीनीकरण, रासायनिक खाद, नई किस्म के उन्नत बीज एवं विभिन्न कीटनाशक दवाईयों का कृषि क्षेत्र में उपयोग किया जाने लगा, जिससे कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व व आशातीत वृद्धि हुई और किसान जीवन निर्वाहन कृषि से ऊपर उठकर व्यापारिक कृषि की और बढ़ा। व्यापारिक कृषि में अधिक उत्पादन प्राप्त होने से किसानों में सम्पन्नता बढ़ने लगी तथा कृषि के क्षेत्र में नये परिवर्तन दिखाई देने लगे और कृषि उत्पादन भी प्रभावित होने लगा। कृषि में आधुनिकीकरण एक वैश्विक पहलू है।

शोध के प्रमुख उद्देश्य :

नव पीढ़ी के लिए संसाधनों का संरक्षण – प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य भविष्य में नव पीढ़ी के लिए पर्यावरण नियोजन व प्रबंधन के माध्यम से उपलब्ध संसाधनों का संरक्षण करना है ताकि आने वाली पीढ़ीयों के लिये संसाधन सुगमता से काम आ सके। प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण जिले के निवासियों का जीवन संघर्षमय होता है तथा संसाधनों के संरक्षण के अभाव मे हम उन्हें खोते जा रहे है। संसाधन घटते–घटते एक दिन लुप्त हो जायेंगे और आने वाली नव पीढ़ीयां इसके लिए हमें क्षमा नहीं कर सकेंगी।

संसाधनों का परिमाणात्मक एवं गुणात्मक स्वरूप – प्रस्तुत शोध अध्ययन में संसाधनों के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक स्वरूप को प्रस्तुत करना है। किस संसाधन से क्या परिणाम प्राप्त होंगे तथा उन परिणाम में गुणात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में अध्ययन करना है जिससे समय रहते संसाधनों को संरक्षित किया जा सके एवं गुणात्मकता का ह्रास रोक कर परिमाणात्मक वृद्धि की और अग्रसर किया जा सके।

कृषि पारिस्थितिकी का क्षेत्रीय आंकलन –प्रस्तुत शोध अध्ययन में जिले की कृषि एवं कृषिगत व्यवहार का अध्ययन किया गया है। कृषि पारिस्थितिकी से सम्बन्धित कारकों का क्षेत्रीय धरातल पर आंकलन करके विशुद्ध कृषिगत लाभ प्राप्त करने के उपायों पर जोर दिया गया है। जलवायु की विषय परिस्थितियों का सामना करते हुए पर्यावरण को सुदृढ़ बनाकर कृषिगत ऊपज कैसे बढ़ायी जा सकती है! कृषिगत नवाचार से सम्बन्धित तकनिकों का व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रयोग कर कृषि आदानों को बढ़ावा देना है।

तुलनात्मक लाभ का आंकलन –शोध अध्ययन में पारिस्थितिकी में प्रयुक्त की जा रही तकनीकों का प्रभाव जांचना है। रसायनिक एवं जैविक साधनों का प्रयोग किस रूप में एवं किस स्तर पर किया जा रहा है। रसायनिक एवं जैविक साधनों के प्रयोग से पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन कर प्राप्त लाभों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रभाव ऋणात्मक है या धनात्मक तथा कृषि आदानों में होने वाली बढ़ोतरी की दर श्रम साध्यता के साथ–साथ पारिस्थितिकीय संयोजन के स्वरूप को समझना है। केवल व्यक्तिगत लाभ कि अवधारणा के आधार पर कार्य करते हुए हम दीर्घकाल के लिए पारिस्थितिकी संयोजन के साथ बर्बर (क्रूर) व्यवहार तो नहीं कर रहे है। तत्कालीन लाभ के लिए उपयोग में लिए जाने वाले तकनीकी साधन समयोपरान्त कैसा प्रभाव छोड़ेंगे उनका तुलनात्मक अध्ययन करना है।

भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूपों का विश्लेषण –प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य जिले में अवस्थित भूमि संसाधन एवं उसके उपयोग का अध्ययन करना है। शस्य प्रतिरूपों के आधार पर यह ज्ञात करना है कि क्षेत्रीय भूमि पर शस्य प्रतिरूप क्या थे, वर्तमान में इन प्रतिरूपों में क्या बदलाव आये है तथा नविन तकनीकों का उपयोग करने पर क्या बदलाव आयेंगे। तुलनात्मक रूप से जिले में सिंचाई का प्रतिशत बहुत कम है। क्षेत्र विशेष में जहां सिंचाई के साधन उपलब्ध है वहां पर शस्य स्वरूप में कितना परिवर्तन आया है। सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों में पारिस्थितिकीय तुलना करना तथा तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

प्राथमिक सुविधाओं का विकास –प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य जिले में निवास करने वाली आवाम को मिलने वाली प्राथमिक सुविधाओं का अध्ययन करना है। आम जनता को मिलने वाली प्राथमिक सुविधाओं का स्तर जांचना है। किन क्षेत्र में इनका विस्तार किस स्तर पर है। प्राथमिक

*शोधार्थी (भूगोल विभाग) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत
** शोध निदेशक (भूगोल विभाग) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

सुविधाओं के अभाव में विकास की अवधारणा अधूरी होती है। जिले का क्षेत्रीय अध्ययन कर प्राथमिक सुविधाओं को विकसित करने के लिए मार्ग प्रशस्त करना है। जिले में शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन एवं संचार आदि के बारे में जानकारी एकत्रीत करके जिले में निवास करने वाले लोगों के जीवन स्तर सुधारने के लिए किन-किन सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता है, ये बतलाना है।

योजनागत लाभों में अभिवृद्धि -प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जिले में लागू की गयी विकास योजनाओं का अध्ययन करना है। महानरेगा, इंदिरा आवास, खाद्य सुरक्षा योजना, कृषि बीमा, धन लक्ष्मी योजना, वर्षा आधारित क्षेत्र विकास कार्यक्रम (आर.ए.डी.पी.), त्वरित चारा विकास कार्यक्रम (ए.एफ.डी.पी.), मौसम आधारित फसल बीमा योजना, त्वरित दलहन उत्पादन कार्यक्रम, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन आदि बहुत सी योजनाएं जिले में चल रही है। इनके धरातलीय स्वरूप की जानकारी करना है। इन विकास योजनाओं में जन भागीदारी के द्धारा इन योजनाओं में बुद्धिजीवियों एवं तकनीकी विशेषज्ञों को सम्मिलित करके जिले के विकास के लिए भावी पीढ़ी को जागरूक करना है। जिले की जागरूक जनता जब योजनागत विकास में भागीदारी निभायेगी तो क्षेत्र में योजनागत लाभों में अभिवृद्धि के साथ-साथ विकास के नये आयाम स्थापित होंगे।

भारतीय कृषि का आधुनिकीकरण- भारतीय कृषि में आधुनिकीकरण का प्रारम्भ 1960 के दशक से माना जाता है। जब किसान निम्नलिखित आधुनिक निवेशों का उपयोग करने लायक बन गया, बीजों की अधिक उत्पादन देने वाली किस्में, उर्वरक, मशीनीकरण, ऋण और विपणन सुविधाएं। केन्द्र सरकार ने 1960 में 'गहन क्षेत्र विकास कार्यक्रम' शुरू किया था। मैक्सिकों में विकसित अधिक ऊपज देने वाले गेहूँ के बीज तथा फिलीपिन्स में विकसित चावल के बीज भारत लाये गये थे। अधिक ऊपज देने वाले बीजों के अलावा रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का उपयोग भी शुरू किया गया तथा सिंचाई सुविधाओं में विस्तार और सुधार किया गया। इन सबके संयुक्त प्रभाव को 'हरित क्रांति' के नाम से जाना जाता है। कुछ विद्धान इसे हरित क्रान्ति कहने के बजाय 'भारतीय कृषि का आधुनिकीकरण' कहने लगे।

हरित क्रांति - हरित क्रांति ने देश के कृषि विकास को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी कारण भारत की खाद्यान्न के उत्पादन में सम्मानजनक स्थिति उभरकर सामने आयी है। लेकिन ये सब सिंचाई के लिए पानी, उर्वरकों तथा अन्य निवेशों के गहन उपयोग की किमत पर हो सका है। इसके परिणामस्वरूप स्वच्छ पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े है जैसे मृदा का लवणीकरण, मृदा प्रदूषण, पौषक असंतुलन, नए पीड़कों और रोगों का जन्म आदी। इससे पर्यावरणीय ह्यास से गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गयी है, जिनको समय रहते उपचारित नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ीयां हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

दूसरी और इससे केवल गेहूँ, चावल, मक्का आदी का उत्पादन बढ़ा, परन्तु मोटे अनाजों, दालों व तिलहनों का क्षेत्र व उत्पादन दोनों ही घटा। किसानों के मध्य आय-व्यय की खाई निरन्तर चौड़ी होती गयी, क्योंकि इसकी तकनीकें महंगी होने के कारण छोटे व सिमांत किसान आसानी से नहीं अपना सकते। फलस्वरूप अमीर तथा गरीब के मध्य दूरी बढ़ने लगी अर्थात् अमीर अधिक अमीर तथा गरीब अधिक गरीब होते चले गये जिससे अनेक सामाजिक समस्याओं व कुचेष्टाओं के जन्म के साथ-साथ क्षेत्रीय विषमताओं का जन्म हुआ। क्योंकि यह क्रांति मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश व बिहार के कुछ जनपदों तक ही सीमित रही। देश के अन्य भाग इससे अछुते रहे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'हरित क्रांति एक क्षेत्र विशेष, फसल विशेष एवं व्यक्तिविशेष की क्रांति थी जो आर्थिक असमानता, प्रादेशिक असमानता व सामाजिक असमानता जैसी गम्भीर समस्याओं की जन्मदात्री है।'

मशहूर कृषि वैज्ञानिक श्री एम.एस. स्वामीनाथन, जिन्हें भारत में हरित क्रांति का जन्मदाता कहते हैं, मानते है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भूख एवं गरीबी से निपटने के लिए जरूरी है कि हम पैदावार बढ़ाए पर ऐसा करते वक्त यह भी ध्यान रखें की पर्यावरण का विनाश न हो। कृषि उत्पादों का संवर्द्धन (प्रसंस्करण) करें और खेती में विविधीकरण की कला को अपनाएं, तभी किसान और कृषि का विकास एवं विस्तार संभव है। वर्तमान समय का कृषि आधुनिकीकरण हरित क्रांति से इसी अर्थ में भिन्नता रखता है। हरित क्रांति का लक्ष्य था उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाना, जबकि वर्तमान में लक्ष्य है आमदनी और रोजगार के अवसर, दोनों को बढ़ाना।

हरित क्रांति का प्रभाव - हरित क्रांति पर अनेक अध्ययन हुए हैं, जिनमें विद्धानों में काफी मतभेद हैं। कुछ ने इसे लाभदायक तो कुछ विद्धानों ने इसके नकारात्मक परिणाम बताये है। हरित क्रांति की थकान की चर्चा करते हुए लेस्टर ब्राउन और हालकेन ने अपनी पुस्तक 'Full Hass' में भविष्यवाणी की है कि सन् 2030 तक भारत को प्रतिवर्ष 4 करोड़ टन खाद्यान्न का आयात करना पड़ेगा जो 1966 के पूर्व के आयात से चार गुना होगा। सी.एच. हनुमंताराव ने अपनी पुस्तक "Technological Changes and Distribution of Gains in India" में इस प्रकार से अभिव्यक्त किया है कि 'यदि हरित क्रांति को उन्नत किस्म के बीजों एवं उर्वरकों के प्रयोग का एकमुश्त कार्यक्रम मान लिया जाए तो इसका रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त नलकूपों द्धारा भी रोजगार में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। श्रम गुणांक संकार्य क्षेत्र के संबंध में सबसे अधिक व उसके बाद उन्नत किस्म के बीजों और सिंचाई का स्थान आता है।'

यह एक चिन्तनीय विषय है कि उपर्युक्त वर्णित हरित क्रांति के प्रभाव अब कुछ धीमे पड़ गये है। नई तकनीक का प्रयोग इसके विकास के आरम्भ के दशक में ही रहा है और अब प्रभाव मन्द होता जा रहा है। यदि यह कहा जाये कि उत्पादकता में उच्च सीमा के बाद 1973-74 से ही प्रतिकूल प्रवृत्ति देखी गई है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसी स्थिति में हरित क्रांति को पुन: हरी-भरी करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त वर्णित परिस्थितियों में यह प्रश्न उपस्थित होता है कि अपेक्षित नई व्यूह रचना क्या हो, ताकि उत्पादकता की वृद्धि और इसके लाभों को देश के सभी भागों तक पहुंचाया जा सके। इसके लिए नवीन कृषि व्यूह रचना को परिमार्जित रूप देकर कृषि पारिस्थितिकी संरक्षण के साथ उत्पादकता वृद्धि प्राप्त की जा सकती है।

पारिस्थितिकीय संरक्षण- विकास एवं जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए हरित क्रांति के बाद भारत को पारिस्थितिकी संतुलन बनाये रखते हुए विकास की ओर कदम बढ़ाने के लिए 'सदा बहार क्रांति' की आवश्यकता है, जो पर्यावरण संतुलन बनाये रखते हुए देश में उत्पादन, आय, रोजगार बढ़ाने में सहायक हो। इसके लिए हमें अपनी विकास नीति एवं कृषि अनुसंधान क्षेत्र में निर्देशात्मक परिवर्तन के साथ जनजागृति के द्धारा सामाजिक परिवेश को पारिस्थितिकीय पर्यावरण का हितेशी बनाना होगा। यह सदाबहार क्रांति व्यवस्था ऐसे परिवर्तनों पर आधारित होनी चाहिए जिससे कि बिना किसी पर्यावरणीय

एवं सामाजिक क्षति के उत्पादकों (कृषकों) को अधिक भूमि, जल, उर्वरक, उन्नत बीज एवं श्रम संसाधन उपलब्ध कराया जा सके, इसके लिए हमें उत्कृष्ठ कृषि व्यवस्था एवं तकनीकी ज्ञान पर आधरित व्यापक कृषि नीति अपनानी होगी। कृषिगत उत्पादन वृद्धि तभी संभव है जब हम कृषि में नवाचार को शामिल कर कृषि आदानों की क्षमता को बढ़ा सकें। हम खाद (उर्वरक) सिंचाई एवं उच्च उत्पादन क्षमता वाले बीजों के संदर्भ में नवाचार के साथ उत्पादन वृद्धि प्राप्त करने की पर्याप्त संभावनाएं है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रभाव एवंसंरक्षण – जिले की अधिकांश जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़ी हुई है। पर्याप्त कृषि भूमि होने के बावजूद भी भौगोलिक वातावरण की विषमता व राजनीतिक उपेक्षा के कारण जिले में कृषि के विकास की और पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है ना ही जिले में पारिस्थितिकीय विकास से सम्बन्धित शोध कार्य हुआ है। जबकि जिले में कृषि विकास की असीम संभावना उपलब्ध है, जिसे नवाचारों के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है तथा जिले की कृषि पारिस्थितिकीय बाधाओं की पहचान करके उनके समुचित समाधानों द्वारा, जिले की कृषि में प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा तथा जिला कृषि विकास की ओर अग्रसर होगा। जिले में कृषि विकास से जिला आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न होगा। अतः चुरू जिले की कृषि पारिस्थितिकी, पर्यावरण प्रदूषण व प्रबंधन का अध्ययन जिले के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सरकार कृषि विकास हेतु कृषि विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि मशीनों का उपयोग, नई उच्च किस्म के बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक औषधियां आदि उपलब्ध करा रही है। वन विभाग व पौध संरक्षणशाला के माध्यम से पेड़-पौधे लगाये जा रहे है। 'हरियालो राजस्थान' के माध्यम से राजस्थान पत्रिका ने इस क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया है, परन्तु आत्मिक जागृति के अभाव में यह केवल फोटो खिंचवाने तक ही सिमित रह गया है। कृषि विकास के लिए सरकार ने साख संस्थाओं की स्थापना, कृषि ऊपज मण्डीयों की स्थापना, सिंचाई के लिए विभिन्न संसाधन जुटाना, किसानों को विपणन सुविधाएं उपलबध कराना, फसलों की न्यूनतम कीमतें सरकार द्वारा निर्धारित करना, सामाजिक वानीकी पर जोर देना, वनों का विकास व संरक्षण देना आदि सभी सुविधाओं के माध्यम से, कृषि पारिस्थितिकी पर्यावरण नियोजन व प्रबन्धन होने लगेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जसवीर सिंह-'डिटरमिनेट ऑफ एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिविटी', 1986.
2. बी.एल. शर्मा-'एग्रीकल्चरल हाइपोलॉजी ऑफ राजस्थान', 1983.
3. अली मोहम्मद-'सिविलाइजेशन ऑफ एग्रीकल्चरल फूड एण्ड न्यूट्रेशन इन रूरल इण्डिया', 1978.
4. मोहम्मद शफी-'मेजरमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिविटी एण्ड रीजनल इन बैलेन्स', 1980.
5. आई.जेड. भाटी-'इम्पेक्ट ऑफ राजस्थान केनाल प्रोजेक्ट ऑन सोशियो इकोनॉमिक एण्ड एनवायरमेन्टल कंडिशन', 1981.
6. एन.एल. गुप्ता-'राजस्थान में कृषि विकास', 1979.
7. बी.एल. शर्मा-'कृषि भूगोल', 1984.
8. नेत्रराम यादव-'राजस्थान में दौसा जिले की पड़ती भूमि का भौगोलिक अध्ययन', 2000
9. धर्मपाल गुर्जर-'अलवर जिले में कृषि का पारिस्थितिकी एवं जनसंख्या घटात्मकता का एक भौगोलिक अध्ययन', 2002
10. सुमन धाभाई-'राजस्थान में कृषि का परिवर्तित स्वरूप', 1999.
11. पप्पूलाल गुप्ता-'जयपुर जिले में कृषि का आधुनिकीकरण', 1991.
12. मुकेश चन्द्र शर्मा-'लालसोट तहसील में कृषि का आधुनिकीकरण', 2002.

****

A Dilemma of an Outsider in Rama Mehta's *Inside the Haveli*

Dr. Jatinder Kohli*

Abstract - Women have been struggling through identity crisis since ages. They have always faced many problems with a happy heart and that is the reason why women's writing is full of women's plight, condition and dilemma. This paper is an attempt to analyze the condition of women and their struggle to establish their identity. It will also pour light on women's compromises and how they try to adjust in a totally different atmosphere. This is a modest attempt to bring the compromises of a woman to the notice of the readers.
Keywords - Compromises, identity crisis, married women, rituals, modernity.

Introduction - Women are God's best creation as they know the art of living, art of adjustment and art of patience. They play so many roles but they are never treated as protagonists. They can be found running here and there in the house and working hard to do their work. They are responsible but their experiences are muted. They feel alien in their own house. They become voiceless and that is why women writers have try to be their voice. They do a lot to make a house 'home' but their efforts are seldom acknowledged.

Women writers often write about women's plight, dilemma and identity crisis. There have been writers like Anita Desai , Kiran Desai, Manju Kapur , Githa Hariharan , Shashi Deshpande and many more who talk about women's dilemma and condition through their writing. One such writer is Rama Mehta who is best known for her award-winning novel *Inside the Haveli.*

Rama Mehta was born in Nainital in 1923.She had done a lot of study on Educated Indian Women who swing between tradition and modernity. Her proposed novel is also a story of one such woman who is totally modern and is married in a royal family of Udaipur and she has to adjust in a totally different environment. She used to live in a nuclear family before marriage and in the royal family, she has to live together with so many people who feel comfortable interfering in her matters.

This novel can be seen as perfect blend of social observation and autobiography and it can be seen as an account of writer's own journey as she too got married to a Lecturer who belonged to feudalistic aristocratic *haveli* in Udaipur. Her protagonist Geeta is a modern woman and she has to compromise a lot after her marriage. Geeta's story can be seen as the story of most of the Indian girls who feel alienated after marriage due to a totally changed environment. This change of location causes identity crisis and dilemma. K Radha opines :

> The title of the novel *Inside the Haveli* is not just descriptive. It is a search or an exploration of one's own self: one's identity which is lost in the labyrinthine tradition and customs of society. The book has its own motion; a soft stir of values, perceptions and attitudes. It covers the period of fifteen years in the life of two characters- Geeta, the heroine and the other character being the Haveli, a silent witness to the entire era. (Dhawan 202)

Geeta is the representative of new woman who is brought up in Bombay and who studied in a co-ed school but gets married to Ajay at the age of nineteen and comes to her new home which is traditional and conservative. Geeta's feeling are best expressed in these lines when she says, "No one expressed their feelings here . They covered their emotions , everyone moved cautiously, every word was weighed before it was spoken."(33) This was her view about her new home where women were supposed to be in purdah and not express their views or raise their voices but being a new woman she found it good as it allowed her to think as she says, " Geeta even starts loving the veil because it hides her face and this allows her to think while others talk."(19) The opening and ending of novel are symbolic of Geeta's journey as K.R. Srinivas Iyengar says, " In the end, she becomes the mistress of the Haveli, feeling a pride in what is best in the family tradition and trying in other respects to make the Haveli community of relations and dependents move with the times, making sure of each forward step"(Dhawan 213) but her journey was not easy when she came to Udaipur. To quote:

> The moment Geeta landed in the platform of Udaipur she was immediately encircled by women singing but

*Lecturer, Department of English, Government College, Kota (Raj.) INDIA

their faces were covered. One of them came forward, pulled her sari over her face and exclaimed in horror, ' where do you come from that you show your face to the world?' Geeta, bewildered, frightened managed to get into the car without talking to the women who followed her , singing as loud as they could."(17)

The writer has also tried to display the real mentality of patriarchal set up where character of Lakshmi is not considered as a good character as she is a wandering woman and Geeta struggles a lot and feels alienated but still she remains part of the culture. She used to roam everywhere in her father's family but in her in-laws' house, she is not supposed to go to that place which is reserved for men. It is a journey of a modern woman who gradually starts behaving perfectly as the mistress of the *haveli*. The novel ends abruptly telling the superiority of tradition over modernity. A.G.Khan opines : In the process of silent revolution without blowing trumpets or without offending any she induces her mother-in-law with a feeling of warmth towards modernity"(44)

Geeta is warned against talking too much and her mother –in-law proudly says, "I want to show them that even an educated girl can be moulded. That I was not wrong in selecting you as the wife of my own son."(26) These were her mother-in-law`s views but other women said, "She will never adjust. She is not one of us."(29) Geeta proved these women wrong as she not only adjusted but also tried to be affectionate with everyone. According to K.Meera Bai:

She is shown to be enacting various roles- of a mother, a wife, a daughter and a sister-a cog in the family machine but never as an individual claiming her life to be her own, wherein she could seek personal gratification and self fulfillment .This is mainly due to the prevailing patriarchal society where the authority emanates from the eldest male of the family.(16)

Geeta is all alone and she has to cover her face all the time and she wants to live freely but she is unable to do so and this is the story of most of the Indian Women who have to live in the same dilemma and who have to adjust and compromise to live a successful married life. Here it is important to notice that their marriage must be successful, no matter if they are not living a happy married life. The same happens in this novel where insiders of Haveli are cut –off from the outside world, here it is important to recognize these insiders who are women only.

Geeta is not able to adjust in the beginning and she finds the Haveli as a cage but being an Indian women, she learns the art of adjustment, compromise and being voiceless and she gets settled in the new boundaries. This novel is an eye-opener which talks about the condition of women in India where they have to compromise a lot to be a part of the family.

Thus, to conclude, one can say that this novel is superb presentation of a girl's journey from a daughter to a wife and a daughter-in –law who tries her level best to do what she wants to and ultimately learns the art of being happy in adverse conditions and unfavorable circumstances. This novel can be seen as the story of most Indian Women who are still juggling and are living in a dilemma to run the institution of marriage successfully.

References:-

1. Bai,K.Meera. *Women's Voices*. New Delhi. Prestige Books ,1996.
2. Dhawan.R.K.,ed. "Geeta and the Problems of Adjustment in Inside the Haveli." Indian Women Novelists,set 1 ,vol4 .New Delhi: Prestige Books,1991.
3. Iyengar, K.R. Sriniwasa. Indian Writing in English. Delhi:Sterling,1984.
4. Khan, A.G. "*Inside the Haveli*- The Silent Transformation". Feminist English Literature .Ed. M.K Bhatnagar. New Delhi: Atlantic Publishers,2003.p43
5. Mehta, Rama.*Inside the Haveli*.1977.New Delhi: Penguin,1996.

****

अनुसूचित जनजाति विकास कार्यक्रम का अध्ययन

डॉ. पुनीता चोर्डिया*

प्रस्तावना – राजस्थान सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ बनाई गई एवं अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में लागू भी की गई, पर इन योजनाओं का लाभ अनुसूचित जनजाति के वे क्षेत्र लिये गये जो कि पहले से ही विकसित व आगे की सूची में थे। वह क्षेत्र जो विकास की मुख्य धारा से जुड नहीं पाये, उनको आगे के लिये यह योजनाओं बनी। उन क्षेत्रों में बॉसवाड़ा जिला भी एक है। आज यहाँ पर विभिन्न योजनाएँ व स्वयंसेवी संस्थाये कार्य कर रही है, परन्तु इन अनुसूचित जनजातियों तक कितने विकास कार्यक्रमों की पहुँच हुई है या लोगों द्वारा उनका लाभ उठाया गया है। इसी बात को मध्य नजर रखते हुऐ 'अनुसूचित जनजाति विकास कार्यक्रम का अध्ययन' शीर्षक चुना गया।

जिला बाँसवाड़ा का परिचय – राजस्थान के सुदूर दक्षिणी भाग में मध्यप्रदेश एवं गुजरात राज्य की सीमा पर बॉसवाड़ा जिला अवस्थित है। यह प्राचीन वागड़ क्षेत्र का ही भाग है। बांसवाड़ा एवं डुंगरपूर जिले अभी भी वागड़ क्षेत्र के नाम से पहचाने जाते है। जिला की सीमाएँ दक्षिण में गुजरात राज्य का पंचमहल एवं मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला तथा पूर्व में चित्तोडगढ़ एवं मध्यप्रदेश का रतलाम जिला तथा पश्चिम में डुँगरपूर जिला स्थित है। यह जिला अरावली की पर्वत श्रंखलाओं से घिरा हुआ है। वनों की दृष्टि से यह जिला अपेक्षाकृत बेहतर था परन्तु वृक्षों की लगातार कटाई, वर्षा का निरंतर गिरता औसत एवं खनिजों का लगातार दोहन तथा विपरित परिस्थितिक कारणों से वन आच्छादित क्षेत्रों में काफी कमी आयी है। जनसंख्या की दृष्टि से बॉसवाड़ा जिला राज्य में 49वें एवं क्षेत्रफल की दृष्ठि से 28वें स्थान पर है। जिले में बहने वाली मुख्य नदियों में माही, अनास एवं सहायक नदियों में हिरन, चाप, कागदी आदि है। इस जिले की जलवायु अर्द्द शुष्क है।

बाँसवाड़ा जिला राज्य के दक्षिणी भाग में 23' 44 और 23'56 उत्तरी अक्षांश तथा 73'58 और 74'47 देशान्तर के मध्य 5077 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। जिला खनिज सम्पदा की दृष्टि से सम्पन्न हैद्य जिले में मार्बल, सोपस्टोन, डोलोमाईट, लाईमस्टोन, मेसेनरीस्टोन, बजरी, ईंट की गिट्टी के पर्याप्त भण्डार है। जिले के घाटोल तहसील में सोने के भण्डारों का पता चला है व इस सम्बन्ध में सर्वेक्षण का पता चल हल है। जिला एतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जिले में रेल सुविधा उपलब्ध नहीं होने से जिले के विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ा है यदि जिले को रेल सुविधा उपलब्ध हो जाती है तो क्षेत्र में विकास को और भी गति मिल सकती है।

जनजाति क्षेत्र में जनजाति परिवार हेतुसंचालित मुख्य विकास कार्यक्रम – जनजतति क्षेत्र विकास विभाग (टी.ए.डी.) द्वारा जनजाति के उत्थान हेतु निम्नानुसार जिला बाँसवाड़ा में कार्यक्रम संचालित किये गये है –

- आवास योजनाएँ

1. इन्दिरा आवास योजना

- रोजगार कार्यक्रम

1. सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना
2. अकाल राहत कार्य
3. प्रधानमंत्री रोजगार कार्यक्रम
4. स्वर्ण जयन्ति ग्राम स्वरोजगार योजना
5. प्रधानमंत्री सडक योजना
6. स्वर्ण जयन्ति शहरी रोजगार योजना
7. गरीबी उन्मूलन संधन विकास योजना
8. स्वयं सहायता समूह
9. किसान क्रेडिट कार्ड
10. खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की मार्जिन मनी ऋण योजना

- सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ

1. वृद्धावस्था पेंशन
2. विधवा पेंशन योजना
3. बालिका समृद्धि योजना
4. विधवाओं की पुत्रियों के विवाह पर अनुदान
5. आँगनबाडी कार्यक्रम एवं पोषाहार
6. सार्वजनिक वितरण प्रणाली
7. काम के बदले अनाज योजना
8. अन्त्योदय अन्न योजना
9. राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना
10. बालिका गृह

- स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाएँ

1. टीकाकरण
2. स्वास्थ्य जाँच एवं नि:शुल्क दवाईयों का वितरण
3. परिवार कल्याण कार्यक्रम नसबन्दी आदि

- पशुपालन योजनाएँ

1. डेरी विकास कार्यक्रम
2. पशुओं में टीकाकरण बन्धयाकरण/ पशु उपचार
3. चारा डिपों से चारा उपलब्ध कराना

*व्याख्याता (गृह विज्ञान) हरिदेव जोशी राजकीय कन्या महाविद्यालय, बांसवाडा (राज.) भारत

4. कृत्रिम गार्भाधान योजना
5. बकरी पालना / भेड़ पालना

- शिक्षा सम्बन्धी योजनाएँ

1. नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण
2. जनजाति छात्रावासों में नि:शुल्क शिक्षण एवं आवासीय सुविधा
3. छात्र गृह किराया योजना
4. प्रतिभावना छात्रवृति योजना
5. एकलव्य खेल छात्रावास सुविधा
6. बालिका शिक्षा
7. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम
8. अनौपचारिक शिक्षा
9. नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना
10. राजीव गाँधी पाठशाला
11. प्राथमिक / माध्यमिक शिक्षण सुविधा

- कृषि विकास कार्यक्रम –

1. भू–संरक्षण कार्यक्रम
2. खाद /बिज वितरण
3. नि:शुल्क पौध वितरण
4. फसल बीमा योजना

- सिंचाई सुविधाएँ –

1. कुएँ गहरे कराने एवं ब्लास्टिंग सुविधा
2. व्यक्तिगत एवं समूह डीजल पम्प वितरण
3. लिफ्ट योजना
4. एनीकट निर्माण एवं नालाबन्दी

- विद्युतीकरण योजनाएँ –

1. कुटीर ज्योति योजना
2. कुँओं का विद्युतीकरण

समस्या का विवरण – वर्तमान समय में देश में परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही है, हर क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे है किन्तु भारतीय समाज में एक ऐसा क्षेत्र है, जो कई वर्षो से पिछड़ा हुआ है वो क्षेत्र भारतीय समाज में जनजाति इलाकों का है। जनजाति समाज में आज भी कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिला। जनजाति में आज भी लोग विकास कार्यक्रमों से बेखबर छडेपन के शिकार है। यहाँ जनजाति के लोग ही नहीं बल्कि उनके बच्चे भी पिछडेपन के शिकार हैद्य क्योंकि ये जनजाति के लोग अशिक्षित एवं अज्ञानता से पिड़ित है, इसलिए ये जनजाति के लोग वैज्ञानिक एवं कम्प्युटरीकृत दौर में ऊपर नहीं उभर पाते है! जनजाति के लोगों की सबसे बडी एवं गम्भीर समस्या यह है कि ये उन पिछडे इलाकों में निवास करते है यहाँ हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध हो पाना अत्यन्त कठिन है, और इनकी दूसरी एवं सबसे गम्भीर समस्या यह है कि ये जनजाति समाज के लोग पढे लिखे नहीं है यानि यहाँ पर अशिक्षा, गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी समस्याएँ अधिक रहती है। अत: मैं उन जनजाति लोगों के बारे में जानना चाहता था जो लम्बे समय से संघर्ष करते रहे है और जीवन यापन करते रहे है इसलिए अध्ययन का विषय 'अनुसूचित जनजाति विकास कार्यक्रम का अध्ययन' ना हैं और उनकी समस्याओ को समझने एवं दूर करने का प्रयास किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

सम्पादित अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार प्रस्तावित है –

1. अनुसूचित जनजाति के लोगों की पारिवारिक व सामाजिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
2. अनुसूचित जनजाति के लोगों की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
3. अनुसूचित जनजाति विकास कार्यक्रमों के प्रति लोगों. की जागरूकता का पता लगाना।
4. इन विकास कार्यक्रमों का जनजाति लोगो पर प्रभाव का पता लगाना।
5. अनुसूचित जनजाति विकास कार्यक्रमों के उपयोग में आ रही कठिनाईयों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
6. विकास कार्यक्रमों के प्रति जनजातिय लोगों की सोच एवं दृष्टिकोण की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन का प्रकार (वर्णनात्मक शोध प्रचरना) – अध्ययन का शीर्षक अनूसूचित जनजाति विकास कार्यक्रम का अध्ययन है।
वर्तमान अध्ययन का स्वरूप वर्णनात्मक है।

1. वर्णनात्मक शोध प्रचरना :

- विषय या समस्या के सम्बन्ध में वास्तविक तथ्यों के आधार पर वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत करना वर्णात्मक शोध प्रचरना का मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए यह आवश्यक होता है कि विषय के सम्बन्ध में हमें यथार्थ तथा पूर्ण चनाएँ प्राप्त हो जाए, क्योंकि इसके बीना अध्ययन–विषय या समस्या के सम्बन्ध में हम जो कुछ भी वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत करेंगे वह वैज्ञानिक न होकर केवल दार्शनिक ही होगा। वैज्ञानिक वर्णन का आधार वास्तविक व विश्वसनी तथ्य ही है।
- अत: यदि हमें किसी समुदाय की जातिय संरचना, शिक्षा स्तर, आवास अवस्था प्रस्तुत करना है तो हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम इनसे सम्बन्ध वास्तविक तथ्यों की किसी एक या एकाधिक वैज्ञानिक प्रविधि के द्वारा एक शोध–प्रचरना को व्रिकसित किया जाए। जिस शोध प्रचरना का उद्देश्य वर्णनात्मक विश्लेषण श्रस्तुत करना होता है उसे शोध–प्रचरना कहते है द्य इस प्रकार की शोध–प्रचरना में तथ्यों का संकलन किसी भी वैज्ञानिक प्रविधि के द्वारा किया जा सकता है। प्रायरू साक्षात्कार , अनुसूची और प्रश्नावली, सामुदायिक रिकार्ड का विश्लेषण आदि प्रविधियों को वर्णनात्मक शोध–प्रचरना में सम्मिलित किया जाता है

2. वर्णनात्मक शोध प्रचरना में निम्नलिगति बातों पट विशेष ध्यान देना पड़ता है

- सर्वप्रथम तो अध्ययन–विषय के चुनाव में सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। क्योंकि शोध का विषय इस प्रकार का होना चाहिए जिससे सम्बन्ध आवश्यक निर्भीग्य तथ्य हमें प्राप्त हो सके द्य वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करने की सर्वप्रथम शर्त यही है।
- दूसरी बात यह है कि इन तथ्यों को जिन प्रविधियों के द्वारा सबसे अधिक उपयुक्त रूप से संकलित किया जा सके उनका चुनाव भी खूब सावधानी से होना चाहिए। किसी भी शोध कार्य यर्थाथता प्रविधियों के उचित चुनाव पर निर्भर करती है। वर्णनात्मक शोध कार्य में इस प्रकार के चुनाव का और भी अधिक महत्व इस कारण है कि यदि चुनाव ठीक ढंग से नहीं किया गया तो शोध–कार्य में वैज्ञानिकता पनपने के ध्यान पर उसमें दार्शनिक तत्वों का अधिक प्रवेश हो जाएगा।
- मिथ्या–झुकाव आदि से सुरक्षा इस दिशा में तीसरी महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात है। चुँकि इस प्रकार के शोध में विषय के वर्णनात्मक पक्ष पर बल दिया जाता है अत: पक्षपात, मिथ्या–झुकाव, पूर्ण धारणा आदि के वर्णनात्मक विवरण में प्रवेश कर जाने की सम्भावना अधिक रहती है। अपने

वर्णन को अधिक रोचक तथा आकर्षक बनाने का लोभ सम्भालना प्राय: बहुत कठिन हो सकता है और शोधकर्ता के वर्णन में अतिशयोक्ति या अतिरंजना का पुट सरलता से देखने को मिलता हैद्य अत: हर प्रकार की स्थिति से बचने की आवश्यकता है।

- विशिष्ट व आकर्षक तथ्यों के सम्बन्ध में भी जाति सन्तुलित दृष्टिकोण को अपनानें की आवश्यकता है। वर्णनात्मक विवरण को एक ष्साधारणष रूप प्रदान करने के लिए प्राय शोधकर्ता अपना ध्यान आकर्षक एवं विशिष्ट तथ्यों पर अधिक केन्द्रित कर सकते है। पर यह प्रकृति वैज्ञानिक प्रकृति नहीं हो सकती है।
- अत: में शेष के व्यय में मितव्यायिता करने की भी आवयश्कता होती है वर्णनात्मक शोध-कार्य प्राय: विस्तृत होते है अत: यह जरूरी है कि शोध प्रयत्न को सीमित किया जाए। अनावश्यक मंदों पर न तो श्रम और न ही धन को बर्बाद करना उच्चित होता है।

3. वर्णनात्मक शोध में निम्नातिखित चरण आते है -

- शोध के उद्देश्यों का निरूपण वर्णनात्मक शोध का प्रथम चरण होता है। जिसके अन्तर्गत शोध से सम्बन्ध मौलिंक प्रश्नों का स्पष्टीकरण तथा लक्ष्यों को पारिमाषित करना साम्मिलित होना है जिससे कि अनावश्यक व सम्बन्ध तथ्यों का संकलन न हो तथा श्रम व धन की बर्बादी से बचा जा रकें।
- उद्देश्यों को स्पष्ट करने के पश्चात यह आवश्यक है कि तथ्य-संकलन की प्रविधियों का चुनाव उचित ढंग से कर लिया जाए क्योंकि यह चुनाव ठीक प्रकार से किए बिना विषय से सम्बन्ध निर्भर योग्य तथ्यों, आँकडो अथवा प्रमाणों को एकत्रित करने की कोई सम्भावना नहीं रहती है। समस्या तथा उद्देश्य के अनुसार हम कितनी उपयुक्त पद्दति का चुनाव करने में सफल होते है। इस बात पर सम्पूर्ण शोध-कार्य की सफलता निर्भर करती है।
- निदर्शन का चुनाव इस दिशा में तीसरा आवश्यक चरण है क्योंकि समूह के प्रत्येक सदस्य या विषय की प्रत्येक इकाई का अध्ययन करना अत्यन्त कठिन है। अत: निदर्शनों का चुनाव अर्थात सम्पूर्ण जनसंख्या की कुछ प्रतिनिधि इकाईयों का अध्ययन उपयोगी सिद्द हो सकता है क्योंकि इस प्रकार के अध्ययन के आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के विषय में विश्वसनीय निष्कर्ष निकाला जा सकता हैद्य इन प्रतिनिधि इकाईय्रों के चुनाव में भी मिथ्या-झुकाव से बचने की आवश्यकता है।
- आँकडो का संकलन तकि उनकी जाँच इस दिशा में चौथा चरण माना जाता है। निदर्शनों के चुनाव के उपंरान्त यदि आवश्यक हो जाता है कि प्रतिनिधियों की सहायता से आवश्यक ऑकडो का संकलन ही किया,(उचित ढंग से हो) ताकि वर्णनात्मक सूचनाएँ एकत्र की जा सकती है अत: वैज्ञानिक अथवा निरीक्षण कर्त्ता सामग्री संकलन के समय भी कार्यकर्त्ताओं पर नियमित रूप से निगरानी रखनी चाहिए।
- परिणामों का विश्लेषण इस दिशा में पंचम चरण है और इस का अर्थ है जिन आँकडो अथवा तथ्यों का संकलन किया गया है। उनका समानता या भिन्नता के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकरण, सारणीयन तथा अन्य सांख्यिकीय विवेचना है। शुद्धता तथा प्रशिक्षण इस कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ है। अत: इस स्तर पर अत्यन्त निगरानी रखने की आवश्यकता रहती है।
- अन्तिम स्तर रिपोर्ट कर प्रस्तुतीकरण आता है जिसमें शोधविषय के सम्बन्ध में तथ्य युक्त (बिजनेस) विवरण तथा सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। इस स्तर पर भाषा के प्रयोग कर विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। क्योंकि अत्यधिक अलंकार युक्त भाषा से विषय के विवरण में अतिरंजना पनप सकती है और उसका विभिन्न लोगों के द्धारा विभिन्न अर्थ लगाए जाने का भी डर रहता है। इन समस्त चरणों से सफलतापूर्वक गुजरने के पश्चात्य ही वर्णनात्मक शोध-कार्य अपने उद्देश्य की पूर्ण कर सकता है। अत: वर्णनात्मक अध्ययन को महत्व देते हुए अपना सम्पूर्ण कार्य वर्णनात्मक अध्ययन के अनुरूप सम्पूर्ण किया है।

प्राक्कल्पना :

1. अध्ययन की प्राक्कल्पना के क्रम में जनजाति क्षेत्र में संचालित कार्यक्रम का लाभ जनजाति परिवारों को इसलिए नहीं मिल पा रहा है क्योंकि जिला बाँसवाड़ा का आदिवासी अन्य क्षेत्रों की तुलना में अशिक्षित आर्थिक दृष्टि से कमजोर, नवीनतम तकनीकी साधनों एवं जानकारी का अभाव, सिंचाइ के साधनों का अभाव, महिलाओं में कुपोषण एवं दूरदराज बिखरी बस्तियों में निवास करने की प्रवृति आदि से।
2. यहाँ का आदिवासी जनजाति क्षेत्र में राज्य सरकार द्धारा संचालित विकास कार्यक्रमों का लाभ नहीं ले पा रहा है।
3. सम्भवत: उपलब्ध बिन्दु ही अध्ययन की प्राक्कल्पना से सम्बन्धित है। इसी प्राक्कल्पना से अध्ययन प्रारूप एवं क्षेत्र का चयन कर क्षेत्र का अध्ययन कार्य प्रारम्भ किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र - वर्तमान में जनजाति समाज के लोग कई इलाकों में रहते है हक उद्देश्य इस कार्य को पूरा करने के लिए अपने अध्ययन को ध्यान में रखकर गाँव टामटिया का चुनाव किया गया।

चयनित गाँव का परिचय - राजस्थान के जिलामुख्यालय बाँसवाड़ा शहर में 20-25 टामटिया गाँव एक विशेष पहचान रखता है। यह माही नदी के किनारे एव हर है। यहाँ के लोग से घिरा हुआ है। यहाँ पर शत्प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लोग निवास कर ज्यादातर प्रकृति पर निर्भर रहते है। इस गाँव की कुल आबादी 1339 जिसमें पुरूषों की संख्या 702,है जिसका तिशत 52.43 प्रतिशत है और स्त्रियों की संख्या 637 है जिसका प्रतिशत 47.57 प्रतिशत है। इस गाँव की आबादी बिखरी हुई एवं कही-कही पर समूहों में रह रहे है। इस गाँव के लोगों की दिनचर्या एवं जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि है, इसके आलावा पशुपालन, शिकार, मछली एवं भोजन संग्रह करने एवं भेड़ एलन आदि की क्रियाओं पर निर्भर है जिसकें कारण ये लोग प्रकति के प्रत्यक्ष और निकट सम्पर्क में रहते है और प्रकृति पर निर्भर रहते है। यहाँ की मुख्य फसल मक्का एवं चना है। ज्यादातर ग्रामीण सामुदायों का आकार छोटा होता है अत: गाँव के प्रति वर्गमील जनसंख्या का अनुपात शहरों की अपेक्षा बहुत कम होती है। यहाँ की जनसंख्या भी बहुत कम है 25 प्रतिशत जनसख्या इस गाँव में निवास करती है। जिसमें पुरूषों की संख्या 45 प्रतिशत तथा महिलाओं की संख्या 10 प्रतिशत है। यहाँ पर साक्षरता का प्रतिशत भी कम है क्योंकि यें एक तरफ बसा हुआ गाँव है। महिलाओं में 5 प्रतिशत साक्षर है जबकि पुरूष में 40 प्रतिशत साक्षर है। यहाँ के लोगों का प्रकृति से धनिष्ठ सम्बन्ध है यहाँ के लोग प्राय: प्रकृति की गोद में ही जन्म लेमे है और मरते है। यहाँ के लोग शुद्ध हवा, पानी, रोशनी, सर्दी, गर्मी आदि का अनुभव करते है। खुला वातावरण एवं स्वच्छ वातावरण, शीतल सुगन्धीत हवा, पेड़-पौधे लताएं और पशु-पक्षियों आदि में यहा के लोग रहदे है ये सभी ग्रामवासी ऋतुओं एवं प्राकृतिक दृश्यों का आन्नद लेते है। यह गाँव एक छोटे इलाकों में बसा हुआ है। अत: यहा पर प्राथमिक सम्बन्धों की प्रधानता है। गांव का आकर वि छाटा होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते है द्य उनके निकट , प्रत्यत और धनिष्ठ सम्बन्ध प्राय: यहां पर देखने को मिलते है। ऐसे सम्बन्धों का आधार परिवार कट प्रत्यक्ष और नातेदारी है।

यहाँ का जीवन सरल एवं सादा है। यहां के लोग नगर एवं शहर की तडक-भड़क, चमक-दकम, अआउम्बर और बनावटी जीवन से दूर है। यहां के लोग सरल एवं सादगी से जीवन यापन (व्यतीत) करते है। यहां का सामाजिक जीवन कठोर है क्योंकि समाज में किसी भी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नहीं है। यहां के लोग धर्म, प्रथा और रूढिवादी को अधिक महत्व देते है। यहां पर बाल-विवाह मृत्युभोज, विधवापुन: विवाह का अभाव, छुआछूत, दहेज आदि सभी प्रथाएँ है जो कि हानिकारक है और यहां देखने को मिलता है। यहां के लोगों में हमने सामुदायिक भावनाएँ भी देखी है जो कि एक दूसरे को वाँधे हुएं है। यहाँ के लोग सारे गाँव की भलाई के बोर में सोचते है। बाढ़, काल, महामारी और अन्य संकट के अवसर पर यहां के लोग मिलजुलकर घुकाबला करते है। हमने ज्यादातार यहाँ पर संयुक्त परिवार देखे है। यहाँ पर परिवार के सदस्य 5 साथ मिलजुलकर एक स्थान पर रहते है तथा पूजा-पाठ, भोजन साथ-साथ करते है तकि जहाँ पर संयुक्त परिवार है वहाँ पर परिवार का संचालन क्यों वृद्ध व्यक्ति करते हुए देखे गए है। उय साथ कृषि है। यहाँ पर 70 से 80 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कृषि द्वारा अपना जीवन यापन करते है। इस गांव में जातिप्रथा आज भी विद्यमान है। जाति के नियमों का उल्लंधन करने पर सदस्यों को जाति बहिष्कार, दण्ड अथवा जुर्माना आदि की सजा आज भी भुगतनी पड़ती है। यहाँ आज भी जजमानी प्रथा देखने को मिलती है, किसी कार्य के बदले अन्य वस्तु आदि देने का प्रचलन आज भी यहाँ देखने के मिलता है। इनके शादी-ब्याह में नोतरे पडने की प्रथा आज भी प्रचलित है यहां पर फैली हुई है। यहां के लोग भाग्यवादी है। क्योंकि अशिक्षा आज भी यहाँ पर फैली हुई है। इसलिए यहां के लोग अन्धविश्वास एवं भाग्यवादी है।

यहाँ एक ग्राम पंचायत है जिसमें मुखिया सबसे प्रधान होता है और उसकी बात मानता सबका धर्म होता है। यहाँ पर जनमत का अधिक महत्व है। पांच लोग जो कह दे उसे वे शिरोधार्य मानते है। पाँच लोगों के मुँह से निकला वाक्य ईश्वर के मुहँ से निकला वाक्य माना जाता है। जनमत की अवहेलना करने वाले की निन्दा की जाती है। यहाँ के लोग मिलजुलकर त्यौहार-उत्सव मनाते है, एक समान भाषा, प्रथाओं एवं जीवन की स्थिति अच्छी नहीं है। यहाँ पर बाल- विवाह, पर्दप्रथा, विधवा पुनरू विवाह का अभाव, आर्थिक दृष्टि से पुरूषों पर निर्भरता, पारिवारिक सम्पत्ति में अधिकार महिलाओं को प्राप्त नहीं है।

अशिक्षा यहां पर अधिक फैली हुई है यहां के लोग आत्मनिर्भर है। आर्थिक दृष्टि से सामाजिक दृष्टि से, सांस्कृतिक एवं राजनितिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है। यहाँ का राजनैतिक जीवन मुख्य रूप से ग्राम पंचायत होती है। इस गांव की अपनी संस्कृति है, अपनी विशेषता है किन्तु यहा पर निर्भरता, पारिवारिक सम्पत्ति में अधिकार नहीं हो पाया है। अभाव प्राय: देखा जाता है प्राय: यहां का पूर्ण रूप से औद्योगिकरण नहीं हो पाया है। यातायात के साधन साधनों का अभाव प्राय: देखा जाता है पूर्ण या अत: अध्ययन विषय के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए 25 ईकाईयों को चयन किया और उनसे तथ्य संकलित किये सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत तथ्य संकलित संकलन के लिए कई पद्धतियों द्वार अध्ययन किया जाता है जैसे अनुसूची, साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अवलोकन तथा प्रश्नावली अध्ययन विषय के अनुकल हल न होने के कारण इनका प्रयोग न करते प्रयोग किया गया है।

सर्वप्रथम शतप्रतिशत जनजाति बाहुल्य ग्राम एवं दुरस्त ग्रामीण क्षेत्र पिपलखुँट पंचायत समिति का ग्राम टामटिया का चयन किया गया द्य तत्पश्चात ग्राम के प्रत्येक मकान की लिस्टिंग की तत्पश्चात साधारण आदर्श पद्धति से 25 परिवारों गई का चयन कर क्षेत्र कार्य पूर्ण किया गया।

मैनें प्रारम्भिक अनुसूची बनाई इसकी पूर्व परीक्षा असम्बन्धित व अवंटित प्रश्नों करी छटनी करते हुए उसे अन्तिम रूप से तैयार किया गया जिसमें विषय के सभी पक्ष सम्मिलित हो गए। मैनें अध्ययन के अन्तर्गत साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग करते हुए अध्ययन की ईकाईयों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करके आमने-सामने की स्थिति में उनसे प्रश्न पूछते हुए तथ्य संकलित किये जिससे अध्ययन की पूर्ण जानकारी एवं गहराई तक पहुँचा जा सकें।

ऑकडा /सूचना संग्रह करने के साधन - अपने अध्ययन को सुचारू रूप से व्यवर्थित तरीके से पूर्ण करने के लिए अनुसूचियाँ बनाई और 25 उत्तरदाताओं का चयन कर साक्षात्कार विधि द्वारा अपनी परियोजना का कार्य पूर्ण किया। अध्ययन के क्षेत्र कार्य हेतु चयनित परिवारों से साक्षात्कार हेतु लाभार्थी अनुसूची की संरचना कर जनजाति परिवारों हेतु संचालित विकास कार्यक्रमों की जानकारी एवं उनसे होने वाले प्रभाव एवं कठिनाईयों की जानकारी ली गई।

इसी क्रम में कार्यक्रमों की जानकारी कार्यक्रों की सफलता एवं असफलता एवं आ रही कठिनाइयों एवं सुझाव पक्ष आमंत्रित करने के प्रयोजन से जनप्रतिनिधियों एवं ग्राम में कार्यरत सरकारी मशीनरी से सरकारी - गैरसरकारी अनुसूची के माध्यम से.सूचना संकलन का प्रयास किया।

चयनित ग्राम में जनजाति परिवारों हेतु संचालित कार्यक्रमों की जानकारी हेतु गाँव से सम्बन्ध पुरी जानकारी, ग्राम की जनसंख्या, शिक्षा सुविधाएँ, सिंचाई के साधन, मुख्य रोजगार के साधन, सिंचित / असिंचित कृषि भूमि, वन भूमि, चरागाह भूमि, महिला विकास कार्यक्रम, इन्दिरा आवास योजना, शिक्षा, स्वास्थ्य, पशुपालन आदि क्षेत्र मेंग्राम में संचालित इकाईयों की जानकारी संकलित की गई।

ऑकडो / तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण - प्रस्तुत अध्ययन उत्तरदाताओं के सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक परिवेश का विश्लेषण किया गया है।

व्यक्तिगत जानकारी

उत्तरदाताओं की आयु :

1. सर्वाधिक आवृत्ति वाले उम्र 15 से 30वर्ष के आयु वाले लोग 10 है, जिसका प्रतिशत 40 है।
2. 30 से 45वर्ष के आयु वाले लोग 6 है, जिसका प्रतिशत 24 है।
3. 45 से 60 वर्ष के आयु वाले लोग 5 है, जिसका प्रतिशत 20 है।
4. और 60से ऊपर आयु वाले लोग 4 है, जिसका प्रतिशत 16 है।

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति :

1. शिक्षा के क्षेत्र में अशिक्षित व्यक्तियों कीआवृति 20 है, जिसका प्रतिशत 80 है।
2. और प्राथमिक कक्षा तक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों का प्रतिशत 8 है।
3. उच्च प्राथमिक कक्षा वाले व्यक्तियों की आवृत्ति 2 है, जिसका प्रतिशत 8 है।
4. उच्च माध्यमिक कक्षा वाले व्यक्तियों की आवृति 4 है, जिसका प्रतिशत 4 है।

उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षित व्यक्तियों की संख्या काफी कम है और अशिक्षित व्यक्तियों की संख्या अधिक है। अशिक्षित उत्तरदाताओं ने बताया कि वे लम्बे समय से खेती बाडी के कार्य में व्यस्त है शिक्षा की अहमियत और आवश्यकता के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं है।

अध्ययन के दौरान यह भी ज्ञात हुआ है कि जनजातीय महिलाएँ भी शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछडी हुई है।

उत्तरदाताओं के पास जोत भूमि की स्थिति

1. सर्वाधिक जोत भूमि 1-3 बीघा है(अधिक आवृत्ति 16 है,) जिसका प्रतिशत 64 है।
2. जोत भूमि 4-6 बीघा है(9 आवृत्ति है), जिसका प्रतिशत 36 है।

उत्तरदाताओं द्धारा की जाने वाली फसल का विवरण -

1. मक्का की फसल करने वालों की संख्या 25 है।
2. गेहूँ की फसल करने वालों की संख्या 6 है।
3. उड़द की फसल करने वालों की संख्या 19 है।
4. और चने की फसल करने वाले लोग 10 ही है।

उत्तरदाताओं के कर्ज लेने की स्थिति

1. निजी संस्था से कर्ज लेने वाले 56%
2. साहकार तथा बनिया से कर्ज लेने वाले 28%
3. रिश्तेदार से कर्ज लेने वाले 4%
4. कर्ज नहीं लेने वाले 42%

निजी संस्था से कर्ज लेने वालों का प्रतिशत 56 है । साहकार व बनिया से कर्ज लेने वालों का प्रतिशत 28 है। जब कि रिश्तेदारों से कर्ज लेन वाले का प्रतिशत 4 है। जिन लोगों ने कर्ज नहीं लिया उनका प्रतिशत 42 है।

उत्तरददाताओं की राशन कार्ड का विवरण

1. बी.पी.एल. कार्ड - 8
2. ए.पी.एल. कार्ड - 11
3. अन्त्योदय कार्ड - 6

योग - 25

उत्तरदाताओं का बैंक में खाता विवरण

बैंक में खाता (हाँ) - 5

(नहीं) - 20

योग - 25

जिन लोगों का बैंक में खाता है उनकी प्रतिशत 20 है। जिन लोगों का बैंक में खाता नहीं है उनकी प्रतिशत 80 है।

उत्तरदाताओं के परिवार की स्थिति का विवरण

परिवार

छोटा परिवार न 16 (64%)

बड़ा परिवार 9 (36%)

प्रारम्भ में जो उपकल्पना बनाई थी कि जनजातीय क्षेत्र में संचालित विकास कार्यक्रमों का लाभ पूरी तरह से जनजातीय परिवारों को नहीं मिल पा रहा है, उनमें जागरूकता की कमि है और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े हुए है यह उपकल्पना तथ्य के आधार पर सत्य प्रमाणित हुई है।

निष्कर्ष - उपरोक्त समस्त विवरण से पता चला है कि इस आधुनिक युग में कई अनुसूचित जनजाति के लोग आज भी पिछडेपन के शिकार है। उन्हें किसी भी प्रकार की कोई सरकारी सहायता नहीं मिल पा रही है, क्योंकि ऐसे अनुसूचित जनजाति के लोग जो अपनी परम्परा अपनी संस्कृति को छोडना नहीं चाहते है। उन्हें आज भी लगता है कि हमारी परम्परा एवं संस्कृति में ये आधुनिक संस्कृति मिल जाएगी और हमारी परम्पराओं और सम्यताओं को खराब कर देगा और धीरे-धीरे नष्ट कर देगा। आज भी लगभग 60 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लोग अपना जीवन गरीबी में उजार रहे है। अनुसूचित जनजाति के लोगों की व्यावसायिक स्थिति से जानकारी प्राप्त होती है कि 30-90 प्रतिशत लोग खेत और मजदूरी का कार्य करते है क्योंकि उन्हें कोई कार्य में दिलचस्पी नहीं है और कार्य आता भी है तो करने के इच्छुक नहीं है। वे कृषि कार्य करना ज्यादा पसन्द करते है। हुए लाग ऐसे भी है जो आर्थिक परिस्थितियों के कारण व्यवसाय नहीं कर पाते है। कुछ ऐसे भी लोग है जो परिवार के सदस्यों के दबाव के कारण किसी भी रोजगार या कार्य को कर पाने में सक्षम नहीं है इसलिए ऐसे लोग आत्मनिर्भर नहीं बन पाते है।

अत: अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जनजाति के लोगों को शिक्षा देनी चाहिए और उनमें जागरूकता पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि वह स्वयं आत्मनिर्भर बन सकें ।

सुझाव - मेरा यह सुझाव है कि इन अनुसूचित जनजाति के लोगों को यदि सही शिक्षा दी जाए तो ये अवश्य ऊपर उठ सकते है। इसके लिए इनकी समस्याओं को समझना होगा, उनसे सम्पर्क करना होगा तथा उन्हें उनकी संस्कृति एवं परम्पराओं की बुराईयों से अवगत कराना होगा और उनकी अच्छाईयों को बताना होगा, उनमें शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना होगा ताकि उनमें सोच एवं समझ बढ़ सकें और सरकार द्धारा चलाई जा रही उनके लाभ की योजनाओं को समझ सकें। ऐसे क्षेत्र जो शहरी व नगरीय क्षेत्रों से दूर है और जहां पर आधुनिक सुख सुविधाएँ नहीं पहुँच पाती है उनके उसी क्षेत्र तक सुख सुविधाएँ पहुँचाने की कोशिश की जानी चाहिए। मेरा यह सुझाव है कि जब तक हम उनके सम्पर्क में नहीं आयेंगे उनके बारे में जानना एक कठिन कार्य होगा। उनकी समस्याओं को समझने एवं उन्हें दूर करने में कठिनाई आएगी द्य अतरू उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए हमें उनके सम्पर्क में आना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बनर्जी ई ., 1906-1907 'द थील्स ऑफ वेस्टर्न इंडिया', जनरल ऑफ द सोसाइटी ऑफ आर्ट्स व्हाल्युम एल.वी.
2. भट्ट उदयशंकर, जीवन और संघर्ष, कश्मीरी गेट दिल्ली 6: राजपाल एंड संस
3. चटोपाध्याय बसंत कुमार, 1971. भारतीय प्रदेश और उनके निवास, दिल्ली: एन. डी.सहगल एंड संस
4. दीक्षित ब्राह्मदेव, 1964. भारत के आदिवासी, आगरा: जनता प्रेस
5. युग, 1952. मेथर्ड इन सोशल रिसर्च, न्युयोर्क

****

तत्कालीन सामाजिक समस्याएँ एवं राजस्थानी संतों द्वारा निदान

डॉ. विनीता कौशिक *

प्रस्तावना - हमारे देश में विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदायों के लोगों का समावेश रहा है, जिनके रहते समय-समय पर अनेक प्रकार की समस्याऐं जन्म लेती रही हैं लेकिन हमारे संतो ने कभी भी इन्हें हावी नहीं होने दिया वरन उनका जन्म लेने के साथ ही यथा संभव निदान करने का सफल प्रयास किया।

1. विभिन्न धर्मों, संप्रदायों के सैद्धांतिक समन्वय का प्रयास - राजस्थान के संत-भक्त कवियों ने हिन्दू और इस्लाम धर्मों के बीच किसी भी प्रकार के तात्विक भेद को अस्वीकार करते हुए धार्मिक समन्वयक की विचारधारा का सार प्रस्तुत किया एवं धार्मिक भेद-भाव और उससे उत्पन्न सामाजिक असंतुलन एवं तनाव की घोर निंदा करते हुए उसे हेय घोषित किया।

संत कवि लालदास ने हिन्दू व मुसलमानों में एकता स्थापित करने के लिए पंडित और काजी को संबोधित करते हुए कहा कि - हिन्दुओं और मुसलमानों का ईश्वर राम, रहीम व खुदा एक ही है।

'मेरा मन राम सू राजी।
सुन भाई पंडित काजी मुल्ला, तुम क्या मांढ़ी बाजी।
मेरी तेरी दुविधा अंदर, याहि दूर करो बताजी।।
हिंदू तुरक हैं दोऊ का एकहि, राम रहीम खुदा जी।।'[1]

यही भाव संत हरिदास ने भी अपनी वाणी में प्रकट किया है।
'हिन्दू तुरूक एक कहलायी,
राम रहीम दोय नहीं भाई।'[2]

संत कवि दादू दयाल ने भी मानव-कल्पित हिन्दू-मुसलमान के भेद को मिथ्या बतलाते हुए कहा है कि सभी जीवात्माएं एक ईश्वर से उत्पन्न होने के कारण एक परिवार की इकाई है। जैसे दोनों हाथ, दोनों कान, दोनों नेत्र बराबर हैं वैसे ही हिन्दू-मुसलमान दोनों विराट काया की सम इंद्रियाँ हैं।

दादू दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान,
दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू-मुसलमान।।[3]
दादू करणों हिंदू तुरकी, अपणी अपणी ठौर
दूहूँ बीच मारग साधु का, यहु संतो की और।।[4]

संत कवि रामचरण जी ने अपनी अणभैं वाणी में हिन्दू और इस्लाम को एक ही घाट से निकले हुए बतलाकर धार्मिक समन्वय को प्रस्तुत किया है।

रामचरण हिन्दू तुरक निकस्या एकें घाट है।[5]

संत कवि हरिरामदास जी ने कहा है कि मैं किसे मुसलमान कहूँ और किसे हिंदू ? मेरी दृष्टि में तो दोनों एक ही है।

'कुनसा मुसलमान कहीजै, कुनसा कहीजै हिंदू।
हिंदू तुरक एक है भाई, मैं द्धोय देष ना नीदूं।।'[6]

निष्कर्षत - संतो ने अपने प्रयासों द्धारा तत्कालीन विभिन्न धर्मों को लेकर जो सामाजिक बिखराव उत्पन्न हो रहा था उसका बड़े ही प्रेम और सौहार्दपूर्ण तरीके से निदान किया है।

2. जाति-भेद मूलक भ्रान्तियों की नि:सारता - जाति भेद को लेकर जो तत्कालीन सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही थी उनको भी संत भक्त कवियों ने अपने कार्यों व आचरणों द्धारा समाज सुधार का प्रयास किया।

संत कवि पीपा ने नारी-पुरूष, दाता-भिखारी, ऊँच-नीच, राजा-रंक आदि में कोई भेद नहीं है करते हुए कहा -

ना कोई नहीं को नारि, न को दाता न कोई भिखारी।
ना कोई रंक नहीं को राजा, लघु दीरघ झूठ करि जाना।[7]

संत कवि जांभोजी ने भी जाति भेदों का विरोध जताया और कहा कि-

उत्तम कुली का उत्तिम न कहिबा, कारण किरिया सारू।[8]

एवं

ताह के मूले छोति न होई
दिल दिल आप खुदायमंद जागै, सब दिल जाग्यो लोई।[9]

पण्डित और मुल्ला को संबोधित करते हुए संत कवि लालदास कहते हैं, मेरे राम तो एक मात्र प्रेम-भक्ति से प्रसन्न होते है। उनके यहाँ कोई ऊँच-नीच की भावना नहीं है।

'राम मेरो प्रेम भक्ति सूं राजी।
ऊँच-नीच ताके ना कोई, सुनरे पण्डित काजी।।'[10]

संत कवित हरिदास जी ने एक मात्र प्रेम को ही स्वीकारते हुए एवं जाति धर्म, वर्ण, कुल आदि को अस्वीकार करते हुए कहा कि ब्राहम्ण, क्षत्रिय, शुद्र आदि सभी एक घाट से ही निसृत हुए है :-

'एकै घाटी नीसर्या, ब्राहम्ण क्षत्री सूद।'[11]

एवं

जाति वरण कुल नांही जाके, सो निकुला निराधारा।[12]

एवं

'चार वरण का मूल कहां, हरि परम स्नेही पीव।[13]

राजस्थान के संत कवि हरिरामदास जी ने मनुष्य देह में ऊँच-नीच का विरोध करते हुए कहा है कि घट-घट में एक ही आत्मा समान रूप से व्याप्त है।

'हरीया आतम एक है, सब ही घट-घट बीच
वाकु देषै दोयकीर, साईं मिनषा नीच।।[14]

इस प्रकार संत भक्त कवियों ने अपनी बानियों के माध्यम से समाज में फैली हुई ऊँची-नीच जाति भेद कुरीति को दूर करने में महती भूमिका निभाई।

3. आडम्बरो, ढ़ोंग एवं पाखण्डों का विरोध - संत कवियों ने समय-

* सह आचार्य (हिन्दी) राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

समय पर आडम्बर, ढ़ोंग एवं पाखण्डों पर प्रहार करते हुए समाज को सुधारने का प्रयास किया एवं अंतर्मुखी साधना को श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि मनुष्य के हृदय में ही ईश्वर निवास करता है। उसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं।

संत कवि दादू ने अपनी वाणी में स्थान-स्थान पर कहा है कि लोग कितने मूर्ख है जो अंतर्यामी ईश्वर को अपने घट में नहीं खोजकर द्वारिका, काशी और मथुरा में जाते हैं।

दादू कोई दौड़ द्वारिका, केसी कासी जांहि।
कई मथुरा को चले, साबित घट ही मांहि।।[15]

4. जीवों के प्रति प्रेम एवं अहिंसा - संत कवियों ने जीव मात्र के प्रति करूणा का संदेश दिया है। उन्होनें जीव हत्या को आत्मघात स्थान बतलाया है।

महंमद महंमद मत करि काजी, महंमद का जो विषम विचरू।
महंमद मरद हे लाली होता, तमे भयां मुरझारूँ।।[17]

संत कवि जसनाथ ने भी अपनी वाणी में यही विचार प्रकट करते हुए कहा है

मैमद-मैमद मत कर काजी, मैमद विखम विचारी।
मैमद पीर हलाली होता, तुम काजी मुरदा जी।[18]

जसनाथ जी ने मुसलमानों द्वारा की जाने वाली बकरी और गौ-हत्या का भी विरोध किया है।

सांभल मुल्ला संभल कांजी, सांभल बकर कसाई।
किण फरमाई बकरी बिरघो, किण फरमाई गाई।।[20]

उपरोक्त सभी तत्कालीन समस्यायें हमारे समाज में जब-जब पैर पसारने की कोशिश करती रही हमारे संत कवियों ने पुरजोर से उन सभी सामाजिक कुरीतियों का अपनी-अपनी संत वाणियों से उनका विरोध जताया एवं जो समाज की भलाई में था उसका संदेश सभी समाज, धर्म, सम्प्रदायों एवं जाति के लोगों तक पहुँचाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. लालदास की ढ़ाणी (ह.ग्र.) पृष्ठ 303
2. हरिदास वाणी - भूमिका, पृ. 95
3. 'दादूजी के सबद' (ह.ग्र.) क्र. 30670, दया निवैरसा को अंग, साची-7,
4. दादू वाणी, पृ. 318-41
5. रामचरण जी की अनमै वाणी - पृ. 176
6. हरिरामदास जी की वाणी (ह.ग्र.) क्र. 2, पृ. 150
7. पीपा के पद (ह.ग्र) क्र.9, 1843 ई.भा.वि.म. शो.प्र. बीकानेर
8. जंभ गीता - सबद - 26, पृ. 83
9. जंभ वाणी, सबद-67, पृ. 346
10. लाल दास की वाणी (ह.ग्र.) पृ. 128
11. हरिदास वाणी भूमिका - पृ. 95
12. हरिदास वाणी भूमिका - पृ. 64
13. हरिदास वाणी भूमिका - पृ. 96
14. हरिदास वाणी (ह.ग्र.) पृ. 150
15. दादू की वाणी (ह.ग्र.) कस्तूरिया मृग को अंग, सारणी-25
16. दरियावजी की वाणी (ह.ग्र.) भेष को अंग, क्रमतांक 310310, पृ. 9
17. जांभवाणी, सबद 10, पृ. 314
18. जसनाथ पुराण (ह.ग्र.) पृ. 62, संवत् 1820
19. जसनाथ पुराण (ह.ग्र.) पृ. 63, संवत् 1820
20. दादू वाणी पृ. 249/160

****

वर्तमान समय में महात्मा गॉधी के विचारो की प्रासंगिकता

डॉ. गोपाल सिंह*

प्रस्तावना – भारत में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट के साथ ही हम में से कुछ ने यह कहना शुरू कर दिया है कि गॉधी जी भारत में अप्रासंगिक हो गये है। यद्यपि शेष विश्व में आज भी उन्हे प्रासंगिक माना जाता है। महात्मा गॉधी जी कोई व्यक्ति नही है अपितु एक विचार और विचारधारा है। यदि सत्य और अहिंसा आज भी प्रासंगिक है तो हम यह कैसे कह सकते है कि गॉधी जी वर्तमान में अप्रासंगिक हो गये है। अगर ऐसा है तो फिर ऐसे व्यक्ति और विचारधारा को भूला देना चाहिए, जिसका कोई वजूद न हो, लेकिन फिर हमें यह सोचना पडेगा कि जिसे हम भूल रहे है, उसकी संयुक्त-राष्ट्र को क्या जरूरत पड गई। जो 2 अक्टूबर के दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। [1] इसका मतलब एक दम साफ है कि इस विचार का दुनिया की नजर में एक अतुलनीय महत्व है। गॉधी जी असफल नही हुए यद्यपि हम असफल हो गये है।

धर्म निरपेक्षता आज भारतीय राजनीति में अपने राजनीतिक स्वार्थो को पूरा करने का एक साधन बन गई है। धर्म निरपेक्षता की अवधारणा का प्रयोग राजनीतिक दलों द्वारा अपने राजीनीतिक हितो की पूर्ति करने तथा साम्प्रदायिकता द्वेष को बढावा देने के लिए गलत रूपों मे किया जाने लगा है। साम्प्रदायिकता और धर्म-निरपेक्षता की समस्याओं पर गॉधी जी के विचारों के कुछ दूसरे पहलूओं पर ध्यान आकर्षित किया जा सकता है, वह सब तरह की साम्प्रदायिकता को बुरा मानते है लेकिन धार्मिक बहुसंख्यकों की साम्प्रदायिकता उन्हे उन्मत्ता बना देती है।[2]

गॉधी जी के अनुसार राजनीति का आधार धर्म होना चाहिए। वे धर्म को व्यक्तियों का नीति मामला नही मानते थें। उनके अनुसार धर्म व्यक्तिगत नही अपितु सार्वजनिक है, संकीर्ण नही अपितु व्यापक है सामान्य नही अपितु विशेष है अत: धर्म राजनीति में भी प्रवेश कर सकता है। वे राजनीति में मैकियावली प्रवृति अर्थात धर्म रहित राजनीति हो जिसमें छल-कपट की प्रमुखता हो के सर्वथा विरोध थे। वे धर्म विहिन व नैतिकता विहिन राजनीति को किसी भी स्थिति में उपयुक्त नही मानते थें। उनके अनुसार राजनीति नैतिकता और मानव कल्याण का साधन है। [3] अत: उन्होने सत्य, अहिंसा और धर्म पर आधारित राजनीति को महत्व दिया। जिसकी भारत को वर्तमान में पूरी आवश्यकता है। जिसको अपनाकर भारतीय राजनीति सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण कर सकती है।

परन्तु आज भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिक द्वेष की भावना दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है। धर्म के नाम पर चारो तरफ अशान्ति फैली हुई है जिसके कारण आज हम किसी भी क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर पिछडते जा रहे है। जब तक यथास्थिति बनी रहेगी। मन्दिर, मस्जिद जैसे जटिल धार्मिक समस्याओं का समाधान गांधीवादी दर्शन में ही खोजा जा सकता है। आवश्यकता है उन आदर्शो की पालना और प्रचार करने की और लोगो को मानसिक रूप में तैयार करने की धार्मिक सद्‌भाव स्थापित करने के लिए गॉधी दर्शन के निम्नवत तथ्य आज भी प्रासंगिक है- 'सभी धर्म सत्य है, सभी धर्मो का उद्देश्य एक है, यद्यपि इसके लिए अलग-अलग मार्गो का अनुसरण करते है, सभी धर्म एक दूसरे के पूरक है'।[4] इस लिए यह निश्चित है कि यदि यह साम्प्रदायिकता तथा धार्मिक संघर्ष जारी रहता है तो भारत की एकता और अखण्डता को खतरा निश्चित रूप से पैदा हो सकता है। इसलिए वर्तमान समय में गांधीवादी विचारधारा का महत्व कम होने की अपेक्षा और अधिक बढ गया है।

गांधी जी ने भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में एक नूतन ढंग को अपनाने की सिफारिश की, लोकतंत्र एक वृहद संस्था है अत: इसका दुरूपयोग भी हो सकता है। इस हेतु हमें लोकतंत्र के प्रति सचेत दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। गांजी जी के अनुसार भारत में सच्चे लोकतंत्र के निर्माण का अमूल्य हथियार सत्याग्रह है।

लेकिन आज भी जब दुनिया मानवता के सामने आई मुश्किलों के समाधान की तलाश शुरू करती है तो उसकी तलाश गांजी पर जाकर खत्म होती है और फिर निराकरण की कोशिश वहां से शुरू होती है। गांधीवादी दृष्टिकोण को हमारे समय के लिए अप्रांसगिक कहकर खारिज करना बहुत बडी भूल होगी। दुनिया गाहे-बगाहे यह भूल करती रहती है ओर शार्टकट को आजमाती रहती है, जिससे तात्कालिक समाधान तो निकलता है लेकिन दूरगामी तस्वीर और भी धुंधली हो जाती है। पहले परमाणु विस्फोट से लेकर इराक में चल रही लडाई तक में इसके उदाहरण देखे जा सकते है।

साम्प्रदायिकता से गांधी जी अटूट विरोध ओर उसके खिलाफ उनके संघर्ष के विषम में हम अच्छी तरह जानते है। इसके अतिरिक्त उन्होने हर तरफ गांधी जी धर्म के कारण मनुष्य को मनुष्य से बांटने को, बिल्कुल गलत मानता है।[6]

उन्होने इस बुनियादी साम्प्रदायिकता मान्यता का खण्डन किया कि हिन्दुओं ओर मुसलमानो के राजनीतिक तथा आर्थिक हित इसलिए जुदा हो जाते है क्योंकि वे अलग-अलग धर्मो के अनुयायी है।

गांधीजी का मानना था कि साम्प्रदायिकता न केवल राष्ट्र विरोधी है बल्कि हिन्दू साम्प्रदायिकता के मामले में हिन्दू विरोधी ओर मुस्लिम साम्प्रदायिकता के मामले में मुस्लिम विरोधी हे। उनका मानना था कि हिन्दुओं की हत्या करके मुस्लमान इस्लाम की सेवा नही करेगे बल्कि उसे नष्ट करेगे ओर यदि हिन्दू यह सोचते है कि इस्लाम को मिटा देगे तो इसका मलतब

* व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) राज. महाविधालय, शिवगंज, सिरोही (राज.) भारत

हिन्दुओं को मिटाना होगा।[7]

संयुक्त–राज्य अमेरिका मे लोग मार्टिन लूथर, किंग नैपोलियन या हिटलर से प्रभावित नही हुए जबकी गांधी जी के जीवन ने उन पर व्यापक प्रभाव डाला। गांधी जी की सत्य और अहिंसा सम्बन्धी धारणा में ही उन्हे अपने संघर्ष की सफलता दिखाई दी। गांधी जी से प्रेरणा लेकर ही उन्होने संयुक्त राज्य अमेरिका में नस्लभेद के विरूध सत्याग्रह किया और अपने अहिंसात्मक संघर्ष में असफलता प्राप्त की।

दुनिया में उदारवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख रणनीतिकारो में शामिल रहे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का विकास के गांधीवादी आर्थिक मॉडल और सतत विकास की गांधी जी की दृष्टि को सही ठहराया। आर्थिक विकास की नई ऊँचाईयों को पैमाना गढने की होड में सम्पन्न राष्ट्रों द्धारा दुनिया के पर्यावरण और परिस्थितिकी को पहुँचाए जा रहे नुकसान की ओर प्रधानमंत्री ने साफ इशारा किया। उन्होने कहा कि 'गांधी जी बातो से सीख लेते हुए हमे विकास का ऐसा ढांचा तैयार करना होगा। जिसमें समाज के सभी लोगो की जरूरते पूरी हो और लाभ कमाने की मानसिकता पर अंकुश लग सके।'[8]

विश्व में गांधी का एक महत्वपूर्ण स्थान है फिर भी वर्तमान युग में उनकी प्रासंगिकता एक विवाद का बिन्दु रही है। आज बहुत से विचारको ने इस आधार पर गांधी के महत्व को अस्वीकार किया है। कि अहिंसा का मूल तत्व जिसके प्रचार व प्रयोग में वे अपने सम्पूर्ण जीवन में लगे रहे वह व्यक्तिगत स्तर पर कितना भी अतुलनीय हो पर विश्व स्तर उसकी बहुत कम संभावना है।

गांधी जी का सभी धर्मो की बुनियादी सच्चाई में पूर्ण विश्वास था। वे कहते थें कि मेरा यह दिली इच्छा है कि इन्सान–इन्सान के साथ भाईचारा कायम करें। जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी और यहूदी सभी एक संमान शामिल हो क्योंकि दुनिया के समस्त मजहबो की बुनियादी सच्चाई में मुझे विश्वास है मेरा यह मानना है कि मजहब ईश्वर प्रदत्त है और उन लोगो के लिए जरूरी है जिन्हे ये ईश्वर से मिले है। यदि हम भिन्न–भिन्न मजहबों के मानने वाली की निगाह से पढे तो हमे पता चलेगा, कि सब मजहबों की जड एक ही है।[9]

गांधी जी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व स्वीकार किया और कहा कि इसको निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनो निष्प्राण और शून्य हो जाते है। गांधी जी ने धर्म के क्षेत्र में संसार के प्रत्येक कार्य व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा।

गांधी जी की बातों से सीख लेते हुए हमें विकास का ऐसा ढांचा तैयार करना होगा जिससे समाज के सभी लोगो की जरूरते पूरी हो और लाभ कमाने की मानसिकता पर अंकुश लग सके। इसी संदर्भ में मनमोहन सिंह ने विकसित राष्ट्रों की ज्यादा लाभ कमाने की प्राकृति की ओर इशारा किया। उन्होने दो टूक कहा कि दुनिया केवल अमीरो की उच्च जीवन शैली को बोझ नही ढो सकती। प्रधानमंत्री ने गांधी जी के अहिंसा और सत्याग्रह की ताकत को मौजूदा समस्याओं व संघर्षो का समाधान निकालने का सबसे कारगर मंत्र बनाया। उन्होने कहा कि हमें असंतोष का नजरिया रखने वालो की बात भी सुननी चाहिए। लेकिन हिंसा के रहते यह बात नही सुनी जा सकती। दक्षिणी अफ्रिका में रंगभेद के खिलाफ नेल्सन मंडेला की जीत को प्रधानमंत्री ने गांधी जी के सिद्धान्तो की नवीनतम कामयाबियों में से एक बताया।[10]

राजनीतिक दल एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता गांधी को अपना गुरू मानते है और उनके पद–चिन्हो पर चलने की घोषणाए करते है। 1977 को जनता पार्टी के नेताओं ने सत्ता संभालने से पूर्व गांधी समाधि राजघाट पर प्रतिज्ञा ली थी कि वह भारत के राष्ट्रीय एवं संवैधानिक इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है जो कि वर्तमान में गांधी जी की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अनुपम मिश्रा, गांधी एक व्यक्तित्व नही विचार प्रवाह, दैनिक ट्रिब्यून, 2 अक्टूबर 2007
2. विपिन चन्द्रा गॉधी जी, धर्म निरपेक्षता और सांप्रदायिकता धर्म निरपेक्ष ओर आधुनिक भारत की खोज एक पुनर्विचार, सहमत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004 पृ. 63
3. रामजी सिंह, गांधी–विचार: दर्शन, धर्म, राजनीति और धर्मनीति, मानस पब्लिकेशन्स प्रा. लि., दिल्ली, 1995, पृ. 55
4. रामेश्वर मिश्र यपंकज गांधी जी की विश्वदृष्टि, मानक पब्लिकेशन्स प्रा. लि. दिल्ली, 1994 पृ. 83
5. मंजुल, सत्याग्रह का सत्यार्थ, दैनिक भास्कर, 30 जनवरी, 2007
6. हरिजन 25 जनवरी, 1942 पृ. 237
7. हरिजन, 23 मार्च, 1947, पृ. 45
8. डॉ. मनमोहन सिंह, विकास का गांधीवादी मॉडल ही सही– दैनिक जागरण 30 जनवरी 2007
9. के.एस. सक्सेना, गीता अग्रवाल, गांधी: धर्म एवं लोकतंत्र, सबलाइन पब्लिकेशन, जयपुर, 2005, पृ. 108
10. डॉ. मनमोहन सिंह, विकास का गांधीवादी मॉडल ही सही– दैनिक जागरण, 30 जनवरी 2007

****

New Trends in Commercial Banking in India - An Study

Dr. Balmukund Baghel*

Introduction - First of all, we have to know what are the banks and what their work is, the second fact that we should know about how the banks used to work before and what has changed in their work in today's internet age. In other words, we also have to understand the differences in banking operations of olden days and present days.

What is bank -In general words, when we talk about the bank, it is said that the bank is the one who acts as a bank, that is, accepting deposits and giving loans are the two main functions of the bank. But after India's independence, the role of banks has become very important and today banks can be called the backbone of Indian economy. And the work of banks is not limited to just accepting deposits and lending, they are going ahead and will continue to grow. In the new trend in banking, today we will try to understand the difference between old and new operations of banks through the following points-

Traditional Banking:

1. Talking about traditional banking, the scope of banking was very limited. Accepting deposits and lending were the main tasks and technology was not used, adopting traditional accounting system, register was maintained for all records.
2. To deposit or receive payment in traditional banking, one had to go to the concerned bank where the customer's account was Maintained and wait for their number due to lack of technology Based system, which wasted a lot of time and labor.
3. Banking employees were also not fully capable and all The transactions had to be matched to the register, in which very few transactions were settled in one day
4 In traditional banking, business activities also had to be conducted in a limited range because if you used the check for the transaction, then the clearing process would take long time and it would take a lot of time to receive and repay the money.
5. Cash used to play a big role in traditional banking, cash was used only in transactions, due to which businesses and individuals had to keep a large amount of money with it. It is a risk of theft; loss of money and Apart from this, the cash holder was at risk of life.
6. Due to lack of proper audit and routine check accounts, it was very difficult to reconcile accounts because of this there was a lot of possibility of fraud, peculation, fraud etc. And it was very difficult to Search it.
7. The proof of the transaction with the customer was only the Passbook issued by the bank, if the passbook was lost, it would be difficult for the customer to prove to the bank that he is a customer of the bank
8. The customer had only the proof of the transaction, a deposit or withdrawal slip which he was required to keep and many times the information of the transaction was not available immediately and later he had to enter the passbook and get the correct information. Thus, there was no message to know that the account has been transacted. Only the passbook was a base.
9. Due to traditional banking, the common people were not much interested in opening accounts in the bank and the number of educated and urban people in the account holders was more in the banks, the participation of people in rural areas was very limited.
10. Due to less involvement of rural people in the traditional Banking, the practice of moneylender was helping to flourish. Instead of opening an account in a bank, people used to feel more at ease in transacting with a money lender, whereas money lending is like a curse.

New Trends in Banking:

1. Talking about New Trends in Banking, it has brought about a paradigm shift not only in India but also in the entire world in industry, trade, business, economy, in which the biggest contribution is from the modern information technology era. Now adopting international accounting system, it is being adopted as information technology based system which can be accessed from any corner of the world.
2. In order to deposit or receive payments in New Trends in Banking, it is not necessary to go to the concerned bank where the customer's account remains and due to technology-based arrangements, the development of Automatic Teller Machine (ATM), Credit and Debit Cards, and Online Banking, it able to reduce costs, save time for payment and also increase the competitive advantage in financial service. Growth in automated teller machines (ATMs) .The banks increased their penetration further with the total number of ATMs reaching 0.18 million in 2015. However, there was a decline in growth of ATMs

*Senior Lecturer (MOM) V.M Govt. Polytechnic College, Narsinghpur (M.P.) INDIA

of both PSBs as well as PVBs. PSBs recorded a growth of 16.7 per cent during 2014-15 maintaining a share of around 70 per cent in total number of ATMs. FBs continued to record a negative growth in number of ATMs Debit cards and credit cards .Issuance of debit cards is much higher as compared to credit cards and they remain a preferred mode of transactions. In 2012, there were 6.3 credit cards for every 100 debit cards, which declined to 3.8 in 2015. PSBs maintained a lead over PVBs and FBs in issuing debit cards. As on March 31, 2015 approximately 83 per cent of the debit cards were issued by PSBs, while around 80 per cent of the credit cards were issued by the PVBs (57.2 per cent) and FBs (22.4 per cent)

3. Today all commercial banks are striving to make the working banking staff fully skilled, trained and information technology savvy so that they can meet the requirements of the customers on time. Banks are trying to give special priority to customer satisfaction.
4. An important component of the ongoing global reforms for the banking sector is the accounting reforms such that banks prepare their financial statements in a standardized and internationally acceptable manner. The issue of convergence of the current accounting framework under the Indian Accounting Standards with the International Financial Reporting Standards (IFRS) has been under consideration since 2006. Towards this objective, a roadmap was proposed by the Reserve Bank for implementing IFRS which would enable both the Scheduled Commercial Banks (SCBs)
5. In New Trends in Banking, there is also no limited scope for business activities. National Electronic Funds Transfer (NEFT) is a nation-wide payment system facilitating one-to-one funds transfer. Under this scheme, individuals can electronically transfer funds from any bank branch to any individual having an account with any other bank branch in the country participating in the scheme. RTGS is used to transfer money or securities from one bank to another on a real time and on gross basis. RTGS systems are generally used for high-value money transactions that require immediate clearing. It is usually operated by central banks of the countries.
6. Prepaid payment instrument-Pre-paid payment instruments (PPIs) are payment instruments that facilitate purchase of goods and services, including funds transfer, against the value stored on such instruments. The value stored on such instruments represents the value paid for by the holders by cash, by debit to a bank account, or by credit card. In the past few years, PPIs have emerged as an easy alternative to cash for performing day to day small value payment transactions. Value of PPIs has increased from 79.2 billion in 2012-13 to 213.4 billion in 2014-15. Among the PPI instruments, PPI card has been the most popular one with non-bank PPIs having fuelled most of this growth.

Financial Inclusion Initiatives - The Reserve Bank continued its efforts towards universal financial inclusion. Given the boost provided by the Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY) during the period, considerable banking penetration has occurred, particularly in rural areas. However, signifi cant numbers of banking outlets operate in branchless mode through business correspondents (BCs)/facilitators (Chart 2.21). Dominance of BCs in the rural areas can be gauged from the fact that almost 91 per cent of the banking outlets were operating in branchless mode as on March 31, 2015.

As on December 9, 2015, 195.2 million accounts have been opened and 166.7 million RuPay debit cards have been issued under PMJDY. The scheme was launched on 28th August, 2014 with the objectives of providing universal access to banking facilities, providing basic banking accounts with overdraft facility and RuPay Debit card to all households, conducting financial literacy programmes, creation of credit guarantee fund, micro-insurance and unorganized sector pension schemes. The objectives are expected to be achieved in two phases over a period of four years up to August 2018. Banks are also permitted to avail of Reserve Bank's scheme for subsidy on rural ATMs. The objectives of the financial inclusion plan (FIP), spearheaded by the Reserve Bank and PMJDY are congruent to each other.

To further strengthen the financial inclusion efforts and increase the penetration of insurance and pension coverage in the country, the Government of India has launched some social security and insurance schemes, i.e., Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana, Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana and Atal Pension Yojana in May 2015. As on December 16 2015, 92.6 million benefi ciaries have been enrolled under the Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana and 29.2 million have been enrolled under Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana. Further, 1.3 million account holders have been enrolled under Atal Pension Yojana.

Today, all banks and banking groups are used to prepare software for accounting and banking work according to their convenience and market demand, which are based on information technology such as commercial or retail banks use what is known as core banking software which record and manage the transactions made by the banks' customers to their accounts. For example, it allows a customer to go to any branch of the bank and do its banking from there. In essence, it frees the customer from their home branch and enables them to do banking anywhere. Further, the bank's databases can be connected to other channels such as ATMs, Internet Banking, payment networks and SMS based banking. Due to accounting and banking functions based on information technology, it has become easier to conduct audits and routine checks as it has little chance of fraud, embezzlement etc. and it is also very easy to find everyone

wants to join the new trend of banking, common people have become more interested in opening an account in the bank and people want to make their life simple by using various modern services offered by the bank. Now educate the account holders and the gap between urban, rural and less educated people is gradually closing.

As the rapid participation of rural people in new banking increases, the practice of moneylender will help to end. By opening an account in a bank, rural farmers are being able to easily take advantage of agricultural schemes. The best scheme Kisan Credit Card has brought changes in the lives of farmers. Now they are not going to the moneylender and taking loan from the bank.

Conclusion -Talking about the difference between traditional banking and New Trends in Banking, traditional banking has now become a thing of the past. Now in New Trends in Banking, banks are focusing more on increasing their business activity by better serving customers. In this direction, public sector banks as well as private sector banks like ICICI bank, HDFC bank etc. have an important role and to increase business among them. Competition is also learned due to which the bank is fast reaching the remote rural areas. Modern information technology based banking system has given people It has brought revolutionary changes in the life. Today it is not possible to imagine business, industry, commerce and also public life requirements without the bank. Due to economic liberalization, the work or branches of the bank are not only limited to India but are spreading fast in the whole world. Which is also called globalization. Banks have become the BACK Bone of our economy without which the economy cannot be imagined. Now this is the beginning of change in the banking sector. Going forward, according to the international changes, improvements will be seen in this sector, which will help in simplifying the standard of living of the common man.

References :-

1. Report on Trend and Progress of Banking in India 2014-15, Reserve Bank of India Mumbai 400001,India
2. Wikipedia: https://en.wikipedia.org ›wiki › Commercial_ Bank_of.
3. Money Bhasker: https://money.bhaskar.com
4. The Economic Times: https://economictimes.india times.com/hindi
5. Moneycontrol: https://www.moneycontrol.com
6. Business Standard: https://www.business-standard.com

****

A Study of Marketing Strategies of Big Malls to Attract Consumers with Special Reference to Nagpur City

Nalini Udaram Lambat *

Introduction - When we say marketing basically it's a service industry. Service quality, features & customer satisfaction plays an essential role in Marketing. Customer satisfaction leads to customer buying behavior & further to buying pattern. Marketing is a prominent aspect in the distribution channel of retail & wholesale business. Marketing provides goods & services to consumers according to their need.

Retailing: Retailing is a set of business activity which adds value to particular product sold or service sold to consumers for their use.

Who is a Retailer?

Retailer is a business man who sales their product or services to customer for their use. Retailers try to satisfy the need of the customer by proving them right merchandise, at right price and at right place.

Retailer is a mediator and plays important role between the manufacturer & the buyer who actually are the end users. Retail business is the largest private industry even ahead to finance and engineering. Retailing is one of the sectors who generate the highest employment opportunities.

International & National status: Marketing trends & strategies in Marketing are the means to increase marketing independence among the countries all over the world. In order to attain more customer satisfaction appropriate approach of global marketing is necessary. In this respect, the positive approaches for modern marketing affects cultural exchange programme, training & co-ordination of marketing education, common research services, construction of works & consultancy services. Various marketing strategies, trends, agreements & views also have some limitations as they are generally of bilateral agreement and also require regular revision for their effective implementation.

A combination of new marketing strategies & marketing trends are nothing but the form of partial integration, which may ultimately result in trade expansion amongst the countries worldwide. The regular revision of various marketing strategies will enable them to increase trade in their own countries instead of other countries.

India is one of the fastest growing countries in the world in terms of economy. Trading is one of the most important sectors of Indian economy. Majority of people derive their income only because of trading & related activities. Labors are the main factor in Indian trading. Millions of small traders exist in all over India. India has the largest number of retailers but many of them are in the unorganized form. In the previous days over the years ago retail industry in India was not in organized form; but post liberalization taste of consumers is getting change, so organized retail industry is getting scope to expand & explore their business. The buying pattern of consumer is changes in recent days. The buying pattern is influenced by Social factors such as Social status & the groups to which they belong to. In a group several individual may interact to influence the purchase decision. A study show up to 2002, consumers in Indian top cities like Delhi,Mumbai, Pune & Nagpur has no choice to purchase their goods from small retail stores. But, in recent times shopping experience of the consumers is changing. Because of the per capita income of middle age population in big cities is rising fast & easier access to credit are bringing a change in consumption pattern. Retail shopping space has also increased to 54 million square meters.

But due to introduction of Big Malls all over India these small retailers may have to face the competition. Many big Malls are present in the Market like Reliance, Big Bazar, Walmart, Westside, City Mall , Metro & many more.

Nagpur city geographical information:

The word Nasik comes from "Nasika" which is a Sanskrit word.

Nasik is the holiest cities of Maharashtra having pleasant climate. In the south west city we sees Godavari river which flows through Nasik city. Nasik also has a historic importance. Lord Ram, Laxaman and Sita stayed here 14 years of his exile at Tapowan near Nasik. At the same place Laxamana cut off the nose of Shupanakha by the blessings of Lord Ram. We also see SitaGumpha caves where Sita, Lord Rama's wife abducted by Ravana.

Nasik is a district place comes in Maharashtra State. 14 Tehasils are there in Nasik. Nearly 31% population stays in urban areas & remaining in rural areas. Nasik is situated in North West region of Maharashtra & Administrative head quarter of District & Nasik division. It's the third largest city

*Research Scholar, C.P. and Berar College, Mahal, Nagpur (Mh.) INDIA

of Maharashtra & also amongst 14 major popular cities in India.

Area of Nasik is 360 km2 & having two air ports.

Nasik has a population of 1,486,973 according to Census of India, 2011. Male population is 784,995 & female population 701,978.

Nasik is fastest growing cities in India & also identified as 2 tier Metro City of India.

The industries which are majorly contributing in economy of Nasik city are Manufacturing, engineering & Agriculture in city & surrounding areas.

The main business of Nasik district is Agriculture. The main products of Agriculture are Grapes, Wheat, Onions, fruits, Sugarcane vegetables. The main exportable agriculture products are Grapes, Onion, wheat & sugarcane. The export of the material is limited to interstate but also done in abroad. As mentioned grapes are major farming products of Nasik, it is also known as Grapes City. Grapes are main ingredient to prepare wine. So many wine companies are growing in the city & now it is also known as "Wine City".

Nasik has also grown as a Major Industrial Hub. MIDC has developed Industrial zones like Ambad, Satpur, Igatpuri&sinnar. Major companies are, HAL, VIP, Mahindra & Mahindra, Mico, CEAT, Cropton greaves, Kirloskar Oil Engine, Glaxo Etc. Including Large & medium scale, more than 10000 small scale industries are active in Nasik.

From last two decades Nasik has also developed in educational field. Nasik has its own two boards for SSC & HSC named Maratha VidyaPrasarakMandal. Nasik also has many colleges of MBA, Medical, Engineering, Pharmacy, Agricultural, Hotel Management in nearby areas. Nasik also has two state run Universities namely MHUS- Maharashtra University of Health Sciences & YCMOY- Yashwantrao Chavan Maharashtra Open University.

Due to economically and educationally sound position, the people there are always ready to follow new trends of marketing. They follow traditional marketing trends as well as new marketing trends welcoming modern marketing. People are always ready to learn and adopt new marketing trends and ideas.

With Cool climate, Historical back ground, educational hub, Industrial background, Nasik is basically a favorable place to live, were people can grow with the city itself & we can also notice the Modern era of Nasik with above background support & backbone.

Origin of research problem - It is considered that 21st century is an era of International Co-operation & era of Globalization. This era specially reflects in National and multinational marketing and co-operation through the substitution of planned multi-national and globalised marketing for purely free economy policy. The multinational co-operation in Marketing is one of the important aspects of Globalization. Sometimes economic co-operation is considered as a basic aspect.

Prior to 1991 marketing was limited in India. Various Government policies were affecting the International marketing as well as international turnover. But after the adoption of free economy policy the market was open to all. Due to Liberalization, privatization & globalization tremendous revolution took place in political, social, cultural & economical front. Advance technology & skillful hands were welcomed & super quality, new marketing strategies of marketing & dynamic mentally was accepted.

Marketing Strategies: According to DiannMahood, Vice President Marketing, Rich's/Goldsmith's "Now a day's business is becoming tough. One needs to have a strong strategy, a vision where you want to go plus a strong organization, persistence & patience in order to succeed".

The growing intensity of retail competition due to emerging new trends, formats, technology plus shifts in consumer needs is forcing retailers to devote more attention to long term strategic thinking. The retail management decision making process indicates that retail strategy is the bridge between understanding the world of retailing i.e. the analysis of retail environment & the more tactical merchandise management and stores operations activities undertaken to implement the retail strategy. The retail strategy provides the direction to the retailers to deal effectively with the customers & competition.

Objectives of the Study:

1. To study on various marketing strategies adopted by Big Malls to attract the consumers.
2. To study the impact of marketing and promotional strategies of Big Malls on consumers in the Nasik City.

Hypothesis

H1: "Big Malls has attracting the consumers at large scale by adopting new marketing strategies".

Research Methodology: Research may be defined as systematic investigation for gaining knowledge – attending new knowledge or verifying the existing knowledge.

Redman and Morr define research as "systematized effort to gain new knowledge".

The interest of gaining new knowledge and verifying the existing knowledge inspired to do thorough study of marketing strategies of Malls to attract consumers.

It was noticed that general public is not aware of concept of various format of organized marketing themes like Big Shopping Malls, hyper Markets, Discount Markets, Super market etc and recognize all these formats as "Malls".

Each step of research starts from formation of Hypothesis, to collection of Data to preparation of questionnaire to methods of analyzing the collected data will be address in detail in the thesis.

The study shall be divided into following chapters,

Treads Data Collection:

1. For conducting the research programme, primary data is collected from the consumers who are visiting the Big Malls.
2. The customer from different age group, financial status & different locality is selected for the research study.
3. All related officials of the Malls is selected for the research study.

4. Primary data is collected through questionnaire.
5. The secondary data is used to know the different statistics regarding the development in marketing strategies.
6. Books, Journals, reports, articles published in the news papers used as secondary data collection.
7. Internet was also one of source of collection of secondary data.
8. Collection of necessary literature on the theoretical aspect of marketing, new marketing strategies, marketing trends adopted by Big Malls & mentality of customers of the different class.
9. Consultation of Library carried out at C.P. and Berar College, Tulsibag, Mahal, Nagpur.
10. Collection of necessary literature.

Sampling, Data Collection & Data analysis: The consumers of Big Shopping Malls are the universe of the research. It is very difficult to collect information from each and every customer so will be using random sampling method for research. Considering two big Malls of Nasik city Pinnacle Mall & Nasik City Center Mall as a sample for the study. The Pinnacle Mall and Nasik City Center Mall will be the places of observations. Pinnacle Mall is situated at Trimbak road, Mohan Nagar & Nasik city center Mall situated at Untawadi ring road, Sambhajichowk. So data collected randomly from the customers who are visiting the Big Malls. 540 customers selected randomly. 540 customers are selected from different locality, different economic status & age groups. All related officials of the Malls are selected. A questionnaire prepared for consumers & got it filled by contacting them in Malls.

The questioners were aimed at getting information from the customers purchasing essential commodities and household items from either format. At the same time the information is collected by using face to face interview. These interviews also form the major collection of primary data and the data and the information solicited has been judiciously utilized to court the interpretation of the questionnaire. The study does not focus on any specific Mall(s) or traditional retailers. It relates to general formats of malls and traditional retailers. Data analysis done with the help of statistics, proper explanation & by using graphical representation.

After analyzing, the data interpreted to find out where the objectives taken for the study was fulfilled or not and the various methods of hypothesis testing is used for acceptance or rejection of the Hypothesis taken for the study.

Analysis of the objective: To study on various marketing strategies adopted by Big Malls to attract the consumers.

All retailers are using aggressive marketing marketing strategy. The various media used for advertising like Newspaper, TV & radio commercials, hoardings etc. Malls also tie-up with finance firms to help customer in getting easy finance on products like Tv, fridge, Oven, furniture etc. In case of technical products or electronic gadgets like computers, laptops etc the consumer is always get confused so technical guidance made available to the customers whereas traditional retailer's fails to do the same. It is also fact that we fid wide variation in timing of traditional retailers. Many traditional retailers have specific time of opening & closing of shop as well they are closed on weekly off . Also the traditional retiles open and close their shop as per their convenience. Tis creates incontinence to the customers. And against this shopping malls remains opens for long hours as well as on weekly off. Above all, the malls remain open throughout the year. Malls sell their product less than MRP. Malls also offers special festival discounts. Malls also gives additional discounts on bulk purchase. On many occasions exchange schemes & loyally schemes are also run by shopping malls. Shopping malls provides free home delivery.

2. To study the impact of marketing and promotional strategies of Big Malls on consumers in the Nasik City.

	Respondents purchasing from Malls	Respondents purchasing from traditional retailers	Total number of respondents
Grocery	180(18%)	360(36%)	540(54%)
Vegetables & Fruits	40(4%)	103(10.3%)	143(14.3%)
Clothing	397(39.7%)	350(35%)	747(74.7%)
White goods	298(29.8%)	159(15.9%)	457(45.7%)
Other house hold terms	221(22.1%)	451(45.1%)	672(67.2%)

It has been found that clothing segment has the maximum impact on customers followed by other household items.

Strategies adopted by Malls have been successful in attracting 54% respondents from grocery segment & 45.7 % in the white good segment. However he percent of respondents purchasing only from malls is more for white goods as compare t grocery. From that the conclusion is perspective marketing strategies adopted by malls are more successful in case of white goods segment.

Hypothesis :

H1: "Big Malls has attracting the consumers at large scale by offering various schemes"

Various schemes offered by Malls

Table 2 (see in next page)

From the table 2 , t has been observed that 2.6% respondents are not purchasing from malls & rest 97.4% respondents are purchasing from malls. Out of these 9.24% rspodents have not taken advantage of any of the schemes. Remaining 90.76% has sometime or the other taken the advantage of the schemes.

Conclusions and findings:

1. Through the in-depth study it has been observed that organized retailers adopts one or more marketing strategies to attract their consumers
2. The above facts and discussion also confirms that marketing strategies of malls have considerable impact on the customers in the study area.

Suggestions & Recommendations:

1. Organized retailers should develop some techniques to

reduce the billing time that is one of the reason customer avoid to purchase from malls.

2. Organized retailers have to promote it's outlet so that low income groups relate themselves to the malls & feel that malls are not for them.

References :-

1. Market information survey of household report
2. Saxena R. Marketing Management New Delhi, Tata Macgraw- hill
3. Y.K. Singh &RuchiraNath: Research Methodology, New Delhi
4. http://www.siu.edu.in/
5. Chetan Bajaj, RajnishTuli, NidhiShrivastava, Retail Management, Oxford University press.

Frequency of Advantage taken	Discount offered	Free cards	Membership/ loyalty cards	Festive offers	Lucky draw	Exe. offer
Not purchasing from Malls	26	26	26	26	26	26
Not at all	90	140	409	117	421	451
Rarely	224	266	193	189	235	202
Sometimes	380	322	178	372	182	194
Frequently	157	153	97	167	71	60
Always	123	93	97	129	65	67
Total	1000	1000	1000	1000	1000	1000

****

भारतीय समाज विविधता में एकता का परिचायक है

डॉ. हरिचरण मीना *

शोध सारांश – भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है विविधता मे एकता। भारतीय समाज मे भाषा, बोली, जाति, प्रजाति, धर्म, संस्कृति, क्षेत्र इत्यादि के आधार पर विविधता पायी जाती है। इस अध्ययन में मुख्य रूप से प्रजातीय, भाषायी, धार्मिक एवं जातिगत विविधता एवं उनमे एकता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। सामान्यत: विविधता से अभिप्राय असमानता से है परन्तु हमारा उद्देश्य इस असमानता के अलावा सामूहिक असमानता से भी है। ऐसी असमानता जिसमे एक वर्ग के लोगो को दूसरे वर्ग के लोगों से अलग किया जा सके। विविधता शब्द एकरूपता के प्रतिकूल है। एकरूपता का अर्थ किसी विशेष प्रकार की समरूपता से है जो सम्पूर्ण समूह की विशेषता होती है। भारत में समाज के रूपों को समझने के लिये इसका अर्थ समूह और संस्कृतियों की विविधता से है। भारत में ऐसी विभिन्नताओं की बहुलता है। हमारे वहाँ प्रजाति, धर्म, भाषा, जाति और संस्कृति की विविधता के कारण भारत अपनी सामाजिक सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इन सबके बावजूद भी भारतीय समाज में एकता पायी जाती है जिसको विभिन्न अवसरों एवं रूपों में देखा जा सकता है। इसलिए भारतीय समाज विविधता में एकता का परिचायक है।

शब्द कुंजी – विविधता, असमानता, वैविकीय, धार्मिक, भाषायी, प्रजातीय, जातीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनौवैज्ञानिक, पारस्परिक, निर्भरता, एकता, एकीकरण, नीग्रीये, प्रोटो-आस्ट्रोलायड, अल्पेनॉयड, दिनारिक, आर्मीनियाई, द्रविड़, मलयालय, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, शिया, सुन्नी, नामधारी, निरंकारी, दिगम्बर, श्वेताम्बर, हीनयान, महायान, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शुद्र, सांस्कृतिक बन्धुता।

प्रस्तावना – भारतीय समाज में विभिन्न आधारों पर विविधता पायी जाती है। सामान्यत: विविधता का तात्पर्य असमानता से है। यहाँ असमानता का अर्थ सामूहिक असमानता से है अर्थात ऐसी असमानता जिससे एक वर्ग के लोगों को दूसरे वर्ग के लोगो से अलग किया जा सके। यह असमानता किसी भी प्रकार की हो सकती है अर्थात वैविकीय, धार्मिक, भाषायी, प्रजातीय, जाति, इत्यादि। उदाहरण के रूप में जैविक असमानता के कारण हममें प्रजातीय विविधता है। जन्म के आधार पर जातीय विविधता, धार्मिक असमानता के आधार पर धार्मिक विविधता भाषायी असमानता के आधार पर भाषायी विविधता है। इस प्रकार विविधता सामूहिक असमानता की ओर संकेत करती है। विविधता शब्द एकरूपता के प्रतिकूल है। एकरूपता का अर्थ किसी विशेष प्रकार की समरूपता से है। जो सम्पूर्ण समूह की विशेषता होती है। भारतीय समाज मे इतनी विविधताओ के बावजूद भी एकता दिखाई देती है। एकता का अर्थ एकीकरण से है। यह एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक स्थिति है। यह एक होने की भावना अर्थात् हम एक है को व्यक्त करता है। यह उस कड़ी का पर्याय है जो समाज के सदस्यों को एक साथ कर रखती है। एकता और एकरूपता मे कुछ अन्तर है। एकरूपता मे पहले से ही यह मान लिया जाता है कि समानता होगी ही, परन्तु एकता में ऐसा नही होता। इस प्रकार एकरूपता पर आधारित भी हो सकती है और नही भी, एकता का जन्म एकरूपता से हो सकता है। इमाइल दुर्खीम ने इस तरह की एकता को यांत्रिक पारस्परिक निर्भरता कहा है। इस तरह की एकता जनजातीय समाजो तथा पारस्परिक समाजों मे पाई जाती है। परन्तु पारस्परिक निर्भरता के रूप में उल्लेख किया है। इस प्रकार की एकता आधुनिक समाज की विशेषता है। एकता एकरूपता पर आधारित हो आवश्यक नही है। एकता एकीकरण की ओर इंगित करती है। एकीकरण का अर्थ असमानता की अनुपस्थिति कदापि नही है। निस्संदेह यह उस कथन का पर्याय है जो अलग-अलग समूहो को एक दूसरे से बाँध कर रखती है।

हम इस अनुसंधान मे भारत मे पायी जाने वाली विविधताओं के विभिन्न रूपो की चर्चा करे तो पायेंगे कि भारत मे प्रजातीय, भाषा, धर्म एवं जाति के आधार पर विविधता पायी जाती है। भारत में विभिन्न प्रजातियों के लोग निवास करते है। प्रजाति ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिनके त्वचा का रंग, नाक का आकार, बालों के प्रकार आदि कुछ स्थायी शारीरिक विशेषताएं मौजूद होती है।

हरबर्ट रिजले ने भारत के लोगों को सात प्रजातीय समूहो में बांटा है। (1) तुर्क-ईरानी (2) भारतीय आर्य (3) शक-द्रविड़ (4) आर्य-द्रविड़ (5) मंगोल-द्रविड (6) मंगोलाभ (7) द्रविड़। इन सात प्रजातीय समूहो को कम कर के तीन मूल समूहो अर्थात् भारतीय आर्य, मंगोली एवं द्रविड़ में बांटा जा सकता है। उनकी विचारधारा में अग्रिम दो समूह जनजातीय भारत की प्रजातीय संरचना मे देखे जा सकते है। रिजले ने 1891 की जनगणना से लिए आकड़ो के आधार पर प्रजातीय वर्गीकरण किया था। वास्तव में रिजले ने यह वर्गीकरण शारीरिक विशेषताओं के आधारित न होकर भाषा के प्रकारो पर आधारित होने के कारण इसकी आलोचना का सामना करना पड़ा था।

जे.एच. हट्टन, डी.एन. मजूमदार और बी.एस. गुहा जैसे अन्य प्रशासनिक अधिकारियों और नृविज्ञानियों ने भारतीयो का अधुनातन प्रजातीय वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जो इस क्षेत्र में अब तक किये गए अनुसंधानों पर आधारित है। बी.एस. गुहा ने छ: प्रजातीय समूहो का वर्णन किया है (1) नीग्रीये (2) प्रोटो-ऑस्ट्रोलायड (3) मेगोलाभ (4) भूमध्य सागरीय (5) पश्चिमी लघु कपाल (6) उदीच्य। इस प्रकार भारत में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रजातीय आधार पर विभिन्न प्रकार बताये गये है।

भारत मे भाषायी आधार पर भी विविधता देखने को मिलती है। भारत मे अनेक भाषाए बोली जाती है। जी.ए. ग्रियर्सन ने इस तथ्य का पता लगाया

* समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

था कि भारत मे 179 भाषाए और 544 बोलियां बोली जाती है। दूसरी ओर 1971 की जनगणना रिपोर्ट में 1652 भाषाए रिपोर्ट की गई है। जो मातृभाषा के रूप मे बोली जाती है। इस व्यापक भाषायी विविधता को देखकर आश्चर्य होता है। यह सभी भाषाए समान रूप से भारत मे सब जगहो पर नही बोली जाती है। इन में से कुछ जनजातीय भाषाएं कुल जनसंख्या के एक प्रतिशत है। वर्तमान में भारतीय संविधान में भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। असमियां बांगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलगू, उर्दू, बोड़ो, संथाली, मैथिली और डोगरी ये 22 भाषाए मान्यता प्राप्त है। भारतीय जनगणना रिपोर्ट के अनुसार इनमें से हिन्दी भाषा जनसंख्या के लगभग 39.85 प्रतिशत लोगों द्धारा बोली जाती है। बांग्ला, तेलुगु तथा मराठी लगभग 8 प्रतिशत लोगों द्धारा बोली जाती है। तमिल लगभग 6 प्रतिशत लोगो द्धारा तथा उर्दू लगभग 5 प्रतिशत लोगों द्धारा बोली जाती है। उपर्युक्त संवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषाए दो भाषा परिवारों की है भारतीय आर्य और द्रविड़। आर्य परिवार की भाषाए भारत की कुल जनसंख्या के 75 प्रतिशत व्यक्तियों द्धारा बोली जाती है जबकि 25 प्रतिशत जनसंख्या द्रविड़ परिवार की भाषाए बोलती है।

इस भाषायी विविधता के होते हुए भी हमारे बीच हमेशा एक सम्पर्क भाषा रही है। यद्यपि समय-समय पर इसमें विभिन्नता पाई जाती रही है। प्राचीन काल में संस्कृत सम्पर्क भाषा थी, मध्यकाल मे अरबी या फारसी तथा वर्तमान समय में हमारे बीच हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं का प्रयोग सम्पर्क तथा प्रशासनिक कामों के लिए किया जाता है। इस प्रकार हमारे यहाँ भाषायी विविधता के बावजूद भी भाषायी एकता पाई जाती है।

भारत अनेकानेक धर्मो की भूमि है। यहॉ हमे अलग-अलग धर्मो और मतो के अनुयायी मिलते है। विशेषतया इनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन और पारसी इत्यादि है। यहाँ पर बहुसंख्यक धर्म हिन्दू धर्म है। जनगणना रिपोर्ट के अनुसार सबसे अधिक जनसंख्या हिन्दू धर्म के अनुयाीयों की है। इसके पश्चात दूसरे स्थान पर मुस्लिम धर्म के अनुयाीयों की है। इसके बाद ईसाई धर्म, सिक्ख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म का स्थान आता है। बहुत कम अनुयाीयों वाले धर्मो मे यहूदी, पारसी और बहाई धर्म आते है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक धर्म के अन्तर्गत सम्प्रदाय है। उदाहरण के लिए हिन्दु धर्म में कई सम्प्रदाय है जिनमे शैव और वैष्णव शामिल है। इनके अलावा धार्मिक पुनरूद्धार आन्दोलन से भी उत्पन्न कुछ सम्प्रदाय है जैसे आर्य समाज, ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन आदि। विगत दिनो मे राधास्वामी साई बाबा जैसे कुछ नए पंथ उत्पन्न हुए है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म शिया और सुन्नी मे, सिक्ख धर्म नामधारीव निरंकारी मे, जैन धर्म दिगम्बर व श्वेताम्बर में और बौद्ध धर्म हीनमान व महामान में बंटे हुए है। हिन्दू और मुस्लिम भारत के प्राय: सभी नगरों में पाए जाते है, अल्पसंख्यक धर्मावलम्बियों के अपने अपने विस्तार क्षेत्र है। दक्षिण भारत के तीन राज्य केरल, तमिलनाडू और आंध्रप्रदेश में तथा उत्तर पूर्व के नागालैण्ड राज्यों मे ईसाई धर्म की बहुत मजबूत स्थिति है। सिक्ख, मुख्यत: पंजाब में, बौद्ध महाराष्ट्र मे और जैन उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र व गुजरात मे ही नही बल्कि पूरे देश के अधिकांश शहरी केन्द्रो मे पाये जाते है। इस प्रकार भारत मे धार्मिक विविधता पायी जाती है। इतनी धार्मिक विविधता के बावजूद भी भारत में विभिन्न अवसरों पर धार्मिक एकता के दर्शन किये जा सकते है। बहुत से ऐसे स्थान है जहाँ एक तरफ मन्दिर है तो दूसरी तरफ मस्जिद है। एक तरफ चर्च है तो दूसरी ओर गुरूद्धारा है। इस प्रकार धार्मिक विविधता को देखा जा सकता है।

भारत जातियों का देश है। जाति शब्द का प्रयोग सामान्यत: दो अर्थो मे किया जाता है। कभी कभी वर्ण के अर्थ में और कभी जाति के अर्थ मे। वर्ण से कार्य विभाजन के वर्गीकरण के आधार पर भारतीय हिन्दू समाज के चार भागो मे विभाजन का पता चलता है। चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जिनके क्रमश: शिक्षण, प्रतिरक्षा, व्यवसाय एवं दासोचित सेवा जैसे अपने अपने विशिष्ट व्यवसाय है।

वर्ण का सोपानात्मक संगठन सम्पूर्ण भारत मे मान्य है। परम्परागत रूप से जाति एक जन्मजात वंशानुगत अन्तर्विवाही प्रस्थिति का समूह है। जिसका एक विशिष्ट पारस्परिक पेशा होता है। भारत में लगभग 3000 से भी अधिक जातियॉ है। पदक्रम की दृष्टि से इन्हे अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से निर्धारित किया जाता है। जाति व्यवस्था का प्रचलन केवल हिन्दूओ तक ही सीमित नही है। जातिगत विचारों की मान्यता मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई जैसे अन्य समूदायों में भी पाई जाती है। मुस्लिमों में शेख, सैय्यद, मुगल, पठान, तेली, धोबी, दर्जी आदि जातियॉ भी पाई जाती है। इसी प्रकार भारत में ईसाइयों के बीच भी जातिगत चेतनता कोई नई बात नही समझी जाती। भारत मे बड़ी संख्या मे धर्म परिवर्तन करके लोग ईसाई बने है। अत: इन ईसाइयो ने अपने बीच जाति व्यवस्था की भावना को किसी सीमा तक बनाए रखा है। सिक्खों मे भी अनेक जातियॉ है जिसमे जाट सिक्ख और मजहबी सिक्ख उप जातियां शामिल है। इन तथ्यो से स्पष्ट है कि भारत मे जातिगत विविधता किस सीमा तक मौजूद है। विविधता के उपर्युक्त मुख्य रूपों के अलावा हमारे बीच कई अन्य प्रकार की विविधताए भी है यथा जनजातीय, ग्रामीण, शहरी, रहन सहन, धार्मिक और क्षेत्रीय रीति रिवाज पर आधारित विवाह और नातेदारी व्यवस्था सांस्कृतिक क्षेत्रीय विविधता दर्शाने वाली एवं ऐसे ही कई अनेक अन्य रूपों वाली विविधता।

इस प्रकार भारत मे प्रजातीय, जातीय, धार्मिक, भाषायी, रहन सहन, खान पान, वैशभूषा इत्यादि के आधार पर विविधता देखने को मिलती है। इन सभी विविधताओं के बावजूद भी भारत मे एकता देखा जा सकती है।

निष्कर्ष- उपरोक्त अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि भारत विभिन्न प्रकार की प्रजातीय, धार्मिक, भाषायी, जातीय, रहन-सहन, खान-पान, वैशभूषा इत्यादि की विविधता पायी जाती है। इस अध्ययन की विविधता तीन बातों की ओर संकेत करती है (1) समूहो के बीच प्रारूपित अन्तर (2) सामाजिक सांस्कृतिक विविधताए (3) एकरूपता का अभाव। एकता का तात्पर्य अखण्डता से है जो एकरूपता पर आधारित हो सकती है और नही भी। एकरूपता की यह भावना हम एक है की भावना से उपजती है। यह भावना उन संबन्धों से उभरती है जो व्यक्तियों या पृथक समूहों को एक दूसरे से जोड़कर रखती है। भारत मे मुख्य रूप से प्रजातीय, भाषायी, धार्मिक और जाति आधारित विविधता पायी जाती है। इन सभी विविधताओं के मूल में एकता का एक अद्भूत अंश विद्यमान है। यदि हम एकता की बात करे तो भू राजनीतिक, भू-सांस्कृतिक, धार्मिक समायोजन और कार्य सम्बन्धी आत्मनिर्भरता है। एकता की इन कड़ियों से घनिष्ठता से जुड़ी अखंडता की चार क्रिया विधियां है। संविधान, तीर्थाटन, अन्य धार्मिक समूदाय के सदस्यो के लिए पृथक चूल्हा तथा भोजन और रसोई की उपयोग की वस्तुओं का विधान और यजमानी व्यवस्था। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि भारत

मे युगो युगो से विविधताए रही है लेकिन इन सभी विविधताओं के बावजूद भी भारत के लोगों ने समय समय पर एकता का परिचय दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. बेते, आन्द्रे, ''द क्रानिकल्स ऑफ अवर टाइम'' पेंगविन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली 2000
2. देशपांडे, सतीश, ''वंटेम्पोरैरी इंडिया: ए सोश्योलॉजिकल व्यू'' पाइकिंग नई दिल्ली 2003
3. चौहान, बृजराज, ''इंट्रोड्यूसिंग एशियन सोसाइटीज: इंडिया, ए सोशियो इकोनॉमिक प्रोफाइल, स्टर्लिंग, नई दिल्ली 1989
4. मुखर्जी, राधा कमल '' द फन्डामेन्टलयूनिटी ऑफ इंडिया'' भारतीय विधाभवन: बम्बई 1954 पृ0 सं0 17-22
5. रिजले, ''एस.एच. ''द पीपल ऑफ इण्डिया'' द्वितीय संस्करण, ओरियन्ट बुक्स: दिल्ली 1969
6. श्रीनिवास, एम.एन. ''सोशल स्ट्रक्चर'' पब्लिकेशन डिवीजन नई दिल्ली 1969

****

जन लोकपाल के लिए लड़ाईः भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों का आंदोलन

ज्योति परमार* सुशील कुमार **

प्रस्तावना – राजनीति और लोक प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार लंबे समय से भारत में एक बड़ा मुद्दा रहा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए सरकार से आग्रह करने वाले कई महत्वपूर्ण आंदोलन हुए हैं। विशेष रूप से, एक नागरिक लोकपाल की स्थापना के लिए जन लोकपाल विधेयक पारित करने की मांग लंबे समय से प्रमुख कार्यकर्ताओं और नागरिक समाज संगठनों से सुनी जाती रही है। सरकार कई वर्षों से इस मुद्दे पर डटी हुई है और प्रचार समूह अभी भी ऐसे कानूनों की मांग कर रहे हैं जो वास्तव में सार्वजनिक कार्यालय में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए काम करते हैं।

बदलाव के लिए पहला कदम– जे.पी. आंदोलन या संपूर्ण क्रांति आंदोलन (कुल क्रांति के लिए आंदोलन, 1974-76 तक चलने वाला) स्वतंत्रता के लिए अपने आंदोलन के बाद भारत में दूसरा सबसे बड़ा आंदोलन था। इसका नेतृत्व सम्मानित गांधीवादी नेता लोकनायक जय प्रकाश नारायण (जे.पी.) ने किया था, क्योंकि वे लोकप्रिय रूप से जाने जाते थे। लोकनायक का अर्थ है जनता का नेता। 1979 में जेपी की असामयिक मृत्यु के कारण, संगठन टूट गया और कई छोटे समूहों में बिखर गया। आंदोलन ने अपना अभियान खो दिया और दुख की बात है कि पूरी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती देने की उसकी महत्वाकांक्षा फीकी पड़ गई।

भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में एक नई शुरुआत– परिवर्तन का एक नया युग 2011 में भारत भर में कई गांधीवादी स्वयंसेवकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा शुरू किए गए कुछ छोटे कार्यों के साथ शुरू हुआ। उनमें से भ्रष्टाचार के खिलाफ एक उल्लेखनीय प्रचारक, श्री अन्ना हजारे - गांधीवाद के लिए प्रतिबद्ध एक गैर-राजनीतिक व्यक्ति थे। एक तरह से गांधी की याद ताजा करते हुए, अन्ना हजारे सरकार पर एक ऐसे विधेयक को लागू करने के लिए दबाव डालने के लिए अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर चले गए, जो भ्रष्टाचार को प्रभावी ढंग से रोकेगा, नागरिकों की शिकायतों का निवारण करेगा और व्हिसलब्लोअर की रक्षा करेगा। उनके नेतृत्व में, एक प्रभावशाली जन विद्रोह शुरू हुआ, जो 16-27 अगस्त 2011 को चरम पर था। चुनाव प्रचार के ये प्रयास 12 दिनों के बाद समाप्त हो गए जब सरकार विधेयक में प्रस्तावित संशोधन करने के लिए सैद्धांतिक रूप से सहमत हो गई।[1]

लोकसभा (निचला सदन) और राज्यसभा (उच्च सदन) ने लोकपाल विधेयक में प्रस्तावित संशोधनों पर 'सदन की भावना' से अवगत कराते हुए एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें सैद्धांतिक रूप से सहमति व्यक्त की गई थी कि:

1. प्रधान मंत्री और न्यायपालिका को प्रस्तावित लोकपाल के अधिकार क्षेत्र में लाया जाना चाहिए,
2. सभी सरकारी कर्मचारियों को प्रस्तावित लोकपाल द्वारा कवर किया जाना चाहिए, और
3. सभी सार्वजनिक कार्यों के लिए एक नागरिक चार्टर पर विचार किया जाना चाहिए, यानी खुलेपन, दक्षता और परामर्श के मानकों को स्थापित करने वाली सार्वजनिक सेवाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों का एक सेट।

राजनेताओं ने अन्ना और जनता को धोखा दिया– सरकार ने अन्ना, उनके अनुयायियों और भारतीय जनता से जो वादे किए थे, उन्हें पूरा नहीं किया गया। विधेयक को विचार के लिए एक समिति के पास भेजा गया था और इसे कभी पारित नहीं किया गया था। उच्च सदन के माध्यम से कोई लोकपाल विधेयक सफलतापूर्वक पारित नहीं हुआ है और नागरिक समाज अभी भी सार्वजनिक भ्रष्टाचार के मामलों की जांच और मुकदमा चलाने के लिए एक स्वतंत्र निकाय की मांग कर रहा है।

अभियान के विभिन्न चरण– प्रचारक और भारत के लोग निराश थे और अन्ना के अभियान के सदस्य अलग हो गए। श्री अरविंद केजरीवाल (अपनी सरकारी नौकरी छोड़ने वाले एक सिविल सेवक) के नेतृत्व में एक समूह ने एक नई राजनीतिक पार्टी बनाने, ईमानदार उम्मीदवारों का चयन करने और संसद में प्रवेश करके राजनीतिक व्यवस्था को बदलने का प्रयास करने का फैसला किया। अन्ना हजारे के नेतृत्व में एक अन्य समूह ने पुनर्गठन किया और जनवरी 2013 तक भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्रीय स्तर के अभियान को फिर से शुरू करने की घोषणा की। गांधी की हत्या के दिन 30 जनवरी को, इस समूह ने पटना में एक बड़ी रैली का आयोजन किया।[2]

वर्तमान में, भारत के विभिन्न हिस्सों में कई अन्य सामाजिक और राजनीतिक समूह हैं जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों को लामबंद करने में शामिल हैं, जिसमें गांधी के अनुयायियों के गैर-राजनीतिक वर्ग और **'संपूर्ण क्रांति राष्ट्रीय मंच'** नामक एक मंच शामिल है। शांतिपूर्ण पूर्ण क्रांति का गठन अप्रैल 2011 में किया गया था। यह गांधी और जे.पी. (जय प्रकाश

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

नारायण) के दर्शन में विश्वास करने वाली क्रांतिकारी ताकतों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करता है और शांतिपूर्ण साधनों का उपयोग करके राजनीति और नौकरशाही से भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मंच द्वारा अब तक कई गतिविधियों का आयोजन किया गया है, जिनमें शामिल हैं:

1. जयपुर में एक जनता के लोकपाल के लिए विधेयक के समर्थन में बुद्धिजीवियों की एक बैठक (25 दिसंबर 2011)।
2. सेवाग्राम में 120 लोगों का प्रशिक्षण शिविर, भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए गांधी द्वारा स्थापित एक आश्रम (25-27 फरवरी 2012)।
3. भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त जन आंदोलन की रणनीतियों पर चर्चा करने के लिए पटना में 240 सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक कार्यशाला (4-5 जून 2012)।[3]

2014 में होने वाले चुनाव के साथ, हम आशा करते हैं कि भारतीय समाज के सभी कोनों और सभी वर्गों के लोगों द्वारा उठाए गए भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज के जवाब में भारत में राजनीतिक व्यवस्था में भारी बदलाव आएगा। यह आवाज दिन-ब-दिन तेज होती जा रही है और धीरे-धीरे गुस्से में बदल रही है। **'नेशनल फोरम फॉर पीसफुल टोटल रेवोल्यूशन'** वर्तमान में **'राइट टू रिकॉल'** भ्रष्ट या अक्षम जन प्रतिनिधियों के लिए अभियान चला रहा है, ताकि देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोका जा सके और भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस के साथ स्वच्छ और कुशल लोगों के शासन के लिए अभियान चलाया जा सके।

आम चुनाव के उन उम्मीदवारों के बहिष्कार की संभावना पर चर्चा करने के लिए 17 मार्च, 2013 को पटना में एक बैठक आयोजित की गई, जिन पर भ्रष्टाचार के आरोपों का आरोप लगाया गया है। भारत के कई क्षेत्रों से लगभग 100 लोगों ने भाग लिया।

भारत में लोकपाल विधेयकों का एक संक्षिप्त इतिहास- 1968 और 2008 के बीच, सार्वजनिक कार्यालयों में भ्रष्टाचार की जांच के लिए एक स्वतंत्र निकाय की स्थापना के लिए 'लोकपाल बिल' आठ बार संसद के सामने लाए गए, लेकिन कभी पारित नहीं हुए। लोकपाल लोकपाल के लिए हिंदी है। अप्रैल 2011 में ऐसा ही एक विधेयक निचले सदन में लाया गया था। अन्ना हजारे के नेतृत्व में नागरिक समाज के विरोधों ने इसे वास्तविक परिवर्तन लाने के बजाय शांत करने के लिए बनाए गए कानून के एक कमजोर टुकड़े के रूप में खारिज कर दिया।

एक नए विधेयक का मसौदा तैयार करने के लिए सरकार और नागरिक समाज के प्रतिनिधियों सहित एक संयुक्त समिति का गठन किया गया था। इसे नागरिक समाज आंदोलन की जीत के रूप में देखा गया। मई और जून 2011 में, कई बैठके आयोजित की गईं, लेकिन प्रमुख मुद्दों के संबंध में कोई समझौता नहीं किया जा सका, जिसमें यह भी शामिल है कि क्या प्रधान मंत्री प्रस्तावित लोकपाल की जांच के अधीन होंगे। सरकार और नागरिक समाज अलग हो गए और अपने स्वयं के संस्करण तैयार किए। जन लोकपाल विधेयक, (नागरिक लोकपाल विधेयक) का मसौदा सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, न्यायमूर्ति संतोष हेगड़े सहित प्रमुख कार्यकर्ताओं द्वारा तैयार किया गया था। हजारे ने सरकार के प्रस्तावित संस्करण के विरोध में 16 अगस्त 2011 को भूख हड़ताल शुरू की, जो विधायी कक्षों के माध्यम से अपना रास्ता शुरू किया।

27 अगस्त को अन्ना ने अपना 12 दिन का उपवास समाप्त कर दिया जब निचले और उच्च सदन ने विधेयक में कुछ प्रस्तावित संशोधनों के लिए सैद्धांतिक रूप से सहमति व्यक्त की। विधेयक विचार के लिए एक समिति के पास गया। विधेयक को निचले सदन द्वारा दिसंबर 2011 में पारित किया गया था, लेकिन उच्च सदन से पारित करने में विफल रहा, क्योंकि सटीक प्रावधानों पर गरमागरम बहस ने आवंटित समय के भीतर निष्कर्ष को रोक दिया।[4]

मई 2012 में विधेयक को उच्च सदन में फिर से पेश किया गया और फिर दूसरे पैनल को भेजा गया। लोकपाल विधेयक के पहली बार पेश होने के 44 साल बाद, भारत एक स्वतंत्र संवैधानिक निकाय के बिना है, जिस पर सार्वजनिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार की जांच करने का आरोप लगाया गया है। अन्ना हजारे भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में बेकार के रूप में सबसे मौजूदा मसौदे की आलोचना करना जारी रखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. https://uncaccoalition.org/fighting-for-the-jan-lokpal-the-peoples-movements-against-corruption-in-india.
2. 'लोकपाल बिल: टीम अन्ना का कहना है कि निचली नौकरशाही को छोड़ने से आम आदमी को मदद नहीं मिलेगी', टाइम्स ऑफ इंडिया, 6 दिसंबर, 2011।
3. 'अन्ना हजारे: मैंने पीएम से पूछा कि क्या उनकी टीम उनके मूल्यों को साझा करती है-फोर्ब्स इंडिया,' मनीकंट्रोल डॉट कॉम, 9 अप्रैल, 2011।
4. 'भ्रष्टाचार के खिलाफ भारत: अजीत सिंह ने अन्ना हजारे के अभियान का समर्थन किया- इकोनॉमिक टाइम्स' 5 अप्रैल 2011।

****

Protection of Computer Software under Intellectual Property Regime

Rohit Nayak*

Abstract - 'What is worth copying is prima facie worth protecting'[1] is the genesis of Intellectual Property Rights (IPRs). Computer Technology is having an ever-growing impact upon society and the way that society conducts its affairs. So it is no wonder that intellectual property protection of software is crucial not only for the software industry, but for other businesses as well. The major growth that can be seen in Indian industrial sector or global industrial sector is due to the Software industry as well as Hardware industry. One of the expected results can be that probably Patent is the most suitable form of intellectual property for the protection of computer software industry is the fastest & richest developing sector in terms of industrialization. Hence special attention is to be given towards the protection of software industry.
Keywords- Intellectual Property Rights, Computer Programs, Software Protection under IP Regime.

Introduction - The laws which govern the protection of computer software fall under the domain of intellectual property. Intellectual property protection is generally granted for the benefit of both creator of the property and public welfare. There is a three step process linking the public welfare with intellectual property. The first step involves expanding the scope of legal protection offered to software creator by granting them enhanced monopoly rights. The second step is this kind of enhanced protection creates a reward system motivating further creativity. Finally, this expansion of inventive activity brings about the discovery of more ideas and faster advancement of technology[2]. The end result of this process is that the public receives different range of software products. Computer Technology is having an ever growing impact upon society and the way that society conducts its affairs. So it is no wonder that intellectual property protection of software is crucial not only for the software industry but for other businesses as well.

***"Software and hardware is a product of human intellect and can be rightly termed as "intellectual property." Considering the very vital role it plays in today's world economy and development, Protection of Software is a very crucial issue. There has been a demand worldwide for the Protection of Software and hardware."*[3]**

"Computer software" also referred to as computer programs are the instructions executed by a computer. In other words, the explanations, instructions, commands and systems which have been developed in order to run the machine are called "computer software". Software comprises of the following one or more components: the source code itself which contains the programmer's invaluable comments any literature that may be supplied with the package which could be in the form of manuals or explanatory material regarding the running of the programme. All these components require protection because the making of it involves the expenditure of skill, time and labour and therefore the resultant work should be protected from misappropriation. To establish intellectual property protection to computer software domestically and internationally the signatories of TRIPS Agreement, Berne convention, and WIPO Copyright Treaty (WCT) have agreed to protect copyright in a computer program until, at a minimum 50 years after the author (software writer) of the program dies. For citizens of more than 162 members of Berne convention countries, once protection is grated to a work in one member country that work is automatically protected with in the borders of all other signatory countries. However, it is the discretion of the states to given protection for computer program under copyright or patent laws. The last 15 years have changed the entire landscape with regard to the creation and protection of software as intellectual property[4]. The creative use of information technology is critically needed to make India a meaningfully information rich society across all economic strata so that scarce resources are more effectively utilized in the economy. A self-reliant and effective software industry is congruent with a competitive domestic softwareindustry. However, product patenting can foreclose options in the information technology sector for developing countries.[5]

The then Information Technology and Telecommunications Minister, Mr. Pramod Mahajan, while proposing the Bill on Information Technology said on the floor of the House. The excerpts from his speech:[6]

"With the revolution of information technology, the whole world is changing beyond imagination……..Sometimes, when we hear that today's economy is a knowledge-based economy, and with information technology, for the first time,

*Research Scholar, DLSR, Barkatullah University, Bhopal (M.P.) INDIA

*in the history of human society, Saraswati is dominating Laxmi, that is the knowledge-based economy. So, for some people, it seems to be a very, very profitable business venture. If you look for the richest persons all over the world or in India, you will find that 80 per cent of them are those who are heading the IT industry. But the IT is not a mere scientific revolution nor a profitable business venture. The information technology is actually the fourth generation of human communication. When we came on the earth, the **first** communication between two human beings was through gestures, **second** was spoken language, and **third** was written language. Now we are reaching the fourth generation of humancommunication, which is a digital language. This is the fastest of anycommunications we ever invented…….”*

India is well known for its Software industry, which has growth exponentially in a short space of time. According to estimates of the National Association of Software and Services Companies (NASSCOM) – the main trade body and chamber of commerce of India's IT and business process outsourcing industries – the domestic Software industry generates annual revenues of around US$60 billion, the bulk of which is exported. Further, many top multinational companies either do business in India or have research centres there, thus promoting knowledge exchange and bringing in valuable foreign know-how .India has a balanced political outlook and an independent judiciary, and in the last decade or so has done well in harmonizing its Patent law with that of other major jurisdictions. However, Software Protection is weakand the need to provide stronger Protection for Software inventions has been the subject of debate both domestically and around the world.[7]

Intellectual Property rights refer to the property that is a creation of the mind i.e. inventions, literary and artistic works, symbols, names, images and designs used in commerce. It is broadly divided into 2 categories:

1. Copyright, which includes literary, artistic and musical works
2. Industrial property dealing with patents, trademarks, industrial designs and geographical indications of source.

The concept of intellectual property has originally been evolved to safeguard the novel ideas of creative minds manifested in tangible form. The design of such intellectual property protection was to respect the intellectual excellence of a creator. Intellectual property is a powerful tool for economic development.

Modern society relies a great deal on computer technology. Today the world is largely dependent on computers. The two main parts of the Computer is the Software and the Hardware. Without “Software”, a computer cannot operate and opposed to the physical components of the computer system called “hardware”.

Protection of Computer Software under Intellectual Property regime has been highly debated at the national and international level. For example, in the European Union (EU), a draft Directive on the Patentability of Computer-implemented Inventions has been discussed in order to harmonize the interpretation of the national patentability requirements for computer software-related inventions, including the business methods carried out via computer. These discussions show divergent views among stakeholders in Europe. Furthermore, the Internet raises complex issues regarding the enforcement of Patents, as Patent protection is provided on a country-by-country basis, and the Patent law of each country only takes effect within its own borders. In countries like India, market share of unbranded or assembled computers is far more than that of branded ones, the reason being that these are not only cheaper in price but also that a buyer can get as many Software as he wishes, loaded on to the computer without any extra cost. These programs are pirated version of otherwise expensive Software, for which there is a heavy license fee. Computer hardware manufacturers or retailers are supposed to supply only licensed Software to their customers, but as it involves additional cost, people find it easy to buy pirated versions at almost throwaway prices.[8]

Trade Mark Over Computer Products - Generally, trade secret law protects ideas, facts, and know-how, whether in tangible form or not. A trade secret can be defined as any formula, pattern, device, machine, process, technique, compilation of information, or program. Hidden aspects of web sites and software can certainly be protected by Trade Secret Law.

Computer and computer related products can also get protection as Trade Mark. The software products can also have trademark that will distinguish the products from the other manufacturers and can be identified by the consumer to be coming from particular manufacturer.Software tycoon ***Bill Gates*** in a memo wrote,

“*If people had understood how Patents would be granted when most of today's ideas were invented and had taken out Patents, the industry would be at a complete standstill today. ... The solution is Patenting as much as we can. A future start up with no Patents of its own will beforced to pay whatever price the giants choose to impose. That price might be high. Established companies have an interest in excluding future competitors*.”[9]

Patents on Computer Software or Programs - The Patents Act, 1970 states that a computer program per se other than its technical application to industry or a combination with hardware is not patentable[10]. Thus, software can be registered as a patent only if it is in combination with hardware and not otherwise. Comparing to the protection given under patent law, the protection given by copyright and trade secrets has limited scope. The owner of the copyright over an item of software has the right to prevent any other person from copying the code as it is written but does not have the right to prevent the utilization of idea behind the code, providing that the person utilizing the idea must use in a manner that different from the arrangement of the code.

The copyright law is also limited to prohibit unauthorized copying of the protected work but it does not prohibit all

forms of copying. The expression of a method of operation and principles of a computer program cannot be protected by copyright. Functional aspects of a computer program are excluded from copying. A patent provides more secure protection than the copyright and the trade secret. It protects the 'idea' or 'functionality' of the software. Copying of an idea is very easy to do and anybody can describe it simply, that is might a patent is restricting from doing.

If a computer software is merely an algorithm it should not be protected under patents. The term of algorithm is not defined in the patent act. If the invention is technical in nature it will entitled to get protection under patents. The mathematical algorithms which per se are not regarded as patentable subject matter universally, they are merely considered as abstract ideas or mental steps.

Copyright Protection to Computer Software - Copyright was usually associated with artistic products, but today in addition to all this copyright is now an important tool in protecting computer software. TheCopyright Act, 1957 provides copyright protection for original works of authorship fixed in any concrete medium of expression. The Act gives the copyright owner exclusive rights over the reproduction, preparation of derivative works, distribution. It is not a necessity to take steps after the work has been created and "fixed in tangible form" for copyright to exist. But a registration of copyright in a work is necessary to proceed with an action for infringement of it.

As computer program prima-facie compose of expression in terms of written code, they came to be extensively protected under Copyright as forming the category of literary works under the Copyright Act. At one time it was not at all clear whether computer programs were protected by Copyright. The Copyright Act had made no mention of computers or computer programs. The inclusion of the term Computer Software in the Copyright Act was inserted by the *Act 38 of 1994, Section 2* under the head of literary work.

Sec 2(ffc) states that- "Computer Programme" means a set of instructions expressed in words, codes, schemes or in any other form, including a machine readable medium, capable of causing a computer to perform a particular task or achieve a particular result. "Literary work" is defined as that which includes computer programs, tables and compilations including computerdatabases[11]. Copyright, in relation to a computer program means the exclusive right to do or authorize to do any of the following acts[12] :

i. To reproduce the work in any material form including the storing of it in any medium by electronic means;
ii. To issue copies of the work to the public not being copies already in circulation;
iii. To perform the work in public, or communicate it to the public;
iv. To make any cinematographic film or sound recording in respect of the work;
v. To make any translation of the work;
vi. To make any adaptation of the work;
vii. To do, in relation to a translation or an adaptation of the work any of the acts specified in relation to the work in the above;
viii. To sell or give on commercial rental or offer for sale or for commercial rental any copy of the computer program. Commercial renting does not apply to computer programs where the program itself is not the essential object of the rental.

To do any of the above acts related to the computer program or to use it, a license is required from its owner. Any person who knowingly makes use of an infringing copy of a computer program is liable to be punished with imprisonment for a term of at least seven days and can be extended to three years and with fine of at least Rs. 50,000[13]. The term of copyright in published literary work published within the lifetime of the author is 60 years from the beginning of the calendar year following the year in which the author dies. In case of anonymous or pseudonymous works, the duration is 60 years from the calendar year following the year in which the work is first published[14]. Thus, the minimum term of 25 years stipulated in the Berne Convention is not applicable in India.

The duplicated and pirated software affects all software users. There is a need for stronger legal protection. The primary protection for computer software in India is found in the Copyrights Act, 1957. There are very few cases pertaining to protection of software in India, most of them with Microsoft Corporation as the aggrieved party. In one of these cases, the Delhi High Court awarded punitive and exemplary damages against the wrongdoer who were involved in piracy activities by hard-disk loading. With the growth of importance of software in every business, more and more companies want protection under the legal regime to eliminate and stop software piracy[15].

Conclusion - It is clear that probably patent is the most suitable form of intellectual property for the protection of computer software and hardware. Unlike copyright, which protects final works, software patents, which protect against the imitation of features, allows the protection of these elementary ideas, and thus prevent whoever to realise a program implementing a protected idea. Software patents, by allowing their holders to claim elementary ideas, thus constitutes an extremely powerful monopoly building tool, because the holder of a single patent can prevent the selling of all software implementing this idea, whatever their application domains can be.

Copyright protection is the other protection, which is available for shielding computer software. It could be considered as the most appropriate means of software protection. But copyright protects only the expression of an idea that has to be in a tangible and permanent form. The novelty aspect of patent law need not be considered in copyright. Unlike Copyright, which protects final works, similarly software patents internationally, protect against the imitation of features, it allows the protection of these elementary ideas, and thus prevents anyone from realizing

a program implementing a protected idea. Software Patents, by allowing their holders to claim basic ideas, thus constitutes an extremely powerful monopoly building tool, because the holder of a single patent can prevent the selling of all software implementing this idea, whatever their application domains be. The creation of the Software Patent has also been considered by developed countries and by agreement on TRIPS, WIPO, and World Copyright treaty (WCT) and European Patent Convention (EPC).These reassess whether Computer Software should be deemed patentable subject matter. However, this idea of the protection has been denied by many countries, especially developing countries. And supporter of patenting software claim that the protection of the patent system is needed to provide an incentive for innovation in the Software technology.

Suggested Readings:

1. P. Narayan, *Intellectual Property Law*, 2nd ed., 1997, New Delhi: Eastern Law House.
2. Shreya A. Mittal, 2004, *The Intellectual Property in Computer Software.* Kolkata: Kamal Law House
3. David Bainbridge, *Introduction to Computer Law*, 4th Ed. 2000, Pearson Education Ltd
4. Stanley Nollen, Intellectual Property in the Indian Software Industry: Past Role and Future Need, June 2004
5. Shantanu Jugtawat ,*Software Patents*, 2002

References:-

1. Paterson, J. *in University of London Vs University of Tutorial Process Ltd.*, 1916 (2) Ch 601
2. Arya Mathew*, Patent Protection for Computer Program-Analysis of the Forms of IP Protection Available for Computer Programs and Justification for Patent Protection in the Indian Context,* December 2008 (www.altacit.com)
3. David Bainbridge, *Introduction to Computer Law*, Ed 4th .2000, Pearson Education Ltd.
4. Bernard A. Geller, *Software and Intellectual Property Protection: Copyright and Patent Issues for Computer and Legal Professionals*, 1st Ed 2005, Greenwood Publication, U.S.A.
5. K. Gopinath, *Computer Software and Intellectual Property Rights: Issues at Stake for Developing Countries*, 1st Ed 1996, Volume 07, Pg 197-217
6. Arun Gargi, *Do We Need Legislation on Data Protection* ? (www.indlaw.com)
7. Ritushka Negi, '*Business method and Software Patent trends in India'*, Intellectual asset management, May 2009
8. http://www.tribuneindia.com/2001/20010319/login/main3.htm
9. Fred Warshofsky (1994), *the Patent war*, Lessig 2002-07-24: Keynote to OSCON
10. Section 3 (k) of the Patents Act, 1970
11. Section 2(o) of the Copyright Act, 1957
12. Section 14 (b) of the Act
13. Section 63B of the Act
14. The Copyright Rules1957 (www.copyright.gov.in/Documents)
15. Microsoft Corporation vs. Ms. K. Mayuri and Ors. 2007 (35) PTC 415 (Del)

****

डॉ. राम किशोर मिश्र प्रणीत संस्कृत रूपकों में नारी-एक अध्ययन

डॉ. रुचि गुप्ता*

प्रस्तावना – देववाणी संस्कृत की सेवा में पूरा जीवन अर्पित करने वाले तपोनिष्ठ, शास्त्रा निष्णात डॉ. राम किशोर मिश्र जी माँ शारदा के वरद् पुत्र हैं। श्री राम किशोर मिश्र जी इस युग की महान् विभूति हैं। आपने अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थों की रचना कर संस्कृत साहित्य में विपुल वृद्धि की है।[1] महामना मालवीय महाविद्यालय, खेकड़ा (मेरठ) के संस्कृत विभागाध्यक्ष से सेवा निवृत्त श्री मिश्र जी ने संस्कृत साहित्य की प्राय: प्रत्येक विध पर अपनी लेखनी चलायी है। आपने अनेक संस्कृत महाकाव्य, स्तोत्र काव्य, उपन्यास कथा संग्रह, रूपक, आदि की रचना की है।[2]

श्री मिश्र जी ने 17 संस्कृत रूपकों का प्रणयन किया है। इनमें से 14 एकांकी हैं अर्थात् एक अंक के है। एक रूपक तीन अंकों का, एक पाँच अंक का तथा एक आठ अंक का रूपक है।

श्री मिश्र जी के संस्कृत रूपकों में कुल 32 नारी पात्र हैं। मिश्र जी ने अपने रूपकों में नारी को महनीय पद प्रदान किया है। भारतीय परिवेश में नारी के प्राय: तीन रूप देखने को मिलते हैं– पुत्री, पत्नी तथा माता। इन रूपकों में नारी के ये तीनों ही रूप अति उदात्त रूप में हमारे समक्ष आते हैं। मिश्र जी के रूपक पौराणिक ऐतिहासिक व सामाजिक इन तीनो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। इन तीनों प्रकार के रूपकों में नारी चरित्र को अति सशक्त रूप में चित्रित किया गया है।

इस संसार में जन्म लेते ही नारी का जो रूप सर्वप्रथम सामने आता है, वह पुत्री का है। मिश्र जी के रूपकों में माता-पिता एवं पुत्री का परस्पर स्नेह सम्बन्ध अति सुन्दर रूप में सामने आता है।

देवयानी अपने पिता की अति लाड़ली कन्या है। दैत्य गुरु शुक्रचार्य अपनी पुत्री देवयानी की इच्छानुसार ही कार्य करती है।[3] इसी प्रकार शर्मिष्ठा[4] तथा माध्वी[5] भी अपने पिता की स्नेह पालिता पुत्रियाँ हैं। शर्मिष्ठा अपने पिता की आज्ञाकारिणी पुत्री है। अपने पिता के कहने पर वह राजपुत्री होकर भी देशहित व जययातिहित हेतु देवयानी का आजीवन दासतव स्वीकार कर लेती है–

यदि तवं जययाति नाशं नेच्छसि तत्त्व्या देवयान्या: सेविकात्वं स्वीकार्य पुत्री।[6]

X.........X.................X.............X............X

शर्मिष्ठा– यदि पित:! शुक्राचार्य गमनेन जययाति नाशो भवति तदहं

देवमान्या: सेविकात्वं स्वीकरोमि येन, जययाति सुरक्षां स्यात्।[7]

'गालव माध्वीयम्' नामक रूपक की नायिका माध्वी के सन्दर्भ में तो पितृ आज्ञापालन की पराकाष्ठा ही देखी जा सकती है। विश्वामित्र शिष्य गालव राजा ययाति से 800 कृष्णा माँगने आता है। राजा के पास कृष्णा नहीं है। अपनी दान कीर्ति के विषय में चिन्तित होते हुए राजा ययाति अपनी रूपवती युवा कन्या माध्वी, गालव को प्रदान करता है। ताकि जिस राजा के पास कृष्णा है उसके पास एक वर्ष तक रहकर माध्वी पुत्र उत्पन्न करे। इसके पश्चात् वह पुत्र उसी राजा को देकर माध्वी को वापस लेकर शुल्क रूप में गालव कृष्णा ग्रहण करे। इस प्रकार गालव को कृष्णा तथा ययाति को दान कीर्ति प्राप्त हो जायेगी। पितृ आज्ञाकारिणी माध्वी बिना किसी प्रतिवाद के गालव के साथ चल देती है। वस्तुत: उसकी महानता स्तुत्य है–

ययाति– पुत्रि। माध्वी। एष राजकुमारो गालवो महर्षि विश्वामित्रस्यं शिष्य:। अहं त्वामस्मै समर्पयामि। त्वमनेन सह गच्छ। अस्याज्ञापालनमेव तव धर्म:।[8]

पत्नी पुरुष की पूरक है, पुरुष के समस्त अभाव उसे पाकर स्वयमेव भर जाते हैं। वस्तुत: सुभार्या स्वर्ग की सबसे बड़ी विभूति है। एक आदर्श पत्नी पतनोन्मुख पति को सन्मार्ग पर लाती है। शर्मिष्ठा, भगवती आदि इसका साक्षात् उदाहरण है।

'शुक्रशापम्' की नायिका शर्मिष्ठा विवेक भ्रष्ट पति को घोर पतन से बचा लेती है। महर्षि शुक्राचार्य के शाप से असमय वृद्ध हुआ ययाति अपने पुत्र पुरु से यौवन दान लेकर जब रमण हेतु अपनी पत्नी शर्मिष्ठा के पास आता है तब शर्मिष्ठा स्पष्ट कहती है कि राजन् आपका यौवन नष्ट हो चुका है इस समय आपके शरीर में मेरे पुत्र का यौवन है। अत: जब तक आपके शरीर में मेरे पुत्र का यौवन है मैं आपके साथ रमण नहीं कर सकती–

शर्मिष्ठा–प्रियतम! नास्त्येतत्त्व यौवनम्। यद् यौवनम् त्वया स्वकीयं कथ्यते तन्मे पुत्रस्य पुरोरस्ति। यावत्कालमनेन मम पुत्रा यौवनेन युवासि तावत्कालमहं तवांकशायिनी न भविष्यामि[9]

X.........X.................X.............X............X

अस्यां युवावस्थायामहं त्वां न सेविष्ये।[10]

विवश ययाति पुरु को उसका यौवन लौटाता है तथा शर्मिष्ठा वृद्ध ययाति की सेवा शुश्रूषा करती है।[11]

'तपस: पफलम्' की नायिका भगवती सहनशीलता की प्रतिमूर्ति तथा धैर्य की अवतार है। भगवती वाह्य सौन्दर्य से शून्य होने के कारण अपने पति गोविन्द की नितान्त उपेक्षिता है तथा वह उसे त्यागकर वन में चला जाता है।[12] भगवती जब उसका अनुसरण करती है तब वह उसे दण्ड का भय दिखाकर वापस भेजने का प्रयास करता है किन्तु वह कहती है कि–

* एसो. प्रोफेसर (संस्कृत विभाग) दिगम्बर ज़ैन कॉलिज, बड़ौत, बागपत (उ.प्र.) भारत

ताडय मां लगुडेन, मरय मामर्थचन्द्रेण, जहि मामसिना, परमहमन्यत्रा न गमिष्यामि त्वामत्रा विहाय प्रियवर! त्वां बिना स्वप्राणांस्त्यक्ष्यामि भगवन्!अहमत्रा त्वां सेविष्ये! पक्त्वाद्धन्नादिकं भवन्तं भोजयिष्यामि।[13]

भगवती अपनी अर्हनिश सेवा से अपने पति गोविन्द को अपने अनुकूल बना लेती है।[14] भगवती गृह से पलायन करने वाले अपने पति को कर्त्तव्य पालन का उपदेश देकर उचित राह दिखाती है उसके तर्क अकाट्य है–

................गृहं चल, गृहस्थधर्म च पालय। गार्हस्थ्यपालनेन भगवांस्त्वयि प्रसन्नो भविष्यति। एहि, गृहं चलाव। अत्रा वने क्क भगवान्? भगवांस्तु हृदये वसति, प्रेम्णि वसति, कर्त्तव्यपालने च वसति। यं स्कवर्तव्यं न पालयति, स किं मनुष्य? पशुरपि सन्तानं प्रति कर्त्तव्यं पालयति। भवांस्तु मानव:।[15]

विद्योत्तमा मिश्र जी की सर्वाधिक सशक्त नारी पात्रा है। 'त्यागपत्रा निरासनम्' की नायिका विद्योत्तमा परम विदुषी शालीन, विनम्र तथा सुसंस्कृत है।[16] वह आदर्श पत्नी है तथा पति की उन्नति में सहायिका बनती है। बुद्धिमती विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की है कि वह अपने से बुद्धिमान् पुरुष से विवाह करेगी। कुछ पण्डित लोग छल से उसका विवाह मूर्ख कालिदास से करा देते हैं। वह मूर्ख पति का तिरस्कार कर घर से निकाल देती है।[17] विद्योत्तमा के तिरस्कार से कालिदास को प्रेरणा मिलती है तथा वे साधना कर उच्च कोटि के कवि बनकर राजा विक्रमादित्य के राजकवि पद को विभूषित करते हैं। इस प्रकार विद्योत्तमा अपने पति की उन्नति का मूल कारण है। वह राजा विक्रमादित्य से कहती है–

परमत्राायं पत्नी धर्म:।
यत्सा मनसा वाचा नित्यं,
कामयेत कर्मणा पतिहितम्।।[18]

X.........X...........X..........X..........X

तया हि भावनया तदाचरम्
येनाद्धज्ञादयमभूत्कविर्ज्ञ:।
वचनमस्तु चेदनृतं में नृप।
तदहं दण्ड्या, पृच्छ कविमिदम्।।[19]

कहा जाता है कि माता संसार की पूजनीय वस्तुओं में सर्वाधिक पूजनीया है। मातृत्व के बिना कोई भी नारी पूर्ण नहीं समझी जाती। माता को नारी का पवित्रतम रूप माना जाता है।

सुनीति एक आदर्श माँ है। 'ध्रुवम्' नामक रूप में सुनीति अपने पुत्र ध्रुव से अत्यधिक स्नेह करती है।[20] आश्रम में ध्रुव को न पाकर वह चिन्तित हो जाती है तथा ईश्वर से प्रार्थना करने लगती है–

सुनीति:–........क्क गतोद्धसि वत्स! मामेकाकिनीं परित्यज्य। त्वमेवासीरेको ममाश्रयो हा। सोद्धपि गत: किम्? क्क गच्छेयमधुना? त्वामन्वेष्येयं क्क? मे वत्स.............

भगवन्। रक्ष तम्।........देहि शरणं तस्मै। सम्प्रतिं स तवास्ति भक्त:। हा! मम गतमह:, पुनरागता रात्रिरेषा। रक्ष, रक्षतम्' 'इति प्रार्थयन्ती मूर्च्छति)[21]

'श्री चन्द्रशेखर चरितम' नामक नाटक में चन्द्रशेखर की माता जगरानी भी अति स्नेहमयी स्त्राी है।[22] वह एक आदर्श माता है जो यह समझती है कि उसके पुत्र पर भारत माता का अधिक अधिकार है। वह चन्द्रशेखर को भारतमाता को स्वतन्त्रता कराने के लिये शासन के साथ संघर्ष को भिक्षा रूप में प्रदान करती है–

जगरानी– पुत्रा! चिरंजीव। वत्स! भारतभूमिरियं भारतमाता कथ्यते। सा मत्तोद्धपि महीयसी। साम्प्रतं। सा पराधीना वर्तते। तस्या: स्वतन्त्रायै शासनेन सह संघर्ष? मत्प्रदत्ताभिक्षारूपेण गृहाण।[23]

माता को पुत्रा सर्वाधिक प्रिय होता है। उसके लिये संसार की सर्वाधिक अमूल्य वस्तु पुत्रा है। 'पुत्रा कामिनी' की नायिका प्रभावती इसका साक्षात् उदाहरण है।[24] वह मोक्ष की कामना नहीं करती अपितु केवल एक पुत्र चाहती है। प्रभावती युद्ध स्थल जाते हुए अपने पति सुधन्वा से प्रार्थना करती है कि वह उसे पुत्रा–बीज प्रदान करे जिससे वह पुत्र उत्पन्न कर उसके आश्रय से जीवन व्यतीत कर सके–

प्रभावती–नहि। नाहं मोक्षं कामये परमहन्तु स्वमदृश्यं विवेकं पुत्रं प्रत्यक्षं द्रष्टुमिच्छामि, तत्प्रिय। तं मयि समुत्पन्न कुरु यत्पालनमांश्रित्याहं जीवनं धरयिष्ये।'[25]

इस प्रकार मिश्र जी के रूपकों में नारी के पुत्री, पत्नी तथा आदर्श माता के रूपों का सुन्दर चित्रण हुआ है। इन रूपकों में नारी के अन्य रूपों का भी दिग्दर्शन होता है।

मिश्र जी के ऐतिहासिक रूपकों में नारियों को स्वतन्त्राता सेनानी के रूप में दर्शाया गया हैं 'स्वातन्त्रायवीर स्मृति:' नामक रूपक में आठ नारी पात्रा भारत माता को स्वतन्त्रता कराने के लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग करती हैं–[26]

जानकी– स्वमातृभूमि रक्षायै यदहं कृतवती, तच्छुभमेव। कातरा एव पराधीनत्वम–र्घैधी कुर्वन्ति, याश्च वीरांगना: सन्ति, ता: स्वाधीनतामभिलषन्ति। तदहं स्वतन्त्राद्धस्मि। नाद्धस्ति मृत्योभयम्।................वन्दे मातरम्। जयतु भारतमाता।[27]

इसी प्रकार कृष्णा, पारी, कनकलता, रत्नप्रभा, योगेश्वरी आदि स्त्री पात्रा देश के लिये अपने प्राणों को बलिदान करती हैं।

मिश्र जी के नारी पात्र दार्शनिक ज्ञान से भी सम्पन्न हैं। अकलि देवी गीता के श्लोक का ज्ञान करती हुई मृत्यु को अंगीकार करती है–

अकलि देवी–.............यदि त्वं मां हंसि तदहं शरीरवस्त्रां विहाय जन्मान्तरे, नवीनकायं धरयितास्मि। श्रृणु रे दुष्ट!

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णययाति नरो(पराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीणर्णान्य–
नयानि संययाति नवानि देही।।[28]

आज की नारी समाज की एक जागरुक महिला है। मिश्र जी के सामाजिक रूपकों में नारी को समाज के एक जागरुक पात्र के रूप में भी दिखाया गया है जो अपने घर, परिवार, समाज व देश के प्रति पूर्ण सचेत है। 'अपत्यसमता' नामक रूपक में सुशीला समाज की जागरूक स्त्री है।'[29]

श्री मिश्र जी ने नारी के विभिन्न पक्षों का सूक्ष्म चित्राण किया है। उनके नारी पात्रों के चित्रण में मात्र कोरा आदर्श नहीं है अपितु कठोर यथार्थ का चित्राण भी है यही कारण है कि इनके रूपकों में नारी चरित्र की दुर्बलतायें भी देखने को मिलती है।

देवयानी अपने पिता की लाड़ली कन्या तो है किन्तु ऋषि शुक्राचार्य के अत्यधिक स्नेह ने उसे जिद्दी बना दिया है तथा अपने पिता के माध्यम से अपनी समस्त उचित अनुचित इच्छायें पूर्ण करना चाहती है।[30] 'कचदेवयानीयम्' नामक रूपक में देवयानी द्वारा अपने पिता के शिष्य कच से किया गया पुन:–पुन: प्रणय निवेदन उसकी निर्लजता को प्रकट करता है।[31] अन्त में जब कच उसका प्रणय निवेदन स्वीकार नहीं करता तथा उसे भगिनी कहता है तब कामान्ध देवयानी उसे शाप दे देती है–

देवयानी– अहं तुभ्यं शपामि यत्तवया मम पितु सकाशात् संजीवन

विद्या या गृहीता, सा निष्पफला भविष्यति देवलोके।[32]

इसी प्रकार देवयानी राजा ययाति से भी छल से विवाह करती है।[33] जब राजा ययाति उसे पत्नी रूप में स्वीकार नहीं करता तब वह उसे अपने पिता के शाप का भय दिखाती है–

देवयानी–......अहमस्मि तव पत्नी। यदि मां सह न नेष्यसि, तदहं पितु सकाशं गत्वा तव परीवादं करिष्ये। ततो कुद्धो में पिता तुभ्यं शाप प्रदास्यति। अतो में वचनं कृपया स्वीकुरु देव।[34]

इस प्रकार देवयानी के माध्यम से कवि ने नारी की काम जनित दुर्बलता की ओर संकेत किया है।

इसी प्रकार 'ध्रुवम्' नामक रूपक में सुरुचि को राज्य की लोभी तथा ईर्ष्यालु दिखाया है। सुरुचि अपनी सपत्नी सुनीति के पुत्र ध्रुव को अपमानित कर राजमहल से बाहर निकाल देती है।[35]

मिश्र जी के सामाजिक रूपक वर्तमान समाज की समस्याओं से विषय चुनकर गृहीत है। इन रूपकों में वर्तमान समय में नारी की क्या स्थिति है इस पर प्रकाश डाला गया है। यद्यपि आज कुछ स्त्रियाँ शिक्षित अवश्य हैं तथा आज भी वे उत्पीड़न का शिकार होती है। 'अपत्य समता' नामक रूपक में पुष्पा अपने गर्भ का परीक्षण नहीं कराना चाहती क्योंकि उसे भय है कि कही उसका पति ऐसा करने के कारण उसका त्याग न कर दें–

स्वपत्युराज्ञामन्तरेणाद्धहं स्वस्नायु बन्धनमुचितं न मन्ये। प्श्चात्स्नायु बन्धं ज्ञात्वा स मां त्यक्तुं शक्नोति।[36]

'वधूहत्या' नामक रूपक दहेज जैसी भारतीय समाज की विकराल समस्या पर आधरित है जिसमें नारी की अति शोचनीय स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है कभी वह दहेज कम लाने के कारण जलायी जाती है तो कभी सुन्दर न होने के कारण। वह कहीं भी सुरक्षित नहीं है न घर में न बाहर–

क्कापि वधूः यौतुकलोभेन हन्यन्ते, क्कापि सा कुरूपतया क्कापि च बन्धयतया दह्यते। वंशवृद्धि भवति, तस्या इयं दशा(स्मत्समाजे।[37]

इस प्रकार मिश्र जी के रूपकों में नारी चरित का सर्वांग चित्राण हुआ है। इन रूपकों में जहाँ एक ओर नारी चित्राण आदर्श की प्रभा से दीप्त है वहीं यथार्थ की छाया भी उसमें सदैव विराजमान है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समाज में नारी की जो दशा है उसका भी व्यापक चित्रण किया गया है। आज नारी जहाँ एक ओर शिक्षित तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग है वहीं दूसरी ओर ऐसी नारियों का भी अभाव नहीं है जो अशिक्षित है, वर्तमान पुरुष प्रधान समाज में नितान्त उपेक्षिता है तथ दहेज आदि भीषण बुराईयों से व्यथित है।

वस्तुतः मिश्र जी ने नारी को भीतर तक समझने का प्रयास किया है। उनके रूपकों में नारी भावों का इतना सूक्ष्म चित्रण इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. श्री रामकिशोर मिश्र जी ने अपना सम्पूर्ण परिचय अपने द्वारा रचित व प्रकाशित पुस्तकों में यत्र-तत्र दिया है। इनकी पुस्तकें यमुना मुद्रणालय, बागपत (उ.प्र.) से प्राप्त की जा सकती है।
2. 'साहित्य सुरभिः– ज्ञान प्रकाशनम्, सुभाष बाजार, मेरठ (उ.प्र.) इस पुस्तक के कवर पेज पर मिश्र जी द्वारा प्रणीत पुस्तकों की सूची दी गयी है।
3. 'कच देवयानीयम्' नामक रूपक का संकलन मिश्र जी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'एकांकचमत्कृतिः' में किया गया है। इस पुस्तक में मिश्र जी के 14 एकांकियों का संकलन हैं अतः उसी को पृ0सं0 दी गयी है। 'एकांक चमत्कृतिः' पृ0सं0-79, 82
4. वही, 'ययाति देवयानी शर्मिष्ठीयम्' नामक रूपक, पृ0सं0-98, 99
5. वही, गालवमाध्वीयम् नामक रूपक, पृ0सं0-43
6. वही, 'ययाति देवयानी शर्मिष्ठीयम्' नामक रूपक, पृ0सं0-100
7. वही, पृ0सं0-101
8. वही, 'गालवमाध्वीयम्' नामक रूपक, पृ0सं0-18
9. वही, 'शुक्रशापम्' नामक रूपक, पृ0सं0-18
10. वही, पृ0सं0-112
11. वही, पृ0सं0-112
12. वही, पृ0सं0-45, 46
13. वही, पृ0सं0-46
14. वही, पृ0सं0-47, 48
15. वही, पृ0सं0-49
16. 'साहित्य सुरभि' त्याग-पत्र - निरासम्।
17. वही, पृ0सं0-18, तृतीय अंक।
18. वही, अष्टम अंक, श्लोक सं0-43
19. वही, श्लोक सं0-44
20. 'एकांकी चमत्कृति' में 'ध्रुवम्' नामक रूपक, पृ0सं0-07, 08
21. वही, पृ0सं0-10
22. 'साहित्य सुरभि' में श्री चन्द्रशेखर चरितम्' नामक नाटक, देखिये- प्रथम अंक, द्वितीय दृश्य।
23. वही, पृ0सं0-87
24. 'एकांकचमत्कृतिः' में 'पुत्रकामिनी' नामक रूपक।
25. वही, पृ0सं0-36
26. वही, 'स्वातन्त्रयवीर स्मृतिः' नामक रूपक, पृ0सं0-26, 27, 28
27. वही, पृ0सं0-26
28. वही, पृ0स0-25
29. वही, 'अपत्य समता' नामक रूपक।
30. वही, 'कचदेवयानीयम्' नामक रूपक का षष्ठ दृश्य, ययाति देवयानी शर्मिष्ठीयम् नामक रूपक का प्रथम दृश्य।
31. वही, 'कचदेवयानीयम्', पृ0सं0-86, 87, 88
32. वही, पृ0सं0-88
33. वही, 'ययाति देवयानी शर्मिष्ठीयम्' नामक रूपक का प्रथम दृश्य, द्वितीय दृश्य।
34. वही, पृ0सं0-93
35. वही, 'ध्रुवम्' नामक रूपक, पृ0सं0-5
36. वही, 'अपत्य समता' नामक रूपक, पृ0सं0-63
37. वही, 'वधू हत्या' नामक रूपक, पृ0सं0-32

****

राजस्थान की हिन्दी-कहानी : विकास यात्रा भाग - 3

डॉ. राजकुमार चौधरी *

प्रस्तावना - कथा-लेखन परम्परा

चतुर्थ चरण (साठोत्तरी कहानी)

राजस्थान के हिन्दी-कहानी के चतुर्थ चरण - साठोत्तरी कहानी में 'नयी कहानी', 'साठोत्तरी कहानी' तथा 'आज की कहानी' का सूत्रपात हुआ है। इसके साथ ही प्रदेश के अनेक कहानीकारों को हिन्दी कहानी के केन्द्र में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हुआ है। यथा- शुभू पटवा, शचीन्द्र उपाध्याय, रणजीत, रमेश उपाध्याय, राजानन्द, पानू खोलिया, मणि मधुकर, भगवतीलाल व्यास, आलमशाह खान, कमर मेवाड़ी, अशोक आत्रेय आदि। इनमें से कुछ कथाकार अभी भी रचनारत हैं। इन नामों को छोड़कर समकालीन हिन्दी कथा-लेखन का कोई भी नक्शा पूरा नहीं हो सकता। **शुभू पटवा** के दो कथा-संग्रह उपलब्ध है। 'शतरंज का प्यादा' कहानी-संग्रह में उनकी प्रारम्भिक कहानियों को संकलित किया गया है, जिसमें एक सतही रुमानी दृष्टि के बीच भी सम्भावनाओं के अंकुर दिखाई देते हैं। 'फफोले' कथा-संग्रह की कहानियाँ अपेक्षाकृत अधिक प्रौढ़ हैं। 'बीती बातों के ताबूत', 'प्रत्यावलोकन', 'मुर्दा समझौते' और 'एक खोई हुई तस्वीर की तलाश' संग्रह की उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

कथाकार **शचीन्द्र उपाध्याय** के कहानी-संग्रह 'काँपती सिन्दूर रेखाएँ', 'झुकी हुई दिशाएँ' प्रकाशित हो चुके हैं। अभी भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शचीन्द्र उपाध्याय की कहानियाँ प्रकाशित हो रही हैं। उपाध्याय ने गाँव से टूटे हुए और शहर से नहीं जुड़ पाये व्यक्तियों की छटपटाहट और अकेलेपन को अभिव्यक्त किया है। उनके पात्र न स्वयं को गाँव से जुड़ा पाते हैं न शहर से। रुमानी भावुकता उनकी कहानियों को कमजोर बनाती है। 'काँपती सिन्दूर रेखाएँ' एक बेरोजगार व्यक्ति के बीमार पड़ने और इस कारण इन्टरव्यू में न पहुँच पाने की कथा है। 'मानव के दीप' में अपने गाँव में बेगाने हो गए एक व्यक्ति की सम्पन्न किसान से तुलना की कहानी है, किन्तु तभी उसे याद आ गया - 'आज तो पड़वा की दीवाली थी। खेत वालों की दीवाली, बैलवालों की दीवाली, करसाणों की दीवाली है - पर वह तो अब करसाण नहीं रहा। उसके अन्तस से एक निश्वास निकल गयी - काश! वह खेत पा सकता, बैल पूज पाता, हीड़ो गा पाता।'[1] इस संग्रह की 'एक बेबस बाप', 'आँख का पत्थर' और 'बसेरा' उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

डॉ. रणजीत की कहानियों के दो कथा-संग्रह - 'गर्म लोहा : ठण्डे हाथ' और 'एक प्रति रावण का जन्म' प्रकाशित हुए हैं। प्रगतिशील विचारधारा के प्रतिबद्ध कथाकार ने विचारोत्तेजक एवं रोचक कहानियाँ लिखी हैं। इनकी कहानियाँ कहीं-कहीं प्रयोगधर्मिता और प्रतीकात्मकता के बावजूद दृष्टान्त बन गई हैं; जैसे 'चिड़े-चीड़ी की कहानी', 'पुराना त्रिकोण : नयी रेखाएँ'। इन कहानियों में सुखद बात यह लगती है कि बहुत स्वच्छन्दता और आत्मविश्वास से कहानीकार रणजीत ने नये-नये प्रयोग किये हैं और यह चीज आज की कहानी में दुर्लभ है। 'आपका भविष्य' और 'कोयला भई न राख' इस संग्रह की अच्छी कहानियाँ हैं।

कहानीकार-उपन्यासकार-नाटककार-समीक्षक-सम्पादक **रमेश उपाध्याय** हिन्दी-जगत् का चिरपरिचित नाम है। इनकी पहली कहानी 'एक घर की डायरी' (सन् 1962) 'लहर' में छपी थी। तब से अब तक लगातार लिख रहे हैं। जैसा कि विकल्प ने कहा - 'आजीविका के किस तरह संघर्षो में साधारण व्यक्ति टूट जाता है, रमेश उपाध्याय ने निरन्तर बेहतर लिखते चले जाने की अपनी प्रतिभा सम्पन्नता का परिचय दिया है।'[2] अब तक उनके 'जमी हुई झील', 'शेष इतिहास', 'नदी के साथ', 'चतुर्दिक' एवं 'पैदल अन्धेरे में' आदि कथा-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

रमेश उपाध्याय के पहले कहानी-संग्रह 'जमी हुई झील' में दो तरह की कहानियाँ है। एक प्रयोगवादी प्रत्तीकात्मक कहानियाँ तो दूसरी चार लेखकों द्वारा मिलकर लिखी गयी कहानी भी हैं। प्रथम वर्ग में 'पुराने जूतों की जोड़ी', 'चींटियाँ', 'उपजीवी', 'अस्पताल' आदि एवं दूसरे वर्ग में प्रभाकर माचवे, हिमांशु जोशी, योगेश गुप्त और स्वयं रमेश उपाध्याय द्वारा लिखी गयी 'प्रतिध्रुव' नामक कहानी है।

क्हानीकार ने 'गलत-गलत', 'अंधा-कुँआ', 'ब्रह्मराक्षस', 'दोहराव', 'षड़यंत्र' में लुटे-पिटे कमजोर शोषित आदमी की तकलीफ और पीड़ा को इतनी शिद्धत के साथ अभिव्यक्त किया है जैसे अन्धेरे में कोई जोर से चीखा हो। यद्यपि निष्कर्ष और इशारे वहीं हैं जो नयी कहानी की सोच के थे। मसलन - शहर, मशीन और राजनीति-मानवीय यंत्रणा के मुख्य कारण हैं। जाहिर है इन निर्णयों से आज कोई सहमत नहीं होगा स्वयं रमेश उपाध्याय भी नहीं, लेकिन सभ्यता के विकास के समानान्तर ही मानवीय गरिमा और अर्थवत्ता का जो अवमूल्यन हुआ और हो रहा है - उसकी सही प्रतिध्वनि इन कहानियों में है; इसलिए ये आज भी पठनीय और प्रासंगिक हैं।

दूसरे संग्रह 'शेष इतिहास' तक आते-आते सामाजिक यथार्थ की उनकी पहचान अधिक स्पष्ट और कथा विधा पर उनकी पकड़ और मजबूत होती चली है। इस संग्रह की 'सागर-संगम', 'गलत पत्तो पर', 'दूसरी पवित्रा', 'अलग' और 'विपरीत' आदि उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

तीसरे कथा-संग्रह 'नदी के साथ' की कहानियाँ सीधे-सीधे प्रतिबद्ध और जुझारु है। 'आगे बढ़ते लोग', 'देवीसिंह कौन', 'बुलडोजर वाला',

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, राजसमंद (राज.) भारत

'रामपत ला' और 'ला' आदि कहानियाँ वर्ग-विभक्त समाज में सही दोस्त और सही दुश्मन की पहचान कराती और एक वर्ग-सजग नायक गढ़ती दिखाई देती है। 'देवीसिंह कौन' यह ट्रेड यूनियन चेतना और संगठन में शक्ति को प्रदर्शित करती है। 'बुलडोजर वाला' शासक और शोषक की दुरभिसंधि पर प्रकाश डालती है। 'रामपत ला और ला' गाँव के सामन्त और नवधनाढ्य वर्ग के शोषण को सामने लाती है। 'नदी के साथ' एक वर्ग सजग होते व्यक्ति के आन्तरिक चरित्रों का वर्णन है।

'चतुर्दिक' नामक कथा-संग्रह की कहानियों ने एक नया मोड़ लिया है। अब वह प्रतीकात्मकता के सहारे बड़े प्रश्नों को, प्रजातंत्र-स्वतंत्रता-समानता जैसे प्रश्नों को कहानी में गूँथकर पंचतंत्र से जुड़ती कहानी दिखाई देती है। 'कल्पवृक्ष', 'कामधेनु' एवं 'पानी' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं।

राकेश वत्स ने रमेश उपाध्याय की कथा यात्रा पर टिप्पणी करते हुए लिखा है - 'रमेश उपाध्याय ने अपने लेखन में जितनी दूरियाँ तय की हैं और जितनी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, उतनी उनकी पीढ़ी के किसी एक लेखक ने नहीं की है।'[3]

नाटककार-कहानीकार **राजानन्द** भी पुरानी पीढ़ी के प्रख्यात रचनाकार हैं। 'मम्मी ऐसी क्यों थी' नामक कहानी-संग्रह उपलब्ध है। इनका कहानियों का प्रयोजन जीवन की अभिव्यक्ति, जीवन जिसे स्वयं लेखक भोग रहा है, युग और परिस्थिति के माध्यम से प्रतिपादित किया है।

राजानन्द ने नये भावबोध की कहानियाँ लिखी हैं। यहाँ घटनाओं की बजाय पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण पर बल दिया है। 'कबर का दिया' में एक वेश्या के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण - 'रण्डी की जवानी सोना उगलती है, अधेड़ावस्था चाँदी और बुढ़ापा बीमारी तथा भूखमरी।' 'दीपक बिना आरती जलती' में पति द्वारा प्रताड़ित एक निस्संतान स्त्री की वेदना और अन्त में उसका अस्पताल से बच्चा चुरा लाना एक विडम्बना के रुप में चित्रित हुआ है। 'मोह' विधवाओं की समस्याओं को उठाती है तो 'खराश' विवाहेत्तर संबंधों पर टिप्पणी करती है; किन्तु उनकी सबसे अच्छी कहानी है - 'राहत - राहत', जिसमें अकाल के रुप में प्रकृति की मार और राहत के नाम पर व्यवस्था की मार के बीच पिसते राजस्थान की जनता की विडम्बना का मार्मिक चित्रण है।

राजानन्द की कहानियाँ इन विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है - 'वे चाहे समाज का चित्रण करें अथवा मानसिक क्षेत्र का, उसमें अस्वाभाविकता को स्थान नहीं देते।' अतः यथार्थ अत्यन्त तीक्ष्ण व सशक्त रुप में व्यंजित होता है।

राजस्थान की हिन्दी कथा-यात्रा के साठोत्तरी कहानीकारों में **पानू खोलिया** का पत्रिकाओं में प्रकाशित - चर्चित होने के बाद इनकी नाम महत्तवपूर्ण है। प्रतिष्ठित 'एक की रति और' कथा-संकलन में पानू कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ। खोलिया ने निम्न मध्यवर्ग के जीवन संघर्ष, जीवन के प्रति उनकी लालसा और मशीनीकरण की आपाधापी में निरन्तर विघटित - अवमूल्यित होते जाते मानव व्यक्तित्त्व को बड़े कौशल और अन्तरंगता से उकेरा है। इनकी भाषा एकदम चाक-चौबन्द, परिमार्जित, प्रौढ़ एवं परिपक्व है। डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने कहा - 'पानू ने पहाड़ी जीवन पर काफी लिखा है, वे सूक्ष्म मनावैज्ञानिक सूत्रों को उद्घाटित करने में सिद्धहस्त है।'[4]

रमेश उपाध्याय के समकालीन राजस्थान के प्रख्यात कहानीकार - नाटककार **मणि मधुकर** की अब तक लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके कथा-संग्रह 'भरत मुनि के बाद', 'त्वमेव माता', 'चुनिन्दा चौदह', 'हवा में अकेले' और 'एक वचन बहुवचन' आदि प्रमुख हैं। उनकी एक-एक कहानी कई-कई संग्रहों में संकलित है। 'भरत मुनि के बाद' तथा 'त्वमेव माता' में मणि मधुकर अपनी एक अलग पहचान शैली और भाषा के कारण बनी है। इनकी कहानियों का कथ्य बहुत सीमित है। मणि मधुकर की तमाम कहानियों के केन्द्र में उनकी सोच है कि आदमी एक अकेली विशिष्ट इकाई है जो दी हुई परिस्थितियों में जीने के लिए अभिशप्त है और ये परिस्थितियाँ भी आदमी-दर-आदमी अकेली और विशिष्ट है; इनकी गुंजलक में फँसा आदमी आमतौर पर निहत्था और लाचार है। उसकी छटपटाहट, खीज, चिढ़, घिन, गुस्सा सब मिलकर भी परिस्थितियों को बदलने का कोई रास्ता नहीं बनाती - उल्टे उसे ही तोड़ती और कमजोर बनाती है। इसलिए जिन्दगी को उसकी उलजलूलियत में स्वीकार कर लेना और झेल जाना ही एक मात्र बहादुरी हो सकता है।

मणि मधुकर की भाषा एवं कला पक्ष पर मुग्ध होकर डॉ. नवलकिशोर कहते हैं - 'मणि मधुकर को पढ़ते समय आप हिन्दी की आज की गद्य-भाषा से अपने को गुजरता पाते है - लेखक की क्षमता के आप कायल हो जाते हैं। भाषा के सर्जनात्मक प्रयोग की दृष्टि से मणि के नाटकों की तो प्रशंसा हुई ही है - उसके कथा-साहित्य की भाषा भी अपनी एक पहचान लिए हुए है..........जो गद्य मिलता है उसे हमारी भाषा के नये बिखरे गद्य के उदाहरण के रुप में रखा जा सकता है।'[5]

डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल के अनुसार - 'मोहरसिंह यादव ने राजस्थान के रेगिस्तान को अपनी कथाओं में पूरे रुखेपन के साथ उभारा है, परन्तु इस दृष्टि से अधिक चर्चित हुए है मणि मधुकर। उनमें प्रयोगशीलता है और है जीवन की अचूक पकड़। राजस्थानी जीवन का खुरदरापन और भयावहता दोनों उनके यहाँ भरपूर हैं। फंतासी के भी वे सफल प्रयोक्ता है।'[6]

कवि और कहानीकार **भगवतीलाल व्यास** का एकमात्र कहानी-संग्रह 'सूरज लीलती घाटियाँ' प्रकाशित हुआ है। इस कहानी-संग्रह पर श्री व्यासजी राजस्थान सहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। व्यासजी के अधिकांश पात्र शहरी निम्न मध्यवर्गीय है घटनाएँ जिन्हें डराती हैं और जो अधिकतर समझौते करने पर कदम-कदम पर विवश है। उनके पात्र परिस्थितियों से टकराने या नाराज होने पर या उन पर सोचने की जगह अवश भाव से आत्मसमर्पण कर देते हैं। इनका अधिकांश लेखन कार्य काव्य-क्षेत्र में हुआ है।

आलमशाह खान राजस्थान के अग्रगण्य कथाकारों में से एक हैं। इनके कथा-संग्रह 'परायी प्यास का सफर', 'किराये की कोख', 'एक ओर सीता', 'सांसों का रेवड' प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने अपनी कहानियाँ दरिद्र, शोषित-पीड़ित (सर्वहारा वर्ग) वर्ग के जीवन संघर्ष, आक्रोश एवं विद्रोह को भी झिंझोड़ती - परेशान करती है। इनकी भाषा गौरतलब है। लेखकीय विवरणों में एक सजावट, एक नयी किस्म की अलंकार प्रियता और पात्रों के संभाषण में उसी भाषा के रचाव की कोशिश की है जो वे बोलते हैं, किन्तु इन कहानियों में पात्र जो भाषा बोल रहे हैं, वह न राजस्थानी की कोई बोली है, न ब्रज मिश्रित हिन्दी, न बम्बईया हिन्दी - यह तीनों के संयोग से पैदा हुई लगती है। इनकी भाषा उदयपुर के कूंजड़ों की भाषा से बहुत कुछ मिलती है जिसे स्वयं कहानीकार बहुत अच्छी तरह जानते है। एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया है कि - 'इन सब्जी-फल विक्रेताओं में हिन्दू और मुसलमान दोनों समुदाय के पात्रों की भाषा है।'

डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने इनकी भाषा पर टिप्पणी करते हुए लिखा है - 'आलमशाह खान निम्नवर्गीय जीवन को जब अपनी विशिष्ट भाषिक

संरचना के साथ सुलझी नजर से देखते हैं, तो 'किराये की कोख' और 'परायी प्यास का सफर' जैसी बहुचर्चित कहानियाँ जन्म लेती हैं।'[7]

प्रगतिशील विचारधारा के कथाकार **क़मर मेवाड़ी** के 'लाशों का जंगल', 'रोशनी की तलाश', 'उसका सपना' कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कमर मेवाड़ी की दृष्टि का केन्द्र स्त्री-पुरुष सम्बन्ध है। उनकी अधिकांश कहानियों के नायक स्त्रियों के प्रति एक किशोर जिज्ञासा या अप्राप्य सुख की कुण्ठा में धुत्त दिखाई देते हैं, जहाँ पुरुष को उपलब्ध भी है........वहाँ भी ये सम्बन्ध नैसर्गिक उन्मुक्तता या भावात्मक शुचिता के साथ नहीं.......एक अपराध या साहसिकता के साये तले खड़े दिखाई देते हैं। 'लाशों का जंगल' निम्नवर्ग की सामाजिक असुरक्षा का सवाल उठाती है।

'सारिका', 'नई कहानियाँ', 'कहानी', 'माध्यम', 'ज्ञानोदय', 'कल्पना', 'बिन्दु 'लहर' आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में वर्षो तक प्रकाशित-चर्चित होने के बाद **अशोक आत्रेय** का कहानी-संग्रह 'मेरे पिता की विजय' राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने प्रकाशित किया। इनका लेखन कार्य अभी भी जारी है। अशोक आत्रेय नयी कहानी के रंग में रंगे हुए हैं और उनकी कहानियाँ हर किस्म के परम्परागत कहानीपन से विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। यहाँ कथानक एक सपाट चेहरेवाला 'वह' या 'मैं' है जो किसी भी बिचौले शहर का कोई भी निम्न मध्यवर्गीय बाबू या अध्यापक या बेकार नौजवान हो सकता है। यहाँ विकल्पहीनता की स्थितियाँ और कुछ नहीं कर पाने की खीझ या कुण्ठा की और कुछ पलायनवादी, गैर जिम्मेदाराना आचरण भी जिन्हें स्थितियों की उपज बताकर ग्लोरिफाह किया गया है। इनका रुझान प्रयोगशीलता की ओर ज्यादा रहा है।

इनकी भाषा नयी और चमकदार है और विडम्बना के विद्रूप और व्यंग्य को वहन करने में सक्षम है। कमलेश्वर ने इस सन्दर्भ में टिप्पणी की है - 'कथा के स्तर पर जो परिवर्तन आया है वह मूलत: चुनाव की स्वतंत्रता का है। कहानीकारों ने राजनीतिक वादों, परम्परा प्रेरित मन्तव्यों, घर-परिवार की सीमाओं, पति-पत्नी के संबंधों आदि के सतही और सहज कथा बिन्दुओं से मुक्ति पा ली है।'[8]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. 'काँपती सिन्दूर रेखाएँ' - शचीन्द्र उपाध्याय - पृष्ठ 35.
2. 'कथा साहित्य विशेषांक' - 'विकल्प'
3. 'मंच' - राकेश वत्स - 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी विशेषाक' 1973
4. 'मधुमती' - दिसम्बर 1989 - पृष्ठ 35
5. डॉ. नवलकिशोर - 'राजस्थान में हिन्दी उपन्यास का एक दशक' : राजस्थान हिन्दी लेखक सम्मेलन - 1979 - जोधपुर में पठित आलेख का अंश
6. 'मधुमती' - दिसम्बर 1989 - पृष्ठ 35-36
7. 'मधुमती' - दिसम्बर 1989 - पृष्ठ 35
8. 'बयान तथा अन्य कहानियाँ' : कमलेश्वर - भूमिका

****

आदिम समझौता

डॉ. हजारी लाल मौर्य*

प्रस्तावना – आजादी की इच्छा करने वाली औरत के लिए जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में 'उसी' आदिम समझौते की याद दिलाते हुए लिखा–

क्या कहती हो ठहरो नारी, संकल्प अश्रु जल से अपने,
तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने से सपने।।

इस एक समझौते ने कितने आयाम एक साथ खोले:

1. स्त्री ने अपनी यौनिकता का सौदा करके वासना की गुलामी स्वीकार की। अपनी स्वतन्त्रता खो दी। आज भी स्त्री यदि स्वतन्त्रता चाहे तो इस समझौते को तोड़े या करने से बचे जिसे अब विवाह कहते हैं।

2. पुरूष ने प्रयाय की कीमत एक गुलामी ओढ़ कर चुकाई। बहुवैकल्पिकता की स्वतन्त्रता खोई। एक स्त्री की जिम्मेदारी ओढ़ कर बँध गया। आर्थिकता का विकास किया। लेकिन प्रतियोगी अन्य पुरूषों से बचने के लिए अन्य समझौते किये। न अन्य में दखल देना न स्वयं में दखल स्वीकार करना।

3. एकत्र किये गये भोजन को सड़ने से बचाने के लिए उपाय खोजे गये।

4. औरत ने भोजन को परिष्कृत करने के तरीके खोजे।

5. सभी जोड़े समझौते का उल्लंघन न करें इसके लिए पंचायत और मुखिया बनाये गये।

6. शिकार, सुरक्षा, वन्य जीवों से रक्षा, अन्य समूहों से रक्षा आदि ऐसे कार्य थे जो सामुहिकता को आवश्यक रूप से बचाये हुए थे। यह समाज था। समाज के बिना एक व्यक्ति या एक जोड़े का अस्तित्व बचाये रखना कठिन था।

7. जंगल विभिन्न समूहों की टेरिटरी बन गया। जंगल की भोजन सामग्री पर अन्य समूह कब्जा न करें इसलिए सामूहिकता में ययुद्ध' उभरा। युद्ध ने सामुहिकता की आवश्यकता को बढ़ा दिया।

8. यहीं से व्यक्ति बनाम समाज का द्वंद्व उभरा जो आज तक चला आ रहा है।

9. मानव मस्तिष्क में याद रखने, शिक्षा लेने, समझौते करने, भाषा विकसित करने, जंगल को याद रखने, पंचायत के नियम याद रखने आदि के लिए अधिक जगह की आवश्यकता हुई। इसलिए दिमाग का आकार बढ़ने लगा। यह बढ़ता हुआ आकार आनुवंशिक रूप से परावर्तित होने लगा।

10. बड़ा मस्तिष्क पेट में पूरा बड़ा हो जाये, इतना पर्याप्त बढ़ा कि गाय भैंस के बच्चे की तरह एक–दो घंटे में उठकर चल फिर सके, तो मानव बच्चे का पेट में से बाहर आना ही असम्भव हो जाये। इसलिए प्रकृति ने कम विकसित अवस्था में, जब सिर की हड्डियाँ आपस में जुड़ी भी नहीं होती, बच्चों को जन्म देना प्रारम्भ किया और पालन और सुरक्षा के लिए प्रकृति ने ममत्व पर विश्वास किया। हमारा बचपन विश्व के सब पशुओं से लम्बा हो गया। करीब 10 वर्ष का। प्रकृति में आन्तरिक परावर्तन का यह खेल केसे और किस दिमाग से होता है यह कोई नहीं जानता।

11. औरत ने पुरूष से प्रणय समझौता किया तो अपनी देह के उस प्राकृतिक आवेग को दबा दिया जो गर्भधारण हेतु सभी जीवों में बिना झिझक चलना आया है। नतीजा यह हुआ कि औरत रजस्वला होने लगी। अधिक सहवास के बाद भी गर्भधारण की सम्भावनाएँ घटने लगी। इस जैविक परिवर्तन ने औरत को अपना अंग छुपा लेने के लिए प्रेरित किया। तीन चार दिन अपना अंग छुपाती औरत ने इसे स्थाई आदत के रूप में विकसित किया।

12. भोजन में चर्बी के बढ़ते प्रयोग ने प्रकृति को इतना आश्वस्त कर दिया कि मनुष्य के शरीर पर से बालों का विलोप होने लगा। मनुष्य ने ठण्ड से बचने के लिए कृत्रिम साधनों यथा–पत्ते, घास, खाल, गुफा का प्रयोग प्रारम्भ किया। अत: इन चीजों का संस्कार भी करना सीखना पड़ा।

13. प्रकृति की यह वैरोध्यपूर्ण रचना अनूठी है कि सभी जीवों में नर आक्रामक होता है और मादा रक्षात्मक। अपनी वासना से ग्रसित नर अपने वीर्यदान के बाद मर जाये तो उसे परवाह नहीं। लेकिन वीर्यदान के लिए आपस में लड़कर मर जाना, सफल होने पर सन्तुष्टि से मर जाना और असफल हो जाने पर आत्महत्या करके मर जाना नर का स्वभाव है। सन्धिपादों के सभी नर यों ही मरते हैं। लेकिन पक्षी वर्ग में नर में भी ममत्व होता है। वह भी अण्डे सेने, चुग्गा देने, घौसला बनाने दूध पिलाने आदि कार्यों में आन्तरिक परावर्तन (अर्थात् मूल प्रवृत्ति) के आधार पर ही संलग्न रहता है। स्वन्यायी नरों में मादा के लिए लड़ना और सफल होने पर दूध बनाने की प्रवृत्ति है। असफल होने पर वह मरता नहीं है लेकिन अपनी सहभागी मादा के साथ जनन कार्यों में सहयोग की प्रवृत्ति नहीं है। अत: स्तनपायी मादा चुपचाप गर्भधारण करती है और आगे के शेष कार्य में लगकर अपने नर को भूल जाती है। नर का काम जहाँ खत्म होता है मादा का काम वहाँ से प्रारम्भ होता है। इसलिए मादायें उस नर यूथपति का स्वामित्व स्वीकार कर लेती हैं जो अन्य नरों को यूथ में से भगा देता है। यूथपति बच्चों को हानि नहीं पहुँचाता फिर भी मादायें झुण्ड बना कर अन्य नरों से बच्चों की रक्षा करते हैं। अन्य नर वासना और वीर्यदान के लिए इतने आत्मपीड़ित होते हैं कि वे मादा के बच्चों को मारकर भी मादा को यौन में प्रवृत्व करने से नहीं हिचकते हैं। यहीं से स्त्री और पुरूषों की दुनियाँ अलग हो जाती हैं। यौन वंचित नरों को प्राय: ही, उपेक्षित रहते हुए, झुण्ड बनाकर रहते देखा जाता है। स्त्री और पुरूषों की दो दुनियाओं में सामंजस्य कराया उस आदिम समझौते ने। पुरूष ने अपनी यौनिकता की ऊर्जा को रचनात्मक बनाया। आवास

* व्याख्याता (हिन्दी) राजकीय लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, कोटपूतली, जिला जयपुर (राज.) भारत

बनाने, खाल का परिष्कार करने, खेती करने, पशुपालन करने, भविष्य की व्यवस्था के लिए वर्तमान में कष्ट उठाने, भण्डारण करने, अकाल, अनावृष्टि, अविवृष्टि आदि के लिए भण्डार सुरक्षित रखने जैसे अनेक कार्यों में पुरूष और साथ-साथ मादा की ऊर्जा का व्यय हुआ।

14. स्त्री ने जीवन को कलात्मक बनाया। उसने वर्चुअल सर्जन किये। गीतों में अपनी व्यथा गाई। चिन्ताग्रस्त पुरूष को ढाढस बँधाया। दुख में उसे दुलार कर सुला दिया सुख में सुख के बने रहने की कामना की, मनौतियाँ मांगी।

15. इस समय तक ईश्वर का कोई आविष्कार नहीं है। अकाल महामारी, बीमारी, वन्य जीव अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि को होते देखना उसकी आदत है। परन्तु ये क्यों होते हैं यह सोचना उसने अब प्रारम्भ किया और घरघटना में एक देवता और कर्ता का हाथ होना मानकर वह उन्हें मनाने के लिए अपने बूते के अनुष्ठान करवा रहा। किसी एक ईश्वर जैसा आविष्कार बहुत बाद में हुआ। वह भी अत्यन्त विकसित वर्चुअल तार्किकता के बाद। जब ईश्वर का आविष्कार हुआ तो यह प्राय: जबरन थेपा गया। राजसत्ता के बल पर या तक्र जाल के बल पर। यह तक्रजाल भी विवण्डावादी तर्कजाल ही है।

16. ईश्वर में यह निहित करना कि वह अच्छे बुरे कर्मों का फल देता है एक बड़ा वितण्डा है। सुख है तो पूर्व जन्म के कर्मों से, दुख हैं तो पूर्व जन्म के पापों से। यह पुरूषार्थी और प्राकृतिक आपदाओं के झोलते मनुष्य की बुद्धि से बाहर था, आज भी है। इस जन्म में दुखी हो तो वे कर्म करो जो वितण्डावादी कहें, लेकिन परिणाम की गारण्टी इस जन्म में नहीं। या तो अगले जन्म या स्वर्ग में। स्वर्ग मिलेगा इसकी कोई गारण्टी नहीं (यद्यपि कुछ प्रोटेस्टों और कुछ ब्राह्मणों ने लिखित में यह गारण्टी दी थी।) लेकिन उनकी न मानने पर नरक में जाओगें यह तय है। भारत में और इस्लाम में इस वितण्डा का तर्कजाल इतनी सूक्ष्मता से बुना गया है कि सीधी सी उक्त बात कहने वाला मूर्ख और गँवार है तथा सूक्ष्म तर्कजाल में रचकर इस वितण्डा को अन्तिम निष्कर्ष निकाले बिना छोडत्र देने वाला ब्रह्मज्ञानी, नागरिक और बुद्धिमान है। इन लोगों ने इस वितण्डा को इतना बड़ा बना लिया (आर्य समाजियों ने तो यज्ञ को भी भगवान बना दिया) है कि भौतिकवादी अकेले पड़ गये है। असत्य सत्य से कई गुणा बड़ा हो गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, 1989
2. हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास, हरिदत्त वेदालंकार, 1970
3. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.बी. काणे
4. मानव समाज, राहुल सांस्कृत्यायन, 2003

****

मानसिक विषाद (डिप्रेशन) संगीत द्वारा उपचार

डॉ. अन्नु माथुर*

प्रस्तावना – मानव सदा से ही संवेदनशील तथा संवेगात्मक व्यक्तित्व गुणों की इकाई रहा है। बदलते सामाजिक, आर्थिक परिवेश में मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण व्यक्ति कई बार असमायेजित अल्प समायोजित, दुसमायोजित तथा अतिसमायोजित हो जाता है, जिसके कारण पश्चावर्ती मानसिक प्रभाव से विषाद मनस्ताप रोग उत्पन्न हो जाता है।

आधुनिक तनावग्रस्त सामाजिक परिवेश में विषाद (डिप्रेशन) एक बहुत चर्चित मानसिक रोग के रूप में समाज में व्याप्त है। प्रसिद्ध मनश्चिकित्सक ए.टी. बेक के अनुसार 'विषाद आधुनिक युग में एक महत्त्वपूर्ण स्वास्थ्य की समस्या है। हजारों रागी इस बीमारी से पीड़ित होते हैं, इनको मानसिक चिकित्सालयों क्लीनिक, आउटडोर में देखा जा सकता है। जब विषाद की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है, तो दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या को जन्म देता है, जिसे आत्महत्या कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी समय थोड़ी–बहुत विषाद की मात्रा होती है। विषाद मुख्य रूप से निरुत्साहित व्यक्तित्व की देन होता है।' [1]

इस प्रकार अवसाद एक मनस्ताप रोग की वह श्रेणी है, जिसमें व्यक्ति विभिन्न असमायोजनों की अवस्थाओं के कारण हतोत्साहित, दु:खी, परेशान, चिड़चिड़ा, गुस्सैल, स्वकेन्द्रित व अनियन्त्रित स्थिति प्रकट करता है। अवसाद के रोगियों के लक्षण बाह्य लक्षण तथा आंतरिक लक्षण परिवर्त्य के रूप में अभिलक्षित होते हैं। जे. मेण्डेल्स ने अपनी पुस्तक 'विषाद की अवधारणा' में 1987, अध्याय 3 में यह समझाया है कि विषाद के रोगी एक–ध्रुवीय विषाद व द्विध्रवीय विषाद प्रदर्शित कर सकते हैं। जबकि सत्य यह है कि विषाद बहुध्रुवीय कारकों का समग्र रूप है। कुछ कारक प्राथमिक अवस्था में दिखाई दे सकते हैं, और कुछ कारक पश्चात्वर्ती।'[2]

विषाद (डिप्रेशन) क्या है?

विषाद एक ऐसी मानसिक स्थिति है जो अधिकतर भावुकता के संतुलन बिगड़ने पर होती है। जीवन के कठिन क्षणों में, निराशाओं में, दु:ख या किसी हादसे के दौरान मन का उदास होना स्वाभाविक है, परन्तु जब यह उदासी वजह–बेवजह मन की गहराइयों में उतर जाती है, कुछ अच्छा नहीं लगता और जीने की इच्छा नहीं रहती, तब यह पेथोलोजिकल हो जाता है, इसे ही 'विषाद' (डिप्रेशन) कहते हैं।

विषाद मनस्ताप रोग की संगीत–चिकित्सा के विविध आयाम:

1. रोगी की आयु, लिंग, पारिवारिक पृष्ठभूमि संगीत–चिकित्सा के लिए सार्थक चयनात्मक तथ्य है।
2. विषाद के रोग की प्रकृति, विस्तार, व्यवहारिक विसंगतियों द्वारा भी संगीत–चिकित्सा की कोटि तथा प्रभाव का सार्थक अध्ययन किया जा सकता है।
3. विषाद के रोगी की वैयक्तिक भिन्नता मूलक तत्त्व विविध संगीत प्रक्षेपी विधि द्वारा चिकित्सा में सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।

भारतीय शासत्रीय संगीत की रागें वैज्ञानिक आधार पर सृजित की गई थीं। वाद्य–यंत्रों से निकलने वाले प्रत्येक स्वर व रागों का अपना विशिष्ट प्रभाव होता है। संगीत के स्वर सीधे आत्मा की गहराइयों को स्पर्श करते है। संगीत द्वारा मानसिक तनावग्रस्त व्यक्ति को सुखद आनन्द की अनुभूति होती है।

चिकित्सा–विज्ञान के क्षेत्र में संगीत के प्रयोग पर विश्व–विद्यालयों व अनेक शोध केन्द्रों पर कार्य निरन्तर चल रहा है। इस संदर्भ में मानसिक विषाद से ग्रस्त रोगियों पर वाद्य–संगीत (सितार) से रोगियों को लाभान्वित किया है। विगत कई वर्षो से मानसिक राग विषाद (विषाद) से ग्रस्त रोगियों पर संगीत के प्रभाव से होने वाले परिवर्तनों का गहन अध्ययन किया गया है। मानसिक विषाद में संगीत द्वारा उपचार करने वाले अपने शोध–कार्य करते समय मानसिक तनावग्रस्त रोगियों के समूह को नियंत्रित रूप से वाद्य संगीत (सितार) प्रस्तुत किया गया। सितार पर राग 'मालकोंस' सुनाने से ऐसे रोगियों पर अनुकूल प्रभाव पड़ा तथा वे तनावमुक्त हो गए थे। विशेषरूप से उल्लेखनीय तथ्य ये है कि शोधकर्त्री (स्वयं) द्वारा प्रतिपादित संगीत–चिकित्सा पद्धति पूर्णतया औषधि रहित तथा बिना किसी प्रतिकूल शारीरिक प्रभाव के है। दूसरी और उसी समय ऐसे रोगियों के एक समूह को जिनकी चिकित्सा औषधियों को द्वारा हो रही थी, कोई विशेष लाभ नहीं हुआ।

विषाद एक मनस्ताप है। अत: वह संवेगात्मक असन्तुलन की स्थिति है। संगीत विशेष रूप से ध्वनि तरंगों की आवृत्ति का क्रम है, फिर वह चाहे कानवीय स्वर हो अथवा वाद्य यंत्रों द्वारा उत्पन्न ध्वनि। ध्वनि तरंगे एक सफल उद्दीपक के रूप में सजीव संवेदनाओं पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है। अत: यह निर्विवाद सत्य है कि राग विशेष भी मानसिक प्रक्रियाओं पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। इसी प्रयोजन पर दृष्टिपात करते हुए युवावस्था के संवेगात्मक असन्तुलनजन्य विषाद पर सिता द्वारा राग 'मालकोंस' प्रस्तुत करते हुए इसके प्रभावों का व्यापाक अध्ययन किया है।

संगीत अपनी विशेषताओं के कारण मानव को तनावमुक्त कर उसे संतुलित व्यवहार की ओर प्रेरित करता है। संगीत द्वारा मानव अनेक प्रकार के दबे हुए मनोभावों को परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त कर सकता है। भावों के दमन से ही अनेक मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। शासत्रीय संगीत का प्रभाव सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक है। भावों की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम होने के कारण मानव इसके द्वारा तनावकुक्त होकर सुखद आनन्द की

* व्याख्याता संगीत (वाद्य) से. मु. मा. कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत

अनुभूति करता है।

निष्कर्ष– अत: भारतीय संगीत अपने विशिष्ट गुणों के कारण चिकितसा–पद्धिति में और अधिक प्रभावशाली हो सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि विषाद की परिस्थिति तथा प्रभावों को बिना औषधि के केवल संगीत–चिकित्सा द्धारा दूर किया जा सकता है। यही नहीं बल्कि संगीत मनोविज्ञान विशेष रूप से नैदानिक मनोविज्ञान में एक प्रभावी तथा सार्थक औषधि के रूप में उपादेय सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Beck A.T. – 1967 "Depression : Clinical Experimental and theoretical Aspects, New Yark.''
2. Gallant Simpson: "Depression Chepter I
3. जे. मेण्डेल्स् (J. Mendel) 'विषाद की अवधारणा' Concepts of Depression. 1987, अध्याय–3
4. Nathawat S.S. Sethi "Depression in India'' B.B. and Gupta S.c. – Soc. Prychol (U.S.A.) 1973
5. S.S. Nathawat, Sethi "Neuratic and Depeessive Patterns – In India''B.B. and Gupta S.C. In India - 1971

****

गुजरी महल में संरक्षित स्मारक स्तम्भ

डॉ. अमित मेहता*

प्रस्तावना – स्मारक स्तम्भ युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाले योद्धाओं की याद में निर्मित किये जाते थे। तेरही[1] से चार स्मारक स्तम्भ विक्रम संवत् 960–1375 (ईस्वी 903 एवं 1318) के प्राप्त हुए हैं। इनमें गुणराज के अनुयायी कोटपाल (किलेदार) चाण्डिपण एवं कर्णाट जाति के योद्धाओं के वीरगति पाने का उल्लेख है।[2] बंगला[3] से उपलब्ध सात स्मारक स्तम्भ शुक्रवार चैत्र सुदी 7 ईस्वी 1281 के हैं। इनमें बलुआ (वरूआ) नदी के किनारे बलपुर (नरवर) के यज्वपाल राजा गोपाल देव और जंजामुक्ति बुन्देलखण्ड के चन्देल राजा वीरवर्मन के बीच हुये युद्ध का उल्लेख है। इन स्मारक स्तम्भों को गोपालदेव के प्रधानमंत्री (जिसे महाकुमार कहा गया है) एवं ब्रहम्देव आदि अन्य योद्धाओं के वीरगति प्राप्त होने की याद में निर्मित किया गया है।[4] इन्दौर[5] से विक्रम संवत् 902 (ईस्वी 845), विक्रम संवत् 920 (ईस्वी 863) एवं विक्रम संवत् 1171 (ईस्वी 1120) के तीन स्मारक स्तम्भ प्राप्त हुए हैं। प्रथम दो अस्पष्ट हैं। तीसरे में अजयपाल नामक योद्धा के शत्रुओं पर विजय पाकर युद्ध क्षेत्र में हत होने का उल्लेख है[6], विक्रम संवत् 1351 (ईस्वी 1294) के मामोद[7] स्मारक सतम्भ पर अस्पष्ट लेख है।[8] विक्रम संवत् 1353 (ईस्वी 1296) के गढेला स्मारक[9] स्तम्भ पर किसी भट्टारक कुमारदेव तथा दूसरे स्तम्भ पर जैनों का उल्लेख है[10]। विक्रम संवत् 1762 (ईस्वी 1705) का सिलवरा खुर्द[11] स्मारक स्तम्भ मिला है[12]। बडोखर[13] , पर पढ़ावली[14] सुहैबियर[15] , सन्दोर[16], हासिलपुर[17] , रिठोरा[18], चन्देरी जिला गुना, गढ़ी बरोद[19] जिला शिवपुरी वराहेट जिला मुरैना आदि स्थान से स्मारक स्तम्भ ग्वालियर क्षेत्र की एतिहासिक जानकारी देते हैं। फाल्गुन कृष्ण 14 विक्रम संवत् 1387 (ईस्वी 1387) के स्मारक स्तम्भ में उल्लेख है कि मुहम्मद तुगलक के राज्यकाल में गोग्रहण (गाय के चराने) के कारण लड़ाई में मारे गये सहजनदेव का उल्लेख है[20] एक विशिष्ट प्रकार का स्मारक स्तम्भव सेसई [21] से मिला है। इसमें अपने युवा पुत्रों के मर जाने के कारण ब्राहम्ण माता के जल मरने का उल्लेख है।

केन्द्रीय संग्रहालय गुजरी महल ग्वालियर (जिला मुरैना[22]), तेरही, गढ़ी बरोद (जिला शिवपुरी) हासिलपुर, रिठोरा, जिला मुरैना से प्राप्त ग्याहर स्मारक स्तम्भ संरक्षित हैं[23] यह सभी स्मारक स्तम्भ गुप्तकाल से लेकर आठवीं सदी ईस्वी के है। संग्रहित स्मारक स्तम्भों का विवरण इस प्रकार है–

हासिलपुर स्मारक स्तम्भ – इस स्मारक स्तम्भ पर सबसे उपर सिंह की आकृति अंकित है। जिसकी गर्दन का मुख एवं दायां भाग टूट चुका है।

चौपहलू स्तम्भ के चारों पहलुओं में विभिनन दृश्यों का अंकन किया गया है। द्वितीय पहलू पर भी तीन दृश्य अस्पष्ट अंकित हैं। तीसरे पहलू पर भी तीन दृश्य अंकित हैं।तीनो पहलुओं पर स्त्री पुरूष लम्बे केश, कुण्डल, हार आदि आभूषणों से अलंकृत हैं। चतुर्थ पहलू पर नीचे एक अस्पष्ट दृश्य अंकित है। उसके उपर 13 पंक्तियों में लेख उत्कीर्ण है।[24]

रिठोरा स्मारक स्तम्भ – इस स्मारक स्तम्भ पर चार दृश्य अंकित हैं।[25] प्रथम दृश्य में शिव प्रत्यालीढ़ मुद्रा में अंकित है। दूसरे दृश्य में उड़ते हुये एक पुरूष के दोनों ओर स्त्रियों का भी उड़ना प्रदर्शित किया गया है। तीसरे दृश्य में युद्ध का दृश्य है। चौथे दृश्य में एक शयन मुद्रा में मनुष्य की प्रतिमा है।

पढ़ावली के स्मारक स्तम्भ – पढ़ावली से प्राप्त तीन स्मारक स्तम्भ ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित हैं। ये तीनो स्तम्भ 6वीं–7वीं सदी ईसवी के हैं। प्रथम स्मारक स्तम्भ पर दो दृश्य अंकित हैं।[26] प्रथम दृश्य में गोलाकार गवाक्ष के अन्दर मानव–मुख अंकित किया गया है।द्वितीय दृश्य में दांई ओर समभंग मुद्रा में दांई भुजा में तलवार बांई भुजा में ढ़ाल लिये हुये योद्धा खड़ा हुआ है। दूसरे स्मारक स्तम्भ पर चार दृश्य अंकित हैं। प्रथम दृश्य में पुरूष प्रतिमा का वक्ष से उपर का भाग प्राप्त हुआ है।[27]

दूसरे दृश्य में युद्ध कि दृश्य का अंकन है। तीसरे दृश्य में शेषशायी विष्णु हैं। चौथे दृश्य में पांच पशु अंकित हैं। तीसरे स्मारक स्तम्भ पर तीन दृश्यों का अंकन है।[28] प्रथम दृश्य में मानव मूर्ति का उर्ध्व भाग शिल्यांकित किया गया है। दूसरे दृश्य में दांयी ओर धनुष बाण लिये योद्धा अंकित है। तीसरे दृश्य में पर्यक पर शयन करते हुए शेषशायी विष्णु अंकित हैं।

मढ़ी मरोद स्मारक स्तम्भ – इस स्मारक स्तम्भ पर चार दृश्य अंकित हैं।[29] प्रथम दृश्य में मानव प्रतिमा का उर्ध्व भाग है। जिसकी दांयी भुजा वरद मुद्रा में है। दूसरे दृश्य में मध्य में स्व्यललितासन में दो भूजी देव प्रतिमा है। तृतीय दृश्य में पांच योद्धा अंकित हैं। चौथे दृश्य में अलंकृत शैया पर शेषशायी विष्णु लेटे हुये हैं।

तेरही का स्मारक स्तम्भ – संग्रहालय में लगभग 6वीं–7वीं शती के तेरही के चार स्मारक संरक्षित हैं।

प्रथम स्मारक स्तम्भ पर पांच दृश्य अंकित हैं।[30] दूसरे दृश्य में उमा–महेश्वर अंकित हैं। तीसरे दृश्य में युद्ध का दृश्य अंकित है। चौथे दृश्य में भी युद्ध का दृश्य का अंकन है।पांचवें दृश्य में तीन मानव प्रतिमायें विभिन्न मुद्रा में शयन कर रही हैं।

दूसरे स्मारक स्तम्भ पर तीन दृश्य अंकित हैं।[31] प्रथम दृश्य में पुरूष प्रतिमा उर्ध्वभाग अंकित है। दूसरे दृश्य में सव्य ललितासन में बैठे शिव की बांई जंधा पर उमा बैठी हुई हैं।

तीसरे दृश्य में शेषशायी विष्णु पर्यक पर शयन करते हुये अंकित हैं। तीसरे स्मारक स्तम्भ पर पांच दृश्य अंकित हैं।[32] प्रथम दृश्य में पुरूष प्रतिमा का उर्ध्वभाग अंकित है। दूसरे दृश्य में सव्यललितासन में बैठे शिव की बाई

* व्याख्याता (इतिहास) श्री कल्याण राजकीय महाविद्यालय, सीकर (राज.) भारत

जंघा पर उमा बैठी हुई हैं ।तीसरे दृश्य में ढांई ओर खड्ग लिये अश्वारोही सामने बांई ओर गज पर सवार योद्धागण युद्धरत हैं। चौथे दृश्य में ढांय तीन योद्धा सामने खड़े अश्वरोही पर प्रहार कर रहे हैं ।पांचवे दृश्य में ढ़ाल, तलवार लिये योद्धागण युद्धरत हैं। चौथे स्मारक स्तम्भ पर चार दृश्य अंकित हैं। प्रथम दृश्य में पुरूष का कमर से उपर का भाग प्राप्त हुआ है। दूसरे दृश्य में में सव्यललितासन में मालाधारी तीन युगलों का आलेखन है। दूसरे दृश्य में ढांई ओर मुख किये अश्वारोही हैं। तृतीय दृश्य में एक मानव प्रतिमा लेटी हुई है।

चन्देरी स्मारक स्तम्भ – इस स्मारक स्तम्भ पर दो दृश्य अंकित किये हैं।[33] प्रथम दृश्य में अर्धचन्द्र, सूर्य और एक कोहनी से मुड़ा हुआ हाथ अंकित है। दूसरे दृश्य में पद्मम पादपीठ पर ललितासन में बैठे हुये महेश्वर की बांई जंघा पर उमा आलिंगन में बैठी हुई हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. तेरही मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में स्थित है।
2. द्विवेदी हरिहर निवास, 'ग्वालियर राज्य के अभिलेख', ग्वालियर 1947 पृ. 4 एवं 94
3. बगला मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में स्थित है।
4. द्विवेदी हरिहर निवास, पूर्वोक्त, पृ. 22-23
5. इन्दौर मध्यप्रदेश के गुना जिले का एक स्थल है।
6. द्विवेदी हरिहर निवास, पूर्वोक्त, पृष्ट 2 एवं 12
7. मामोल मध्यप्रदेश के गुना जिले में स्थित है।
8. द्विवेदी हरिहर निवास, पूर्वोक्त, पृ. 27
9. गढ़ेला मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में स्थित है।
10. शर्मा राजकुमार, 'मध्यप्रदेश के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ', भोपाल, 1974, पृ. 239
11. सिंलबरा खुर्द मध्यप्रदेश के गुना जिले में स्थित है।
12. द्विवेदी हरिहर निवास, पूर्वोक्त पृ. 62
13. बड़ोखर मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में स्थित है। द्रष्टव्य राजकुमार शर्मा, पूर्वोक्त पृ. 251, 252 एवं 400
14. पढ़ावली मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में स्थित है। द्रष्टव्य शर्मा राजकुमार, पूर्वोक्त, पृ. 174
15. सुहोनिया मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में स्थित है। द्रष्टव्य शर्मा राजकुमार पूर्वोक्त पृ. 174
16. सन्दौर मध्यप्रदेश के गुना जिले में स्थित है। द्रष्टव्य शर्मा राजकुमार, पूर्वोक्त, पृ. 262
17. हासिलपुर मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में स्थित है, द्रष्टव्य शर्मा राजकुमार, पूर्वोक्त पृ. 176
18. रिठौरा मध्यप्रदेश के मुरैना जिला में स्थित है, द्रष्टव्य शर्मा राजकुमार, पूर्वोक्त, पृष्ठ 416
19. देवकनी मध्यप्रदेश के गुना जिले में स्थित है।
20. द्विवेदी हरिहर निवास पूर्वोक्त पृ. 30
21. सेसई मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में स्थित है।
22. द्विवेदी हरिहर निवास, पूर्वोक्त, पृ. 99
23. संग्रहालय की अवाप्ति शंजी में दर्ज है।
24. दीक्षित एस.के. 'ए गाइड टू दी सेन्ट्रल आर्कियोलौजीकल म्यूजियम', ग्वालियर, 1962 पृ. 5
25. एनुअल रिपोर्ट ऑफ दी आर्कियोलौजीकल डिपार्टमेनट, ग्वालियर स्टेट फार संवत् 1989।
26. वही, फलक IX-C
27. वही, फलक IX-A
28. वही, फलक IX-C
29. संग्रहालय में संरक्षित एलबम क्रमांक 91
30. एनुअल एडमिनिस्ट्रेशन रिर्पोट ऑफ दी आर्कियोलौजीकल डिपार्टमेन्ट, ग्वालियर स्टेट फोर संवत् 1991
31. वही
32. वही
33. एनुअल एडमिनिस्ट्रेशन रिर्पोट ऑफ दी आर्कियोलौजीकल डिपार्टमेन्ट, ग्वालियर स्टेट फोर संवत् 1989

****

Relationship of World Ranking and Sub Variables of Mental Toughness of International Badminton Players

Miss Kavita*

Abstract - The purpose of study was to determine the relationship between world ranking points and sub variables scores of mental toughness of international badminton players. These variables are handling pressure, concentration, mental rebounding and winning attitude. Forty two (N=42) international badminton players from different countries (India, Denmark, Russia, Indonesia, Thailand, Malaysia) who participated in Indian Open Super Series tournament which held at New Delhi from 1-6 April 2014 were the subjects of the study. To determine the degree of relationship between world ranking and sub variables scores of mental toughness of international badminton players, Product Moment Correlation Method was used. Insignificant relationship was shown between world ranking and score of sub variables of mental toughness of international badminton players from different countries.
Keywords: Handling Pressure, Concentration, Mental Rebounding, Winning Attitude.

Introduction - Mental toughness is a term often used by coaches, the media, and even athletes themselves to describe a team or athlete who overcomes a deficit or setback, performs at the peak of their abilities, shows grit and determination, or has the personal and athletic qualities that set them apart from their competition. Indeed, mental toughness is often mentioned as one of, if not the, determining factors in any record-setting or even just winning performance. Mental toughness is many things and rather difficult to explain. Its qualities are sacrifice and self-denial. Also, most importantly, it is combined with a perfectly disciplined will that refuses to give in. It's a state of mind – you could call it 'character in action.

There are four sub variables of mental toughness i.e. Handling Pressure, Concentration, Mental Rebounding and Winning Attitude. These variables score contribute overall score of mental toughness and each variable is very important for the players. Therefore, the purpose of this study was to identify the relationship of ranking to sub variables of mental toughness.

Methodology: The subjects for the study were forty two (N=42) international badminton players from different countries who participate in India Open Super Series which held at New Delhi from 1-6 April 2014. The subjects were from the countries i.e. India, Denmark, Russia, Malaysia, Indonesia and Thailand. The data was collected through mental toughness questionnaire created by Alan Goldberg. Researcher had clearly explained the intention of the study and the subjects were voluntarily prepared to take part in the research study. To determine the degree of relationship between world ranking and scores of sub variables of mental toughness, Product Moment Correlation Method was used and significance was chosen at 0.05 level. All players had their world ranking and fill the questionnaire before or after the match.

Result: For the purpose of the present analysis product moment correlation method was applied as the result was tested for the significance 0.05 level.

Table-1 : Relationship of ranking of Indian badminton players

S.	Variables	Mean	'r'
1	Handling Pressure	13	-0.475
2	Concentration	10.56	-0.724
3	Mental Rebounding	9.78	-0.780
4	Winning Attitude	6.89	-0.216

r0.05 (7) = 0.666

In Table 1 the obtained values of correlation of Indian badminton players between world ranking and score of sub variables of mental toughness ranged from -0.780 to -0.216 are not significant at 0.05 level.

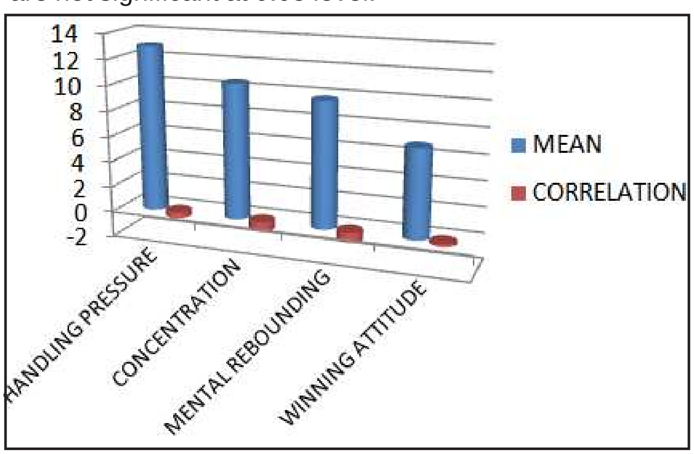

*Assistant Professor, Gochar Mahavidyalaya, Rampurmaniharan, Saharanpur (U.P.) INDIA

Table-2: Relationship of ranking of Denmark badminton players

S.	Variables	Mean	'r'
1	Handling Pressure	13.86	-0.279
2	Concentration	13.43	-0.672
3	Mental Rebounding	10.29	0.324
4	Winning Attitude	6.71	-0.608

r0.05 (5) = 0.754

In Table 2 the obtained values of correlation of Denmark badminton players between world ranking and score of sub variables of mental toughness ranged from -0.608 to -0.324 are not significant at 0.05 level.

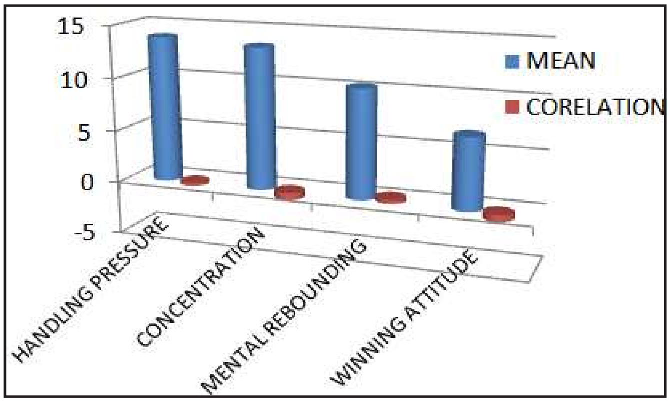

Table-3 : Relationship of ranking of Russian badminton players

S.	Variables	Mean	'r'
1	Handling Pressure	12.43	-0.47
2	Concentration	11.71	-0.258
3	Mental Rebounding	9.43	-0.205
4	Winning Attitude	7.14	-0.742

r0.05 (5) = 0.754

In Table 3 the obtained values of correlation of Russian badminton players between world ranking and score of sub variables of mental toughness ranged from -0.742 to -0.205 are not significant at 0.05 level.

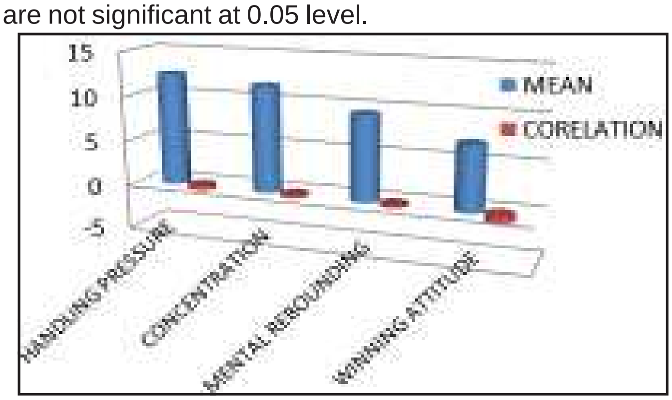

Table-4 : Relationship of ranking of Malaysian badminton players

S.	Variables	Mean	'r'
1	Handling Pressure	12.71	-.0905
2	Concentration	13.43	-0.573
3	Mental Rebounding	9.57	0.562
4	Winning Attitude	7.43	0.119

r0.05 (5) = 0.754

In Table 4 the obtained values of correlation of Malaysian badminton players between world ranking and score of sub variables of mental toughness ranged from -0.905 to 0.562 are not significant at 0.05 level.

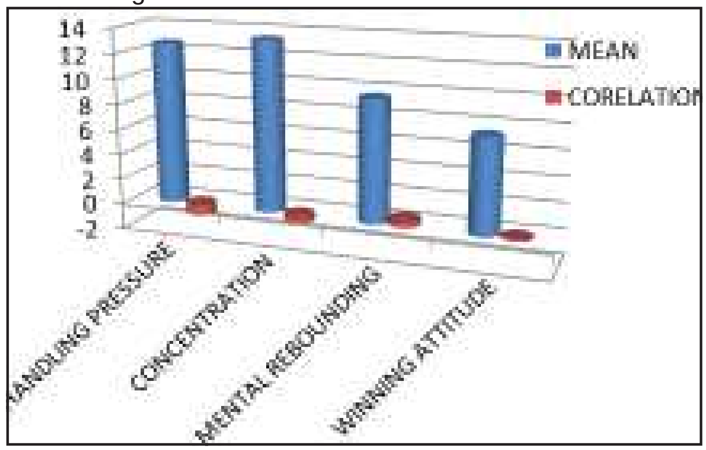

Table-5: Relationship of ranking of Indonesian badminton players

S.	Variables	Mean	'r'
1	Handling Pressure	13.17	-0.655
2	Concentration	11.17	-0.502
3	Mental Rebounding	8.67	0.426
4	Winning Attitude	6.67	0.674

r0.05 (4) = 0.811

In Table 4 the obtained values of correlation of Indonesian badminton players between world ranking and score of sub variables of mental toughness ranged from -0.655 to 0.674 are not significant at 0.05 level.

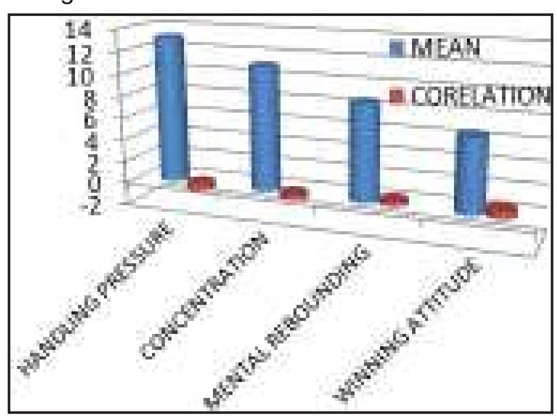

Table-6: Relationship of ranking of Thailand badminton players

S.	Variables	Mean	'r'
1	Handling Pressure	13	-0.587
2	Concentration	10.67	-0.493
3	Mental Rebounding	8.50	-0.525
4	Winning Attitude	6.83	-0.754

r0.05 (4) = 0.811

In Table 4 the obtained values of correlation of Indonesian badminton players between world ranking and score of sub variables of mental toughness ranged from -0.754 to -0.493

are not significant at 0.05 level.

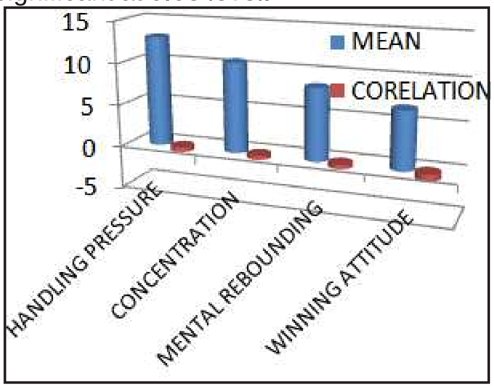

Discussion Of Findings: The primary aim of this study was to find out relationship of world ranking and sub variables of mental toughness of international badminton players from different countries. Low negative correlation of Indian badminton player was observed between world ranking and variables of mental toughness. Low negative correlation of Denmark badminton player was observed between world ranking and mental toughness variables except Mental Rebounding. Mental Rebounding show positive correlation with world ranking. Low negative correlation of Russian badminton player was observed between world ranking and mental toughness variables. Low negative correlation of Malaysian badminton player was observed between world ranking and mental toughness variables except Mental Rebounding and Winning Attitude. Rebounding, Winning Attitude value of 'r' is positive which show positive correlation. Low negative correlation of Indonesian badminton player was observed between world ranking and mental toughness variables except Mental Rebounding and Winning Attitude. The obtained value of Mental Rebounding, Winning Attitude show positive correlation. Low negative correlation of Thailand badminton player was observed between world ranking and mental toughness variables.

Finding may be attributed to the fact that the variables of mental toughness generally refers to mental state that allow a person to persevere through difficult circumstances and emerge without losing confidence by persistently low mood, loss pleasure and interest. Probably the higher score of variables of mental toughness could be attributed to the international player which were chosen for the study has already achieved their highest level of achievement. Further, mean score of mental toughness were found similar. The study was affected by their living condition, diet, seriousness and different training schedule after that there was no significant relationship between ranking point and scores of variables of mental toughness and hypothesis accepted.

Conclusion: There was no significant relationship between ranking point and scores of variables of mental toughness and hypothesis accepted.

References:-

1. **Boga, Steve (2008).** Badminton. Paw Prints. ISBN1439504784
2. **Richard Eaton**,"It's All in the Mind" World BadmintonVol. 25,No.4(Nov.-Dec.,1997):5-9.
3. **Yukelson David, Ph.D**., Coordinator of Sport Psychology Services Morgan Academic Support Center for Student-Athletes, Penn State University.
4. **Jones, G., Hanton S., & Connaughaton, D.(2002).** What is This Thing Called Mental Toughness? An Investigation of Elite Sport Performers. Journal of Applied Sport Psychology, 14(3),209.
5. **M. Sheard,"** A cross National Analysis on Mental Toughness and Hardness in Elite University Rugby League Team" Preceptual Motor Skill ,2003, April : 96 (2) :455-462.
6. **Alan Goldberg,** "Just How Tough Are You ?" Swimming Technique (November- December, 1995): 20
7. **Kevin Lamar Burke**, "The Effect of a Perceptual Cognitive Training Program an Attention/Concentration Style and Performance of the Tennis Service," Dissertation Abstracts International 49:12 (June, 1989): 3654-A.
8. **Rajeev Sareen(2008)** "An Investigation into Mental Toughness and Psychological Status of Pain Management among Indian Athletes" Abstract of Doctor of Philosophy, L.N.U.P.E. Gwalior (M.P.)

****

Urdu Language: Salient Features

Dr. Arshad Siraj*

Abstract - Urdu is a very polite language. The most obvious difference is the language itself. Urdu is written in a script called Nastaliq, which is a variant of the Persian script, while other literatures are written in script other than the Persian script. The major impact in Urdu is from Arabic, therefore the writing style and its literature has been affected much more than any other language, next comes Persian and so on.

Urdu is written from right to left and in most cases all letters of a word are joined together, the middle letters in a word are written partially. Vowels are a part of the alphabet in English, in Urdu they are only diacritical marks and most of the time they are not even written. The format of an Urdu sentence is: SUBJECT-OBJECT-VERB. There are no prepositions in Urdu. Urdu has post-positions, instead. There are four different formats in Urdu speech: (1) REQUEST (to a higher level person), (2) SUGGESTION (to an equal status person), (3) COMMAND (to a lower level person), and of course, (4) A PRAYER (to God only).

Urdu literature is different from most of the literatures in the world in several ways. Urdu literature has a rich tradition and is heavily influenced by the culture and history of the Indian subcontinent. There are different literary genres and forms that are unique to Urdu literature. Urdu literature includes poetry, short stories, and plays. Urdu literature is primarily read by speakers and readers of Urdu.Urdu shayri is dear to people who speak and understand it well. They find their feelings thought and philosophy all best expressed therein. They admire the contents and also the phonetics of the Urdu language. Another reason of its popularity is the smooth silky amalgamation of Sanskrit, Arabic, Persian and English words and idioms all in Urdu language, that widened its canvas to such extent that people from far east to those of far west find it easier to learn, use and admire.The only thing common between Urdu and English is that both languages have higher level roots in the ancient PROTO-INDO_EUROPEAN tongue. Many words in both languages are therefore derived from the same ancient root. But that root is so far up in the family tree that a common speaker of either language will find it difficult to identify.

The paper is full of encyclopedic range, and deals with the major aspects of Urdu language. It is based on the secondary data collected from the various sources as well as the primary data collected from the casual discussion with the people who take delight in reading the Urdu poetry.
Keywords-Nastaliq, script, language, literature, diacritical, Legions.

Introduction - Urdu was the language of the 'Legions'. The name 'Urdu' was derived from Turkish language.Urdu has been a very adoptive language through its 700 years journey, so it adopted words from several different language. Having Indo-Persian origin, it is spoken with several different dialects. Urdu has its own set of vocabulary which are vast and beautiful words, but whenever it encounters a new word, it adopts the same word rather creating a new word itself. Urdu remained a vocal language for long before getting recognized in literature.

Urdu has Beautiful Vocabulary. Since it remained spoken language for quite along duration, most words are adopted from several different languages. And out of all available options of words people have preferred the one which sound beautiful. This has made Urdu first choice for people of Poetry literature.

Urdu is in its original form in Nastaliq fonts. Now we know that Urdu and Hindi are the same languages when spoken, but when the same words what have been said are written in Hindi Devanagari script, only those in India who learned it in school, can read and understand it but not the Urdu speakers who know only Urdu script. Now the solution lies in "Roman Urdu" because people from both sides of the divided India learn English in their schools. English is also a national language besides Urdu in Pakistan.

Phonologically, the Urdu sounds are the same as those of Hindi except for slight variations in short vowel allophones. Urdu also retains a complete set of aspirated stops (sounds pronounced with a sudden release with an audible breath), a characteristic of Indo-Aryan, as well as retroflex stops. Urdu does not retain the complete range of Perso-Arabic consonants, despite its heavy borrowing from that tradition. The largest number of sounds retained is among the spirants, a group of sounds uttered with a friction of breath against

*Lecturer & HOD (Urdu) SK Govt. College, Sikar (Raj.) INDIA

some part of the oral passage, in this case /f/, /z/, /zh/, /x, and /g/. One sound in the stops category, the glottal /q/, has also been retained from Perso-Arabic.

Urdu as a Language: Major Aspects

Script: Written Urdu is close to Persian and then Arabic. However this is only a visual illusion that makes Urdu seem closer to Arabic and Persian.

Grammar: In this respect, Urdu is not closest but same as Hindi. Both languages are essentially the same at the core level. And that's why almost 90% informal language can be understood by 90% Hindi speakers and vice versa.

Vocabulary: Now because of development of Urdu as a language, it has maximum number of words from Persian (especially in literature and poetry) and then from Hindi and Arabic. It has also borrowed words from other languages like Sanskrit, English, etc.

Tone and Accent: Exactly same as that of Hindi because both Hindi and Urdu developed from a single language called Hindvi or Hindustani

Objectives of the Study:

1. To develop a familiarity with the Urdu language
2. To produce the origin and development of Urdu
3. To produce verbal glimpses of the relationship with the other languages
4. To make the reader familiar with the salient features of Urdu
5. To comment on the global significance of Urdu as a language.

Related Literature Review

'Urdu was flourishing at SOAS and probably attracted more students and interest than most of the other languages taught in the department of India, Pakistan and Ceylon. The impression was that Urdu was well cared for in the University of London where Graham Bailey had occupied the first chair, and there seemed to be no doubts about its future as an important academic subject. I had no reservations about resigning my post in Phonetics and devoting myself entirely to Urdu.'[1]

'Today, Urdu is spoken in many countries around the world, and has always been considered an elevated and somewhat aristocratic language in South Asia. It continues to conjure a subtle, polished affect in South Asian linguistic and literary sensibilities, and thus carries on to be preferred for songwriting, news papers and poetry, even by non-native'[2].

'Different generations assign different meanings to Urdu. Unlike the older generation, Muslim youth do not identify themselves with Urdu. A study of the Urdu sounds / f/, /z/, /kh/, /gh/, and /q/ in the speech of Muslim youth further demonstrates that they are losing three of these sounds. Another transformation involves the adoption of the Devanagari script to write Urdu by many Muslims. This change in the literacy practices of Muslims reinforces the shift in the symbolic meanings of Urdu. I argue that the transformation in the symbolic meanings of Urdu is reflective and constitutive of the sociopolitical changes that Muslims have undergone in the twentieth century'[3].

'There is an impact of Persian language on many Indian Languages like Bengali, Punjabi, Urdu, Gujarati, Telugu, and Hindi etc. For historical reasons, Indian languages have borrowed a great number of Persian words and phrases from Persian language that they have been using in the society of India. Old Persian Language, Middle Persian Language, and Modern Persian Language need to be examined in terms of India. Many Indian languages and Persian languages are part of the Indo-European languages. India and Iran have always had close relationship with each other; this relationship has been observed even before the advent of Islam. The time of Persians king was available trade ties between two nations who travelled with their ships and passed from Persian Gulf to Indian Ocean'[4].

'Urdu is the national language of Pakistan and also is an official language in some states of India. It is estimated that roughly 200 million people in Pakistan and 1.65 billion people in India speak Urdu language. European countries like USA, including UK, Canada have also Urdu speakers. The Urdu language family evolved from Indo-European, Indo –Iranian and Indo-Aryan. To a further extend it has roots in Persian, Arabic and exhibit most similarity with South Asian languages and has structural similarity with Hindi. In past, less research has been done in Urdu language compared to European Languages. This gap is due to lack of interest by the engineering community along with insufficient availability of linguistic resources. Nonetheless, due to the emergence of mobile phone technology, people communicate with each other and share their views in Urdu language format with the use of English alphabets and so called Roman Urdu. Due to its ease in usage, therefore, it is being heavily used as a digital communication medium on different applications'.

'Urdu is the national language of Pakistan, and is the first language of 30 percent of immigrants in North America (National household survey (NH); Immigration and Ethno cultural Diversity in Canada, 2011). This makes Urdu the eighth most widely spoken language in the world. Urdu is considered to be a classic example of digraphia: a linguistic situation in which different scripts are used to write the same language (Rizwan, 2011). Urdu is written in a cursive, context sensitive Farsi-Arabic script from right to left. Urdu orthography inherits some characteristics from Arabic such as the optional use of diacritic marks: a glyph added to a letter (Jain & Cardona, 2007). The Urdu language particularly belongs to the Muslim community of some south Asian countries such as Pakistan'[5].

'The Hindi-Urdu stress system has been a problematic topic for over a century. Hayes (1995) says,' … this topic has its empirically dismaying aspects: the published descriptions almost all disagree with one another, and seldom mention the disagreement.' The literature today divides languages between 'stress accent' languages and 'non-stress accent' languages. According to Beckman (1986), 'stress accent' languages are those that use

phonetic attributes other than pitch to indicate a prominent syllable, while 'non-stress accent' languages are those that use only pitch to mark a prominent syllable.'[6]

Hypothesis:

1. Urdu is a popular language in the world and is spoken in both Islamik and Non-Islamik countries of the world.
2. The roots of Urdu lie in India
3. Urdu is an official language of Pakistan
4. Urdu has similarity and dissimilarity with the other languages of the world
5. Urdu vocabulary is an integral part of the Hindi writers and speakers

Methodology:

1. The study is qualitative and descriptive which aims at describing Urdu language and its salient features.
2. The study is based and designed chiefly on the secondary data collected from the traditional and modern sources, in addition to the personal experience of the author
3. All the steps of the research process were adopted and followed for the study
4. The studies available in the form of research papers, books, research thesis submitted to the various universities enabled the author to get a feedback on the selected theme and to arrive at a fruitful conclusion.
5. The hypotheses formulated by the author turned true.

Findings, Suggestions & Conclusion:

1. A language is a representative of a particular culture, period and environment of the people to whom it belongs.
2. Urdu language, member of the Indo-Aryan group within the Indo-European family of languages.
3. Urdu is spoken as a first language by nearly 70 million people and as a second language by more than 100 million people, predominantly in Pakistan and India.
4. It is the official state language of Pakistan and is also officially recognized, or "scheduled," in the constitution of India.
5. Significant speech communities exist in the United Arab Emirates, the United Kingdom, and the United States as well. Notably, Urdu and Hindi are mutually intelligible.
6. Urdu developed in the 12th century CE from the regional Apabhramsha of northwestern India, serving as a linguistic modus vivendi after the Muslim conquest.
7. Its first major poet was Amir Khosrow (1253–1325), who composed dohas (couplets), folk songs, and riddles in the newly formed speech, then called Hindvi. This mixed speech was variously called Hindvi, Zaban-e-Hind, Hindi, Zaban-e-Delhi, Rekhta, Gujari, Dakkhani, Zaban-e-Urdu-e-Mualla, Zaban-e-Urdu, or just Urdu, literally 'the language of the camp.'
8. Major Urdu writers continued to refer to it as Hindi or Hindvi until the beginning of the 19th century, although there is evidence that it was called Hindustani in the late 17th century.
9. It is possible for someone who knows only Hindi to understand some of the Urdu literature, especially poetry, as the grammar and sentence structure of Hindi and Urdu are very similar.
10. However, there may be some vocabulary and idioms that are specific to Urdu that the person may not understand. Additionally, a significant amount of Urdu literature, especially poetry, contains words and phrases borrowed from Persian and Arabic, which may be unfamiliar to someone who only knows Hindi. Overall, while understanding is possible, it would be easier for someone who knows both Hindi and Urdu, or at least has a good understanding of the similarities and differences between the two languages.
11. Urdu started developing in north India around Delhi in about the 12th century. It was based on the language spoken in the region around Delhi, and it was heavily influenced by Arabic and Persian, as well as Turkish.
12. Urdu shares its origins with Hindi, sometimes referred to as a 'sister' language of Urdu due to the similar grammar base that they share.
13. However, Hindi went on to be written in 'Devanagri', the same script as Sanskrit, and its vocabulary has more of a Sanskrit influence than a Persian and Arabic influence.
14. During the 14th and 15th centuries, much poetry and literature began to be written in Urdu.
15. More recently, Urdu has mainly been connected with the Muslims of the Indian subcontinent, but there are many major works of Urdu literature written by Hindu and Sikh writers.
16. After the creation of Pakistan in 1947, Urdu was chosen to be the national language of the new country.
17. Today Urdu is spoken in many countries around the world, including Britain, Canada, the USA, the Middle East and India.
18. In fact there are more Urdu speakers in India than there are in Pakistan.Urdu which was synthesized entirely in India, became the official language of Pakistan.
19. Urdu being a mix and having influences from various languages - Arabic, Sanskrit, Persian, Pashto, Punjabi and a few other languages spoken in Pakistan.

References:-

1. David J. Matthews.'Urdu Language and Education in India',Social Scientist, Vol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 57-72
2. RobinaKausar, Muhammad Sarwar& Muhammad Shabbir.'The History of the Urdu Language Together with Its Origin and Geographic Distribution', International Journal of Innovation and Research in Educational Sciences, Volume 2, Issue 1, 2015, 2349–5219
3. Rizwan Ahmad. 'Polyphony of Urdu in Post-colonial North India', Modern Asian Studies, Published online by Cambridge University Press: 03 July 2014

4. Ali Akbar Khansir&NasrinMozafari. ‘The Impact of Persian Language on Indian Languages’, Theory and Practice in Language Studies, Vol. 4, No. 11, pp. 2360-2365, November 2014
5. AmnaMirza. ,Urdu as a First Language: The Impact of Script on Reading in the L1 and English as a Second Language’, Wilfrid Laurier University, 2014
6. Lars O. Dyrud. ‘Hindi-Urdu: Stress accent or non-stress accent?’, University of North Dakota, UND Scholarly Commons, 2001

****

Farmer's Response to Farm Telecast in Ajmer District of Rajasthan State

Dr. Govind Prakash Acharya*

Introduction - The importance of infomation communication as a vital input for Agricultural development was realised in its full perspective only after 1952. After a series of delibrations the target of India intiated an information communication service at the control of State level as an indispensible component of department of Agriculture.

During the past two decades there has been considerable expansion of the infra-structure for agricultural infomation communication in the country. Speaking of the expanding facilities of information communication there remains a big majority of back- ward and small farmers in the country who need to be fed more intensively with infomation on the rapidly changing agricultural technology to make them understand and adopt the improved technology for increasing the production per unit area and per unit time.

For the rapid agricultural development of the country, there three basic ingredients are needed such as capable scientist at work on the problem of the farmers, farmers to have confidence that science can help them, and channel of communication to carry the message from the scientist to the user.

In India as well as abroad particularly in involving high yielding varieties of seed and devicing new technique and implementa suite for them does not serve the purpose unless it is translated into the actual practices, the ultimate users or the famers. Hence, this information must reached to the farmers to make it really meaningful.

There is a greater need for a rapid transfer of these agricultural technologies to the farmers. But to carry the information to the farmers living in more than 5 lakhs villages spread all over the country is a difficult and gigantic task of communication.

The use of different mass media can be resorted to transfer the latest technology to fammers. Radio is one of the most powerful media but T.V. as audio-visual and has the distinct advantage over radio. Further folders etc. have very written work in the form of Bulletin, Newspaper. Leaflets bulletins restricted use and scope with the problem of mass illiteracy still trevelent in the rural society. The seminar, mass media, and adult literacy organised by the Indian institute of Mass Communication in October, 1966 for greater use of media particularly radio and T.V. in order to make the literacy campaign successful. However, more stress was given on the use of television.

Objectives Of The Study :

The main objectives of this study is to know general opinion of the farmers of Ajmer district, regarding agricultural programmes telecasted for Ajmer farming audience.

The study includes following specific objectives :

1. To measure the attitude of respondents towards television with reference to agricultural programmes.
2. To study the socio-economic status of the respondents.
3. To study the associated between attitude and socio-economic characteristics of farmers.

Research Methodology

Area Of The Study : Television, the highly sophisticated media, has been dissemi nating the information in areas like agriculture, family planning, national integration, education, health and hygiene and entertain ment programmes in Ajmer district for last more than four years. It was felt necessary to assess the opinion of the consumers regarding these programmes.

The present study was designed to cover only the agricultural area amongst all the areas of information. The socio economic status of the audience has been studies in this investigation with a view to know, as to what type of audience watches the T.V. programmes.

The attitude of the televiewers regarding agriculturel programmes and suitability of the telecast with reference to their timings, duration and contents of agricultural programmes was also included in the present study. Investigator also felt it necessary to obtain suggestions of the respondents for further improvement in the agricultural programmes. The study was, therefore, planned in view of all the above aspects of investigation.

*Lecturer (Agricultural Extension) Govt. College, Uniara, Distt. Tonk (Raj.) INDIA

Area Of Study: Ajmer transmission offers an opportunity of its telecast services, which are confined to Ajmer district only. Obviously the area of study for the present investigation was the Ajmer district of Rajasthan state.

Selection Of Villages And Respondents: The list of villages from Ajmer district having T.V. sets, at community places was obtained by the investigator personally from the office of the rural broadcasting (radio and television), Jaipur & villages were selected where more than 40% of the population is having T.V. sets. From each selected village 15 respondents were selected randomally having T.V. sets of their own. respondents were regular viewers. These

Table 1: Showing the selection of the following villages under study

S.	Name of the villages	Number of respondents selected
1.	Arani	15
2.	Bhinai	15
3.	Praneheda	15
4.	Shri Nagar	15
5.	Selora	15
6.	Masuda	15
7.	Pisangan	15
	Total	105

SELECTION OF THE RESPONDENTS : With a view to cover a sizeable number of respondents in the fold of present investigation, an attempt was made to contact atleast 15 farmers from each selected village, who have watched the agricultural programmes.

RESULTS AND DISCUSSION

Table 2: SOCIO ECONOMIC STATUS SCALE PROCEDURE No 105

S.	Status of the famer	Rank score	Frequency	Percentage
1.	Higher class	above 96	18	17.14
2.	Middle class	31 to 96	74	70.48
3.	Lover class	above 31	13	12.38
	Total		105	100.00

S.D. = 32.55/ Mean = 63.90

Upper limit = Mean+SD =63.60 + 32.55 = 96.15

Lower Limit = Mean D.D. = 63.66-32.55 = 31.05

1. High Class = 96 and above 18
2. Middle Class = 31 +96 = 74
3. Lower Class = Below 31 = 13/105

1. TELEVIEWERS ATTITUDE TOWARDS AGRICULTURAL TELECAST : This part deals with the attitude of the respondents towards television with reference to agricultural programme. The standarized attitude scale for measuring the farmers' attitude towards SITE, developed by Dhaka, M.S. was used.

Techniques of likert's scale was followed in the scale The statistics used was mean score. Hundred five farmers (Viewers) were interviewed.

First of all the average scores for each farmers was found out by adding the scores of all the 16 statements and then dividing the total by the number of items. Respondents were classified into three categories that is highly favourable (above 3) favourable (3 to 2.4) and unfavourable (upto 2.4)

Table 3 Televiewers' attitude towards agricultural programme

S.	Categories	Score	Frequency	Percentage
1.	Highly favourable	Above 3	15	14.29
2.	Favourable	3 to 2.4	70	66.67
3.	Unfavourable	Above 2.4	20	19.05
	Total		105	100.00

Attitude Scale (Mean Score) N=105

S.D.= 0.2111/Mean = 2.6925

Highly favourable = 2.6925 +0.2111= 2.9036 = 3

Unfavourable =2.6525- 0.2111 = 2.4

1. Highly favourable = above 3
2. Favourable = 3 to 2.4
3. Unfavourable = below 2.4

The table 3 reveals that out of 105 respondents, 15 farmers vis (14.29 per cent) had highly favourable attitude, whereas 70 fammers (66.67 per cent) of them have favourable attitude and the rest 20 farmers (19.05 per cent) had unfavourable attitude. This constitute above one fifth of the total sample towards the agricultural programme.

It can be inferred that majority of the farmers held favourable attitude towards agricultural programmes. This might be due to the fact the farmers of the area under study were progressive. All the viewers know the utility of TV and in their opinion television is of great help to them in increasing the food production. Respondents irrespective of their age, sex, and socio-economic status viewed the total programmes of the agriculture. The village consider it as the source of getting agricultural information. The above findings are inconfimity of the findings of Sharma (17), Mishra and Sharma (41) and Sakune (54). All of them have reported that farmers.

This mean score of the 16 statement of the attitude scale calculated to ascertain their relative importance. The range of mean score of items varies from 1.390 to 4.076 shown in table 4. These statements were arranged in order of their ranks as presented in the table with frequencies corresponding to each statement. It is observed from table 4 that the item "The duration of agricultural programme is quite inadequate" having mean score 4.076 ranked first and the item "The duration of the total programme on television is too short to be meaning"- full (Mean score 1.390) rank last.

Measurement of farmers Socio-Economic Status : To calculate socio-economic status the revised socio-economic scale developed by the Pareek and G.Divadi was used to identify the respondent status. The score received by individual was calculated the score of Socio-Economic status in the present study varied from 31 to 96. According to the score achieved by an individual respondent they were grouped in following categories.

Table 5: Farmer's Socio Economic Status

S.	Socio-Economic Status	Range of Score	No.of respon - dents	Percen -tage
1.	Higher Status	96 and above	15	14.29
2.	Middle Status	31 to 96	70	66.67
3.	Lover status	Upto 31	20	19.05
	Total		105	100.00

Thus the respondents were categoriesed in different groups and status was decided.

The table 5 reveals that out of 105 famers, 66.67% are in middle socio-economic status, 19.05% are in lower status and only 14.29% respondents are in higher socio economic status group.

Thus from the above discussion, it may be concluded that may only 1.e. 66.67% respondents had middle socio-economic status.

2. ASSOCIATION BETWEEN THE SELECTED INDEPENDENT VARIABLES AND ATTITUDE OF TELEVIEWERS: An attempt was made to find out the association bet- ween attitude of televiewers and selcted variables 1.e. socio-economic status, level of education, size of land holding, age, and caste of the farmers. To determining the significance of association if any, Chi-square was computed When the Chi-square value was found significant the analysis was further extended and the co-efficient of contingency was calculated to determine the intensity of association between attitude of farmers and independent variables.

The finding appearing in table 6 to 10 while analys- ing the total attitude mean score of the respondents, it was observed that there were 14.29 per cent, 66.67 per cent and 10.05 per cent farmers possessed highly favourable, favourable and unfavourable attitude towards agricultural telecast respectively.

Table 6 :Association between Televiewers' Attitude and their Socio-Economic status.

N105

Socio-Economic status Attitude	Low	Middle	High	Total
Highly favourable above 3	- (00.00)	13 (12.38)	2 (1.90)	15 (14.29)
Favourable 36-24	12 (11.43)	42 (40.00)	16 (15.24)	70 (66.67)
Unfavourable Below 2.4	1 (00.95)	19 (18.10)	- (00.00)	20 (19.05)
Total	13 (12.38)	74 (70.48)	18 (17.14)	105 (100.00)

x^2 = 1.3205 N.S.=Non-significant at 1 and 5 per cent level.

The data regarding association between attitude of farmers and socio-economic status have presented in table 6. It is obvious from the table 6 that out of 105 farmers whose socio-economic status were high 1.90 per cent had highly favourable attitude, 15.24 per cent, had favourable attitude whereas none were having unfavourable attitude towards agricultural telecast.

The table further reveals that 74 famers belonging to middle class socio-economic status, 12.38 per cent had highly favourable and 40 per cent had favourable attitude while only 18.10 per cent had unfavourable attitude. The rest of the 13 respondents belonging into those socio-economic status, none belong to highly favourable attitude 11.43 per cent had favourable whereas only 0.95 per cent that is one farmer had unfavourable attitude towards agriculture telecast.

They hypothesis (H 3.1) stated as null that is "there is no association between farmers towards agricultural telecast in socio-economic status" was tested.

The calculated value of Chi-square was found to be 1.3205 which was statistical at 1 per cent and 5 per cent level of significance. The null hypothesis is thus accepted. The association is found to be non-significant because all the respondents of the village came to view and isit together irrespective of their status in the society. It is also clear from the table 6 that out of 105 farmers, 13 farmers (12.38) per cent were having middle socio-economic status, 2 fammers (1.90 per cent) having high economic status, whereas none of them fell in the low socio- economic status.

Similarly out of 70 farmers having favourable attitude towards agriculture telecast 15.25 per cent, 40 per cent and 11.43 per cent were in high, middle and low socio-economic status category respectively whereas out of 20 fammers having unfavourable attitude towards agricultural telecast none belong to high socio-economic status but 18.10 and 00.95 per cent belong to middle and lower socio-economic status res- pectively.

Table 7 explains that out of 105 televiewers, 18 are illiterates, 59 are upto middle and rest 28 are above middle class. Out of 18 illiterate respondents 1.90 per cent fell in highly favourable attitude, 14.29 per cent in favourable and 0.00095 per cent fell in the unfavourable categories respectively.

out of 59 farmers who are educated upto middle class 7.62 per cent, 19.05 per cent and 9.52 per cent fell in the category of highly favourable, favourable and unfavourable attitude towards agricultural telecast respectively. Where as in case of middle class out of 28 farmers, 4.76 per cent, 13.33 per cent, and 8.57 per cent fell in the category of highly favourable, favourable and unfavourable attitude towards agriculture telecast.

Table 7: Association between televiewers' attitude towards agriculture telecast and their level of education

N = 105

Education Attitude	Illiterate	Upto Middle	Above Middle	Total
Highly favourable Above 3	2 (1.90)	8 (7.62)	5 (4.76)	15 (14.29)
Favourable 3.6 - 2.4	15 (14.29)	(39.05)	14 (13.33)	70 (66.67)
Unfavourable above 2.4	1 (00.95)	(9.52)	9 (8.57)	20 (19.05)
Total	18 (17.14)	59 (56.19)	28 (26.67)	105 (100.00)

x^2. = .0028 N.S.=Non Significant at 1 per cent and 5 per - cent level.

The null hypothesis H 3.2 stating that there is no association between the attitude of farmers towards agricultural telecast and their level of education was tested. The Chi- square value was found to be 0.0028 which is statically non- significant at 1 per cent and 5 per cent. Therefore, null hypothesis is accepted. From the above data it may be concluded that the attitude is not dependent on the level of education of the farmers.

It is also evident from the table 7 that ouf of 15 farmers, having highly favourable attitude, 1.90 per cent, 7.62 percent and 4.76 per cent fell in the category of literate, upto middle, and above middle class of education respectively, whereas out of 70 respondent 14.29, 39.05 and 13.33 fell in the category of illeterate, upto middle and above middle class of education. Out of 20 respondents having unfavourable attitude towards agricultural telecast, 00.9 per cent, 9.52 per cent and 8.57 per cent fell in the category of illiterate, upto middle and above middle class respectively.

Table 8:Association between televiewers' attitude towards agriculture telecast and their size of land holding N=105

Size of land	Small size	Middle size	Large size	Total
holding attitude	Upto 2 ha.	2 to 4 ha.	above 4 ha.	
Highly favourable above 3	2 (1.90)	5 (4.76)	8 (7.62)	15 (14.29)
Favourable 3 to 2.4	23 (21.90)	16 (15.24)	31 (29.52)	70 (66.67)
Unfavourable below 2.4	1 (00.96)	4 (3.81)	15 (19.20)	20 (19.00)
Total	26 (24.76)	25 (23.81)	54 (51.43)	105 (100.00)

x^2 = 0.6154N.S. = Non-significant at 1 per cent and 5 per cent level.

It is apparent from table 8 that out of 105 farmers. 26 are small farmers, only 1 case had highly favourable attitude, whereas 23 cases having favourable attitude and the rest 2 are having unfavourable attitude. out of 54 large farmers, only 15 i.e. 19.29 per cent having highly favourable attitude, whereas 8 1.e. 7.62 per cent having unfavourable attitude and the rest 31 1.e. 29.52 per cent having favourable attitude.

Out of 25 middle class fammars, half are holding un- favourable attitude, whereas 4 i.e. 16.67 per cent fansers having highly favourable attitude, and only 16 famers 1.e. 15.29 per cent cases having favourable attitude.

The null hypothesis (H 3.3) stating that there is no association between the attitude of farmers towards agriculture telecast and the size of land holding was tested. The Chi-square value which was found to be 0.6154 which is statistically non-significant at 5 per cent level. Therefore, the null hypothesis is accepted.

The association is found to be non-significant because the farmers view the TV programme irrespective of their size of land holding.

It is also clear from the table 8 that 26 farmers are small, 25 are medium and 54 famers are large. 7.62 percent were large holding faremers, who had highly favourable attitude towards agricultural telecast, this was followed by medium size (4.76 per cent) and 1.90 per cent small size holding respectively.

In case of favourable attitude the maximum per cent i.e. 29.52 per cent farmers belong to large size farmers. This was followed by small size land holders 21.90 per cent and middle size land holders 15.24 per cent having favourable attitude towards agricultural telecast. Whereas in case of unfavourable attitude the maximum number i.e. 19.29 percent respondents belong to large size farmers, this was followed by middle and small size land holders having 3.81 per cent and 00.96 per cent respectively.

Table 9 Association between televievers' attitude towards agriculture telecast and their age

N=105

Age Attitude	Upto 21 year	21 to 40 year	Above to 40 year	Total
Highly favourable above 3	1 (00.95)	11 (10.48)	3 (2.86)	15 (14.29)
Favourable 3 to 2.4	2 (1.90)	35 (33.33)	33 (31.43)	70 (66.05)
Unfavourable below 2.4	1 (00.96)	5 (4.76)	14 (13.33)	20 (19.05)
Total	4 (3.81)	51 (48.57)	50 (47.62)	105 (100.00)

x2 = .01808 N.S.= Non-significant at 1 per cent and 5 per cent level

From a perusal of table 9 it is obevious that out of 105 respondents, 4 fammers belongs to upto 21 years age group, 51 farmers belong to 21 to 40 years large group and 50 farmers belong to above 40 years, out of 4 farmers 0.95 per cent having highly favourable, 1.90 per cent favourable and 0.96 per cent unfavourable attitude respectively. Out of 51 farmers in the age group of 21 to 40 years 10.48 per cent. 33.33 per cent, 4.76 per cent respondents having highly favourable, favourable and unfavourable attitudes. Whereas above 40 years out of 50 farmers only 2.86 per cent farmers having highly favourable attitude towards agriculture telecast 31.43 and 13.33 per cent farmers having favourable and unfavourable attitude respectively.

The null hypothesis (H 3.4) stating that there is no association between the attitude of farmers towards agricultural telecast and their age was tested. The Chi- square value was found to be 0.01808, which is statistically non- significant at 5 per cent level. Therefore, the null hypothesis is accepted. Thus the data show that attitude is not dependent on the age of the faremers.

It is also clear from the table 9 that out of 15 farmembers having highly favourable attitude, 2.86 per cent were above 40 years, 10.48 per cent were 21 to 40 years and 0.95 per cent were upto 21 years. Whereas in case of favourable attitude out of the total 70 farmers the maximum per cent

i.e. 33.33 were fell in the category of 21 to 40 years age group. This was followed by above 40 years age group 31.43 per cent and upto 21 years age group 1.90 per cent respectively.

Table 10 :Association between televiewers attitude towards agricultural telecast and their caste

N=105

Attitude	Caste		Total
	High	Low	
Highly favourable above 3	14 (13.33)	1 (00.95)	15 (14.29)
Favourable 3 to 2.4	56 (53.34)	14 (13.33)	70 (66.67)
Unfavourable Below 2.4	17 (16.19)	3 (2.86)	20 (19.05)
Total	87 (82.86)	18 (17.14)	105 (100.00)

It is evident from table 10 that from low caste group 02.86 per cent had unfavourable attitude, while 0.95 p per cent had highly favourable attitude. Out of 70 farmers 13.33 per cent come from the high caste group and expressed favourable attitude towards agriculture telecast.

The hypothesis (H 3.5) stated in null form that "there is no association between farmers' attitude towards agricultural programme and their caste was stated. The calculated value of Chi-square was .0056 which is statistically non- significant at 5 per cent level. The null hypothesis is, therefore, accepted. The data supposed of the proposition that there was an association between farmers' attitude towards agricultural programme and their caste. The co-efficient of contingency further confirmed the strength of association between the two.

It may be inferred that caste had an effect on attitude of farmers. This might be because of the fact that extension agencies have approached to only high caste farmers and the low caste farmers might have been neglected. Most of the community place are handled by high caste. This might be the reason, not watching of TV by lower caste respondents. The inter-caste distance is so pronounced that they do not feel free to sit together and view the TV programmes.

Conclusion :

1. The attitude of the farmers was found to be favourable towards agricultural telecast.
2. Most of the farmers held the middle socio-economic status.
3. There was no associacion between the attitude of farmers and their socio-economic status, level of education, size of land holding and age.
4. There was association between the attitude of farmers and their caste.
5. Farmers preferred agriculture Scientists as the most credible source in formal sources. Progressive farmers ranked first in informal sources whereas television ranked second in massmedia.

References :-

1. Dey, P.K. and Sharma, S.K. (1970). Relative Effectiveness of Radio and TV as Mass communication media in dissemination of Agril. Information. Ind. J. Extn. Edu. Vol. VI (I & 2) 70 : p.62-67.
2. Kaur, R. (1970) " Impact of Television on farm women "Unpublished M.Sc. Thesis I.A.R.I., New Delhi.
3. Mishra, A.N. and Sharma, S.K. (1967). Impact of TV on Farmers. Research in communication. Divn. of Agril. Extn., I.A.R.I., New Delhi
4. Padgaonkar, Dileep. (1976). Television in the village impact on SITE Programme. The Times of India, Ahmedabad, May 7; p.7.
5. Sadamate, V.V. and Sinha, B.P. (1976). Dissemination of Farm Information through Television Ind. J.Extn. Vol. XII (1&2) January-June.

Table 4: Attitudinal Statements And Their Relative Raes

S.	Statement	Strongly Agree	Agree	Undecided	Dis-agree	Strongly Disagree	Mean Score	Rank order
1.	The duration of agricultural programme is quite inadequate.	-	87	8	10	-	4.076	I
2.	Television helps in learning the skill of new agricultural technology.	12	89	3	1	-	4.066	II
3.	The programme are presented in such a way that they look realistic.	2	99	2	2	-	3.961	III
4.	Agricultural information	-	50	51	2	2	3.419	IV
5.	Contents of telecast are technically sound.	10	51	11	32	1	3.352	V
6.	Television programme helps in securing community co-Operation in solving farm problems.	1	41	46	15	2	3.228	VI
7.	Television is instrumental in boosting up agricultural production.	2	19	68	14	2	3.066	VII
8.	Contents of telecasteare the oritical beyond their applicability.	2	45	28	30	-	2.819	VIII
9.	The language used in the tele-visits is not compatible with the comprehension power of farmers.	6	51	16	32	-	2.704	IX
10.	Whatever is communicated thr-ough television programme can be put into action by farmers.	-	10	51	39	5	2.628	X
11.	The duration of the total programme on television is too short be meaningful.	2	81	11	8	3	2.323	XI
12.	Many television programmes are useless for farmers.	3	90	6	5	1	2.152	XII
13.	Farmers are not informed of the further programme well in advance so that they could spare time to view the pro-gramme of their interest.	7	90	2	5	1	2.076	XIII
14.	Television is more an enter-taiment medium than of any educational value in agricul-tural communication.	6	75	15	8	1	1.838	XIV
15.	The programme are not based on the needs and problems of the local area.	59	35	6	4	1	1.6	XV
16.	Message communicated through television are not competable with the required input available with the farmers.	67	37	-	-	1	1.390	XVI

****

Growth & Characteristics of Single Crystal

Ashok Kumar Verma*

Abstract - A single crystal or mono crystalline solid is a material in which the crystal lattice of the entire sample is continuous to the edges of the sample, with no grain boundaries. A crystalline material in which there is long-range order. Such a material has no grain boundaries, so it is completely uniform throughout the entire crystal, regardless of its size. Used, for instance, as semiconductor materials of the highest quality.

Crystal growth involves the controlled deposition of atoms/molecules usually from vapor/liquid phase to a solid phase. It starts from the collection of atoms to acquire a critical size called nuclei followed by the growth of nuclei to a macroscopic crystal size. Liquid nuclei in general follows a spherical shape because of uniform surface tension. In contrast, solid nuclei usually takes well defined shapes with specific crystallographic orientations. Because the surface energy is not same for every crystallographic plane for a given crystal and as a consequence solid nuclei takes different shapes. The particular shape depends upon the facets formed during growth and the surface energy of facets.

Crystals are anisotropic in nature and the properties vary with the given crystallographic direction. The scientists who work on crystal growth usually grow crystals in a specific orientations where the performance of devices made based on these crystals is at optimum.Crystal growth involves the study of all these things in a systematic and controlled manner. Due to rapid advancement in the growth technology, today it is possible to grow materials at nano length scale in a specific crystallographic direction using variety of deposition techniques. The paper deals with the meaning, growth and characteristics of single growth and serves an overview of single crystal.
Keywords: Growth, properties, single, crystal, particle, physics, lattice.

Introduction - A crystal is a solid material whose atoms or molecules are arranged in a regular, repeating pattern in three dimensions. This repeating pattern of the atoms or molecules gives crystals their characteristic geometric shapes and often produces unique physical properties such as optical, mechanical, electrical, and magnetic properties.Crystals can be grown through a variety of methods, including:

Evaporation: This is one of the most common ways to grow crystals. In this method, a solution containing the dissolved crystal material is allowed to evaporate slowly. As the solvent evaporates, the concentration of the crystal material increases until it exceeds the solubility limit and the material begins to precipitate out of solution to form crystals.

Cooling: Crystals can also be grown by cooling a solution of the crystal material. As the temperature decreases, the solubility of the material decreases, causing it to come out of solution and form crystals.

Chemical reaction: Some crystals can be grown by combining two or more chemicals that react with each other to form the crystal material. The resulting product can then be crystallized out of solution.

Hydrothermal synthesis: This method involves heating a solution of the crystal material under high pressure in a closed vessel. The high pressure allows the crystal to form under conditions that would not normally allow it to crystallize.

Melt method: In this method, the crystal material is melted and then slowly cooled to allow the atoms or molecules to arrange themselves into a crystal lattice structure.

These are just a few of the methods used to grow crystals. The specific method chosen depends on the properties of the crystal being grown, as well as the equipment and materials available.In materials science, a single crystal (or single-crystal solid or monocrystalline solid) is a material in which the crystal lattice of the entire sample is continuous and unbroken to the edges of the sample, with no grain boundaries. The absence of the defects associated with grain boundaries can give monocrystals unique properties, particularly mechanical, optical and electrical, which can also be anisotropic, depending on the type of crystallographic structure. These properties, in addition to making some gems precious, are industrially used in technological applications, especially in optics and electronics.

A single crystal is a solid material with a continuous and unbroken crystal lattice structure, meaning that the

*Deptt.of Physics, Govt. College, Dholpur (Raj.) INDIA

entire sample is made up of one crystal. On the other hand, polycrystalline materials are composed of many small crystalline grains with different orientations, boundaries, and defects. This results in a material with multiple crystal structures, which can affect its mechanical, electrical, and thermal properties.

Crystallization &Crystal Growth: Crystallization: Crystallization is the initial process of forming small crystals from a liquid or solution. It involves the nucleation of individual crystal units (atoms, ions, or molecules) coming together in a specific arrangement to form a crystal lattice. At this stage, the crystals are typically small and may exhibit various imperfections such as irregular shapes, rough surfaces, or defects. During crystallization, the crystal structure is still developing, and the crystals may not have reached their full potential in terms of size or perfection.

Crystallization is a state change from liquid to solid form. Water or other liquid freezing causes crystallization. Many chemicals will crystallize as well out of supersaturated solutions. For example, If you take a pure solvent like distilled water and dissolve a pure chemical into it, potassium aluminum sulphate (alum) for instance, until no more will dissolve in 100mL warm water. Filter the liquid and pour some into a small saucer or mayo jar lid ~1/4 inch deep. Cover loosely to keep dust out. Go away for about 24 hrs then check and see what you have. Those pretty crystals is what happens when there is too much of a compound (solute) in solution (solvent) and more water evaporates.

Crystal growth: Crystal growth occurs after the initial nucleation and involves the increase in size and perfection of the crystal structure. As the crystals continue to grow, the individual crystal units align and arrange themselves into a more ordered and well-defined lattice structure. Crystal growth can occur through the addition of more units to the existing crystal lattice, resulting in the enlargement of the crystal in size and the elimination or reduction of defects. The growth process typically leads to the development of larger, more regular, and better-formed crystals.Crystal growth is the process by which a crystal structure forms and grows from a liquid, a gas, or a solution. It involves the arrangement of atoms or molecules in a highly ordered, repeating pattern, resulting in the formation of a crystal. This process can occur naturally, such as in the formation of snowflakes or minerals, or it can be induced in a laboratory setting for various scientific and industrial purposes. Crystals have wide-ranging applications in technology, industry, and scientific research.

Characterization Of Single Crystal: Single crystal silicon is used in the fabrication of semiconductors. On the quantum scale that microprocessors operate on, the presence of grain boundaries would have a significant impact on the functionality of field effect transistors by altering local electrical properties. Therefore, microprocessor fabricators have invested heavily in facilities to produce large single crystals of silicon.

Optics

Monocrystals of sapphire and other materials are used for lasers and nonlinear optics.

Monocrystals of fluorite are sometimes used in the objective lenses of apochromatic refracting telescopes.

Materials engineering: Another application of single crystal solids is in materials science in the production of high strength materials with low thermal creep, such as turbine blades.Here, the absence of grain boundaries actually gives a decrease in yield strength, but more importantly decreases the amount of creep which is critical for high temperature, close tolerance part applications.

Electrical conductors: Single crystals provide a means to understand, and perhaps realize, the ultimate performance of metallic conductors.Of all the metallic elements, silver and copper have the best conductivity at room temperature, so set the bar for performance. The size of the market, and vagaries in supply and cost, have provided strong incentives to seek alternatives or find ways to use less of them by improving performance.

The conductivity of commercial conductors is often expressed relative to the International Annealed Copper Standard, according to which the purest copper wire available in 1914 measured around 100%. The purest modern copper wire is a better conductor, measuring over 103% on this scale. The gains are from two sources. First, modern copper is more pure. However, this avenue for improvement seems at an end. Making the copper purer still makes no significant improvement. Second, annealing and other processes have been improved. Annealing reduces the dislocations and other crystal defects which are sources of resistance. But the resulting wires are still polycrystalline. The grain boundaries and remaining crystal defects are responsible for some residual resistance. This can be quantified and better understood by examining single crystals.As anticipated, single-crystal copper did prove to have better conductivity than polycrystalline copper. Electrical Resistivity ρ for Silver (Ag) / Copper (Cu) Materials at Room Temperature (293 K)

The single-crystal copper not only became a better conductor than high purity polycrystalline silver, but with prescribed heat and pressure treatment could surpass even single-crystal silver. And although impurities are usually bad for conductivity, a silver single-crystal with a small amount of copper substitutions was a better conductor than them all.As of 2009, no single-crystal copper is manufactured on a large scale industrially, but methods of producing very large individual crystal sizes for copper conductors are exploited for high performance electrical applications. These can be considered meta-single crystals with only a few crystals per metre of length.

Chief Objective Of The Study: To study and produce a short overview of single crystal and its varied aspects.

Hypothesis: The concept of single crystal is an important concept in physics.

Review Of Related Literature

i. 'Single crystals have been grown and characterized by experimental techniques such as high-resolution transmission electron microscopy, x-ray diffraction, x-ray photoelectron spectroscopy and optical and electrical measurements. The samples were prepared in single-crystal form from a melt. The structural analysis indicates that has a hexagonal structure, and confirms the high quality of the produced single crystals. Quantitative information on electrical and optical properties of single-crystalline was obtained by investigating the resistivity and photoluminescence as a function of the temperature and excitation intensity' (M Mobarak, et. al, 1997).

ii. 'A single-crystal X-ray study has the unique potential to provide `solid' knowledge about the three-dimensional structure of molecules and complexes in the crystalline state along with their intermolecular interactions. Much of our current knowledge concerning inorganic and metal-organic compounds is derived from single-crystal studies. Structure determinations that are carried out carefully will generally provide incontrovertible results, upon which subsequent research can be built. Unfortunately, for various reasons, not all structures that end up in the refereed literature and subsequently in databases appear to be correct, either being erroneous only in certain details or containing major errors which lead to the derivation of incorrect conclusions. An excellent paper by Harlow (1996) discusses many examples. The assignment of the correct space group to a structure is one of the most common problems, as has been demonstrated many times by Marsh and others (e.g. Marsh &Spek, 2001). Some of the more serious errors include incorrectly assigned atom types and missing or too many hydrogen atoms in a structure, obviously with serious implications for the chemistry involved. Often, papers include a detailed discussion on an interesting feature of a molecular structure that in hindsight turns out to be based on an artefact. Parkin (1993) addresses in detail the illusive `bond-stretch isomerism' phenomenon' (A. L. Spek, 2002).

iii. 'Single crystals of some L-alanine family have been grown by solution method using waster as solvent. Transparent and semi-transparent crystals of well-defined morphologies were obtained. From SEM analysis, it is concluded that there is a formation of voids of different shapes on the surface of the grown crystals. FTIR spectral analysis confirmed the presence of functional groups in the crystals. From Vickers microhardness test, it is found that hardness number decreases with increasing load and it is concluded that the grown crystals of this work belong to the category of soft materials' (K. Seethalakshmi et.al, 2012).

iv. 'The growth of Cadmium sulphateoctahydrate single crystals was successfully carried out by using gel growth technique. The cell parameter values were found using single crystal X-ray diffraction analysis. The purity of the material of grown crystal was detected by atomic absorption spectroscopy (AAS). The presence of sulphate functional group was determined by the FTIR and Raman spectra. The optical absorption study was done by UVVisible spectral analysis. TGA/DTA studies explain the thermal properties of the crystal. The microhardness studies confirm that Cadmium sulphate single crystal has a high Vickers Hardness Number (VHN) in comparison to the other crystals.Cadmium metal and its alloys and compounds are used in a large variety of industries. Derivatives of the cadmium elements are used in active electrode material in nickel-cadmium batteries, pigments used mainly in plastics, ceramics and glasses to stabilize polyvinyl chloride. The Cadmium sulphate is an important inorganic cadmium compound which is widely used in semiconductor industry with many excellent physical and chemical properties. Anhydrous Cadmium sulphate is also produced by melting cadmium with ammonium or sodium peroxodisulfate. Cadmium sulphateoctahydrate is generally available in the market with the common name of Cadmium sulphate. Cadmium sulphate structure was solved by Lipson in 1936' (G. Rajadurai et. al, 2013)

v. 'Nowadays more attention has been paid to the growth of organic nonlinear optical single crystals due to their high nonlinear optical efficiency and fairly good optical damage threshold comparable to that of inorganic counterparts. The organic nonlinear optical single crystals of benzimidazole (BMZ) grown by the slow evaporation solution growth technique (SEST) and the vertical Bridgman technique (VBT) were characterized, and their results have been compared. Characterization has been made by high-resolution X-ray diffractometry (HRXRD), Fourier transform infrared (FTIR), laser damage threshold, microhardness, and second-harmonic generation (SHG) measurement studies. The high-resolution X-ray diffraction curves (DCs) recorded by an in-house developed multicrystal X-ray diffractometer (MCD) revealed that the crystals grown by both methods contain internal structural grain boundaries' (N Vijayan, et. al, 2006).

vi. 'Crystal growth from gel was started from the end of last century when liessegang studied the periodic precipitation in gel. Since then gel has been a promising medium for the growth of crystals. It is one of the most convenient medium for the growth of single crystal of water soluble substances. Sol-Gel method is a chemical method which is widely used to grow single crystals. This is the most famous method because it is cost effective, reliable and easy. It requires minimum equipment and good quality crystals can be grown at room temperature. Potassium nitrate is used in a wide variety of applications including glass manufacturing, explosives for mining and civil works, metal treatment, etc. Potassium nitrate has important applications in fertilizers, food additives, rocket propellants, fireworks and storage for solar energy was grown by sol-gel technique at room temperature. Growth rate of such crystals which are grown by sol-gel method is merely 1mm/ day. Purpose of this work is to grow highly pure potassium nitrate crystals by using EDTA as an additive. EDTA traps impurities and we get high quality crystal. It is already proved

that; by making use of EDTA as an additive we can grow highly transparent crystals. Such high quality crystals of potassium nitrate were subjected for different characterizations' (MohiteRajkumarMukund, 2012).

vii. 'Ammonium dihydrogen phosphate (ADP) ($NH_4H_2PO_4$) single crystals were grown by gel method using sodium metasilicate (SMS). The X-ray diffraction analysis of the as–grown ADP crystals showed that it possess tetragonal structure having lattice parameters a = 7.502 °A and c = 7.554 °A. The Fourier transform infrared spectroscopy (FTIR) of as-grown ADP crystal taken between wave-number 400 to 4000 cm^{-1} showed peaks due to vibration and stretching of functional group O-N=P and $–ONO_2$ in 485 to 902 cm^{-1}, P=O and O-H in 1076 to 1544 cm^{-1} and O-H and N-H in 2400 to 3371 cm^{-1} range. The UV-Vis-NIR spectroscopy of ADP crystal showed direct optical bandgap of 4.99eV and indirect optical bandgap of 4.12eV. The optical microscopy employed to study the surface microstructure showed hillocks on the as-grown surfaces arising due to local increased supersaturation. The thermal properties of the as-grown ADP crystals were studied by thermogravimetric analysis (TGA). The thermal activation energy determined from the TGA curve using Broido, Piloyan-Novikova (PN) and Coats Redfern (CR) relations were in good agreement with each other. The obtained results are discussed in details (Sunil Chaki, et. al, 2012).

viii. 'Single crystals of the nonlinear material γ-glycine have been grown in the presence of lithium nitrate by slow-evaporation method. Structural characterization of the grown crystals was carried out by powder and single crystal X-ray diffraction (XRD) methods and it is observed that the samples crystallize in hexagonal system with non-centrosymmetric space groups. The modes of vibrations of different molecular groups present in glycine have been identified by spectral analyses. UV-visible transmittance study was performed to analyze optical transparency of γ-glycine crystals and found that the crystal was transparent in the entire visible-NIR region. Second harmonic generation (SHG) conversion efficiency has been estimated as 62 mV and the output power by the crystal was 1.72 times that of potassium dihydrogen phosphate (KDP) crystal. The thermal stability and decomposition of the sample have been studied by thermal analysis and it is observed that the γ-glycine crystal have good thermal stability' (Ashok Kumar R, et. al, 2012).

ix. 'Thiourea doped Sulphamic acid (Th : SA) single crystals were grown successfully by slow-evaporation technique. To identify the morphology and structure, the as grown crystals were subjected to characterization like powder and single XRD analysis. UVVis-NIR spectrum and FTIR studies are performed to identify the cut-off wavelength and the various functional groups present in the grown crystal. Second harmonic generation were investigated to study the linear and nonlinear optical properties. In order to ascertain the thermal stability of the crystal, thermo-gravimetric analysis (TGA), differential thermo-gravimetric analysis (DTA) and differential scanning calorimetry (DSC) were also carried out' (B. Kannan, et. al, 2013).

Method: In order to keep up the scientific spirit of the study, all the steps suggested by the eminent scientists for research were adopted and adhered to. The contents produced in the paper have been borrowed and modified from the selected research papers on the subject available in the published form in the various national and international journals. In addition, the elaboration was made using and applying the author's own knowledge of single crystal.

Conclusion: The definition of a crystal is an arrangement of molecules, usually a solid, in which the atoms, ions, or molecules are regularly arranged in three dimensions. A crystal usually has flat faces, sharp edges, and specific symmetry patterns.There are several ways to grow crystals, and some of them require special materials and instruments. One method is called crystallization, and this method requires the introduction of a solid compound that is either naturally occurring or synthetically produced into a solvent. When the compound is introduced, the solvent and compound combine and separate, forming a solid that eventually forms a crystalline structure.Other ways of growing crystals include evaporation and supersaturation. With the evaporation technique, the solute, or substance that is to be crystallized, is added to a solvent and allowed to evaporate until only a few crystals are present in the liquid.

With supersaturation, a solution is prepared that is supersaturated, meaning that the solution contains more dissolved solutes than it can dissolve, so crystals form spontaneously when the supersaturation level is reached.No matter the technique, growing crystals is an exciting, albeit complex, process that involves precision, creativity, and patience.

References:-

1. Ohtaki, M. Recent aspects of oxide thermoelectric materials for power generation from mid-to-high temperature heat source. J. Ceram. Soc. Jpn. 2011, 119, 770–775.
2. Boothroyd, A.T.; Babkevich, P.; Prabhakaran, D.; Freeman, P.G. Hour-glass magnetic spectrum in an insulating, hole-doped antiferromagnet. Nature 2011, 471, 341–344.
3. Drees, Y.; Lamago, D.; Piovano, A.; Komarek, A.C. Hour-glass magnetic spectrum in a stripeless insulating transition metal oxide. Nat. Commun. 2013, 4, 2449.
4. Drees, Y.; Li, Z.W.; Ricci, A.; Rotter, M.; Schmidt, W.; Lamago, D.; Sobolev, O.; Rütt, U.; Gutowski, O.; Sprung, M.; et al. Hour-glass magnetic excitations induced by nanoscopic phase separation in cobalt oxides. Nat. Commun. 2014, 5, 5731.
5. Guo, H.; Schmidt, W.; Tjeng, L.H.; Komarek, A.C. Charge correlations in cobaltates La2"xSrxCoO4. Phys. Status Solidi (RRL) 2015, 9, 580–582.
6. Mizushima, K.; Jones, P.C.; Wiseman, P.J.; Goodenough, J.B. LixCoO2 (0 < x < -1): A new cathode

material for batteries of high energy density. Mater. Res. Bull. 1980, 15, 783–789.

7. Korotin, M.A.; Ezhov, S.Y.; Solovyev, I.V.; Anisimov, V.I.; Khomskii, D.I.; Sawatzky, G.A. Intermediate-spin state and properties of LaCoO3. Phys. Rev. B 1996, 54, 5309.
8. Haverkort, M.W.; Hu, Z.; Cezar, J.C.; Burnus, T.; Hartmann, H.; Reuther, M.; Zobel, C.; Lorenz, T.; Tanaka, A.; Brookes, N.B.; et al. Spin State Transition in LaCoO3 Studied Using Soft X-ray Absorption Spectroscopy and Magnetic Circular Dichroism. Phys. Rev. Lett. 2006, 97, 176405.
9. Moritomo, Y.; Higashi, K.; Matsuda, K.; Nakamura, A. Spin-state transition in layered perovskite cobalt oxides: La2"xSrxCoO4 (0.4 $\leq$ x $\leq$ 1.0). Phys. Rev. B 1997, 55, R14725.
10. Chang, C.F.; Hu, Z.; Wu, H.; Burnus, T.; Hollmann, N.; Benomar, M.; Lorenz, T.; Tanaka, A.; Lin, H.-J.; Hsieh, H.H.; et al. Spin Blockade, Orbital Occupation, and Charge Ordering in La1.5Sr0.5CoO4. Phys. Rev. Lett. 2009, 102, 116401.
11. Taskin, A.; Lavrov, A.N.; Ando, Y. Ising-Like Spin Anisotropy and Competing Antiferromagnetic-Ferromagnetic Orders in GdBaCo2O5.5 Single Crystals. Phys. Rev. Lett. 2003, 90, 227201.
12. Wu, H. Spin state and phase competition in TbBaCo2O5.5 and the lanthanide series LBaCo2O5+ä (0 <~δ<~1).Phys. Rev. B 2001, 64, 092413.
13. Hu, Z.; Wu, H.; Haverkort, M.W.; Hsieh, H.H.; Lin, H.J.; Lorenz, T.; Baier, J.; Reichl, A.; Bonn, I.; Felser, C.; et al. Different Look at the Spin State of Co3+ Ions in a CoO5 Pyramidal Coordination. Phys. Rev. Lett. 2004, 92, 207402.
14. Loureiro, S.M.; Felser, C.; Huang, Q.; Cava, R.J. Refinement of the Crystal Structures of Strontium Cobalt Oxychlorides by Neutron Powder Diffraction. Chem. Mater. 2000, 12, 3181–3185.
15. McGlothlin, N.; Ho, D.; Cava, R.J. Sr3Co2O5Cl2 and Sr2CoO3Cl: two layered cobalt oxychlorides. Mater. Res. Bull. 2000, 35, 1035.
16. M Mobarak; H Berger; G F Lorusso; V Capozzi; G Perna; M M Ibrahim; and G Margaritondo: The growth and characterization of single crystals. Journal of Physics D: Applied Physics. 1997, Volume 30, Number 18
17. L. Spek: Single-crystal structure validation with the program PLATON. Journal of Applied Crystallography. 2003
18. K. Seethalakshmi; S. Perumal and P. Selvarajan: Studies On Growth, Morphology, Spectral And Mechanical Properties Of Some Doped L-Alanine Family Of Single Crystals. IJCRR. 2012, Vol 04 issue 19
19. G. Rajaduraia; A. Puhal Raja and S. Pari: Growth and characterization of cadmium sulphate single crystal by gel growth. Scholars Research Library. 2013, 5 (3):247-253
20. N Vijayan; G Bhagavannarayana; R Ramesh Babu; R Gopalakrishnan; KK Maurya and P Ramasamy: A comparative study on solution-and bridgman-grown single crystals of benzimidazole by high-resolution X-ray diffractometry, fourier transform infrared, microhardness, laser. Crystal growth & design. 2006, 6 (6): 1542-1546
21. MohiteRajkumarMukund: Growth and Characterization of Potassium Nitrate Single Crystal Grown by the Sol-Gel Method. International Journal Of Advanced Scientific Research And Technology. 2012, 2(2)
22. Sunil Chaki; M. P. Deshpande; Jiten P. Tailor; Mahesh D. Chaudhary and KanchanMahato: Growth and Characterization of ADP Single Crystal. American Journal of Condensed Matter Physics. 2012,2(1): 22-26
23. Ashok Kumar R; EzhilVizhi R; Sivakumar N; Vijayan N and RajanBabu D: Crystal growth, optical and thermal studies of nonlinear optical γ-glycine single crystal grown from lithium nitrate. Vellore Institute of Technology, Elsevier BV. 2012, 123(5): 409 – 413
24. B. Kannan; P. R. Seshadri; K. Ilangovan, and P. Murugakoothan: Growth and Characterisation of Thiourea Doped Sulphamic Acid Single Crystals. Indian Journal of Science and Technology. 2013. 6(7): 1-4

****